# श्रीमत्प्रपन्नामृत ॥

भाषानुवाद ॥

जिसको

बदरीदास ने श्रीमान् पंडित लक्ष्मीप्रपन्न
जी की सहायतापूर्वक अतिलालित्य
और सरलतायुक्त संस्कृत से भाषा
छन्दों में आद्योपान्त रचना करिके
श्रीसम्प्रदायनिष्ठ भाषा रसिक
भागवतों की प्रीत्यर्थ
छपाया है ॥

उसमें

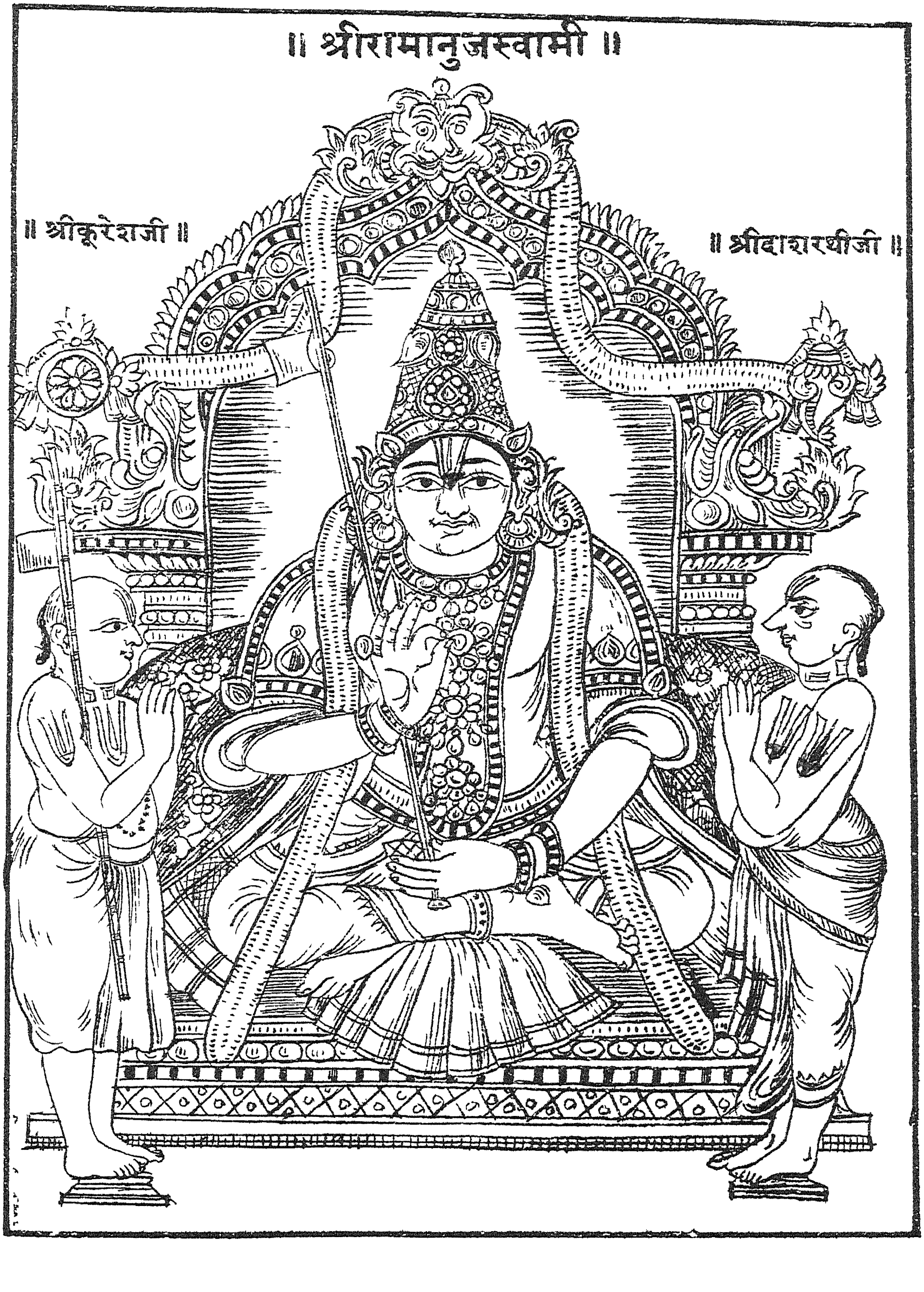
उक्त सम्प्रदाय के पूर्व्वाचार्यों और आ-
ल्वारों के परमपवित्र चरित्र कथन
द्वारा समस्त सात्विक शास्त्रों का
गूढ़ाशय और तत्वार्थ प्रका-
शित हुआ है जो भगव-
ज्जनों का परमधन और
अत्यंत ग्राह्य है ॥

दूसरीबार

ला प्रेस कानपूर में छपा जनवरी सन् १८६८ ई० ॥

# श्रीमत्प्रपन्नामृत भाषानुवादकी अनुक्रमणिका अर्थात् सूचीपत्र॥

| अध्याय | विषय | पृष्ठ से | पृष्ठतक |
|---|---|---|---|
| ५० | कूरेश को सुन्दराचल मैं निवास ... | १२८ | १३० |
| ५१ | कृमिकंठ को मरण और यादवाचल मैं रामानुजस्वामी को अर्चा बिग्रह प्रतिष्ठापन करिके व्येकटाचल के दक्षिण तिल्लिगोविंदराज की प्रतिष्ठा करिके श्रीरंग में आइबो ... | १३० | १३४ |
| ५२ | कूरेश कौ नवीन नेत्रन की बरदराज सौं प्राप्ति ... | १३४ | १३५ |
| ५३ | यतीन्द्र करिके गोदाभीष्ट की पूर्त्ति ... | १३५ | १३८ |
| ५४ | आंघ्रिपूर्ण ने श्रीरामानुज अष्टोत्तरशतनाम बिरचो | १३८ | १४१ |
| ५५ | आंघ्रिपूर्ण को माहात्म्य वरणन ... | १४१ | १४३ |
| ५६ | अनन्ताचार्य को प्रभाव वरणन ... | १४३ | १४४ |
| ५७ | श्रीकूरेशस्वामी कौ रंगनाथ सौं परमपद प्राप्ति को बरदान मिलो | १४४ | १४६ |
| ५८ | तथा उनकी परमपद यात्रा वरणन ... | १४६ | १४९ |
| ५९ | रंगेशादि ने यतीन्द्र को बैभव वरणन करो ... | १४९ | १५१ |
| ६० | पूर्णाचार्य करिके यतीन्द्र को वैभव प्रकाश करो गयो | १५१ | १५३ |
| ६१ | मूक कूरेश दाशरथ्यादि करिके रामानुज बैभव प्रकाश करो गयो | १५३ | १५७ |
| ६२ | श्रीरामानुजस्वामी को सर्व मुख्यत्व वरणन ... | १५७ | १६० |
| ६३ | आचार्य बैभव वरणन ... ... | १६० | १६१ |
| ६४ | श्रीरामानुज मंत्र प्रभावादि वरणन ... | १६१ | १६४ |
| ६५ | यतीन्द्र करिके बहत्तरि वाक्य को उपदेश ... | १६४ | १६६ |
| ६६ | श्रीभूतपुरी मै रामानुजस्वामी के अर्चा बिग्रह को माहात्म्य | १६९ | १७२ |
| ६७ | श्रीवैष्णव लक्षणादि वरणन ... | १७२ | १७४ |
| ६८ | यतिराज की चरमदशा वरणन ... | १७४ | १७६ |
| ६९ | श्रीपराशर भट्टार्य बिजय मै वेदान्ती को बृत्तान्त वरणन | १७६ | १७८ |
| ७० | भट्टार्य करिके वेदान्ती को शास्त्रार्थ मैं जीतिबो ... | १७८ | १८० |
| ७१ | वेदान्ती कौ भट्टार्य ने सब रहस्यार्थ उपदेश करे | १८० | १८१ |
| ७२ | द्राविडभाषा के माहात्म्य कथन मैं अगस्ति बिश्वकर्म्मा को परस्पर सम्बाद ... ... | १८१ | १८४ |
| ७३ | द्राविडाम्नाय बैभव वरणन ... | १८४ | १८७ |
| ७४ | श्रीगोदा दिव्यसूरी प्रभाव वरणन ... | १८७ | १८९ |
| ७५ | श्रीबैकुण्ठपुर वरणन ... ... | १८९ | १९१ |
| ७६ | लक्ष्मी बैकुण्ठनाथ सम्बाद और गोदावतारादि वरणन | १९१ | १९३ |
| ७७ | सरोयोगी भूतयोगी भ्रांतयोगी नाम अवतारादि वरणन | १९३ | १९७ |
| ७८ | भक्तिसार वैभव वरणन ... ... | १९७ | १९९ |
| ७९ | कनिकृष्णावतार कथन ... ... | १९९ | २०१ |
| ८० | भक्तिसार कौ महतयोगी ने तत्वोपदेश करो ... | २०१ | २०४ |
| ८१ | भक्तिसार ने रुद्र कौ जीतो ... | २०४ | २०६ |
| ८२ | सर भूत भ्रांत तीनौ योगिन की बैकुण्ठप्राप्ति ... | २०६ | २०८ |
| ८३ | भक्तिसार बैभव को अतिशय ... | २०८ | २१२ |
| ८४ | भक्तिसार की कुम्भकोण नाम दिव्यदेश की यात्रा | २१२ | २१६ |


॥ श्रीरामानुजस्वामी ॥
॥ श्रीकूरेशजी ॥
॥ श्रीदाशरथीजी ॥

श्रुति चक्रधर्म तड़ाक निवासी । कियेशोकगतअघनिशिनाशी॥

छन्द हरिगीतिका ॥

यज्ञोपवीत पुनीतधरकाशायबास मनोहरं ।
युतछिद्र ऊर्ध्व सुपुंड्र र्हाचरात्रि दंडधरण गुणाकरं ॥
हारीतबंश चकोर निशिपति अरुणाकज विलोचनं ।
सो करौं कृपाकटाक्ष मोपर प्रणत जन दुख मोचनं ॥

दो० ॥ वेद वेद्य श्री नाथ पद युगुल कमल के भौंर ।
तिन यति पतिके चरण ताजि मोको शरण न और ॥

सो० ॥ शास्त्र ज्ञान नाहिं लेश, ना तव पद सेवा करी ।
गुणगण रहित अशेष, गुरु दयालु करुणा करी ॥

देवराज बारन गिरिनायक । सुमिरौं श्रीपति प्रणत सहायक ॥
ग्रंथकार यद्यपि नहिं भाखो । गुनि रहस्य कछु उर पुर राखो ॥
जानिये तद्यपि पुरानन गायो । या प्रबन्ध को मूल सुहायो ॥
श्री बैकुंठनगर अभिरामा । वेद विदित अनूप हरिधामा ॥
महिमा सकललोक विख्याता । नित्यविभूतिहरिहि सुखदाता ॥
मितिबरजित आनदकी खानी । कहतानिवृत्यहोति श्रुतिबानी ॥
रत्नजटित परकोटा राजैं । वहुगोपुर मंडप तहां भ्राजैं ॥
कांति सदन बहु सदन सुहाये । दिव्य अनूप अटा मनभाये ॥
रवि प्रकाशवहु यान बिराजैं । दिव्य अपसरागण सुख साजैं ॥
वहुबितान तोरण मनमोहैं । ध्वज पताक जययश जनु सोहैं ॥

दो० ॥ बापी कूप तडाग बहु भरे सुधा सुख रूप ।
बने घाट मणिगण जटित बिकसित कमल अनूप ॥

सो० ॥ कल्पब्रक्ष के बाग पुष्प बाटिका मनहरण ।
भरे श्रीश अनुराग मधुप मत्त गुंजारहीं ॥

तासुमध्य अंतःपुर सोहा । जोहिलखि कोटि चन्द्र रवि मोहा ॥
चहुंदिशि चारि द्वार छबि छाये । रक्षत वीर धीर मनलाये ॥
ब्रह्मादिक अलभ्यश्रुति गावैं । सहज सुभक्तिशालिनरपावैं ॥
सहसखम्भ मंडपतहं भ्राजा । सेवहिं जिहि नित मुक्तसमाजा ॥
शोभित तहां सिंहासन वेषा । निर्मल कांति सहस शिरशेषा॥

ताऊपुर इंदीवर बरणा । लसतअखिलपतिजन दुखहरणा ॥
तनद्युति मरकत मणिहिं लजाये। शरद कमल दल नैनसुहाये॥
भुज अजानु महावल भारी । शंखरु चक्र गदांबुज धारी ॥
कोटि मदनमद मथन सुरूपा । अमित चंद रवि करतबिरूपा॥
हार कटक केयूर बिभूषित । कीटादिक चैतन्नि अदूषित ॥

दो० ॥ छबिमय गुणमय तेजमय विग्रह मंगल रूप ।
पंच उपनिषद मय बिशद गायो श्रुतिन अनूप ॥
सो० ॥ सुख सुगन्ध रस सिंधु श्री भूलीला सेवहीं ।
दीन जनन के बंधु परम सुलभ सोशील्यनिधि ॥

या विधि सौं सर्वेश्वर स्वामी । श्री निवास हरि शारंगपाणी ॥
अमितबिशद गुणगण रत्नाकर । श्री सम्बोध्यमानकरुणाकर ॥
देखे दुखित जीव संसारी । आकस्मिक चिन्ता उरधारी ॥
मम कहवाय सहत दुख नाना । कौन यत्न ल्याऊं सुखधामा ॥
शय्यारूप फणींद्र गुसाईं । देखे चिंतायुत निज साईं ॥
बिस्मित ह्वै बिनती अनुसारी । अखिलेश्वर सर्वज्ञ अघारी ॥
सब बिधि समरथ पूरण कामा । कहधौंहृदय गुणात गुणधामा॥
सुनौबचनमम बत्सफणीशा। मोहिताजिजगनरभजहिंअनीशा॥
संतत सहज स्वरूप भुलाने । ताते भवदुख सिंधुसमाने ॥
श्रुतिसुमृतिन मुख मैं समुझाये । वे हठबशकछुमनहिनलाये॥

दो० ॥ तब मैं बहुबिधि बपुष धारि रमासहित जगजाय ।
चरित अमित लीला बिबिधि तिनहित रचे उपाय ॥
सो० ॥ वे माया मद अंध प्राकृत सम मोहिं मानहीं ।
नहीं ज्ञान की गंध किये व्यर्थ उपकार मम ॥

बिनु अनन्य निस्किंचन भाऊ । रक्षा करौ न मोर स्वभाऊ ॥
निज रक्षक ते मोहि न मानैं । सर्वेश्वर स्वतंत्र नहिं जानैं ॥
मानहिं मूढ नृपति गोपाला । पशु पाषान नईश कृपाला ॥
पठए शंख चक्र यह सेवा । बिष्वक्सेन आदि बहु देवा ॥
तिन धरि देह महीतल जाई । बिबिधिबिचारकिये मनलाई ॥

श्रीमतेरामानुजायनमः ॥

# भाषा प्रपन्नामृत ॥

श्लोक ॥ योनित्यमच्युतपदाम्बुजयुग्मरुक्म व्यामोहितस्त दितराणित्रणायमेने ॥ अस्मद्गुरोर्भगवतोस्यदयैकसिन्धो रामानुजस्यचरणौशरणंप्रपद्ये ॥ १ ॥

दोहा ॥

श्री निवास गुरु बर्य के बन्दौं चरण सरोज ।
ज्ञान भक्ति दायकजनन हरण बिमोह मनोज १ ॥
शठ मर्षण कुल व्यूम के निर्मल राकाचंद ।
तिरुमल सिंहासन अधिप जन चकोर सुखकंद २ ॥
कृपापात्र रंगार्य के ज्ञान बिराग निधान ।
श्रीपति पद अम्बुज युगल लोभित मधुप समान ३ ॥
देशिक के देशिक तथा रामानुज परियंत ।
बंदौं गुरु गोष्टी सकल जिन गुण ज्ञान अनंत ४ ॥
यति शेखर प्रणमौं बहुरि नमौं परांकुश दास ।
यामुन रामामिश्र नमि कमलनयन सहुलास ५ ॥
नाथ मुनीश सरोज पद बंदौं सहित सुप्रेम ।
मूलाचार्य शठारिपद दायक आश्रित क्षेम ६ ॥
सूत्रवती पति नमन करि जगत जननि श्रीनाम ।
बंदन करि सेवन करौं श्रीपति गुण अभिराम ७ ॥
बहुरि भागवत मंडली सकुल सपरिजन भृत्य ।
बंदतहौं जिनकी कृपा होत मनुज कृत्य कृत्य ८ ॥

देव ज्ञान आनंद मय निर्मल फटिका कार ।
वंदौं हय मुखके चरण विद्या के आधार ६ ॥

चौपाई ॥

सकल काजते लोक मझारी । हरिगुणगान परम शुभकारी ।
ताहू ते सद्गुरु गुणगाना । परमोत्तम श्रुति संतबखाना ।
सो गुरुपद जगहित सौं पूरो । श्री रामानुज विग्रह रूरो ॥
तिन के चरित पुनीत सुहाये । द्राविडाचार्य प्रबंधन गाये ॥
तद्यपि अनंतार्य विद्वाना । देवगिरा कछु कियो बखाना ॥
पूर्वाचार्य चरित युत भायो । नाम प्रपन्नामृत तेहि गायो ॥
दिव्य सूरि लीला मन भाई । यतिपति शिष्यन कथा सुहाई ॥
मैं लघुमति ऐसेहु उपकारा । लहो न अवगाहनअधिकारा ॥
तब लक्ष्मी प्रपन्न गुरु ज्ञानी । मोंहि सुनायो प्राकृत बानी ॥
सो निज अल्पबुद्धिअनुसारा । लिखि लीनों मैं छंदन द्वारा ॥

दो० ॥ यमि निज अनुसंधान हित, लहो यतीश चरित्र ।
तामें औरो लाभ एक, मोहिं लखि परो पवित्र ॥
सो० ॥ जे रामानुज दास सज्जन सुमति सुशील शुचि ।
ते पढिहैं सहुलास इष्टदेव ये मम सकल ॥

चौपाई ॥

मधुकर सरिस संत जगमाहीं । सार ग्रहि कछु संशय नाहीं ॥
आचारज चरित्र चित धरिहैं । काव्यदोष कछुदृष्टि न करिहैं ॥
लघुमति गुनिजन साहस देखी । करिहैं सज्जन कृपा विशेखी ॥
ऐसेहु मुख विकास तिन केरे । नशिहैं सब अघअवगुण मेरे ॥
इमिसबहीविधिजानिपरमहित । कवित दोषकछुमैं न दियोचित ॥
उल्था कियो प्रपन्नमृत को । दानिविज्ञान तुष्टिआश्रितको ॥
भाष्यकारभाष्कर अब ध्याऊं । जासुकृपा उरतिमिरनशाऊं ॥
भूतपुरी प्राची सुखदाई । प्रकटि मोह मय निशा नशाई ॥
हरिजनकमल विकासित कीने । कुमुद कुदृष्टिनके मुख हीने ॥

सर्बबिधि देखि आचरणघोरा । तिनहिंअजयजान्योपदमोरा॥
जानि असाध्य यत्नबुधसाधी । फिरि आयेममबचन अराधी॥
तुम मम कृपापात्र भोगीशा । जगरक्षण समरथ्थ फणीशा ॥
वसुधातलधरि मनुजशरीरा। जिमिमोहिंलहैं नर करियेसोबीरा॥
प्रभुआयसु सुनि मणिधरराई । बोले सहस सीस पद नाई ॥

दो० जग उतपति पालन प्रलय कौतुक नाथ तुम्हार ।
तुम्हरी इच्छा मात्र ते जड जंगम संसार ॥
सो० मोहि रहे सब जीव प्रभु तव माया गुणमई ।
तुम प्रभु समरथ सीव कृपा बिवश आयसु करी ॥
दो० करिहौं प्रभु आयसु अवशि आपहि मानि कृतार्थ ।
दोउ बिभूति अधिकार मोहि देव तो बनै यथार्थ ।
एवमस्तु कह कृपानिधि सुनि प्रणाम किय शेष ।
किय अवतरण बिचार उर शिरधरि प्रभु आदेश ॥

इतिश्री प्रपन्नामृतेरामानुजचरित्रेबैकुंठनाथफणिराज
सम्बादोनामप्रथमोध्यायः ॥ १ ॥

पुण्यदेश तुंडीर सुहायो । पूरब सिंधु निकट श्रुतिगायो ॥
तहां एक नगरी सुखरूपा । भूत पुरीतिहि नाम अनूपा ॥
जग विख्यात बिष्णु मनभावनि । अवधपुरीमधुपुरिसमपावनि ॥
जहं तहं बिबिधि अन्नधन ढेरी । ऋद्धि सिद्धि घर घर की चेरी॥
बन उपबन बहु कूप तड़ागा । सुखसमाजसबबिबिधिबिभागा॥
राजहि सुघर चतुर नरनारी । हय गजरथ समूह सुखकारी ॥
उत्तम कुल अरु तप अनुरक्ता । बसहिं बिप्र वेदन के बक्ता ॥
नाटक काव्य व्याकरण ज्ञाता । बहुतक वेदांती बिख्याता ॥
हरिमंदिर बहु बने बिशाला । सुंदर सुखद जटितमणिजाला॥
धवलधामध्वज सहितबिराजत। राजमार्गबिस्त्रितशुचिभ्राजत॥

दो० तापुर में हारीत कुल द्विज इक केशवनाम ।
करहिं यज्ञ नित वेद विधि शास्त्र ज्ञान अभिराम ॥
सो० निश्चल चित हरिभक्त सदाचार सद्धर्मरत ।
नहि इंद्रा आसक्त झूंठ क्रोध निंदा रहित ॥

देवपितर गुरु विप्रअराधहिं । थिर मतिसोंदृढव्रतनितसाधहिं ॥
युक्ताहार कर्म मिति भाषी । सबसुख सुलभ प्रजाअभिलाषी ॥
चंद्रग्रहणसुनि द्विजकुलदीपा । न्हान हेतु गये सिंधु समीपा ॥
विधिवतकरिअस्नानसवामा । पुत्रेष्टी मख किय अभिरामा ॥
अस्तुतिकरतधरणीधरिसीसा । जैजै यदुकुल मणि जगदीशा ॥
देवकिसुत देवेश जगतपति । दीजै पुत्र करत शरणागति ॥
जनवत्सल सेवक सुखदानी । भयेप्रसन्न भक्ति शुचि जानी ॥
स्वप्नांतर दियदरश कृपाला । हे द्विजवर ममजन श्रुतिपाला ॥
भयो प्रसन्न मानि तव सेवा । अब उर शोच तजौ द्विजदेवा ॥
भक्तविवशमैंश्रुतिविख्याता । ताते तवसुत ह्वैहौं ताता ॥

दो० सुनत स्वप्नासम प्रभुवचन देखि स्वामि अनुकूल ।
आनँद सिंधु मगन द्विज मिटे सकल उर शूल ॥
सो० जागि कह्यो तिय टेरि स्वप्न अनूपम प्रभुदरश ।
अमित भाग्य निज हेरि दंपति उर न समातसुख ॥

मगप्रकृत जिमि अंध अधीरा । नयनलाभ सुख लहै शरीरा ॥
तृषाविकल जिमि याचतपानी । स्वर्णपियायदेय कोउ आनी ॥
दुखित दरिद्रिअसनकी आसा । पारस मणि पावै अनयासा ॥
भोगत कठिन कर्म फलजोई । आकस्मिकहरिपदलहसोई ॥
ताते अधिक कोटिगुण दंपति । आनंदमग्न पायसुतसंपति ॥
सुख युत फिरिआयघर दोऊ । देखि प्रकाश चकित सबकोऊ ॥
कछुक दिवस बीते या भांती । आनंद सहित जायंदिनराती ॥
कांतिमती तनकांति प्रकाशी । भइसगर्भ आनंद की राशी ॥
अमितप्रकाश भवनमें छायो । मणिधरराज तासु उरआयो ॥
पुरी सकल सुख संपति छाई । सहजकठिन तिहुंताप नशाई ॥

दो० चैत्रमास रविमेष गत शुक्ल सुपक्ष पवित्र ।
तिथि पांचै सुरगुरुदिवस आर्द्रा शुभ नक्षत्र ॥
सो० मध्य दिवस सुखदाय परम रम्य ऋतुपति कलित ।
सुरसंपति दरशाय आनंद उमगत हसुहार्दजी ॥

दितितें प्रकटभये जिमिवावन । रघुपति कौशल्या उरपावन ॥
देवकि ते जिमि कृष्णमुरारी । जाविधि रोहिणि ते हलधारी ॥
त्योंहीं कांतिमती प्राचीतें । शेष निशेश भक्ति सांचीतें ॥
पूरणप्रेम सुधा श्रीपति सौं । वैदिकधर्म प्रकाश सुमति सौं ॥
कुमुदिनिजिमिप्रफुल्लितमहतारी । केशवसिंधु उमंग उरभारी ॥
पुरजन सुजन चकोर समाना । हृदयअमितआनंदअधिकाना ॥
खलदुर्मति सरसिजकुलनाना । तिनके ध्वंस तुषार निधाना ॥
जातकर्म विधिवतसवकीन्हो । विपुलदान महिदेवन दीन्हो ॥
पूजि पितृ गुरुजन परितोषे । दै न्योछावरि याचक पोषे ॥
भूतपुरी आनंद रसछायो । घरघर उत्सव बजन बधायो ॥

दो॰ सुनि भगिनीसुत जन्मथीशैलपूर्ण मुनि राय ॥
दरस तृषा नयनन वढी आये तहहरषाय ॥
सो॰ सकल सुलक्षण कोश तेज पुंज बालक लख्यो ॥
सवप्रकार निर्दोष अतिमानुष मानत भये ॥

अतिशयआनंद उर न समाई । पुनिपुनिपुलकगातमुनिराई ॥
उत्सवयुत द्वादश दिन वीते । भये सकल स्वजनन मन चीते ॥
तव श्रीशैलपूर्ण श्रुति नीती । करि आचार यथा कुल रीती ॥
पांचजन्य अरु चक्रसुदर्शन । वाहुमूल कीन्ह मृदुअंकन ॥
जनुपठये श्रीखगपति केतू । आयुधपति जनरक्षण हेतू ॥
पुनिमुनि धर्योविचारिविनीता । श्रीरामानुज नाम पुनीता ॥
मनहु रच्यो जलयान अवाधा । उतरनको भवसिंधु अगाधा ॥
देखि सुरूप तेज मय बालक । जेद्विज पुरवासी श्रुतिपालक ॥
कराहिं विचार चिन्ह शुभ देषी । है यहकोउ अवतार विशेषी ॥
बहुतक देखिअलौकिक शोभा । रहैं चित्र सम तन मन लोभा ॥

दो॰ कै ये सेनाधीशहैं अथवा है फणिराय ॥
परब्रह्म कै अवतर्यो कलिमल मोचन काज ॥
सो॰ सकल गुणन की पांति अंगअंग प्रतिराजहीं ॥
बाल अर्क की भांति दिनहीं दिन बाढत भ॰ ॥

क्षणक्षणप्रभुतनतेजप्रकाशयो। कलुषतिमिरिजगनभकोनाशयो॥
कलिउलूक सकुटुम्ब लुकान्यो। चारौ चरण धर्म प्रकटान्यो॥
श्रीपति किंकर सरसिज रूपा। भये प्रफुल्लित गात अनूपा॥
अकथनीय सो आनंद भारी। प्रतिक्षणलहत जो पितु महतारी॥
जेविज्ञान निरतहरिदासा। लखि शुभलक्षण अमित प्रकासा॥
केशव सौं कहकरि सुबिचारा। तवसुत अवशि शेषअवतारा॥
सोधि सुदिन केशव सुखबासन। कीन्हो सुतको अन्नपराशन॥
चौलकर्म अरु मौंजीबंधन। कीन्हो बिधिवत द्विजकुलनंदन॥
अष्टम बर्ष सुलग्न धराई। श्रुति उपदेश कियो द्विजराई॥
बिद्या धाम अबिद्या हारी। पढत मनुज इवि कौतुककारी॥

दो० षोडशाब्द वयबिशदलखि युत विद्यगुण ज्ञान॥
राकानिशि शोभित मनौ षोडशकला निधान॥
सो० श्रीकेशवबडभाग सोधि बिमल कुल व्याह किय॥
सुख संपति अनुराग अतिउत्सव किमिजाइकहि॥

कीन्हव्याह श्रुतिलोकबिधाना। तबनिजजन्मसफलकरिमाना॥
याविधि कछुक काल चलि गइऊ। उभयलोकसुखकेशव लहिऊ॥
किमि कहिजाहिंविभवयशताके। रामानुज सुंदर सुत जाके॥
सुतप्रभाव पूरी सब आसा। रही न कछु मनमें अभिलाषा॥
भयोहरिचरणसलिलमनमीना। नित्य बिभूति गवन तबकीन्हा॥
पितुबियोग संभव दुख भारा। प्रबल ज्ञान बल शेष निवारा॥
उत्तर कर्म यथा श्रुति कीन्हो। श्रद्धा सहित दान बहुदीन्हो॥
तहां कछु दिवस बसे सहसानन। उरअभिलाष ज्ञानसंपादन॥
लोगन मुख सुनिके यह बानी। है यादव पंडित अतिज्ञानी॥
तबतहं शास्त्र पढन के काजा। गवनबिचारकियोअहिराजा॥

दो० निजपुर बास त्यागि प्रभु कांचीपुर सुखदाय।
जननी अरु दारा सहित शुभदिन पहुँचे आय॥

सो० आनँद युत करिबास सकल सुपास सुलभ सदा।
यादव पंडित पास पढन लगे अति प्रीति युत ॥

इतिश्री० रामानुजअवतार कथनोनाम द्वितीयो अध्यायः ॥ २ ॥

निवसि तहां लक्ष्मणमुनि शेषा। तत्वज्ञानि प्रथम जिहिरेषा ॥
पढैं मुदित मिलि बालक यूथा। सात्विकआगम अर्थबरूथा ॥
तेजरूप लखि बुद्धि बिशेषा। यादवचकित जानिमनशेषा ॥
तबहि तहां भूपति की बाला। गही ब्रह्म राक्षसबिकराला ॥
मंत्रगुणी बहु नृपति बुलाये। तिनसौं अमित यत्न करवाये ॥
छुटत नहीं सो राक्षस घोरा। यादव कौतव नृपतिनिहोरा ॥
शिष्यन संग यादव तहं गयऊ। नृपबहुमानकरत तिहिभयऊ ॥
करि प्रणाम महलन लैजाई। राक्षस पीडित सुता दिखाई ॥
पढे मत्र यादव तिहि काला। मंत्रित करत भये नृप बाला ॥
सुमिरत जिनहि भूत वेताला। भजैं यक्ष द्विज राक्षसमाला ॥

दो० मंत्र पढत यादव निरखि कोप्यो राक्षस घोर।
करकटाप कीनो महा प्रलय जलद सम शोर ॥
सो० कांपि उठे द्विजदेव मलिन कांति मुखकी भई।
लखि राक्षस को भेव। मंत्र यंत्र भूले सबै ॥

यादव बिकल देखि भयभीता। बोल्यो राक्षस वचनअभीता ॥
नहिं मम बारण शक्ति तुह्मारी। बृथा मरो क्यों मंत्र उचारी ॥
तुमको नीके करिपहिचानौ। पुरबजन्म कथासबजानौ ॥
कौन पुन्यतुम्हद्विजतनलहेऊ। मैंकिहि पातक राक्षसभयेऊ ॥
यहसब कारण कहौ बखानी। तबजानौ तुम पंडित ज्ञानी ॥
बिप्रहिसुनि कछुउतर न आयो। डरपिसकुचि माहिशीसनवायो ॥
बोल्यो राक्षस गिरा गंभीरा। मैं जो कहत सुनहु धरिधीरा ॥
तुम नाहिं जानत पूर्व कहानी। हमहीं तुमसौं कहत बखानी ॥
प्रथम कहौं तुह्मारी सब बाता। मधुरांतक इक पुर बिख्याता ॥
पश्चिमदिश सुंदर सरसोहा। कमल बिचित्रदेखि मनमोहा ॥

दो० तिहि तट तुम गोधा भए बिप्र सुनौयह भेद ।
आये कोउहरिजन तहाँपारंगत सब वेद ॥
सो० करितडाक अस्नान हरि पूजन कीनोसुचित ॥
प्रेमसहित करि ध्यान अर्प्यो पाक वनायकछु ॥

सो प्रसाद द्विजभोजन कीन्हो । सहितबिधानआचमनलीन्हो॥
बहुरौं लै जूंठो पनवारा । तुह्मरे विवर निकट लै डारा ॥
तब तुम कढि बांबी ते तात्तन । खायो अन्न लगो जो पातन ॥
तासु पुण्य फल विप्रशरीरा । भये वेदपाठी मति धीरा ॥
अब तुम चहौ जु उत्तम लोका । नित्य निरामय अरुगत शोका॥
होउ समाश्रत रामानुज के।ज्ञानि शिरोमणि सज्जनध्वजके ॥
यह तव पूर्ब जन्म की करनी । अपनी कथा कहौं अब बरनी॥
ब्राह्मण बंश जन्म मैं लयऊ । निगमागम सबजानत भयऊ॥
मख आरम्भकियो सहनारी । वैदिक रीति सकल विस्तारी ॥
ह्वै गयो कछुक मंत्र को लोपा । रात्तस भयो तासु के कोपा ॥

दो० तबते प्रेत वरूथमिलि लोगनभय उपजाय ।
देश नगर विचरत फिरत कांची पहुंचो आय ॥
सो० लखी अनूपम बाल बिहरति सुंदर वाटिका ।
बिबस भयो तिहिकाल सँगही सँग तबते फिरत ॥

याके रूप सलिल मन मीना । भयो सुनौ द्विज देव प्रबीना ॥
बहुत मंत्र बादी मम आगे । आये ते सबही डरि भागे ॥
त्योंहीं जादव मंत्र तुह्मारे । निफल बीज जिमि ऊसर डारे ॥
पुरुषोत्तम तव शिष्य सुजाना । रामानुज गुण ज्ञान निधाना॥
ते मम मस्तक चरण छुवावैं । सुंदर निज पद उदक पियावैं॥
जोश्री मुखमोहिं देहिनियोगा । तुरतजाउंचलि ह्वै सुख योगा॥
सुनि रात्तस के वचन नृपाला । आनंद मगन भयोतिहिकाला॥
श्रीलक्ष्मणमुनिकेचरणनपरि।नारिसहितनिजदुखबरसानकरि॥
रत्ताहित बहु बिनय सुनाई । करुणामय उर करुणा छाई ॥

धरेचरण नृप जाके माथा । जिमि गौतमतिय शिररघुनाथा॥

दो० कृपासहित चरणामृतहु दीनो ताहि अनंत ।
जाउभलीविधि सौं चले कह्यो ताहि भगवंत ॥

सो० सुनिप्रभु बचन विनीत अतिशय सुखराक्षस लह्यो ।
भयो सो परम पुनीत त्यगी नृप कन्यातुरत ॥

निज तन सहित तजी नृप बाला। पाई दिव्यदेह तिहिकाला ॥
चढ़ि रबितेज यान ताही छण । गयोस्वर्गसेवितअपसरगण॥
नृपतिसुता तब सोहति कैसे । तजी दुष्ट ग्रह रोहिणि जैसे॥
परमानंद मगन नरनाहा । पूजेफणिपति सहित उछाहा॥
करतदंडवत अति अनुरागे । सुबरण भेट धरी बहु आगे ॥
यादवहू को करि सतकारा । दई द्रव्य बहु नृपति उदारा॥
यादव देखि फणीश्वर माना । अति अपमान आपनो माना॥
भूपति फणिपभेंट जो कीन्ही । सो प्रभुसब यादव कौ दीन्ही॥
तद्यपि ताहि अतिमत्सर बाढ़ो । राखो मनहिं न बाहिर काढ़ो॥
कियो बैर अति मूढ़ अचेतू । कांतिमती सुत सौं बिनु हेतू ॥

दो० कांति मती भगिनी बिमल द्विति वंती जिहि नाम ।
तासुतनय शुचि शुभग मति गोविदार्य्य गुणधाम ॥

सो० अति नर फणिप चरित्र सुनत भये चहुँ ओर शुभ ।
परम विशुद्ध विचित्र मगन भए आनंद रस ॥

बाढ़ी हृदयदरस अभिलासा । जननिहु प्रेख्यो सहितहुलासा॥
कांची पुरीतुरत चलिआये । रामानुज के दरशन पाये ॥
छवि सौं यादव निकट बिराजत । तेजपुंज जनुतनधरिराजत॥
रामानुजहु देखि निज भ्राता । आनंद सौं पुलके सबगाता॥
हर्ष समेत मिले दोउ भाई । निर्मलमतिअति प्रीतिबढ़ाई॥
प्रभुहि देखि गोविंद अनुरागे । तिनको संगसुख लूट न लागे॥
कांचीपुर बसि यादव पासा । पढ़त वेद भ्राता सहबासा ॥
एक दिवस यादव श्रुति अर्था । कियो कुमतिबशमूढ़ अनर्था॥
सो सुनि रामानुज उठिबोले । मृदुल प्रमाणिकबचनअमोले॥

सुनिये यादव वचन हमारा । अहै अर्थ विपरीत तुह्मारा ॥

दो० सत्य ज्ञानादिक बचन अरु सदेव इत्यादि ।
सदा ब्रम्ह गुणगण कहहिं श्रुति सब तत्व मस्यादि ॥

सो० सुनि फणीश के बैन लगे यादवहि शूल सम ।
करिखल तिरछे नयन बचन बाण छांडत भयो ।

छं० ममशिष्य कैशिक्षक कुमति खल मोहिसिखवत ज्ञानतैं । तवसदृशहूनहि ज्ञानमोकौ वेदविद अद्वैतमैं ॥ याभांति शठ कलिमल बिमोहित ज्ञानगत दुर्मति महा । विज्ञान दिनकर सहसमुखहि कुबचन खलबहुविधिकहा ॥

दो० छमाधाम रामानुज सुनियादव कटुबयन ।
उतरदियो नहि सहिलिये चलिआयेनिज अयन ॥

सो० अति विशुद्ध उर धाम श्रीपति के गुणगण बिमल ।
तिके आठौं याम अनुभव करत सप्रेम तहँ ॥

इतिश्री० राक्षसमोचनोनाम त्रितीयोध्यायः ॥ ३ ॥

एक दिवस यादव मति मंदा । करिइकांत कछु बालक बृंदा ॥
निजदुखितनाहिकहनशठलागा । मत्सर तन जनुधरे अभागा ॥
तुम सब जानत महिमा मेरी । जगतबिदित पांडित्य घनेरी ॥
जेते जग वेदांत सुजाना । मेरो सकल करतहैं माना ॥
कबहूं शास्त्र सभा के माहीं । मम अपमान भयो कहुंनाहीं ॥
प्रेत समीप मान मम गयऊ । रामानुज को पूजन भयऊ ॥
हमसौंपढिभयो शास्त्रसमर्था । कहअनर्थममकृत श्रुतिअर्था ॥
मम मत खंडन करत अबूझा । तबते मोहि शत्रुसम सूझा ॥
सुरगुरु सदृश सो बुद्धि निधानू । तेज पुंज जनुप्रकट कृशानू ॥
मत अद्वैत ज्ञानि कुल मंडन । जानि परत करिहै यह खंडन ॥

दो० यह चिन्ता नित दहत उर कीजै कौनउपाय ।
जाते ऐसे शत्रु को वेगि नाश व्है जाय ॥

सो० बोले बालक बृंद यादव मन रंजन वचन ।
क्यों न होहि मति मंद ऐसे खल के संग मिलि ॥

हमसम शिष्य अछत गुरुराजा । क्यों शोचत इतने के काजा

अवशि उपाय करेंगे सोई । जाते नाश शत्रु कोहोई ॥
सुनियादवको दुख कछु गयेऊ । बिषहि अमृत शठमानत भयेऊ॥
वहुरौं बोलो यादव पापी । श्रुतिवंचक खलमत्सर जापी ॥
हम जो बिचार कस्योयहिलागी । तुमसों कहैं कपटसब त्यागी॥
तीरथराज न्हान मिस कीजै । रामानुजहू कों संग लीजै ॥
तहां त्रिवेणी मधि लै जाई । रामानुज कौं देयं वहाई ॥
तीरथपति को अमित प्रभावा । निगमागम पुराण सब गावा ॥
ताते द्विज हत्या नहिं व्हैहै । बिनु प्रयास दुख द्वंद नशैहै ॥
लगे सराहन बाल बरुथा । जिमि रावणहि निशाचर यूथा ॥

दो० तवउन शिष्यन कौ पठै रामानुजहि बुलाय ।
बोलो खल छल वचन जनु छुरी खाँड लपटाय ॥
सो० रामानुज मति धीर काहे तुम आये नही ।
तुमतौ परम गंभीर शिक्षा त क्रोधित भये ॥

सब शिष्यन ते प्रियतुम हमकौ । ताते शिक्षा कीनी तुमकौ ॥
तुम नर वर प्रसिद्धिजग माहीं । यथा सुमेरु कामधुक आहीं ॥
पूरण बिद्या होय तुह्मारी । कृपा असीस अमोध हमारी ॥
तुह्मरे मिले बिना दिनराती । भयो शोच हमकौ वहु भांती ॥
बिष की भरी अमृत सम बानी । प्रभुप्रसन्न ह्वै सांची मानी ॥
सरल चित्त नित यादव पाईं । लागे पढ़न प्रथम की नाईं ॥
कछुक दिवस या भांति बिताई । कह बंचक छल प्रीतिजनाई॥
मकर मास प्रयाग अस्नाना । स्वर्गादिक दायक जग जाना॥
ताते हम शिष्यन के संगा । जैहैं माघ न्हान श्रीगंगा ॥
जो अनुकूल परै यह बात । तुमहूँ चलौ तौ नीकी ताता ॥

दो० सुनि प्रभु यादव के बचन जननी आयसु लीन ।
तीर्थ राज मज्जन करन गवन तासु सँग कीन ॥
सो० तहँ गोबिंद प्रबीन यादव चेष्टा देषि के ।
पराखि कुटिलता लीन चतुर भ्रात फणि राज के ॥

निश्चय करि यादव कुटिलाई । उपजी हृदय परम बिकलाई ॥

रामानुजहि इकान्त न पावैं । यादव कपट जो उनहिं जनावैं ॥
इकदिन विंध्याचल तट जाई । अकिलो रामानुज कौ पाई ॥
यादव जात अगारु देखो । तासु शिष्य इतउत नहि पेखो ॥
रामानुजहि सजग तबकीन्हो । यादव छल सबही कहि दीन्हो ॥
पुनिगोविंद यादव भय पाई । मिलेजाय तिहि तुरतहि धाई ॥
गोविंदार्य बचन सति जाना । मारग छांडि फणीश सुजाना ॥
बैठिरहे इक तरु तर जाई । तब हरिकछु प्रभुता प्रगटाई ॥
ताही क्षण वर्षा भईभारी । भीजे यादव भये दुखारी ॥
शिष्यन सहित कंप तन भयेऊ । अस्ताचलहि दिवाकर गयेऊ ॥

दो० गोविंद आवत देखिके कह यादव मृदू बात ।
रामानुज कौ छोडिके काबिधि आये तात ॥
सो० कह गोविंद तेहि पाहीं हम जानी तुम संगहै ।
मिलेनही मगमाहिं रामानुज हमकौ कहूँ ॥

यह सुनि यादव शिष्य बुलाये । खोजन रामानुजहि पठाये ॥
ढूढो बन जहं तहं सब मिलिके । मिलेन तब आये तहं चलिके ॥
गुरुसौं सब मिलि आय पुकारे । बिपिन सघन खोजत हम हारे ॥
अंधियारी निशि बन के माहीं । रामानुज कहुं पाये नाहीं ॥
यादव सुनि शिष्यन की बानी । मनमैं दुष्ट अमृत सम मानी ॥
छल करिखेद करन खल लागो । माया हत मति मंद अभागो ॥
जान्यो जीव जंतु धरि खायो । चिंता मिटी भयो मन भायो ॥
मनहीं मन सुखमानत भयेऊ । बिनु औषधहि रोग सब गयेऊ ॥
सुख सौं सोयो पायं पसारी । तीर्थाटन फल हृदय बिचारी ॥
गोविंदार्य जानै सब भेदा । ताते चित आनै नहि खेदा ॥

दो० मिले न बन केशव सुअन सोसुनि गोबिंद राज ।
श्रीश कृपा मापत भये जान्यो भयो सुकाज ॥
सो० करि हैं कृपा कृपाल भक्तराज फणिराज पर ।
सदा प्रणत प्रतिपाल जन रक्षा करि हैं अवशि ॥

इतिश्री प्र० रामानुज बिसर्जन नाम चतुर्थोध्यायः॥४॥

श्री रामानुज बुद्धि निधान । शुन्याबिपनलखि श्रीपति ध्यान ॥
लागे करन सप्रेम महामति । आनंद युतनिरभर अनन्य गति ॥
भक्ताधीन प्रणत सुखदाता । श्री समेत आये जनत्राता ॥
व्याधा रूप धरे धनुबाणा । बांधे गोधा अंगुलित्राणा ॥
पहिरे पीतांबर सुठिनीको । पादत्राण भावतो जीको ॥
लखि दंपतिहि चकित फणिराया । मृदुल मनोहर बचन सुनाया ॥
अहो व्याध तुमको मोहि कहऊ । नारि समेतजात कहं अहऊ ॥
यहां कौन कारण तुमआये । तब दंपति यमि बचन सुनाये ॥
त्तेत्र सत्यब्रत कौ हमजाहीं । तुमहि देखि अचरज मन माहीं ॥
मनुज रहित यह बिपिन कठोरा । जहं तहं फिरहि व्याघ्र मृगघोरा ॥

दो० ऐसेदुर्गम बिपिन मधि फिरत अकेले तात ।
कौन हेतु करि सो कहौ मोहि बुझाय सब बात ॥
सो० जात कहाँ तुम बीर भयो कहाँ ते आगवन ।
बाल बैस मति धीर बन बिलोकि तुम डरत नहिं ॥

व्याध रूप श्रीनाथ बचन सुनि । ह्वै प्रसन्न बोले लक्ष्मण मुनि ॥
कांची ते प्रयाग हम जाईं । काहु हेतु बिलमे या ठाईं ॥
है अबयह बिचार मन माहीं । कांची नगरी को फिरिजाहीं ॥
अकिले मारग में दुख होई । ढूंढत संग मिलै जो कोई ॥
सुनि फणिशके कोमल बैना । व्याध रूप करुणा के ऐना ॥
परम प्रीति सँग लिये अनंता । सत्य ब्रत्तको चले तुरंता ॥
एक कोशचलि अथयोदिनकर । तहँ दंपति सोये इक तरुतर ॥
बैठे तहाँ शेशहु तरु छाहीं । गुणत श्रीश गुणगण मनमाहीं ॥
जागि जगजननि कहति मृदु बचना । कियेव्याध नारीकी रचना ॥
हे पिय प्यास लगी मोकौअति । दीजैजल सुनि कहत जगतपति ॥

दो० सुनि विशाल नयनी बचन सलिल बिमल या ठाउँ ।
है निकटहि यद्यपि तद्यपि आधी निशि किमि जाउँ ॥
सो० खोजत मिलै न कूप छायो तिमिर दशहुँ दिशन ।

उदय होत दिन भूप जल अनूप तोहिं देहुँगो ॥

मुनि फणीश बोले मृदुवानी । शृद्धा भक्ति प्रीति रस सानी ॥
मैं निश्चय कीह्नौं मन माहीं । लोकेश्वर तुम मानुष नाहीं ॥
देखि विपति रक्षा हित लागी । आये मोहि करन बड़भागी ॥
मैंहूँयह अवसर निशि माहीं । जल दीवेकौ समरथ नाहीं ॥
प्रातकाल मिलिहै जहँ पानी । दीह्नौं तुमहिं खोजिकै आनी ॥
मधुर वचन इमि कहिफणिराई । जागतहो सो रैनि बिताई ॥
प्रात गये रामानुज धीरा । सालक नाम कूपके तीरा ॥
त्रिमल सलिलकर अंजुलि भरिकै । तीनिबार प्यायोहित करिकै॥
पुनिअंजुलि भरि इतउत देखो। नहिंतहँ ब्याधन ब्याधिनिपेखो॥
निकसि जलाशयतें फणि ग्यानी । चिंता बहुत चित्तमैं आनी॥

दो० चले तहाँते देखत देश नगर बहुभाँति ।
अचरजलखि मारग शुभग हर्ष देषि जनपाँति ॥
सो० देखि नगर रमनीय लोगन सों पूँछतभये ।
यह पुर अति कमनीय हमहिंबतावहु नामलै ॥

क्षेत्र सत्यव्रत वेद बखाना । भुक्ति मुक्ति दायक जगजाना ॥
अति उतंग गोपुर चहुंपासा । निकटपयस्वनिसरिसुखरासा ॥
पुर समीप सुंदर अमराई । राजति नंदन सरिस सुहाई ॥
सुनि यह चकित फणीश्वर ज्ञानी । देवराजमहिमा उरआनी॥
पुर पहिचानि हर्ष उरछाये । आनंद सौं निज मंदिर आये॥
बंदि मातु सब कथावखानी । तिन लाये उर भरि दृगपानी ॥
पुरवासिनहु सुनी यहबाता । भये सब रोष हर्ष युत गाता ॥
हरिप्रभाव माया बलवाना । नूतन जन्म फणिपको माना॥
ईश निहोरि कहति पुनि अंबा । मुहिनितश्रीशकृपाअवलंबा॥
जाते जन्म भयो सुत तेरो । दिये दरस यह दुख निरवेरो ॥

दो० सुनहु वत्स अब वचन मम या पुर सज्जन एक ।
कांचीपूरण नामशुभ पूरण भक्ति विवेक ॥

सो० शम दमादि गुणयुक्त पायो जन्म चतुर्थकुल ।
सन्तत जीवन मुक्त बरदराज कैंकर्य्य रत ॥

अति अनन्य सेवहिं बरदेशहि । परमप्रीति बशकियो रमेशहि ॥
सबके अंतरंग भगवाना । तिनकौं अंतरंग निज माना ॥
तिनके निकट कहौ सबजाई । मारगको वृत्तान्त सुनाई ॥
सुनि सप्रेम जननी की बानी । भये प्रसन्न धराणिधर ज्ञानी ॥
प्रीति सहित तहँ गये तुरन्ता । कह वृत्तांत सबिनय अनंता ॥
सुनि मुनि परमप्रीति युत बोले । बचनमधुर जनु रत्नअमोले ॥
सुनियेपरम प्राज्ञरामानुज । अतिप्रसन्न बरदेश चतुरभुज ॥
हैं तुमपर ताते यह लीला । करी प्रगट जन रक्षण शीला ॥
तुमकौं आपति मांहि निहारी । रमा सहित दियेदरश अघारी ॥
पान कियो जलयाचि जो तुमसौं । ताकोभावसुनौतुम हमसौं ॥

दो० तुमकौं प्रभु आज्ञादई बड़अधिकारी जानि ।
सालक ते जल ल्याय नित अर्पण कीजै आनि ॥
सो० हैं निकटहि सो कूप बरदराज मनभावनो ।
है स्वरूप अनुरूप भाग बिवश आज्ञाभई ॥

अल्पकाल ल्याये पुर माहीं । सो कछु प्रभुकौ अघटित नाहीं ॥
सुनि फणीश मृदुबचन उचारा । वाक बिभूषणबचनतुम्हारा ॥
खोजत ब्रह्मादिक नितजिनकौ । तुमस्वभक्तिबशकीन्होतिनकौ ॥
ते तुम कहत परम हितबैना । को अस मूढ़ जो मुदितकरैना ॥
ऐसे कहि निज सदनहिं आये । माता प्रतिमुनि बचनसुनाये ॥
पुनि सप्रेम प्रति दिवसफणीशा । कंचनकलशराखिनिजशीशा ॥
जल पुनीत सालक ते भरहीं । बरद राजपद अर्पण करहीं ॥
ध्यावहिं नागाचलपति चरना । तरुण अरुण सरसीरुह बरना ॥
करहिं संग नित आर्य जननको । जीवनहरिगुणशीलमननको ॥
बिगत दुःख तिनके उपदेशा । सहज ज्ञान सुख मंदिर शेषा ॥

दो० बरदराज कैंकर्य्यपथ सावधान मतिधीर ।
भये प्रकाशित सत्यब्रत सुयश सिंधु गंभीर ॥

सो० कीरति परमपुनीत देशिकेंद्र फणिराजकी ।
मन बुधि वचन अतीत प्राकृत नर किमि गावहीं ॥

इतिश्री प्र० सालक कूप जल समर्पणोनाम पंचमोध्यायः ॥ ५ ॥

श्री लक्ष्मणमुनि शुचि अंतरगत । लोकविदितहरिपद सेवारत ॥
कांचीपुरी बिराजत ऐसे । नित्य बिभूति सहसमुख जैसे ॥
रंगधाम पावन तिहि काला । यामुनार्य्यमुनि वर्य्यकृपाला ॥
सकल वेद वेदान्त सुजाना । सन्यासाश्रम थित भगवाना ॥
परबादी बरूथ भयकारी । विष्णु सिंहासनांश अवतारी ॥
सत्वादिक गुण गण के सागर । शरणागत रक्षण अति नागर ॥
श्रीवैष्णव सिद्धान्त के त्राता । भये तहां सकल लोक विख्याता ॥
बुध समाज इकदिवस कृपाला । लखि शठारिकृत ग्रंथ बिशाला ॥
शिष्यन प्रतिकह करि सुविचारा । भूतलभयो शेष अवतारा ॥
तिनकौं सब मिलि ढूढौ जाई । लक्षण देखि कहौ मोहिं आई ॥

दो० देखौ बालक हरिभगत शुभलक्षण करि युक्त ।
सकल शास्त्र को तत्व बित गुण समतादि सँयुक्त ॥
सो० बोलत सहित बिचार मधुर सत्य प्रियवचन बर ।
सज्जन पूजनहार सदाचार सन्तत निरत ॥

गुरू निदेश सुनिचले द्विजेशा । खोजत तिनकौं देश बिदेशा ॥
कांचीपुर जब पहुँचे आई । चकृत भये देखि फणिराई ॥
सुने बहुरि गुणग्राम पवित्रा । अति नर सकल अपूर्व बिचित्रा ॥
जे मुनिनायक चिन्ह बताये । ते सब तिनमैं पूरण पाये ॥
उलटि सो गये रंग पुर माहीं । कहीजाय यामुन मुनि पाहीं ॥
सुनि मुनि विशदचरित फणिपतिके । भूषण ज्ञानविरागसुमतिके ॥
उपजीप्रीति पुनीतम गाढी । दरश लालसा उर अति बाढी ॥
रह्योरोग वशतन तिहि काला । ताते गवन न कियो कृपाला ॥
रह्यो बीच यादव आख्याना । सो अब सब मैं करौं बखाना ॥
ह्वै है आश्रत फणिपति चरणन । ताते करौं चरित सब बरणन ॥

दो० तीरथपति मधि जायके मकर मास करि वास ।
शिष्यन युत मज्जन करत अरुणोदय सुखरास ॥
सो० तहँ गोबिंद कर बाम आयगयो शिवलिंग इक ।
आकस्मिक अभिराम करत निमज्जन देवसरि ॥

गोबिंद उर अति अचरज आयो । तुरतहि सो गुरू कौ दिखरायो ॥
गोविंदकर शिव लिंग निहारो । यादव या बिधि बचन उचारो ॥
मकरस्नान प्रयाग प्रभावा । बहु बिधि वेद पुरानन गावा ॥
विश्वनाथ सेवक सुखदाई । हैं तुम पर अनुकूल अघाई ॥
पुनि तहँ के सब तीर्थ अन्हाये । ह्वै कृतकृत्य सत्यव्रत आये ॥
तब यादवकी आयसु पाई । गोविंद काल हस्तिपुर जाई ॥
सुरसरि मधिशिवलिंग जो पायो ।बिधिवत तिहिअभिषेककरायो॥
हितयुत नमन रुद्रकौ कीन्हो । भस्मादिक धारण ब्रतलीन्हो ॥
पूजत शिव नित सहित हुलासू । सुखसौं करनलगे तहँ बासू ॥
यादव समाचार सब पाये । फणिपति जिमि बन ते घर आये॥

दो० भयो चकित सुनि पथ कथा श्रीपति बिमल चरित्र ।
भय उपजी उर में समुझि निज करतब अपवित्र ॥
सो० बुरी करी मैं बात बैर कियो फणिराज सौं ।
मन डरात पछितात कृपापात्र लखि श्रीश के ॥

पुनि मनमैं शंका यह आनी । इन के बैर होय ममहानी ।
तब पठये निज शिष्य बसीठी । आय कहीं बातैं तिन मीठी ॥
रामानुज अति सरलसुभावा । ऐसेहु अघ न हेय नियरावा ॥
कोपहिं देखि धर्म की बाधा । गिनहिं न कोटिननिजअपराधा ॥
धरी न मन यादव कृत खोरी । गये तासु के निकट बहोरी ॥
देखा अन्य वेद वित नाहीं । यादव समकोउ वा पुरमाहीं ॥
लागे पढ़न शास्त्र मन लाई । बरदराज कैंकर्य्य बिहाई ॥
आचारज मूरति फणिराई । निगमागम महिमा दिखराई ॥
जिनते प्रगट स्वार्थ परमारथ । ईश्वर जीव स्वरूप यथारथ॥
जड़ चेतन को भेद लखाई । शेषी शेष भाव प्रगटाई ॥

दो० ज्ञान भक्ति वैराग्य पथ सारासार विचार ।
जानिजाय ज्ञातव्य सब वेद शास्त्र के द्वार ॥
सो० ज्ञानसिंधु भगवन्त सब बिधि परिपूरण सदा ।
महिमा जासु अनन्त श्रुति प्रभाव दिखरायऊ ॥

इति श्रीप्र०गोविन्दस्यकालहस्तिपुरनिवासोनामषष्ठोध्यायः ६ ॥

श्रीयामुन मुनिबर तिहि काला । उर फणीश दरसानि बिशाला ॥
रंगधाम ते शिष्यन साथा । आये जहाँ वारण गिरि नाथा ॥
कांचिपूर्ण मुनि सुनत अनन्दे । आगे चलि देशिक पद बन्दे ॥
पुरजन सहित पूजि हरखाये । बरद निकट आदरकरि ल्याये ॥
देखि मुनीश देव बरदायक । श्रीवल्लभ भू नीला नायक ॥
भक्तवछरुकंजारुण लोचन । मुखछबि राकाशशि मद मोचन ॥
मृदुल गात रबितेज बिशाला । शंख चक्रधारी जनपाला ॥
आनंद मग्न प्रदक्षिण दीन्ही । बंदि यथामति अस्तुति कीन्ही ॥
मंगल बहुरि करन मुनि लागे । देव दरस लहि अति अनुरागे ॥
जय गजगिरिबासी मधुमर्दन । जयजय भक्तानंद बिवर्द्धन ॥

दो० जय वैकुण्ठनाथ हरि बिश्वरूप सुख सिन्धु ।
परब्रम्ह परमात्मा जयति प्रणत जन बन्धु ॥
सो० पीतवसन अभिराम धृत किरीट कुण्डल रुचिर ।
कंस बैरि घनश्याम तुम्हरो मंगल होय प्रभु ॥

या बिधि मुनिबर मंगल करिऊ । तीर्थादिक सादरशिरधरिऊ ॥
पुनिआगे पुर गवन बिचारन । रामानुज दरशन के कारन ॥
ताहीक्षण यादव तहँ आयो । शिष्य समूह संग सबल्यायो ॥
रामानुजहू लीन्हे साथा । दरश करन हित करि गिरिनाथा ॥
द्विज शिवभक्तन आवत देखो । पूँछा मुनिबर मर्म बिशेषी ॥
कांची पूर्ण कहत गुरु पाहीं । एक दंड जाके करमाहीं ॥
सबते आगे आवत जोई । कहियत यादव पंडित सोई ॥
सर्वशास्त्रवित स्वमत स्थापक । बुद्धिवान परपक्ष बिनाशक ॥
याही के प्रति कांतिमतीसुत । पढ़त शास्त्र वेदांत प्रीतियुत ॥

शिशुनबीचबिकसित दृगअम्बुज । वे देखिये आवतरामानुज॥

दो० बालसखा करकर कमल उर भुज नैन विशाल ।
रत्नजटित कुण्डल श्रवण ऊर्द्ध पुंड्र शुभ भाल ॥
सो० तनु कटि नाभि गँभीर कंबु कंठ पूर्णेंदु मुख ।
वृषभकन्ध मति धीर चिक्कन कच बिंबोष्ठ मृदु ॥

समशुभ अंगसचिक्कण बरणा । स्वेतबसनकटिबिमलउपरणा ॥
ब्रह्मसूत्र कटि सूत्र बिराजत । पूर्ण ज्ञान जनु तनधरि राजत ॥
पुनि फणीश बनचरितसुहायो । कांचिपूर्ण गुरुबरहि सुनायो॥
सुनि मुनि प्रेम मगन भये भारी । सन्मुख मूरति मंजुनिहारी॥
लोचननलिन कि सवतन लोचन।भयेदेखिफणिपतितममोचन ॥
सम्भाषणहितमनअभिलाष्यो। कुसमयजानिनप्रगटप्रकाश्यो॥
दुर्ज्जन सभा मध्य किमि जाऊं। नहिं प्रतीत आवैंजु बुलाऊं॥
भो बारणगिरिनाथ कृपाला । तुह्मरी कृपा मूक बाचाला ॥
नर पाँगुरे वेग युत धावैं । बंध्या संतत संतति पावैं ॥
नयन लाहु लहि अंधसुखारी । बधिर सुनहिं प्रभुकृपा तुह्मारी॥

दो० कमलनयन कमलापती वैद्य भीम भवरोग ।
रामानुज कौ स्वमत मधि तुम थिर थापन योग ॥
सो० याविधि विनय सुनाय रामानुज विज्ञान हित ।
गवन कियो मुनिराय रंगधाम शिष्यन सहित ॥
दो० रंगी सन्मुख प्राप्त ह्वै फणिप उदय के काज ।
कीन्हो रत्नस्तव बिशद यामुनमुनि गुरुराज ॥

इतिश्री प्र० रामानुजदरशनार्थकांचीप्रतियामुनाचार्य्या
गमनं नाम सप्तमोध्यायः ७ ॥

यहां फणीश प्रथम की नाईं । पढ़त शास्त्र नित यादव पाहीं ॥
एक दिवस सोकुमतिअभागा । शिष्यनप्रतिश्रुतिबरणनलागा॥
अबिहितअर्थतासुसुनि कानन । खेद खिन्नमन भये सहसानन॥
मरदत रहे तेल तिहि गाता । भयो दृगन ते अश्रु निपाता ॥
जाय परे तिहितन अति ताते । तेल बुंद जनु दीप शिखाते॥

चौंकिचकित चितयो मुख घाईं । देख्यो भीजो आंसुन माहीं ॥
शोचहेतु पूछयोतब हित सौं । बोलेफणिपतिसरल सुचितसौं ॥
श्रुतिकप्यासअपार्थश्रवनसुनि । बहुतक्लेशमोहिभयो हृदयगुनि ॥
क्रोध अनल जरि बोल्यो पापी । रे रे दुर्मति वृथा अलापी ॥
शुद्ध अर्थकहु तैं मम आगे । अर्थ पुनीत कहन प्रभु लागे ॥

दो० शरद नीर गँभीर भव प्रफुलित रबि कर पाय ।
ऐसे सरसिज दल सदृश श्रीपति नयन स्वभाय ॥
सो० याबिधि अर्थ पुनीत करिबो बुधजन कौ उचित ।
आपु कहत अविनीत व्याख्या श्रुति कप्यास की ॥

अतुल तेज हरि शोभा धामा । षडैश्वर्य्य पूरण अभिरामा ॥
कपि आसन सम ताके लोचन । कहतआपु मैं सीदत शोचन ॥
बचन पुनीत सत्य रस पागे । भ्रम बश ताहि शूल सम लागे ॥
भयो सो कोपवंत अति भारी । कहन लग्यो दुर्बचन प्रचारी ॥
दुर्मार्गी मतिमंद अभागे । वचन असंगत कह मम आगे ॥
मम सन्मुख ते उठि शठ जाई । बार बार खल कहो रिसाई ॥
तब फणीश मन कियो बिचारा । त्यागयोगयहशठनिरधारा ॥
चलेतुरततिहिताजिगुणखानी । जिमिरावणहिं बिभीषणज्ञानी ॥
कांचीपूर्ण निकट चलि आये । तिनसौं सब वृत्तांत सुनाये ॥
उनहूं तासु त्याग शुभ कहेऊ । रामानुज मनआनद लहेऊ ॥

दो० परम प्रेम युत हेमघट शालकूप जल ल्याय ।
श्री देवेश कृपाल पद अर्पण कीन्हो आय ॥
सो० यादव कौ परित्यागि करिगिरि नायक पद कमल ।
भृत्य बृत्य अनुरागि आनद युत शोभित भये ॥

इतिश्री प्र० कप्यासश्रुत्यार्थबिचारोनामाष्टमोध्यायः ८ ॥

श्री यामुन मुनि बर्य सुजाना । कीन्हो अस्तव रत्न बिधाना ॥
हरि स्वरूप गुण रूप अपारा । भलीभांति करि कियोबिचारा ॥
मंथन करि जनु निगमपयोधी । लीन्हे काढ़ि रत्न सुठि शोधी ॥
तहँ पुनि फणिपचरित्र सुहायो । लोगनमुखसुनिआनंदपायो ॥

त्यागि कियो यादव कारनेमा । सेवत गजगिरि नाथ सप्रेमा ॥
महापूर्ण प्रिय शिष्य सुजाना । ज्ञान भक्ति वैराग्य निधाना ॥
तिनसौं कहयामुनमुनि ज्ञानी । जाऊ देवनायक रजधानी ॥
रामानुज सन्मुख हरिआगे । यह अस्तोत्र पढौ अनुरागे ॥
चले विप्र गुरु आयसु पाई । कांचीपुरी वेगि नियराई ॥
लखिकर शैल हर्ष उर छायो । वरदराज को दरशन पायो ॥

दो॰ करिदण्डवत सप्रेम मुनि अस्तुति मति अनुसार ।
तीरथ अरु शठ कोपलै करि प्रसाद स्वीकार ॥
सो॰ रामानुज वृत्तान्त कांचीपूरण मुख विशद ।
सुनतभयो चितशान्त गुरु वांछित संभव समुझि ॥

पुनि रामानुज आवतजानी । पढनलगे अस्तव मृदुबानी ॥
सुनत फणीश प्रेम पुलकाने । विस्मय हर्ष सिन्धु मगनाने ॥
पुनि धरिधीर निकट चलिआये । पूरण मुनिप्रति बचन सुनाये ॥
अनुपम यह अस्तोत्र नवीना । को हरिप्रिय जिन निर्मित कीना ॥
रंगधाम यामुनमुनिराया । श्रुति बेदान्त पार जिनपाया ॥
पांच संसकारन करि संयुत । सदाचार दृढ शास्त्र तत्वयुत ॥
सद्गुण निधि अक्रोध इंद्रिजित । बिष्णुभक्त सन्यासाश्रमथित ॥
तिन यह बिशदस्तव निर्मयेऊ । सुनत फणिप अतिआनद लहेऊ ॥
उर उपजी अतिशय अभिलासा । यामुनार्य दरशन सुखरासा ॥
कहत निहोरि पूर्ण मुनिपाहीं । चलि हैं हमहुँ रंगपुरमाहीं ॥

दो॰ पूरणमुनि के सँग चले रंगराज के क्षेत्र ।
यामुन दिनकर दरश कौ तृषित जलज युग नेत्र ॥
सो॰ किय रंगेश बिचार भये समागम दुहुन के ।
ममलीला संसार नष्टहोय बेगिहि अवशि ॥

रंगनाथ यमि कियो विचारा । तव मुनीशप्रति अर्चकद्वारा ॥
आज्ञा प्रगटकरत भये श्रीशा । परमधाम अवजाउ यतीशा ॥
कह मुनि अवशि आठदिन बीते । जैहौं प्रभु परधाम सप्रीते ॥
यमि रंगेशहि बचन सुनाई । निज मठ कौ आये मुनिराई ॥

रामानुज आगवन विचारत । कांचीपुरकी ओर निहारत ॥
यामुनार्य योगींद्र प्रवीना । सबप्रकार श्रीपति आधीना ॥
मन अभिलाष न पूरत जाना । करत भये तब गुरुपद ध्याना ॥
सो अभिलाष होइ किमि पूरी । सर्वेश्वर जिहि कियचह दूरी ॥
रामानुज पूरण मुनिसंगा । आये जहँ कवेरजा गंगा ॥
रेणु उडात दूरिते देखी । द्विज भागवत भीर बहु पेखी ॥

दो० पूछा मारग जनन सौं दुहुन तासु को हेतु ।
तिन कह यामुन तनतज्यो पर्मधर्म के सेतु ॥
सो० तिनको मृतक शरीर गर्तस्थापन करत द्विज ।
सुनि भये युगुल अधीर दुख मूर्छित भूतलपरे ॥

देह बिसारि परे महिदीना । जनु युग सुरतरु मूल बिहीना ॥
बहुत कष्ट सौं तब पूरणमुनि । निज मन धीरजधरो ज्ञानगुनि ॥
लगे सिखावन शेषहि ज्ञाना । तात श्रीश इच्छा बलवाना ॥
दुखसुखबिछुरण मिलनमरणभव । हरिकरतव तिहि मिटन असम्भव
कांचीपुरी तजी जिनलागी । देवराज पद सेवा त्यागी ॥
ते मुनिवर तुम देखि न पाये । बीचहि श्रीपति धाम सिधाये ॥
अब तजि शोच चलौ तहँ तबलौं । गर्तस्थापन होय न जबलौं ॥
न तरु यतीश शरीर मृतकहू । किये बिलम्ब देखि नहिसकहू ॥
यौं समुझाय फणिप भुजभरेऊ । महाप्रलय जनु दिनकर परेऊ ॥
पंकमग्न देखिये जिमि करिवर । ज्यों त्यों धीरज धस्यो धरणिधर ॥

दो० चले युगल आतुर तुरत मुनि तन देख्यो आय ।
मगन भये दोउ शोकसरि कह्यो शेष बिलखाय ॥
सो० सुजनन को सतसंग छुद्र मनुज नहिपावहीं ।
मुनिनायक को संग तातें हम पायोनहीं ॥

जो मोकौ मिलते मुनिराई । देत प्रकट सोपान बनाई ॥
देह अछत मृतु मण्डलबासी । होते श्रीपति नगर निवासी ॥
पुनि मुनिकर अंगुलि त्रयदेखी । भये चकित आकुंचितपेखी ॥
पूछा हेतु कह्यो तब सबही । प्रथम न रहीं भईं इमि अबही ॥

ताको कारण हम नहि जानै । तुम सन्मुख कहिकहा बखानै ॥
देखि प्रकाश कहत सब लोगू । तुमही कारण जानन योगू ॥
सुनिफणीश विप्रनकी बानी । मुनि इच्छा लीन्ही मनजानी ॥
बोले बचन स्वधारस बोरी । मुनि नायक पदपद्म निहोरी ॥
प्रभुमन होय कहत मैं जोई । खोलि देउ अंगुरी सुनि सोई ॥
ह्वैहौं मैं श्रीपति मत आस्थित । पुनिजग मैं जे मनुज ज्ञानगत ॥

दो० तिन्है पंच संस्कारकरि सहित द्रविड बेदान्त ।
प्रपदन धर्म्म निरतकरि कलि कुचालितै शान्त ॥

सो० रक्षाकरि सब काल मुनिवर इच्छा पूरिहौं ।
सुनत मुनीशकृपाल खोलिदई इक आँगुरी ॥

बोले बहुरि फणीश्वर ज्ञानी । मुनिबर हार्द हृदय निज जानी ॥
निर्मित करि श्री भाष्य पुनीता । तत्व ज्ञान विसिष्ट बिनीता ॥
सकल अर्थ पूरण सुखकारी । ह्वैहौं जगत जनन दुखहारी ॥
सुनि मुनि द्वितिय कामना पूजी । खोलि दई तब अंगुलि दूजी ॥
बहुरि फणीश कहत मृदुबानी । भये पराशर मुनि बिज्ञानी ॥
ज्ञान भक्ति धन परम उदारा । अगिणितसद्गुणसिंधुअपारा ॥
करिजीवनपर कृपा अपर्मित । कियो पुराण रत्न जिननिर्मित ॥
चिद चित ईश स्वभाव बिभागा । बरननकियोसहितअनुरागा ॥
काहू वैष्णवको सोई नामा । करिहौं नामोद्धारण सामा ॥
बचनबिशदरामानुजकोसुनि । सबबिधिभयेकृतकृत्यमहामुनि ॥

दो० तीजी अँगुरी हर्षि तब दीनी तुरत पसारि ।
चकितभये तहाँ सकल जन चरितबिचत्र निहारि ॥

सो० देखो पूरण ज्ञान अतुल प्रभाव अनूप गुण ।
मूरति तेज निधान पुरुषोत्तम मानत भये ॥

शिष्यन यामुन तनको तात्तन । कीनो बिधिवत गर्तस्थापन ॥
रामानुज बिप्रन शिरनाई । कह मोहि भयो प्रमाद अघाई ॥
यामुनार्यमुनि वैष्णव राया । सो बिवेक मम उर नाहिं आया ॥
अब मोको कर्तव्य जो होई । कहौ बिचारि सबै मिलि सोई ॥

कहत बिप्र तुम पूरण ज्ञाना । हौ कृतकृत्यफणींद्र सुजाना ॥
रंगराज तिहुं लोक उजागर । भक्त बछल करुणा गुणसागर ॥
चलि कै तिनके दरशन कीजै । कछुदिन बसिसेवा सुखलीजै ॥
कांचीपुर जायये तब फिरिके । कहत बिप्रसब आदरकरिके ॥
कह प्रभु यह पुर तज्यो मुनिंदा । मोहि न रुचतबासद्विजवृंदा ॥
रंगनाथ लोकेश्वर यद्यपि । उनको दरश करौं नहि तद्यपि ॥

दो० मुनि बियोग संभूत दुख कारण ताके सोइ ।
ऐसे निर्दय को दरश करत न मम मन होइ ॥

सो० इमि रिस बचन सुनाय अन्तर प्रेम स्वधापगे ।
बिप्रन कौ शिरनाय कांचीपुर गमनत भये ॥

दो० तहँ पयसरित अन्हायकरि नित कृति पुनि बर देश ।
बंदन अस्तुति करि बहुरि निज ग्रह कियो प्रवेश ॥

इतिश्री प्र० यामुनाचार्य अंतिमदशायांतस्यकुंचितांगुलिमो चनंनामनवमोध्यायः ९ ॥

ब्राह्मि मुहूरत उठ ज्ञान निधि । पूरब संध्या कीन यथा बिधि ॥
कांचीपूर्णहि बिलखि सुनायो । यामुन मुनबरहरि पदपायो ॥
यहसुनिकेमुनिभये बिहाला । गुरुबियोगमणिबिनुजिमिब्याला ॥
बहुरि ज्ञान बलशोक निवारी । बोलि बिप्र वैष्णव हितकारी ॥
शिष्यकृत्य गुरुबर सेवाहित । करिवेद बिधिसौं सादरचित ॥
सेवतभये पुनिकरि गिरिनाथा । प्रीतिसंभाषणफणिपतिसाथा ॥
जल कैंकर्यकरत लक्ष्मणमुनि । पुनिकांचीपूरण प्रभाव गुनि ॥
अंतरंग कमला नायक के । परम समीपी सुखदायक के ॥
गुरु करि मानत भये उर अंतर । उग्रप्रेम मनराखि निरन्तर ॥
शेषअन्न रुचि करि फणिराजा । कियोनिमंत्रण भोजन काजा ॥

दो० करि अनुमान जानि मुनि शोचत निज मन माहिं ।
जाउँ न तौ फणिपति दुखित होय अकाज जो जाहिं ॥

सो० पुनि उनकी रुचिकाहिं पालनकरिबो जानि शुभ ।
कहतभये तिनपाहिं आयसु तव मम सीस प्रभु ॥

ताको कारण हम नहि जानै । तुम सन्मुख कहिकहा बखानै ॥
देखि प्रकाश कहत सब लोगू । तुमही कारण जानन योगू ॥
सुनिफणीश विप्रनकी बानी । मुनि इच्छा लीन्ही मनजानी ॥
बोले बचन स्वधारस बोरी । मुनि नायक पदपद्म निहोरी ॥
प्रभुमन होय कहत मैं जोई । खोलि देउ अंगुरी सुनि सोई ॥
ह्वैहौं मैं श्रीपति मत आस्थित । पुनिजग मैं जे मनुज ज्ञानगत ॥

दो० तिन्है पंच संस्कारकरि सहित द्रविड बेदान्त ।
प्रपदन धर्म्म निरतकरि कलि कुचालिते शान्त ॥

सो० रक्षाकरि सब काल मुनिवर इच्छा पूरिहौं ।
सुनत मुनीशकृपाल खोलिदई इक आँगुरी ॥

बोले बहुरि फणीश्वर ज्ञानी । मुनिबर हार्द हृदय निज जानी ॥
निर्मित करि श्री भाष्य पुनीता । तत्व ज्ञान विसिष्ट बिनीता ॥
सकल अर्थ पूरण सुखकारी । ह्वैहौं जगत जनन दुखहारी ॥
सुनि मुनि द्वितिय कामना पूजी । खोलि दई तब अंगुलि दूजी ॥
बहुरि फणीश कहत मृदुबानी । भये पराशर मुनि बिज्ञानी ॥
ज्ञान भक्ति धन परम उदारा । अगिणितसद्गुणसिंधुअपारा ॥
करिजीवनपर कृपा अपमित । कियो पुराण रत्न जिननिर्मित ॥
चिद चित ईश स्वभाव विभागा । बरननकियोसहितअनुरागा ॥
काहू वैष्णवको सोई नामा । करिहौं नामोद्धारण सामा ॥
बचनबिशदरामानुजकोसुनि । सबबिधिभयेकृतकृत्यमहामुनि ॥

दो० तीजी अँगुरी हर्षि तब दीनी तुरत पसारि ।
चकितभये तहाँ सकल जन चरितबिचित्र निहारि ॥

सो० देखो पूरण ज्ञान अतुल प्रभाव अनूप गुण ।
मूरति तेज निधान पुरुषोत्तम मानत भये ॥

शिष्यन यामुन तनको ताछन । कीनो बिधिवत गर्तस्थापन ॥
रामानुज बिप्रन शिरनाई । कह मोहि भयो प्रमाद अघाई ॥
यामुनार्यमुनि वैष्णव राया । सो बिवेक मम उर नाहिं आया ॥
अब मोको कर्तव्य जो होई । कहौ बिचारि सबै मिलि सोई ॥

हमते पर्म तत्व नहि आना । सबके कारण मोक्ष निधाना ॥
ईश्वर जीव भेद श्रुति द्वारा । अहै सिद्ध सबविधि निर्धारा ॥
जिन के मनहि मोक्ष अभिलाषा । सर्बोपरि उपायतिहि न्यासा ॥
अरु मम भक्तन कौ जग माहीं । अंतस्मरण अपेक्षित नाहीं ॥
पुनि निज भक्तन तन अवसाना । देतमुक्तिहमसुनौ सुजाना ॥
रामानुज सौं कहौ बहोरी । जिनहिमोक्ष चिंता नहिं थोरी ॥
पूरण गुरु के होइँ समाश्रत । जे यामुनमुनिचरणन आश्रत ॥
या बिधि सुनि हरि बचन सुहाये । पूरणरामानुजहि सुनाये ॥
मुनि फणिपतिअतिमनहरषाये । निश्चय तोष समुद्रअन्हाये ॥
कांचीपूर्णहि कियोप्रणामा । कहि बहु बिनयबचन अभिरामा ॥

दो० देवराज सेवाकरी चरणवन्दि बहुबार ।
रंगराज पुर गवन हित कीनो मनहि बिचार ॥

सो० याबिधि सौ षटअर्थ श्रीपतिसौं फणिपतिलहे ।
सब बिधि यद्यपि समर्थ जगहितपावन चरित किय ॥

इतिश्रीप्र० षडार्थप्राप्तिर्नामिंदशमोध्यायः॥१०॥

यामुनमुनि के शिष्य सुजाना । महापूर्ण आदिक द्विजनाना ॥
गुरुनिमित्तकरि हरिआराधन । श्रुतिआयसुबिचारि नहिंसाधन ॥
गुरुगुण गान पोत चढ़ि धावैं । बिरह जलधि को पार न पावैं ॥
तहांएकहरिजन पुनीतचित । सुमिरिफणिप गुणतेज अपरमित ॥
सबसौं कहत भये मृदु बानी । तुम सब हरिजन पंडित ज्ञानी ॥
यामुन गुरु गवने हरि लोका । उचित नहीं तिनके हित शोका ॥
जाबिधि होय धर्म प्रतिपाला । सोई कर्तव्य नाथ यह काला ॥
मम बिचार बिनु केशवनंदन । नहि कोउ बिश्नुध र्मं को मंडन ॥
शीलादिक यामुन मुनि कैसो । सुर गुरु बुद्धि तेज रबि जैसो ॥
भक्ति बिषे प्रल्हाद समाना । श्री गुण ज्ञान सुबुद्धि निधाना ॥

दो० धर्मधुरंधर श्रीशप्रिय जग रक्षण अवतार ।
जो या मत थितहोयँ ते मिटै सकल दुख भार ॥

ताको कारण हम नहि जानै । तुम सन्मुख कहिकहा बखानै ॥
देखि प्रकाश कहत सब लोगू । तुमही कारण जानन योगू ॥
सुनिफणीश विप्रनकी बानी । मुनि इच्छा लीन्ही मनजानी ॥
बोले बचन स्वधारस बोरी । मुनि नायक पदपद्म निहोरी ॥
प्रभुमन होय कहत मैं जोई । खोलि देउ अंगुरी सुनि सोई ॥
हैहौं मैं श्रीपति मत आस्थित । पुनिजग मैं जे मनुज ज्ञानगत॥

दो० तिन्हैं पंच संस्कारकरि सहित द्रविड बेदान्त ।
प्रपदन धर्म्म निरतकरि कलि कुचालितेशान्त ॥
सो० रक्षाकरि सब काल मुनिवर इच्छा पूरिहौं ।
सुनत मुनीशकृपाल खोलिदई इक आँगुरी ॥

बोले बहुरि फणीश्वर ज्ञानी । मुनिबर हार्द हृदय निज जानी॥
निर्मित करि श्री भाष्य पुनीता । तत्व ज्ञान विसिष्ट बिनीता ॥
सकल अर्थ पूरण सुखकारी । हैहौं जगत जनन दुखहारी ॥
सुनि मुनि द्वितिय कामना पूजी । खोलि दई तब अंगुलि दूजी ॥
बहुरि फणीश कहत मृदुबानी । भये पराशर मुनि बिज्ञानी ॥
ज्ञान भक्ति धन परम उदारा । अगिणितसद्गुणसिंधुअपारा॥
करिजीवनपर कृपा अपर्मित ।कियो पुराण रत्न जिननिर्मित॥
चिद चित ईश स्वभाव बिभागा । बरननकियोसहितअनुरागा॥
काहू वैष्णवको सोई नामा । करिहौं नामोद्धारण सामा ॥
बचनबिशदरामानुजकोसुनि । सबबिधिभयेकृतकृत्यमहामुनि ॥

दो० तीजी अँगुरी हर्षि तब दीनी तुरत पसारि ।
चकितभये तहाँ सकल जन चरितबिचित्र निहारि ॥
सो० देखो पूरण ज्ञान अतुल प्रभाव अनूप गुण ।
मूरति तेज निधान पुरुषोत्तम मानत भये ॥

शिष्यन यामुन तनको तात्तन । कीनो बिधिवत गर्तस्थापन ॥
रामानुज बिप्रन शिरनाई । कह मोहि भयो प्रमाद अघाई ॥
यामुनार्यमुनि वैष्णव राया । सो बिवेक मम उर नाहिं आया॥
अब मोको कर्तव्य जो होई । कहौ बिचारि सबै मिलि सोई ॥

सो० गयो नाथ के संग यामुनमुनि के दरश हित ।
भयो मनोरथ भंग बीचहि काल कुचालि वश ॥

यह बिचारि शुभहित बुध लोगू । मानहि त्तणाक बिलंब अयोगू ॥
सुनत वचन मुनिवर अनुरागे । फणिपति बुद्धि सराहनलागे ॥
देखे तुरावन्त फणिराया । सर मज्जन तुरतहि करवाया ॥
सीतापति मंदिर मधि तात्त्तन । रची बेदिका रुचिर मुदितमन ॥
तहँके वैष्णव लै सब साथा । अनलस्थापन करि मुनिनाथा ॥
पुरुषसूक्ति अरु मूलमंत्रकरि । कियोहवन घृत श्रुतिबिधि उरधरि ॥
चक्रसुदरशन पांचजन्य दोउ । किये तप्तता बीच पूजि सोउ ॥
लक्ष्मण मुनिहि देखि करजोरे । बैठे सब दिस ते मनमोरे ॥
हृदयहर्षि मुनिवर अनुरागे । चक्रांकन किय धनुधर आगे ॥
दोउभुज मूल मध्यदोउ आयुध । शोभित किये अंक शुभ मुनि बुध ॥

दो० आपद रक्षक मंत्रदै श्रीश दास्य युत नाम ।
अर्चन कौं अर्चादिये देवराज गुणधाम ॥

सो० ऊर्द्धपुंड्र बरभाल मध्य छिद्र जामे लसत ।
तहाँ श्रीचिन्ह रसाल दीपशिखा सम राजई ॥

रामानुज शोभित भये कैसे । शरद इंदु राकानिशि जैसे ॥
श्रीशदास्य अभिषेक समाजू । दैअखण्ड फणिपहि अधिराजू ॥
बोले गुरु लखि सबबिधि लायक । स्वधाबचन श्रवणन सुखदायक ॥
महिमण्डल यामुनमुनि पाछे । आचारज गुण पूरण आछे ॥
बिष्णुधर्म सुरतरु के पालक । विश्नुबिमुख कुदृष्टि कुलघालक ॥
हरि परत्व रत्तक बलवाना । लखि न परत तुमबिनु जगआना ॥
अद्भुत तेज तुम्हारो ताता । तुम सब योग्यलोक सुखदाता ॥
परमप्रेम फणिपति तिहिकाला । पूजतभये गुरुदेव दयाला ॥
श्री वैष्णव सब पूजि प्रवीना । गुरु संग गवन सत्यव्रत कीना ॥
गुरु समेत करिशैलहि जाई । देवराज पूजे मनलाई ॥

दो० तीरथ अरु शठकोप लै गुरु समेत अति प्रीत ।
कांचीपूरण सौ कह्यो सब बृत्तांत पुनीत ॥

सो० मिले पंथ गुरु आय मोहि हरि शरणागत कियो ।
नाथ कृपाफलपाय सब विधि भयो सनाथ जन ॥

पुनि ल्याये गुरु कौ निजधामा । सादर दियो सुखद विश्रामा ॥
सहित कुटुंब कराय सुवासू । सबबिधि अवसरउचित सुपासू ॥
रह्यो बहुत धन धान्य अवासा । कियोनिवेदन सहित हुलासा ॥
गुरुसतसंग पाय अनुरागे । दिव्य प्रबंध पढ़न प्रभु लागे ॥
भक्ति युक्त नित ध्यान परायन । सावधान मन अरुचितचायन ॥
जे सात्विक पुराण श्रुति गाये । पूर्वाचार्य्यन के मन भाये ॥
वैष्णव बाराहादिक जेते । अवलोके गुरु सन्निधि तेते ॥
श्री लक्ष्मण मुनि धर्म धुरंधर । ज्ञान भक्ति सुरलोक पुरंदर ॥
या विधि गुरु सेवन मन लायो । सुख समेतषटमास बितायो ॥
आनद युत गुरु देव कृपाला । लखि रामानुज शील बिशाला ॥

दो० प्रमुदित पावन पात्र लखि गुरु आयसु जिय जानि ।
गोप्य अर्थ सब फणिपतिहि उपदेशे हितमानि ॥

सो० कौतुक निधि सानंद कांचीपुर शोभित भये ।
देवराज सुखकंद सेवत परमा भक्ति युत ॥

इतिश्री प्र० देवराजाज्ञायामहापूर्णाश्रयणींयंनामएकादशोध्यायः ॥ ११ ॥

एक समय रामनुज पासा । आये कोउ अतिथि हरिदासा ॥
अमितक्षुधितलखिफणिपदयाला । पत्नी सौं कहवचनरसाला ॥
वेगि अन्न दीजै कछु आनी । क्षुधावंत हरिजन सुखदानी ॥
अन्न न कछु या क्षणममगेहा । सुनतभयो फणिपहि संदेहा ॥
ताकौ कछु ग्रह कारज लाई । आप भवन शोध्यो प्रभुजाई ॥
धरो पात्र ओदनहि निहारी । गुनितियकुमतिदुखितभयेभारी ॥
नारि बोलि सो अन्न दिखायो । तासौं या बिधिबचन सुनायो ॥
कुलिश कठोर हृदयतव पापिनि । दयाहीन उरवृथाअलापिनि ॥
सो सुनि के रामानुज नारी । आपहि पंडित माननहारी ॥

भई मौन मनगुनि निज दोषा । लै घटगई जल भरनसरोषा ॥

दो० भरति कूप जेहि गुरु भवनि तहँ घट फाँसो जाय ।
तासु कलश जल छीट उड़ि छलकि परी घटआय ॥

सो० तहँ रामानुज नारि छीट परी निजकलशलखि ।
कियो कोप अति भारि नयन युगल अति अरुन करि ॥

पूजा जोग स्वामि गुरु नारी । जासु कलश जलपावन कारी ॥
सहज बिशदजिहिशेषप्रसादा । चरण शौचजलशुचि मर्य्यादा ॥
नारिस्वभाव फणीश्वर नारी । सो प्रभुता मनमैं न बिचारी ॥
कियो बाद दुर्वचन सुनाई । निदरि शील गुण जाति बड़ाई ॥
सुनि गुरु तियहु कोप उपजायो । उभय बधूमिलि कलह बढ़ायो ॥
सुनि गुरु तिय मुख कलहकहानी । खीजिकही तासौं कटुबानी ॥
कियो बहुरि मनमांहि बिचारा । यह वृत्तांत फणीश उदारा ॥
सुनै नहीं जाते सो कीजे । रंगधाम पयान अब कीजे ॥
करतभये सोइ बिधिमुनिराई । जब लगि मिले नही फणिराई ॥
ता पाछे रामानुज आये । प्रीतिसहित गुरु सदन सिधाये ॥

दो० मंदिर मै देखे नहीं कुटुमसहित गुरुदेव ।
चित्तचिन्ता उपजी अमित चक्रत बिचारत भेव ॥

सो० देखि फणिप मन खेद गुरु ग्रहतटवासी मनुज ।
कहतभये सब भेद हेतुसहित गुरु गवन को ॥

प्रभुघरनी अरु गुरुतिय माहीं । उपजो कलह कूपके पाहीं ॥
कारण तासु जान बरदेशा । गुरु गवने जहँ रंगनरेशा ॥
अप्रिय वचन सुनत अघहारी । कीनो शोच हृदय अति भारी ॥
आनिलियो वृत्तांत अशेषा । आये निज धामहि तब शेषा ॥
कह सकोप तियप्रति यमिबानी । पापिनितैं अघ औगुण खानी ॥
गुरु अपराध दुसह तैं कीन्हो । अबलगि जो कुछ कियसहिलीन्हो ॥
तजिममग्रहचलिजापितुधामहिं । नारिधर्मश्रुतियाबिधिगावहिं ॥
पति चितलखि [illegible] माहि पगुधरई । तैंनितमम बिरुद्धअनुसरई ॥
ता कारण त्यागी मैं तोही । अब जिनि मुख दिखरावै मोही ॥

भरता कोप अपरमित देखी। भई देवि भयभीत विशेषी ॥

दो॰ अश्रुपूर्ण मुख बिकल चित भयवश कंप शरीर।
दीनदशा लखि तासुकी सहि न सके मतिधीर॥

सो॰ सज्जन जीवन मूरि कोपहु में जिनके कृपा।
कियो कोप कछु दूरि तात्क्षण उरते ज्ञाननिधि॥

करत बिचार सदा मनमाहीं। संगयोग यह दुर्मति नाहीं ॥
या बिधि कछुकदिवस पुनिबीते। सेवत श्रीबरदेश सप्रीते ॥
तबलौं हरि प्रेरित गुरुराया। तासु त्याग को अवसर पाया ॥
ब्राह्मण एक क्षुधार्त निहारा। फणिपति करुणा सिंधुअपारा ॥
कहिनिजगतितिनभोजनमांगा। प्रभुकहसहितबिनयअनुरागा॥
द्विज बर वेगि जाहु मम धामा। ममतियसौं लीजौ ममनामा॥
दीजौ मैं जो देत यह चीन्हा। अभिज्ञान कछु प्रभुतिहिदीन्हा॥
दीहै अन्न सो भोजन कीजौ। निज वृत्तांत बहुरि मोहि दीजौ ॥
उत्सव काल निकट श्रीपतिको। ताते गुरु संतोष अतिथि को ॥
यद्यपि तद्यपि कछु हेतु प्रसंगा। ताते मैं न चलौं तुम संगा ॥

दो॰ ऐसीबिधि समुझाय द्विज पठयो भामिनि पास।
तिन पुनि आदर नहि कियो ब्राम्हण भयो निरास॥

सो॰ अन्न दियो नहि ताहि कटुकबचन बोलति भई।
परीप्रकृति जो जाहि सो किमि छूटै देह लगि॥

जाहु चले उनही के पासा। जिन पठयो करि कृपाअवासा ॥
अन्ननहीं मेरे ग्रह माहीं। ब्राह्मण चले फणीश्वर पाहीं ॥
आयकहो वृत्तांत अशेषा। तब एक बुद्धि रचतभए शेषा ॥
नारि जनक दिशते इकपाती। लिखीतुरतफणिपति भलिभांती॥
लिखि बिवाह उद्देश बुलावा। बसन बिचित्र सुदेश सुहावा ॥
हरदि आदि शुभ बस्तु बहूता। दै तिन हाथ बनायो दूता ॥
कहौ जाय मम भामिनि पाहीं। रच्यो व्याह तवपितुग्रहमाहीं॥
बोलन काज पठायो मोही। द्रव्य सकल दीजौ यह ओही ॥
जानि न पावै यत्न हमारो । करिहै पूजन बहुत तुम्हारो ॥

तुमही बांचि पत्रिका दीजो । देय प्रसाद सो भोजन कीजो ॥

दो० ब्राम्हण सोई बिधिकरी दई पत्रिका जाय ।
द्रव्य सो सब आगेधरी जो दीनी पठिराय ॥

सो० उठी देवि हरषाय पितु संदेश पुनीत सुनि ।
आनँद उर न समाय बार बार पूँछति कुशल ॥

सकल कुशल कहिकै सबभांती । द्विजबर बांचि सुनाई पाती ॥
अनुजब्याहसुनिसुखअधिकाना । जीवनजन्मसफलकरिमाना ॥
इष्टदेव सम ब्राह्मण पूजी । कहति आजु मोसम को दूजी ॥
निज करसौं बहु पाक बनाये । आदरसौं द्विजराज जिवाये ॥
लक्ष्मण मुनि आतुर ग्रहआये । भामिनि सब वृत्तांत सुनाये ॥
जानतहू अजान की भांती । समाचार पूछत पढ़ि पाती ॥
हरषिकहो करिकपट सनेहा । जाहुबेगि द्विज सँग पितु ग्रेहा ॥
चाहिये जो अभरण सो लीजै । अनुज बिवाह गवन तहँ कीजै ॥
मैंहू पांच दिवस के बीते । भामिनि तहँ आयहौं सप्रीते ॥
मुनि पति बचन हर्ष अति पायो । पितुग्रहगवनसमाजबनायो ॥

दो० लै सँग कछुक कुटुम्ब जन अरु कछु दासीदास ।
जातिभई आनंदयुत सादर जनक अवास ॥

सो० इमि लक्ष्मण गुरुराय भार्य्या कुटिल कुबुद्धिनी ।
त्यागी सहित उपाय गुरु बैष्णव सेवा विमुख ॥

छंद ॥ तजी तिय करि यत्न गुरु भागवत पद रति हीन जो ।
मनहू न फिरि सुमिरी यथा करि वमनपुनि नहिं लखिये सो ॥
यामुनमुनीसम निश्चलात्मा पदसरोज रमेश के ।
भयो उर अभिलाष तुरियाश्रम ग्रहण हित शेषके ॥

इतिश्री प्र० भार्य्याविसर्ज्जनोपायसिद्धिर्नामद्वादशोध्याय ः॥१२॥

याबिधि श्रीलक्ष्मण गुरुराई । नारित्यागि पितु भवन पठाई ॥
बिगतस्पृह तजि भवन भँडारा । सन्यासाश्रम गवन बिचारा ॥
शिष्यन प्रेरि त्रदण्ड मँगायो । पट काशाय कमंडल आयो ॥
तुरियाश्रम हित जो श्रुतिभाषा । मगवायो समेत अभिलाषा ॥

वरदायक समीप राखे सब । करतभये मनमें बिनती तब ॥
करि अस्नान बंदि बरदेशा । करि प्रसन्न आयसु लहि शेषा ॥
गे अनन्त सर बिरति निधाना । कीन्हो यामुनमुनि पदध्याना ॥
आदरयुत मन पर्म हुलासा । लीन्हो लक्ष्मण मुनि सन्यासा ॥
ता क्षण सकल देवगण हरषे । नभते बहु कुसुमांजलि बरषे ॥
प्रमुदितविबुध बजावहिं बाजा । कहत जयति जयजय यतिराजा ॥

दो० शीतल मन्द सुगन्धयुत पवनबह्यो तिहिकाल ।
विमल प्रकाश तरणि भयो प्रफुलित दश दिक्पाल ॥
सो० तिहु पुरबासीलोग आनँद मंगल सबहि भो ।
कलि तन उपजो रोग ह्वै निरास त्यागीसही ॥

याते आधिराज्य बिराजत शेषा । कर त्रदण्ड काशाय सुवेषा ॥
शुभग कमण्डलु दक्षिणराजत । द्वादश ऊर्द्ध पुंड्र तन भ्राजत ॥
पर्मतेज प्रभुतन प्रगटानो । दूजे नारायण मुनि मानो ॥
कांचीपूरण सौं तिहिकाला । बोले श्रीवरदेश कृपाला ॥
परिचारकन सहित तुम जावो । रामानुजहि संग लै आवो ॥
शिबिका मध्य राखि शठ कोपा । ध्वजा छत्रयुत जाहु सचोपा ॥
बेगि मोहिं दिखरावहु आनी । देखो चहौं यतीश्वर ज्ञानी ॥
सुनि हरि बचन हर्षि मुनिराई । लिए संग वैष्णव समुदाई ॥
जाबिधि श्रीपति आयसु दीन्हा । शठकोपादि अग्रकरि लीन्हा ॥
सादर जाय मिले यतिराजहि । को कहु आनद विनय समाजहि ॥

दो० अर्वक मेरि यतीश्वरहि श्रीशठ कोप दिनाय ।
यतिपति सेवा सकल जन किय नियुक्त हरषाय ॥
सो० बिप्र सकल सुखपाय स्वस्तिवचन उचरतभये ।
काहलि भेरि बजाय करि प्रणाम पूजे सबन ॥

चले यतीश हृदय हरषाई । प्रभु ढिग शठ कोपहि अगुवाई ॥
मुनिवर अरु बिप्रन सँग लीन्हे । गिरिहि चढ़े हरिपद मनदीन्हे ॥
याबिधि देखे जाय पर्मधन । वन्दि चरण बहुभांति मुदितमन ॥
रामानुज परिब्राजक बेषा । देखिभये अति मुदित रमेशा ॥

दूरिकरी चिंता सो सगरी । करी जु श्रीश प्रथम निज नगरी ॥
तीरथ अरु शठकोप सप्रीती । यतिहि दिवायो आदर रीती ॥
वहु सन्मान करत भये श्रीशा । राखो अति हित नाम यतीशा ॥
पूरण सों पुनि कह हरषाई । इनको मठ दिखरावहु जाई ॥
होय सुखद सबबिधि सबकालहि । बासदेउ तहँ यतिकुलपालहि ॥
जाबिधि श्रीपति आज्ञादान्हीं । तत्तण मुनिवर सादर कीन्ही ॥

दो० अति उत्तम मठ सोधिके सबबिधि सकल सुपास ।
करवायो यतिनायकहि मुनिबर तहाँ निवास ॥
सो० जे आये मुनि साथ प्रभुढिग पुरजन विप्रजन ।
ते पूजे यतिनाथ यथाउचित बहु प्रीति करि ॥

करि दण्डवत सेय यतिराई । पुरजन चले सदन सुखपाई ॥
देव समीप जाय मुनि भाषे । जाबिधि जहां यतीश्वर राखे ॥
परिचारक कैंकर्य रमाये । करि सेवा निज मंदिर आये ॥
यतिपति तरुण तरणिकी भांती । शोभित भये अपर्मित कांती ॥
हरत कलुषहिमि जगतजननके । सन्मुखकरि हरिपदकमलनके ॥
राजत हरिदीने मठ माहीं । तेज प्रताप बरणि नहि जाहीं ॥
याबिधि त्यागि नारि प्रतिकूला । पाय श्रीश आयसु सुखमूला ॥
आनन्दयुत तुरियाश्रम साजा । लह्यो नाम हरिसौं यतिराजा ॥
कांचीपुरी बिराजत ऐसे । धरें शरीर शान्तरस जैसे ॥
मूरतिमंजु दरस अघहारी । ध्यान स्वजन मन आनंदकारी ॥

दो० यह चरित्र यतिराज को सन्तत परम बिचित्र ।
गावत सुनत पुनीत चित सज्जन पर्म पवित्र ॥
सो० मन यतिपति पदध्याव कलि अवलम्ब न दूसरो ।
तजि विपरीत सुभाव रामानुज भजि बावरे ॥

इतिश्रीप्र० तुरियाश्रम प्रवेशोनाम त्रयोदशोध्यायः ॥ १३ ॥

पण्डित एक ज्ञान अभिरामा । तिहि अनन्त दीक्षित बरनामा ॥
अग्रहार पुर जिनको बासा । सेवहिं नित हरिपद सुखरासा ॥
केशव यज्वाके जामाता । सज्जन सकल लोक बिख्याता ॥

तिन जनमें सुन्दर सुत ज्ञानी । भरतअंश अगिनित गुणखानी ॥
सकल वेद वेदान्त सुजाना । नाम दाशरथि भक्ति निधाना ॥
सुनि मातुल तुरियाश्रम गवना । उपजी प्रीति सुहात न भवना ॥
कांचीपुरि आतुर चलिआए । यतिपति देखि अमित सुखपाए ॥
भये सप्रेम समाश्रित तिनके । गुण प्रताप कहि जात न जिनके ॥
बहुरौं तिनके दूजे भ्राता । रघुबर अंश सुजन सुखदाता ॥
सेवहिं सब पण्डित जन जिनकौं । कूरेश्वर कहियत जग जिनकौं ॥

दो० तिनहूँ वाही भांतिसौं यतिपति पद मन दीन ।
त्रण सम तजि सम्पति अमित भए यतीश आधीन ॥

सो० सत् शिष्यन कौं पाय बैष्णव धर्मधुरीन दोउ ।
मुदितभये यतिराय उपदेशे सद्ग्रन्थ बहु ॥

एकसमय यादवकी माता । देखि तेजमय यतिपति गाता ॥
ऊर्द्धपुण्ड्रकाशाय बसनबर । पावन तीनिदण्ड शोभितकर ॥
हरिसन्बंधि ग्रन्थ सुठिरीती । उपदेशत बैष्णवन सप्रीती ॥
आनद मगन देखि सुखधामा । कीनो भक्ति समेत प्रणामा ॥
जाय सदन यादवप्रति कहई । सुत तव हित याभांति न अहई ॥
वृथां बैर राखत यतिपति सौं । पण्डित ह्वै बरतत दुर्मति सौं ॥
सो अब छांडिदेउ निर्मूला । होउ तात यतिपति अनुकूला ॥
तिनकी शिक्षा आनदकारी । मोहिं प्रतीति भव बन्धनहारी ॥
धर्मस्थापन कौ पर पुर तें । प्रगटे आय कांति मति उरतें ॥
सब जगके उपकारक अहहीं । कांचीपूर्णादिक सब कहहीं ॥

दो० शव भूषण सम जानिये विद्या अरु आचार ।
विष्णुभक्ति बिनु विप्र को बृथा जन्म संसार ॥

सो० उतपति तिथि संहार तात बिष्णु आधीन सब ।
बिधि शिव के करतार सेवत सब तत्वार्थवित ॥

पराशरादि सकलमुनि नयाक । जानि परेश श्रीश गुणगायक ॥
जननि बचन सुनि यादव कहई । सत्य बचन तब हित अहई ॥
ममकल्याण हेतु सुनि माता । भूमि प्रदक्षिणा है भवत्राद ॥

सो किमि होय जरावश देहा । भयो शिथिल असमंजस येहा ॥
तासु बचनसुनियुनिकहुमाता । अतिमानुषयातिपतिसुनितात ॥
तिनकी परिक्रमा सुत कीन्हे । जनुमहि कोटि प्रदक्षिण देन्हे ॥
सो यादव नहिं कियो प्रमाणा । मोह महा महिमा बलवाना ॥
एक दिन जाय यतीश्वर पाहीं । करतअमित संशयमनमाहीं ॥
बोले वचन सुनौ रामानुज । ज्ञान वृद्ध तुमहौ विप्रध्वज ॥
शास्त्रन में हम कहूं न देषा । ऊर्द्ध पुंड्र परमान विशेषा ॥

दो० शंख चक्र अंकन भुजन सगुण ब्रम्ह सिद्धांत ।
कहाँ कहे हमसौ कहौ परब्रम्ह श्रीकांत ॥

सो० सुनि यतीश यह बैन याद्‌व उर संशय शमन ।
किय कूरेशहि सैन संभाषण हित तासु प्रति ॥

कूरनाथ गुरु आयसु पाई । बोले यादव सौ हरषाई ॥
सुनौ कहत हम तुमसौं बाता । कहैं कंठ रव सब श्रुति व्राता ॥
सकल शास्त्र अरु वेद पुराना । करतश्रीशगुणगणकलगाना ॥
शंख चक्र अंकन परमाना । ऊर्द्ध पुंड्र सव करहिं विधाना ॥
कहे वहुत श्रुति सुमृतिप्रमाना । जेगावत इतिहास पुराना ॥
पंचरात्र आदिक बहु ग्रंथा । कहत जो भव निरवारक पंथा ॥
तिनमें कछुक लिखत यहठाईं । जो सुनिजनसंशयबिनशाही ॥

श्रुतिः ॥ प्रतप्तेविष्णोरब्जचक्रेपवित्रेजन्मांभोधिंवर्त्तवेचर्षणींद्राः ॥ मूलेवाह्वोर्दधतेन्येपुराणाः ॥ लिंगान्यंगेतावकान्यर्पयंति ॥ साग्निपवित्रमित्यग्निः ॥ अग्निर्वैसहस्रारः ॥ सहस्रारो नेमिः ॥ नेमिनातप्ततनुर्ब्राह्मणाः ॥ सायुज्यंसलोकतामाप्नोति देवासोयेविधृतेनवाहुनासुदर्शनेन प्रयतमानवोलोकसृष्टिंवितन्वंतिब्राह्मणास्तद्वदन्ति ॥ अग्निनावैतप्तंद्विभुजेधार्य्यं ऊर्द्ध पुण्ड्रमालिखेत् ॥ तस्माद्धरेरेवंभवतिनपुनरागमनमेति ब्रह्मणःसायुज्यं सलोकतामाप्नोति ॥ चक्रंबिभर्तिवपुषाप्रतप्तंबलंदेवानाममित

स्यविष्णोः ॥ सयेतिनाकंदुरिताविधूयप्रयान्ति यद्यतयोवीतरा
गाः ॥ अथर्वणे ॥ एभिर्वयमुरुमस्यचिन्हैरंकितालोकेसुभगाभ
वामः ॥ तद्विष्णोःपरमंपदंयेधिगच्छान्तिलांछिताः ॥ पराशरसं
हितायां ॥ उपवीतादिवद्धार्याः शंखचक्रादयस्तथा ॥ ब्राह्मणस्य
विशेषेण वैष्णवस्यविशेषतः ॥ ३२ ॥ भीष्मपर्वणि ॥ ब्राह्मणैः
क्षत्रियैर्वैश्यैः शूद्रैश्चकृतलक्षणैः ॥ अर्चनीयश्चवन्द्यश्च नित्य
युक्तैःस्वकर्मसु ॥ हारीतस्मृतौ ॥ तापादिपञ्चसंस्कारीमहाभागव
तोत्तमः ॥ अन्येत्ववैष्णवाज्ञेयाहीनास्तापादिभिर्जनाः ॥ ३३ ॥ वि
नायज्ञोपवीतेन विनाचक्रस्यधारणात् ॥ विनाद्वयेनवैविप्रश्चाण्डा
लत्वमवाप्नुयात् ॥ ३४ ॥ वामने ॥ श्वपाकमिववीक्षेत लोकेवि
प्रमवैष्णवं ॥ वैष्णवोवर्णबाह्योपि पुनातिभुवनत्रयं ॥ ३५ ॥ लैङ्गे ॥
अष्टाक्षरविदःसर्वेतप्तचक्रांकितास्तदा ॥ सेवकाःवासुदेवस्यतथै
वनटनर्त्तकाः ॥ ३६ ॥ अन्येचवैष्णवास्तत्र सर्वेचक्रेणलांछिताः ॥
अग्निनैवतुसन्तप्तं चक्रमादायवैष्णवः ॥ ३७ ॥ दाहयेत्सर्ववर्णा
नि विष्णुसालोक्यसिद्धये ॥ कठवल्यांऊर्द्ध्वपुण्ड्रविधिः ॥ धृतोर्द्ध्व
पुण्ड्रःकृतचक्रधारी विष्णुंपरंध्यायतियोमहात्मा ॥ स्वरेणमन्त्रे
णसदाहृदिस्थं परात्परंयःमहतोमहान्तम् ॥ ३८ ॥ महोपनिष
दि ॥ धृतोर्द्ध्वपुण्ड्रःपरमेशितारंनारायणंसांख्ययोगाभिगम्यंध्या
त्वाविमुच्येतनरःसमस्तैःसंसारपाशैरिहचैवविष्णुम् ॥ ३६ ॥
स्कांदे ॥ येषांचक्रांकितंगात्रं शूद्रेष्वपिचदृश्यते ॥ तेवैस्वर्गस्यने
तारो ब्राह्मणाभुविदुर्ल्लभा ॥ ४० ॥ अथर्वणोपनिषदि ॥ हरेःपा
दाकृतिमात्मनोहितायमध्येछिद्रमूर्ध्वपुण्ड्रयोधारयति सपरस्यप्रि
योभवति सपुण्यवान्भवति समुक्तिभाक्भवति ॥ ४१ ॥ आग्ने
ये ॥ त्रिपुण्ड्रधारणंविप्रोलीलयापि न कारयेत् ॥ धारयेद्विधिना
सम्यगूर्द्ध्वपुण्ड्रंप्रयत्नतः ॥ ४२ ॥ ब्रह्माण्डे ॥ ब्राह्मणस्योर्द्ध्वपुण्ड्रन्तु

त्त्रियस्यार्द्धचन्द्रकं ॥ वैश्यस्यवर्तुलकारं शूद्रस्यैवत्रिपुण्ड्रकम् ॥
४३ ॥ ब्राह्मणेन न कर्तव्यंतिर्यक्पुण्ड्रस्यधारणं ॥ सशूद्रएवमन्त
व्यास्तिर्यक्पुण्ड्रस्यधाधणात् ॥ ४४ ॥ ब्रह्मरात्रे ॥ प्रणवेनैव
मंत्रेणमृदावैमामनुस्मरन् ॥ ललाटेधारयेन्नित्यंममसायुज्यमा
प्नुयात् ॥ ४५ ॥ वशिष्टस्मृतौ॥नासिकामूलमारभ्यं आकेशां
तप्रकल्पयेत् ॥ अंगुल्यस्तस्याविस्तारंचतुरंगुलमायतं ॥ ४६ ॥
द्यंगुलंत्र्यंगुलंवापिमध्येछिद्रंप्रकल्पयेत् ॥ अंगुलंपार्श्वमेकंतुऊर्द्ध
पुण्ड्रस्यलत्तणम् ॥ ४७ ॥ सनत्कुमारसंहितायाम् ॥ ऊर्द्धपुण्ड्र
मृदोवार्य्यंसछिद्रंसौम्यमेवच ॥ तदलंकरणार्थायहरिद्रांधार
येच्छ्रियम् ॥ ४८ ॥ ऊर्द्धपुण्ड्रस्यमध्येतुअन्यद्रव्यंनधारयेत् ॥
हरिद्रान्धारयेच्चूर्णंसर्बपापैःप्रमुच्यते ॥ ४९ ॥ अच्छिद्रमूर्द्धपुण्ड्र
न्तुयेकुर्वीतिद्विजाधमाः॥तेषांललाटेशततंश्वानपादो न संशयः ॥
५० ॥ पाद्मे ॥ येकण्ठलग्नतुलसीनलिनात्तमाला येबाहुमू
लपरिचिन्हितशंखचक्राः ॥ येवाललाटफलकेलसदूर्द्धपुण्ड्रास्ते
वैष्णवाभुवनमासुपवित्रयन्ति ॥ ५१ ॥ ईश्वरसंहितायां ॥ वि
ष्णुदेहपरामृष्टं यश्चूर्णंशिरसावहेत् ॥ सोश्वमेधफलंप्राप्य वि
ष्णुलोकेमहीयते ॥ ५२ ॥ सान्तरालोर्द्धपुण्ड्रस्यमध्येश्रीशस्य
सद्मनि ॥ हरिद्रासारसम्भूतरजसाधारयेच्छ्रियम्॥५३॥ पराश
रस्मृतौ ॥ एकोपवीतंधार्य्यंस्यात् यतीनांब्रह्मचारिणां ॥ गृहस्था
नान्तुविप्राणामु पवीतोभयंस्मृतं ॥ ५४ ॥ पञ्चरात्रे ॥ काषाय
वस्त्रयुग्मञ्च वेणुयष्टिंचधारयेत् ॥ कौपीनंकटिसूत्रञ्च छत्रंताम्र
कमण्डलुम् ॥ ५५ ॥ छिद्रोर्द्धपुण्ड्रमेकंवा तथा द्वादशमेवच ॥
तुलसीनलिनाक्षाणां मालिकाधारणंतथा ॥ ५६ ॥ भुजयोर्गुरु
णासम्यक् शङ्खचक्रञ्चधारयेत् ॥ यज्ञोपवीतमेकञ्च सम्यक्धा
र्यंयतीश्वरः ॥ ५७ ॥ यस्त्वैकदण्डमालम्ब्य धर्मंब्राह्म्यंपरित्य

जेत् ॥ विकर्मस्थोभवेद्विप्रःसयातिनरकंध्रुवम् ॥ ५८ ॥ शिखाय
ज्ञोपवीतादि ब्रह्मकर्मयतिस्त्यजेत् ॥ सजीवन्नेवचाण्डालो मृत
श्वानोभिजायते ॥ ५६ ॥ मौंजीअजिनदण्डादि धार्याणिब्रह्मचा
रिणा॥ कटिसूत्रन्तुकौपीनं शुक्लवस्त्रद्वयंशुभम् ॥ ६० ॥ मुण्डनंचांगु
लीयादि गृहस्थस्यविशिष्यते ॥६१॥ सगुणात्वेश्रुतयः ॥ यःसर्व
ज्ञःससर्ववित्परास्यशक्तिर्विविधैवश्रूयते स्वाभाविकीज्ञानवलक्रि
याचते जोबलैश्वर्य्यमहाववोधःसुवीर्य्यशक्त्यादिगुणैकराशिः ॥
६२ ॥ अपहतपाप्माविजरोविमृत्युःविशोकोविजिघत्सोपिपासः
सत्यकामःसत्यसङ्कल्प इति ॥ तमीश्वराणांपरमंमहेश्वरं तंदेव
तानांपरमञ्चदैवतं ॥ पतिंयतीनांपरमंपरस्माद्विदामदेवंभुवनेश
मीड्यमिति ॥ ६३ ॥ ज्ञाज्ञौद्वावजावीशिनीशौनित्योनित्यानांचे
तनश्चेतनानामेकोवहूनांयोविदधातिकामान् ॥ नारायणंपरंब्रह्म
तत्वंनारायणःपरः ॥ नारायणपरोवेदाः ॥ नारायणएवेदंसर्वं
निष्कलङ्कोनिरञ्जनोनिर्विकल्पोनिराख्यातः शुद्धोःएकोनाराय
णः ॥ एकोहवैनारायणआसीत् ॥ नब्रह्मानेशानः ॥ ज्ञानशक्ति
बलैश्वर्य्यवीर्य्यतेजांस्यशेषतः ॥ भगवच्छब्दवाच्यानि विनाहे
यैर्गुणादिभिः ॥ ६४ ॥ भारते ॥ हरिःपरायणंपरं हरिःपरायणं
परं ॥ पुनःपुनर्वदाम्यहं हरिःपरायणंपरम् ॥ ६५ ॥ मोक्षधर्मे ॥
त्वयापिसततंराजन् अभ्यर्च्यःपुरुषोत्तमः ॥ सहिमातापिताचैव
कृत्स्नस्यजगतोगुरुः ॥ ६६ ॥ जगतःकारणात्वञ्च सगुणात्वंस्वभा
वतः ॥ त्रिपाद्विभूतियुक्तत्वं ब्रह्मणोरूपमुच्यते ॥ ६७ ॥ विष्णुध
र्मोत्तरे ॥ यस्मात्सर्वेषुदेवेषु विष्णुरेवसनातनः ॥ तस्मात्सर्व्वप्र
यत्नेन विष्णुरेवंसमाश्रयेत् ॥ ६८ ॥ चौपाई ॥

सकलशास्त्र अविरोध प्रमाना। सुनेयादवअतिअचरजमाना॥
है निर्वचन लाजितमन भयेऊ। आयसु लै अपने मठ गये ॥

या बिधि सौं कूरेश्वर ज्ञानी । जीते यादव पंडित मानी ॥

दो० सर्वोत्तमता बिष्णुकी अरु सगुणत्व बिधान ।
प्रतिपादनकीनो विशद विविधि युक्ति बिद्वान ॥
सो० ऊर्द्धपुंड्र अधिकत्व शंख चक्र धारणविधी ।
थापि जीव शेषत्व लागे गुरु सेवा करन ॥

इतिश्री प्र० बिष्नुपरत्वबरननोनामचतुरदशोध्यायः ॥ १४ ॥

वा निशिश्रीबरदेश कृपाला । शंकित यादव देखि बिशाला ॥
स्वप्नमांझ तासौं इमि बोले । सुंदर करुणा बचन अमोले ॥
यादव तव माता जो भाष्यो । सत्यबचनकिमि उरनहिराष्यो॥
तुह्मरी मुक्ति हेतु जगमाहीं । तजि यतिराज शरणकछु नाहीं॥
यति शेखर को आश्रय लेहू । सुखद सुलभ सतसम्मत येहू ॥
जागि बिप्र अति अचरजमाना । मोहबिवश बिश्वास न आना॥
पुनि इक दिवस तासुकी माता । पूजति बरदराज सुखदाता ॥
सुनो शब्द आकाश बिशाला । तव सुत हित न आन तिहुँकाला॥
यतिपतिकी शरणागति करई । भवसमुद्र गोपदसम तरई ॥
आयकहो सो यादव पासा । तब कछुभो चितभ्रमको नाशा ॥

दो० माताप्रति निज स्वप्न तब यादव कियो प्रकाश ।
कहो जननि तव तासुप्रति लखि कछु संशय नाश ॥
सो० अजहुँ तात सन्देह बिद्यमान कछु तब हृदय ।
तौ पूरणमुनि गेह जाय निवारौ पूछिकै ॥

यह उपाय यादव मन भायो । कांचीपूर्ण निकट तब आयो ॥
बिबिधिभांति करि बिनय बडाई । कहतभये तिनसौं शिरनाई ॥
मैं निज उर कछु काज बिचारा । हृदयहोत सन्देह अपारा ॥
बातान्निवशजिमिदीपकज्योती।चलित भ्रमिततिमिममतिहोती
देवराज कौं पूँछौ ताता । कह करतव्य मोहि जन त्राता ॥
कीजै यह उपकार हमारो । कृपासिंधु मैं दास तुम्हारो ॥
मुनिकृपाल यह सुनि सहसाहीं । बिज्ञापन किय श्रीपति पाहीं ॥
सो सुनिके बरदायक बोले । सुन्दर बचन अमी जनु घोले ॥

यादव संशय करत मोहवस । मेरेहु कहे ताहि असमंजस ॥
प्रथम तासु जननी समुझायो । मोहविवश सो ताहि न भायो ॥

दो० मैं करिकृपा स्वप्नमधि ताहि कहो समुझाय ।
रामानुज आश्रयण बिनु नहि परलोक उपाय ॥

सो० अब मैं भाषत फेरि कहौ तासुप्रति मम बचन ।
संशय शोक निवेरि शरणगहै यतिराजकी ॥

जैहौ द्विज तव उत्तम लोका । संसृत जनित मेटि सब शोका ॥
दुर्ल्लभ नरतन पुनि द्विज देहा । किय न श्रेय हित ममपद नेहा ॥
शोचनीय सो आतमवंचक । पढ़ो शास्त्र फललह्यो न रंचक ॥
श्रीपति बचन कहे मुनि आई । सुनतमिटी यादव कदराई ॥
संशयछूटि हर्ष भयो भारी । पूजे मुनिवर यथा अघारी ॥
जातभये यतिपति मठ तत्त्वण । कीन्ही भक्ति समेत प्रदत्त्विण ॥
परे चरणतल पाहिपुकारी । मैं अपराध सिन्धु अति भारी ॥
त्तमहु त्तमा मन्दिर करुणाकर । पुनि करि कृपा हरौ संसृतज्वर ॥
लक्ष्मण गुरु लखि यादव दीना । भवभयभीत प्रपंच विहीना ॥
उमगि दया बोले हँसि बानी । उठौ विप्र दुख निशा सिरानी ॥

दो० देवराज करुणाकरी तुम ऊपर द्विजराज ।
यमि यादवप्रकाश कौं अपनायो यतिराज ॥

सो० तिनके शोधनकाज उपवीतादिक दै प्रथम ।
बहुरौं मोक्षसमाज किये पंच संस्कार सुठि ॥
तत्क्षणकीनो यत्न यादव रक्षण काज प्रभु ।
उपवीतादि प्रयत्नकरि कीनो संस्कारसर ॥

इतिश्री प्र० बरदराजाज्ञया यादव यतिराजाश्रयणंनाम
पंचदशोध्यायः ॥ १५ ॥

करि पुनीत यादवहि प्रवीना । गोबिंददास नाम शुभ दीना ॥
दियो त्रदंड तेज तन छायो । जनु शशि पूर्ण कलङ्क नशायो ॥
बहुतक वैष्णाव ग्रन्थ कृपाला । उपदेशे करि कृपाविशाला ॥
आज्ञाकरी यतीश बहोरी । गोबिंद जन पर कृपा न थोरी ॥

कियो प्रथम तुम कुमति मझारी । बिष्नुधर्म को दूषण भारी ॥
तासु निवारण हित करि प्रीती । वैष्णव ग्रन्थ रचौ सुठिरीती ॥
दृढ़ बिश्वास होय पुनि तातें । तुमकौ या मत के माधि जातें ॥
गुरु आयसु लहि गोबिंददासा । निर्मितकियो ग्रन्थ सुखरासा ॥
जेहि यति धर्म समुच्चयनामा । सकलसुशास्त्रसार अभिरामा ॥
कह त्रदंड सन्यास विधाना । तुरियाश्रम बिधि वैभव नाना ॥

दो० याबिधि सौं यादवलह्यो विष्णुधर्म सुखकन्द ।
रहि समीप यतिदीपके कछुक कालसानन्द ॥

सो० गए बहुरि हरिधाम विधि शिवादि कौं अगम जो ।
किन न लह्यो बिश्राम यतिचूडामणि की कृपा ॥

कांचीपुरी मांझ सुखकंदा । राजत पूर्ण कला यति चंदा ॥
निजकरुणाकटाक्षअगिणितजन । कियेबिमलकामादिरहितमन
जग अभिलाष छाड़ि सबिवेका । भए प्रकाशित शिष्य अनेका ॥
अकथनीय वैभव सबहीका । जिमि सुरयूथ सुरेश समीपा ॥
दीन कृपाअंबुधि यतिराई । गोबिंद की चिंता उर आई ॥
जाबिधि होय परम कल्याना । करि अनुमान यत्न सोईठाना ॥
तब श्रीशैल पूरण के पासा । पठवत भये पत्र सुखरासा ॥
पुनि शिष्यनप्रतिदीनकृपानिधि । करतशास्त्रउपेदशयथाविधि ॥
रंगक्षेत्र वासी वैष्णव सब । सुनतभये यतीश वैभव तब ॥
बिनवतभये रंग महिपालहि । बोलौ प्रभु यतिराज कृपालहि ॥

दो० जो यतीश आवैं यहाँ वासकरैं प्रभु पास ।
धर्मबढै हम सबन को कलि कुपंथ को नास ॥

सो० श्रीरंगेश कृपाल सुनि दासन के वचनबर ।
उमगो हियो विशाल यतिनायक के मिलनकौ ॥

भक्तबछल रंगेश्वर स्वामी । दासन के उर अन्तरयामी ॥
भक्त मनोरथ प्रभु मन भायो । देवराज ढिग पत्र पठायो ॥
दानि शिरोमणि करुणा सागर । देउ यतीश ज्ञान गुणनागर ॥
सोसुनि हँसि बोले बरदायक । प्राणसमाममोहि यति नायक ॥

दान शील आगिखात जगमाहीं । देतपर्मअभिमत कोउनाहीं॥
जाव बिप्र सुनि द्विज फिरि आये । तब रङ्गी बररंग बुलाये ॥
यामुन मुनि के पुत्र पवित्रा । देवगान तुम परम बिचित्रा ॥
मम निदेश सत्यव्रत जाई । बरदराज निज भक्ति रिझाई ॥
नृत्य गानकरि देव लुभाई । ल्यावहु तात मांगि यतिराई ॥
उत्तम बस्तु देंय जो कोई । बिनु यतिराज न लीजौ सोई ॥

दो० ज्यों त्यो करिलै आवौ वेगि यहाँ यतिराज ।
देव गान गन्धर्व तुम सज्जन के शिरताज ॥
सो० यमि हरि आयसुपाय हर्षि हृदय यामुन तनय ।
चलतभये अतुराय तुरत सत्यव्रत क्षेत्र कौं ॥

गुरु सुत आगम सुनि सुखरासी । पूरणादि कांचीपुर बासी ॥
लीने आदरयुत अगुवाई । पूजे काहलि शङ्ख बजाई ॥
अर्घ पाद्य करि संग लिवाई । गये बरदेश निकट हरषाई ॥
देखि बरद पीताम्बरधारी । कृपासिंधु जन आनँदकारी ॥
पुलकित तन यामुनमुनि नन्दन । सादर किये युगल पद बन्दन ॥
लियो तीर्थ शठकोप प्रीतियुत । तब कांचीपूरण निज गुरु सुत॥
सुन्दर सदन निवासकरायो । बहु बिधि हरिप्रसाद पहुंचायो ॥
ता दिन मारग श्रम करि दूरी । प्रात न्हाय किय नितकृति रूरी॥
रूप मनोहर धरि मन हर्षत । परमभक्ति जनु हरिचित कर्षत ॥
याबिधि आये बरद समीपा । प्रेम मगन यामुन कुलदीपा ॥

दो० तब निज परिकरसहित हरि याग मण्डपहि आय ।
द्विन मणिसम शोभित भये प्रभा न कहत सिराय ॥
सो० मधुर मन्द मृदुहास कोटि काम मन हरणबपु ।
सुखनिधि रमानिवास याबिधि सौं राजत भये ॥

बहु बिधि करि मुनि दण्डप्रणामा । कीनो देवगान अभिरामा ॥
निरततप्रेममगनपुलकिततनसुमिरिसुमिरिनिजनाथबिमलगुण
अस्तुति मयबर गान अनूपा । भये सुनि बिवश अखिलजगभूपा॥
परमप्रीति लखि हरि अनुरागे । अभरण दिव्य देन तब लागे॥

भक्तबछल श्रीपति महराजा । यासौं नाथ मोहि कह काजा ॥
मनकी जानत अन्तरयामी । यह सुनि पुनि कह करि गिरिस्वामी॥
मोहि छोंड़ि मम भामिनि त्यागी । लेव जु कछु चाहौ तुम मागी॥
तब बोले बररंग मुनीशा । रंगनाथ हित देउ यतीशा ॥
है उनको अतिशय अभिलाषा । चाहत हैं इनको सहबासा ॥
हैं उदासप्रभुकह ममप्राना । हैं यतिपति मागौकछुआना ॥

दो० सत्यसन्ध करुणायतन देव देव भगवन्त ।
द्वै बिधि वचन न नाथके कहत सकल श्रुति सन्त ॥
सो० तुमहूँ निज अवतार श्रीमुख याही बिधि कहो ।
बचन न मृषा हमार सत्य सत्य व्रत सत्य मम ॥

चिंता तजि दीजै यतिराजा । तुमहि नहीं करिबे कछु काजा ॥
कर गहि कहो चलौ यतिनायक । बोल्यो रङ्ग र वन सुखदायक।
असमंजसबशभयेसुखधामा । प्रभुरुखलखियतिकियोप्रणामा ॥
आये मठहि संग बररंगा । शिष्यन सौं सब कह्यो प्रसंगा ॥
कूराधिप दाशरथि सुजाना । हरषे सुनि संग कियो पयाना ॥
चले फणिप उरबिरह सनेहा । जिमि पितुग्रहतजि तियपतिगेहा॥
करिगिरीश पद प्रेम अपारा । उमगत हृदय नैन बह धारा ॥
चिंता सरि मन मगन यतीशा । सुमरत चले रंगअवनीशा ॥
अतुल प्रभाव प्रणात सुखकारी । दीनन हित अर्च्चा बपुधारी ॥
पुंडरीक दृग ताप नशावन । मृदुल कटाक्ष सुजन मन भावन॥

दो० अशरण शरण कृपायतन सकल सुगुण आगार ।
सुख मंदिर सौशील्य निधि सुखमा सिन्धु अपार ॥
सो० बंदित पद जलजात ब्रम्ह रुद्र सनकादि मुनि ।
श्रीपति जग पितु मात निगम नेति महिमा अमित ॥

इतिश्रीप्र०रंगराजाययतिराजसमर्पणांनामषोडशोध्यायः ॥१६॥

या बिधि सौं यतिचन्द्र सुहाये । श्री कवेरतनया तट आये ॥
निर्मलजलमनहरण सपंकज । पंकरहितकलिमथनबिशदरज॥
राजत जासु अङ्क सुखमानी । श्रीरंगेश सुदरशन पानी ॥

शिष्यन सहित न्हाय अनुरागे । मन्त्रराज प्रभुसुमिरन लागे ॥
तव वररङ्ग रङ्गपति पासा । जाय यतीशागमन प्रकाशा ॥
इष्टागमन सुनत हरखाने । सादर यामुनसुत सनमाने ॥
महापूर्ण प्रति कियो निदेशा । प्रयतम मम प्राणन समशेषा ॥
छत्र चँवर व्यजनादि पुनीता । जो मम वैभव वचन अतीता ॥
सो लै अरु सज्जन समुदाई । बिबिधि भांति करिमानबड़ाई ॥
ल्यावौ मम समीप यतिराजा । करि बहुमान प्रेम के साजा ॥

दो० सुनि मुनि अति बात्सल्य युत लै संग सकल समाज ।
पुरजन गुरु जन विप्रजन मिले जाय यतिराज ॥
सो० आपुन रंग महीश बाहिर के मंडप विशद ।
कढि बैठे जगदीश प्रेमातुर प्रय भक्त के ॥

यहां नित्य कृति करि यतिराया । देखत भये भागवत निकाया ॥
शिष्यन सहित चले अगुआई । बंदे गुरुपद पङ्कज जाई ॥
श्रीवैष्णावन देखि यतिनाथहि । किय प्रणिपात धरणिधरिमाथहि ॥
यतिनायकहु नवत अनुरागे । चले रंगढिग गुरु करि आगे ॥
रंगधाम आये तेहि काला । जासु सप्तप्राकार बिशाला ॥
गिरि शिर जिमि गोपुर बहुराजैं । सुरबिमान सम मंडपभ्राजैं ॥
बिष्वक्सेनादिक सब देवा । तोषे प्रीतिसहित करिसेवा ॥
रङ्ग बिवान जाय जब देखा । भयो जु सुख तिहिको करलेखा ॥
भक्तबछलता बस तिहि काला । यतिमणि सन्मुख चले कृपाला ॥
भये चकित यतिराज निहारी । कहा चरित यह करत अघारी ॥

दो० जाय निकट बहुभाँति सों सेय चरण जलजात ।
दास निकट प्रभु आगमन युक्त नहीं यह बात ॥
सो० तुम आये जाभाँति हमहूँ तिमि आवतभये ।
जिमि आनन तिमि कांति नहि अतिशय कछु मुकुरकी ॥

युग बिभूति चेतन प्रतिपाला । करत मोहि बीतो बहु काला ॥
अब कछु कियो चहौं बिश्रामा । योगक्षेम करौ गुणधामा ॥
सब मम काज सम्हारौ ताता । तुमयतीश जग गुरु बिख्याता ॥

द्वौविभूति करि निज आधीना । बासकरौ मम निकट प्रवीना ॥
याविधेममआभिष्टयतिनायक । होजै सुखमोहितुमसबलायक ॥
यमियतिपतिहिकियेसुखसागर । उभयविभूतिनाथमतिआगर ॥
युगविभूतिपतिकियहनामा । लखि प्रभुकृपाचकितगुणधामा ॥
अतिशयबिनयसहितयति भूपा । अस्तुतिमधुरसुनाय अनूपा ॥
कह कर जोरि गुरुहि यतिराऊ । यह प्रभु कृपा कटाक्ष प्रभाऊ ॥
गुरुकह किमिनकहौ यमिताता । निगमसेतुपालक बिख्याता ॥

दो० पहिले श्रीशठकोप मुनि तजि बैकुण्ठ समाज ।
बसुधातल प्रकटतभये लोक उधारन काज ॥
सो० लखि अशक्य यह भार परमेकांति आदि गुरु ।
रचो ग्रन्थ सुखसार नकालज्ञ प्रेमाम्बु निधि ॥

तामें यह वृत्तांत बखानो । सो शुभ चरित्र आय प्रकटानो ॥
गये कछु दिनप्रकटिहैंजगमाहीं । पुरुषोत्तमकछुसंशय नाहीं ॥
अमित जनन की रक्षा करिहैं । कलियुगजानितसकलमलहरिहैं ॥
कारिसूनु जिमि लक्षणभाखे । यामुनार्य जो मन गुनिराखे ॥
सो सब तुल्य भयेयह काला । जगजीवनको भाग बिशाला ॥
युग विभूति तुमकौ हरि दीन्ही । अकथअपूर्वअनुग्रहकीन्ही ॥
शिरधरि श्री रंगेश नियोगू । करि हरि पद रत सब जग लोगू ॥
बहुत काल परियंत यहांहीं । सुखसौं रहौ रंगपुर माहीं ॥
मुनिगुरु वचनचकितयतिराया । हरिहि सप्रेम बहुरि शिरनाया ॥
नाथनियोगभयो मोहि जोई । करिहौं अवशि सीस धरिसोई ॥

दो० आयसु भंग करौं किमि मैं प्रभु तुम्हरो दास ।
और कहा करतव्य मोहि सुखनिधि रमानिवास ॥
सो० याबिधि बिनय सुनाय गर्भभवन गवनत भये ।
किय प्रदक्षिणा जाय शेष शयन लखि रंगपति ॥

शेष प्रयंक देखिपौढेहरि । रहो प्रेम आनंद हृदय भरि ॥
कोटि भानु समतनउजियारी । मुख छबिशरदचंदाद्युतिहारी ॥
सजल जलद बरबरण सुहायो । तापर पीताम्बर छबिछायो ॥

फूले नैन देखि वह रूपा । पूरे पुलक गात यतिभूपा ॥
गद्गद कण्ठ श्रवत नैनन जल।नमन करत पुनि पुनि प्रेमाकुल॥
शिर तीरथ शठकोप चढ़ाई । बैठे गरुड मण्डपहि आई ॥
पूर्णाचार्य्य आदि वैष्णवगण । बैठे चारौंओर मुदित मन ॥
निज जन प्रेरि यतीश बुलाये । अर्चक परिचारक सब आये ॥
गणक वैश्य शैलूष अनेका । पाठक मालाकार जितेका ॥
लेखकादि जो परिकर रहेऊ । सकल बुलाय यतीश्वर कहेऊ ॥

दो० रंगराज महराजकी सेवा विधिवत होय ।
देशकाल अरु शास्त्र विधि शोधिकरौ सबकोय ॥

सो० भक्तिसहित दिन राति सावधान प्रतिदिन रहौ ।
होय नहीं जाभाँति सेवा मे अपचार कछु ॥

याविधि सजग किये सेवकगन । सामादिक बुझाय सेवाधन ॥
गुरु सँग चले लखत मठ शोभा।रचना अमित देखि मनलोभा॥
तहँ पूर्णार्य कथा सब बरनी।मुनि परकाल की अद्भुत करनी ॥
भये सुनि चकित मुदित यतिराई । श्रीकलिघ्न कैंकर्य्य सुहाई ॥
रङ्गनृपति आयसु धरिमाथा । सोधि सुमठ निवसे यतिनाथा ॥
कूरेशादिक शिष्य सुजाना । शास्त्र विदोत्तम भक्तिनिधाना ॥
तिनके संग रङ्गपुरमाहीं । बसत देव गुरु पटतरिनाहीं ॥
रहे सर्वेश्वर जिनके सङ्गा । भये हरिदास न भवदुख भङ्गा ॥
कृपाकटाक्ष यतीश्वर हेरे । भये सो योग्य परमपद केरे ॥
सहजहि श्रीपति पदपारायन । कालक्षेप निरत चित चायन ॥

दो० जे सन्मुख यतिराज के आवत नर अरु नारि ।
सकल कलषु तजि होत सब हरिपद के अधिकारि ॥

सो० पुरजन प्रीति सँयोग लहि गुरु वार्त्तालाप सुख ।
बिसरे बरद बियोग सुख सौं रहत यतीश तहँ ॥
यह पुनीत सम्बाद यतिपति रंगी बरद को ।
गावैं करि अहलाद ते विशेष हरिपद लहैं ॥

इतिश्री०रामानुजस्यविभूतिद्वयाधिपत्यंनामसप्तदशोध्यायः १७

जे जन प्रथम यतीश पठाये । लौटि व्येङ्कटाचल तें आये ॥

मातुल कुशल पूछि तिनसौं यति। पूछी पुनि गोबिंदकीगतिमति ॥
कहबैष्नवन सुनौकरुणानिधि । गोबिंदभये अनुकूल यथाबिधि ॥
गोबिंदार्य सन्मारग थिति सुनि । भयेमुदित चक्रत लक्ष्मणमुनि॥
मुनिप्रभाव मनअतुल बिचारा । पूछेउ बहुरि सहित बिस्तारा ॥
तबकरि प्रभु चरणन प्रणिपाता । कह बैष्णवन सुनौ जनत्राता॥
प्रभु संदेश लै हम गुरुपाहीं । गये नाथ व्यङ्कटगिरि माहीं ॥
करि दण्डवत निवेदन कीन्हो। गोविंद हित जो तुम कहिदीन्हो॥
सुनि श्रीशैलपूर्ण हरषाने । नाथ बिचार सराहि अघाने ॥
दुष्ट संग फल कुमति बिचारी । हरि मायाकी महिमाभारी ॥

दो० बिधि शिवादि मोहित रहत मनुज कि पावै पार ।
दुर्गति गुनि गोबिन्दकी मुनि किय शोच अपार ॥
सो० हमरेहु मनमाहिं गोबिंदहित कारण रही ।
अवशि तहाँ अब जाहिं रामानुज सम्मतिदई ॥

लै कछु शिष्य सङ्ग तब मुनिवर । पहुंचे जाय कालहस्तीपुर ॥
तिहि तड़ाक गोबिंद जलभरहीं । शिव अभिषेक निरन्तरकरहीं॥
तहँ बसि वैष्णव ग्रन्थ बिशेषा । करनलगे शिष्यन उपदेशा ॥
जल कारण गोबिंद तहँ आये। शिव अभिषेक काज घटल्याये॥
गाथा कछुक रुद्र अस्तुतिपर । करतपाठ करि प्रीति निरन्तर ॥
मौन भये हम सबन निहारी । चलन लगे घटभरि शिरधारी ॥
तब श्रीशैलपूर्ण मुनि कहई । शिव अभिषेक कौन फल अहई॥
सो तुम हमसौं कहौ तपोधन।सुनि गोविंद अस्थितभये इकक्षण॥
विस्मित ह्वै बिनु उत्तर दीन्हे । गये चले शिव पहँ घट लीन्हे॥
यह चेष्टा मुनि नाथ निहारी । फिरि आये श्री शैल मझारी॥

दो० कछुदिन बीते बहुरि मुनि वाही बिधि तहां जाय ।
निवसे सरतट बट तरे गोबिंद हित मनलाय ।
सो० भस्म लाय सब अंग निकस गोबिंद कलश लै ।
लीन्हे मौन असंग शिब पंचाक्षर कौ जपत ।

शिव ते परे और जगनाहीं । सत्य महेश हमहुँ शिव आहीं ॥

शिव के रूप विश्व सब जानी। यह भावना अचलउरआनी॥
या बिधिगोबिंद लखिमुनिराया। शुद्धकरनहित रच्योउपाया॥
द्रविड़शास्त्रकछुलिखिमुनिनायक। यामुनअस्तवते सुखदायक॥
स्वाभाविकअनवधिकश्लोका। हरै जो मोहजनितसबशोका॥
लै सो पत्र पंथ मधिडारा। गोबिंद सो मग जात निहारा॥
सहजहि सो लै गये उठाई। स्वस्थ भये तब बांचो ताई॥
आदिकबिहिजिमितमसा तीरा। भयो शोक सोचत मतिधीरा॥
गिरो जानि कागद लै आये। पूरण सौं यमि बचन सुनाये॥
अहो बिष्णु जन अर्थ तुम्हारा। गिस्यो लह्यो हमपंथमंझारा॥

दो० कहमुनि हमरे अर्थगण कबहुँ गिरत हैं नाहिं।
औरन के च्युत होत है हम अच्युत जन आहिं॥
सो० रहन देउ चतुराय कह गोबिंद मुनि नाथ सौं।
क्यों वैष्णव समुदाय एक पंथ सब तजि चलहिं।

कह मुनि सुगम पंथयहतातें। सहजाहिंमिटतसकल दुखजाते॥
कहगोबिंद तुम सब द्विजराजा। आये बंधु पठावन काजा॥
कहमुनि मोल लेनगौ आये। गोबिंदपुनि यमि बचन सुनाये॥
अनुष्ठान युत पुरुषसुहावन। गोपदरजतिहिकर कि न पावन॥
कह मुनिवर जु उचित थल होई। करै शुद्ध गोपदरज सोई॥
ऊर्द्ध बक्र महँ भेद कहा है। कह मुनि अन्तर अवशिमहाहै॥
सुनि गोबिंद इमि बचनउचारा। वाक बंध यहवाक्य तुह्मारा॥
सत वचननकर यहै सुभाऊ। गोबिंदप्रतियमिकह मुनिराऊ॥
पुनि गोबिंद कह हेहरिजनवर। कहौ तुमहि तहँ है कहअंतर॥
कहमुनि तहां परत्व को भेदा। देखौ पढि पुराण अरु वेदा॥

दो० युक्ति सहित मुनिवरबचन सुनि गोबिद प्रवीन।
निर उत्तर ह्वै मानि मन गवन मठहि पुनिकीन॥
सो० गोबिंद लक्षण देखि मन प्रसन्न श्री शैल मुनि।
साध्य कोटि में लेखि व्यंकट गिरि आये बहुरि॥

सुनि यहकथा बिहंसि यतिराई। सभा मांझ बोले हरषाई॥

यामुन सूक्ति प्रभाव अपारा । श्री गिरि पूर्ण वचन श्रुतिसारा॥
गोविंद शास्त्र निपुन विद्वाना । ताते भये सजग सुनिकाना ॥
जो तुम मोहिं पूछौ यह बाता । तौ मैं कहौं सुनौ तुम ताता ॥
वेद स्मृति इतिहास पुराना । लखि प्रमान कोउ जानसुजाना॥
त्तर सब जीव अन्तर भगवाना । ज्ञानहिं नर पशु मांभ्क निदाना॥
ऊर्द्ध पुण्ड्र शोभित जिहिभाला । अकथनीय तिहिभाग बिशाला॥
धारैं शङ्ख चक्र भुज मूला । ते द्विजवर्य्य हरत जग शूला ॥
कर्म्म अविद्या ते समुदाई । संसृत मूल कर्म्म नशिजाई ॥
ज्ञान मोक्षप्रद वेदन गायो । ताको याबिधि यत्न बतायो ॥

दो० सावधान ह्वै प्रणव धनु धरि आतम शररूप ।
ब्रह्म लक्ष्य करि भेदही पावै धाम अनूप ॥
सो० सत्यज्ञान सदेव एकमेव बहुप्स्यामि श्रुति ।
श्रीपति देवन देव इन सब करि प्रतिपाद्य हरि ॥

जग करता कल्याण गुणाकर । प्रतिपादन सब करत निरन्तर ॥
संसृत मोक्ष चहैं जे प्राणी । सेवहिं सब तजि शारङ्गपाणी ॥
चिन्हित करि हरि आयुधअङ्गा । चरणरेख सोई पुण्ड्रअभङ्गा॥
गोबिंद मन अति चंचल रहेऊ । जबलगि सन्मारग नहिं लहेऊ॥
हरिपरत्व सुनिभये अडोला । रहे शास्त्रवित् बदन न खोला ॥
अति उपकार महामुनि करेऊ । गोबिंदको संसृत दुख हरेऊ॥
इमि सराहि श्रीगिरिमुनि धोरी । पूछी गोबिंद कथा बहोरी ॥
कह बैष्णवन सुनौ जगत्राता । गोबिंदार्य्य नाथ लघुभ्राता ॥
तुम्हरे दरश परस ते पांवर । सन्तत सन्मति पावहिं थावर ॥
कह आश्चर्य्य जो बंधु तुम्हारे । होंहिं कुमारगकौ तजिन्यारे ॥

दो० विद्वज्जन गोष्ठी बिमल कूरेशादि सुजान ।
उच्चासन राजत जहाँ रामानुज भगवान ॥
सो० चरण कमल शिरनाय श्री बैष्णव बहुरौ तहां ।
कहन लगे हरषाय अपर कथा गोबिंद की ॥

इतिश्रीप्र०श्रीशैलपूर्ण गोबिंद संवादोनाम अष्टादशोध्यायः १८

पुनि बोले वैष्णव कर जोरी । तहँते श्रीगिरिपूर्ण बहोरी ॥
कालहस्तिपुर गे शिष्यनयुत । कालक्षेप कियो बिधि अद्भुत ॥
सहसगीत व्याख्यान अनूपा । उपदेश्यो शिष्यन द्विज भूपा ॥
फूललेन गोबिंद तहाँ आये । पांडुरि बिटप चढ़े हरषाये ॥
सुनन लगे शठद्वेष सूक्तिबर । ज्ञान बिराग भक्ति रत्नाकर ॥
द्वितिय शतक एकादशगाथा । त्रोदशलौं बांची मुनिनाथा ॥
तहँ यह अर्थ पुनीतम कहिऊ । जासु नाभि चतुरानन भइऊ ॥
सृष्टि सृजन उद्यम जिन ठाना । सो प्रभु तजि पूजिये को आना॥
बोलिउठे गोबिंद सुनि तात्छन । का तिहि तजि न उचित आराधन॥
कह मुनि तीनिकालहू नाहीं । पूजन पुष्पयोग्य हरिआहीं ॥

दो० तीनिबार यमि कह्यो श्रीगिरिपूरण मुनिराट ।
श्रवन करत गोबिंद के उघरे हृदय कपाट ॥
सो० तरुवरते तत्काल फूल पिटारी पटकि महिं ।
तजि शिवलोचन माल अंग भस्म पोंछी तुरत ॥

आतुर उतरि बिटप ते तात्छन । व्याकुल धायपरे मुनि चरनन ॥
दुराचार रत हौं मति हीना । अज्ञ अबुध मायाहत दीना ॥
दोष सिन्धु बूड़त मोहिं जानी । राखिलेहु समरथ गहिपानी ॥
पूर्ण मनोर्थ भये पूरणमुनि। चकित आदिगुरु सूक्तिबिभवगुनि॥
पुनि गोविंद बोले मृदुबानी । पश्चाताप शोच रससानी ॥
हामोसम को कुमति अभागी । अखिलनाथ किरीटधर त्यागी॥
भयोजटाधर सीसबिमोहित।मोहबिबश न लख्योहित अनहित॥
गरल कण्ठके आश्रित भयेऊ । बिश्वकण्ठ श्रीपति तजिदयेऊ ॥
पुण्डरीकद्दग नैन न आयो । अहो बिरूप नैन मन भायो ॥
गिरिवर धरन चरन तजि दीनो । कर कपाल कर आश्रयलीनो ॥

दो० जगत सृजत पालत हरत त्यागि सो श्रीभगवान ।
किय प्रदक्षिणा तासुकी बसत जो भूमि मसान ॥
सो० पीताम्बरहि बिहाय दियो दिगम्बर चरण मन ।
तुलसी बिपिन नहाय सींचि बेलि कोशातकी ॥

धिकधिकमम दुर्मति दुर्भागा । तजिपियूष बिषफल अनुरागा ॥
ऐसे बहुविधि करत गलानी । उचरत पाहि पाहि मुखबानी ॥
कह मुनीश-हम सबहि सुनाई । यामुन कृपा व्यर्थ नहिं भाई ॥
सिद्धियोग इनकौ अब भयेऊ । बूड़त जल बिवान जनु लहेऊ ॥
दोउकर कमलन परसि उठायो । प्रियबचनन अनुराग जनायो ॥
आये शैववृन्द व्याकुलमन । गोबिंद समाचार सुनि तात्तन ॥
चहुँदिशि घेरि कह्यो तिन मुनिहीं । मायाकरि मोह्यो तुम इनहीं ॥
हमरे शास्त्र निवाहनहारे । बिवशभये कछु औषधिडारे ॥
ऐसेहिं बिश्वम्भर बश करहू । करि सुठिवेष छलत जग फिरहू ॥
सुनि मुनिकह्यो सुनौ द्विजबृन्दा । बृथाकरत हमरी तुम निन्दा ॥

दो० तुमही पूछौ गोबिंदहि औषधि हम नहिं फेक ।
बादिहिं बिग्रह करतहौ समुझिलेहु तजि टेक ॥

सो० बिप्रन सुनि मुनि बयनचेरे गोबिंद तिन्है तजि ।
तुम बिवेक के अयन क्यो त्यागत शिव भक्तिपथ ॥

पूजाकाल जात शिव जीको । चलौवेगितजि भ्रमनिज हीको ॥
क्यों तुम बर्त्तमान यह ठाहीं । मौन गही क्यों बोलत नाहीं ॥
गहत हाथ गोबिंद निवारो । कह अब त्याग्यो सङ्ग तुम्हारो ॥
अवलगिहमहितुमहिरहनाता । बिष्णुभक्तिलहिसकलनिपाता ॥
हमकौतुमजानौजिनिअपनो । भयोअबबोधमिथ्योभ्रमसपनो ॥
मुद्रिकादि जो द्रव्य तुम्हारी । लेउ सो यह कहि दीन्ही डारी ॥
पुनि मन मुदित बजाई तारी । शैवन बहुरि कह्यो बहु बारी ॥
पर्म धर्म यह सुनौ प्रवीना । मोक्ष प्रदान शंभु आधीना ॥
ऐसे कहि बहु बचन सुनाये । गोबिंद त्रण सम तोरि बहाये ॥
जिहि उर व्योम उदित हरिभानू । किमिखद्योतसोसिव सुजानू ॥

दो० दुराभिमानी शैव गण कीन्हे बहुत उपाय ।
तव प्रताप यतिमौलिमणि चल्यो न रहे लजाय ॥

सो० तादिन मुनि वा ठौर बास कियो गोबिंद युत ।
चले शेषगिरि ओर नित्यकृत्य करि सबन युत ॥

भये निराश शैव तब बोले । हम तुम प्रति वादिहि कटु बोले ॥
कालहस्ति पति सपने माहीं । हमसौंकह क्यों लग्त बृथाहीं ॥
होतजबहि श्रुति पथकोलोपा । करत बिष्णु तनुधरि तब गोपा ॥
दत्तात्रयवपु धर्यो प्रथम जिमि । रामानुजगोविंदादिक तिमि ॥
दाशरथी अरु कूरेशादी । प्रकटे जग परमारथ बादी ॥
दिव्य पारषद श्रीपति केरे । हरि पुर ते आये हरि प्रेरे ॥
काहु हेतु गोविंद अवताई । पूजत हमहिं रहे या ठाईं ॥
अब ये नहिं यह रहनि रहैंगे । सर्वेश्वर पद कमल गहैंगे ॥
यह कहिके तब शैव सिधाये । मुनिगोविंदयुतश्रीगिरि आये ॥
जाने अधिकारी प्रपदन के । संसकार पंचक किय तिनके ॥

दो० विष्णुचित्त आदिक किये द्राविड़ ग्रंथ पाढ़्य ।
अर्थपंच मन्त्रार्थ पुनि गोविंद हृदय दृढ़ाय ॥

सो० पर्म नम्रता युक्त गोविंद भट्टहु गुरु चरण ।
भये कैंकर्य्य नियुक्त जिमि बन रघुवर पद लखन ॥
सुनि गोबिंद चरित्र सुदिन भये यतिमुकुटमणि ।
गुरु प्रभाव सुबिचित्र गुनि पूजे ते बिष्णुजन ॥

इतिश्री प्र० गोविंदस्य श्रीशैलपूर्णाश्रयणंनामएकोनविंशो शोध्यायः ॥ १९ ॥

एक दिवस यतिपति गुरुराई । महापूर्ण देशिक गृह जाई ॥
विधिवत करिप्रणाम करजोरी । बोले गिरा अमी जनु बोरी ॥
प्रभु पद पंकज दरश प्रभावा । यामुनार्य वियोग दुखदावा ॥
शीतल भयो तदपि निजदासा । कीजै नाथ अघाय सनाथा ॥
अर्थ विशेष जो प्रभुउरआहीं । राखिये सो निज सेवकमाहीं ॥
सुनि मुनि बोले गिरा सुहाई । मंत्र रत्न महिमा अधिकाई ॥
नाशहिं भवदरिद्र जिहि पाई । आधि व्याधि न कबहुँ नियराई ॥
सबशुभकरणहरणसब दूषण । निगम सारवरवचन बिभूषण ॥
ज्ञान निधान कि मूरख होई । द्वय अधिकारी पूजिये सोई ॥

एक बार सुमिरत जेहिप्राणी । नाशहिंअघकृततन मनबाणी॥

दो० गुरुपद बन्दि नारि नर मन्त्र रत्न लह जोय ।
सहजहि श्रीपति पदलहै पुनराबृत्तिहि खोय ॥

सो० भवनिधि बूडत लोग तिनहि मन्त्र यहनाव दृढ ।
दूजो और न योग तरणकाज द्वय मन्त्र सम ॥

यमिबहुबिधिद्वयमंत्र सराही । यासमजग न और कछु आही॥
ताको अर्थलोकपालन हित । यतिपतिकौ दीनो दयालचित ॥
न्यायतत्त्व जो शास्त्रअनूपा । और पुरुषनिरणाय सुखरूपा ॥
गीतारथ संग्रह जिहि नामा । सिद्धित्रय जो ग्रन्थ सुखधामा ॥
व्यास सूत्र उपदेशि सुनीती । पंचरात्र आगम अतिप्रीती ॥
सर्वोत्तम बिचारि गुणधामहिं । निज सुत पुंडरीकदृग नामहिं ॥
यति नायक को शिष्यकरायो । पूरणार्य्यमुनिअति सुखपायो॥
बोले बहुरि सुनौ यति राजा । गोष्टीपूर्ण एक द्विजराजा ॥
बसत गोष्टिपुर ज्ञान निधाना । यामुनमुनि के शिष्यसुजाना ॥
जानत शास्त्र तत्त्व सब नीके । कृपापात्र आचरज जीके ॥

दो० तिनके उर करि अति कृपा राखे अर्थ महान ।
यामुन गुरु करुणायतन ज्ञान बिराग निधान ॥

सो० जाय तहाँ यतिराय सुनौ सुअर्थ अनूप तुम ।
सुनि यतिपति हरषाय गये तहाँ अति प्रेमयुत ॥

करि प्रणाम बोले कर जोरी । मुनिपद बंदि बहोरि बहोरी ॥
मन्त्रअर्थ मोहिं देउ पढ़ाई । तुम करुनामय जन सुखदाई ॥
जानन कौ यतिपति बिश्वासा । अरु मंत्रार्थ गुरुत्व प्रकाशा ॥
मुनि मुखफेरि कह्यो तब ऐसे । मन्त्रअर्थ उपदेशहिं कैसे ॥
नहिं या काल तासु अधिकारी । अर्थरहस्य गोप्य अतिभारी ॥
ह्वै निरास मन अति दुखछाये । यतिपति रङ्गधाम फिरिआये ॥
रङ्गमहोत्सव देखन काजा । रङ्गधाम आये मुनि राजा ॥
द्याय तीर्थ शठकोप उदारा । रङ्गेश्वर निज अर्चक द्वारा ॥
गोष्टीपूर्णहि दियो नियोगू । लक्ष्मण गुरु सबबिधि सब योगू ॥

मन्त्र अर्थ उपदेशौ तिनकौ । प्रानन सम मानत हम इनकौं ॥

दो० तब गोष्ठीपूरण कहो हाथजोरि हरिपहिं ।
परम गोप्य करि तुम कह्यो निज सूक्तिन के माहिं ॥

सो० जे तपहीन अभक्त पाप सहित सेवा रहित ।
मम निंदा अनुरक्त तिनहिं न यह उपदेशियै ॥

वर्ष दिवस षट मासमास भरि। शिष्य परीक्षा भाँतिभलीकरि ॥
कृपा समेत करै उपदेशा । मनहिं न आनै स्वारथ लेशा ॥
सुनि रंगी बोले मृदुबानी । हम जो कहत सुनौ मुनिज्ञानी ॥
तन धन बसन ज्ञान गुण कर्मा। प्राण समेत जेमनुज सुधर्मा॥
गुरु सेवा हित धारण कीने । शिक्षणीय सोइ शिष्य प्रवीने ॥
सो सब गुण यतिपति के माहीं । विद्यमान कछु संशय नाहीं ॥
इनकौ गोप्यअर्थ के दीन्हे । नहिं कछु हानि यथोचित कीन्हे ॥
शिरधरि बचन मांगिआयसुबर। करिप्रणाम मुनीश गवनेघर ॥
यतिनायकहिं कहो पुर आवन । अल्पकाळ बीते जगपावन ॥
जाय तहाँ अति बिनय समेतू । करी प्रार्थना वांछित हेतू ॥

दो० लोक मांझ मन्त्रार्थकी महिमा प्रकटन काज ।
भये बिमुख मुनि बहुरि तहँ फिरि आये यतिराज ॥

सो० ऐसे सत्रहबार यतिनायक तहँ ते फिरे ।
मुनि पूर्वोक्त बिचार उपदेश्यो नहिं अर्थवर ॥

जब अठारहींबार यतीशा । गये तहाँ तब कह्यो मुनीशा ॥
जाव जाव शीघ्रहि यहठांते । रुदन करत यति फिरे तहांते ॥
तहँ के कोउ भागवत मृदुलचित । रंगक्षेत्र आये दरशन हित ॥
देखि गये व्याकुल यतिराजहि । मंत्रअर्थ प्रापति के काजहि ॥
जायकही तिन पूरण आगे । प्रीति बिशद सुनि मुनि अनुरागे॥
यतिनायकहिं दुखित अति जान्यो। अर्थप्रदान हृदय तब आन्यो॥
पठये शिष्य बुलावन काजा । आये सपदि जहां यतिराजा ॥
बंदिचरण प्रियबचन सुनायो । मंत्रअर्थ मुनि देन बुलायो ॥
यज्ञसूत्र त्रदण्ड संग लीजै । और सकल संग्रह तजि दीजै ॥

सुनि यतीश मनको दुख गयऊ । बचन अगोचर आनदलहेऊ ॥

दो० रंगि सन्मुख जाय के कह बृत्तान्त सुनाय ।
पुनि पुनि पुलकित रंक जनु पारसमणि कौ पाय ॥

सो० दाशरथी कूरेश संग लिये प्रिय शिष्य दोउ ।
आतुर योगि नरेश सानद गोष्ठीपुर चले ॥

इतिश्री० मंत्रोपदेशार्थं गोष्ठीपुराभिगमनंनाम विंशोध्यायः २० ॥

गोष्ठीपुर पहुंचे योगीशा । बन्दे गुरुपद महि धरि सीशा ॥
शिष्यन संग लखि गुरुअनखाये । हमजिमिकहोन तुमतिमिआये
तुमहि अलभ्य लाभ यह तातें । गोप्य अर्थ कहियत यह जातें ॥
कहयतीश जिमि नाथनियोगा । मैं तिमि किय नहि नेकअयोगा ॥
आयसु रही अकेले आवौ । यज्ञसूत्र त्रदण्ड संग ल्यावौ ॥
निज उपवीत कूरपति मान्यो । दाशरथी त्रदण्ड गुनि आन्यो ॥
यहसुनि मुनि मनमें हरषाने । अतिप्रिय दोउ यतिपति के जाने ॥
कहमुनि सुनौ यतीश सुजाना । तुम जो कहा बचन हम माना ॥
यद्यपि तद्यपि हम केवल तुमकौ । मानत अधिकारी नहि इनकौ ॥
तुमहूं इनहिं नीतियुत शेषा । जानि पात्र कीजौ उपदेशा ॥

दो० और न काहू दीजियौ परम गोप्य यह अर्थ ।
अधिकारी दुर्लभ महा ता बिनु दिये अनर्थ ॥

सो० परमेकान्त बुलाय यतिपति सौं बहु सपत लै ।
गौरव प्रथम सुनाय उपदेश्यो मन्त्रार्थ बर ॥

मूलमन्त्र को अर्थ अनूपा । सब सुख सिद्धि कल्पतरु रूपा ॥
सहित न्यास मुद्रा ऋषि छन्दा । सुर जप ध्यानयुक्त द्विजचन्दा ॥
उपदेश्यो यतिबरहि सप्रीती । बरनि प्रभाव अमित बहु रीती ॥
भुक्तिहु मुक्ति भक्ति अरु ज्ञाना । देत सकल श्रुति करत बखाना ॥
श्रीपति बशीकरण निर्धारा । हरिदासन को प्राण अधारा ॥
जो ब्रह्मघ्न कृतघ्नहुं होई । अपर महापातक रत जोई ॥
अष्टाक्षर जापकहि निहारी । छूटहिं तासु सकल अघ भारी ॥
जपि अष्टाक्षर मंत्र बिशोका । करत पुनीत मनुज तिहुं लोका ॥

नवाहिं सप्रेम जापकहि जेजन। हरिपदलहहिं कलुष तजि तेजन॥
लेहिं जो मन्त्र अवैष्णव पाहीं। अमित कल्प अघलोक रहाहीं॥

दो० बिना चक्रधारी द्विजहि जो यह मन्त्र पढ़ाय।
रौरव जाय बहोरि सो चाण्डाली तनु पाय॥

सो० कहि न सकहि ब्रम्हादि अति अचिन्त्य माहात्म्य वर।
देय सकल अणिमादि बहुत कहाँ लगि बरनियै॥

करि उपदेश मंत्र यतिराजहि। सहितअर्थ सुख सुकृत समाजहि॥
भयेप्रसन्न सत्पात्र शिष्यलहि। यतिमन मुदमणि पाययथाअहि॥
बंदि चरण गुरु आयसु पाई। तहँते हर्षि चले यतिराई॥
तादिन गोष्ठीपुर के माहीं। रहो नृसिंहोत्सव वा ठाहीं॥
जन समूह तहँ जाय निहारो। कृपा जलधि यतिपति उर बाढ़ो॥
अर्धनिशा गोपुर पगु धारो। ऊंचे स्वर मनुराज पुकारो॥
चारि अधिक सत्तरि द्विजराजा। भये सो मंत्र सुनत कृतकाजा॥
निजजन मुखनसुनी यहगाथा। बोलि यतीश कहोमुनिनाथा॥
हम तुमकौ अति गोप्य बतायो। तुम क्यों ऊंचे चढ़ि गुहरायो॥
काविधि यह साहस तुम कीन्हो। गुरुद्रोह फल कह मन चीन्हो॥

दो० कह यतीश गुरुद्रोह को नर्कहि फल निर्धार।
मुनि कह याबिधि जानि तुम क्यों लीनो अघ भार॥

सो० तब बोले यतिभूप नर्क एक मैं जाउँगो।
यह अति लाभ अनूप बहु जन हरि पद पाय हैं॥

सुनि मुनीश यह अद्भुत बाता। भये प्रेम परिपूरण गाता॥
अहो बुद्धि यह मोहि न आई। जो यतिभूपति प्रकटि दिखाई॥
को इमि करै अमानव करनी। भूमि नाग शिरधरै कि धरनी॥
निजअनहित सहिजगकल्याना। तुमबिनु अपरकरैको आना॥
जग रक्षण कारण अवतारा। नहिंअचरज तव चरित उदारा॥
तुमकौ निज रंगी हम मानत। श्रीमन्नाथ नाम कहि गानत॥
अरु बैष्णव सिद्धांत सनातन। रामानुज मत कहिहैं सबजन॥
पुनिपुनि कहि मन्नाथ मुनीशा। सानँद बोलि इकांत यतीशा॥

पूर्व रंगपति निज सम्बादा । बरनन कियो सहित अहलादा ॥
जब मोहि श्रीपति दियो निदेशा । चरमश्लोक अर्थ उपदेशा ॥

दो० कीजै मोक्षोपाय लखि अधिकारी जन जोहि ।
तब मैं कहो कृपायतन लखि न परत सो मोहि ॥
सो० रंगी कृपानिधान तब मोसौं याविधि कह्यो ।
खोजि सयत्न सुजान हम तुम पास पठाय हैं ॥

सो अब हमैं मिले तुम आई । यह अति गोप्य अर्थ यतिराई ॥
नहिं काहूसौं कहिबे लायक । सुनि पद सपतकरी यतिनायक ॥
नहिं लांघहुँ अब नाथरजायसु । काहु न कहौं बिना प्रभुआयसु ॥
कह गुरु रहित तपस्या जोई । भक्ति हीन श्रद्धा बिनु होई ॥
स्वामि द्रोहि जो नर मतिमन्दा । ताकौ मति दीजौ यतिचन्दा ॥
बर्ष छमास मास लखि लीजौ । यत्न समेत परीक्षा कीजौ ॥
निस्पृह ह्वै कहियो तब ताही । अति शुचि पात्र जानियो जाही ॥
यहकहि कियचरमार्थप्रदानू । जिमि अर्जुनहि वृष्णिकुलभानू ॥
पुनिनिजतनय सोमनारायण । यतिपतिचरणकरायपरायण ॥
बोले बचन पियूष बहोरी । यतिभूपति पर प्रीति न थोरी ॥

दो० सुत कछु अर्थ बिराइ बर यामुनमुनि गुरुराय ।
राखे हैं बररंग उर पढ़ौ सो तिन सौं जाय ॥
सो० पायो मन विश्राम याविधि गोष्ठीपूर्ण गुरु ।
प्रभु आये निज धाम गुरु आयसु लहि बन्दि पद ॥

इतिश्रीप्र० कथंचित् गोष्ठीपूर्णकृपया मंत्रराज भूरिदानंनाम
एकविंशोध्यायः ॥ २१ ॥

तापाछे कूरेश्वर ज्ञानी । गुरु सौं कहो जोरि युग पानी ॥
नाथ मोहिं दीजै चरमारथ । तुम प्रभु मूर्तिमान परमारथ ॥
बोले यतिपति सुनौ सुजाना । मोकौं गुरु आयसु बिधिआना ॥
श्रद्धा भक्ति सहित इकबत्सर । सेवै शम दमयुत जो शिष्यबर ॥
दीजौ ताहि सुनत कुरुनाथा । बिनतीकरी जोरि युग हाथा ॥
अस्थिर तनकी कौन प्रतीती । बत्सर काल सहियै केहि रीती ॥

कह प्रभु गुरू गृह सो फल लहई । करि उपवास मास इक रहई॥
कूराधिप सुनि हर्षि सप्रेमा । कहि सुभाग व्रत कियो सनेमा ॥
तब गुरु सौं चरमारथ पायो । ह्वै कृतार्थ बड़ भाग मनायो ॥
पुनि दाशरथि बंदि गुरु चरना । याच्यौ चरमअर्थ भय हरना ॥

दो० कह यतिपुंगव सुनौ सुत मैं गुरु सौं प्रण कीन ।
कूराधिप तजि इतर सौं कहौं न यह व्रत लीन ॥
सो० गोष्ठिपूर्ण ढिग जाय सेवहु भक्ति पुनीत युत ।
करुणानिधि गुरुराय करैं कृपा तब पायहौ ॥

दाशरथी गुरु आयसु पाई । गोष्ठीपुरहि गये हरषाई ॥
परमाचार्य चरण बहु भाँती । सेय मास षट दिन अरु राती ॥
करि प्रणाम बहु भांति निहोरी । चरमअर्थ याच्यो कर जोरी॥
कह मुनि तुम यतिनाथ समीपा । जाय पढ़ौ चरमार्थ पुनीता॥
फिरि आये तब निज गुरु पासा । कंहि चरण वृत्तांत प्रकासा ॥
यतिपति गुरुदुहिता तिहिअवसर । पतिगृहते आईनिज पितुघर॥
व्याकुल चित जनकहि कह रोई । सासु ताहि दुख दीनो जोई॥
निशि अकेलि जल भरन पठाई । मैं सर दूरि जानि भयपाई ॥
तासौं संग चलन हित कहेऊ । सासु कठोर उतरु मोहिं दयेऊ॥
को किंकरी जो तव सँग जाई । पितु घरते सो ल्याउ बुलाई ॥

दो० महापूर्ण अतुला बचन सुनि बोले तेहि काल ।
जाय सुनावौ भ्रात कौ वे समरथ दुख साल ॥
सो० यतिनायक ढिग आय कहो सकल वृत्तांत तिन ।
तब बोले यतिराय दाशरथी सौं बचन वर ॥

वैष्णव सभा यतीश कृपाला। कहत बचन मृदु बिशद रसाला॥
दाशरथी तव अति हित एहा । अतुला संग जाउ तेहि गेहा ॥
इनके सासु श्वशुर गृह लोगा । जो कछु तुमकौ देयँ नियोगा ॥
सो सब कीजौ तात सप्रीती। मद ईर्षा क्रोधादिक जीती ॥
शिर धरि गुरु आयसु अति आदर। तेहि सँग गये दाशरथि सादर॥
सेवक ज्यों सेवा सब भाँती। सादर करन लगे दिन राती ॥

तहां एक द्विजबर बिद्वाना । बोले शास्त्र अर्थ बिधि आना ॥
सुनि दाशरथि कहो तिनसौं इमि । नहि यह अर्थ कहत हौ तुम जिमि ॥
यह पद को आशय कछु आना । सुनि अति क्रोध कियो बिद्वाना ॥
पाचक शास्त्र कहां तैं जानै । धृष्ट बचन सन्मुख जो बखानै ॥

दो॰ जाउ ल्याउ जल तोहि कह इन बातन सौं काज ।
कहँ केवल गोमायु कहँ पाचकशास्त्र समाज ॥

सो॰ दाशरथी बिद्वान पूर्वापरहि बिचारि के ।
कीनो अर्थ प्रमान सुनि सब जन बिस्मित भये ॥

जानि प्रभाव डरे मन माहीं । सेवा हम लीनी इन पाहीं ॥
ये तौ कोउ पंडित बिज्ञानी । हरि सेवक अनन्य गुण खानी ॥
हमते यह पातक भयो भारी । तासु बिपाक अवशि दुखकारी ॥
को तुम सकल अर्थ के ज्ञानी । दासवृत्ति केहि कारन ठानी ॥
निज गुरु आयसु मानि सनेहा । हैं यह वृत्ति निरत तव ग्रेहा ॥
सुनि सबहुन शिर धरि पद पूजे । माने मनहि महान अदूजे ॥
अति बिनीत बहु बचन सुनाये । निज कीने अपराध क्षमाये ॥
कीजै कृपा पधारियै आसन । अब जिनि हमहि करौ अघबासन ॥
आये हैं लहि जिनकी आयसु । क्यों चलि जायँ बिहीन रजायसु ॥
सुनि यह बचन अलौकिक मानी । गुरुपद भक्त कर्म मन बानी ॥

दो॰ गये यतीश्वर निकट तब कहो सो सकल प्रसंग ।
तब यतीश निज शिष्य कौं पठयो तिनके संग ॥

सो॰ तिन यतिनाथ रजाय जाय कही दाशरथि सौं ।
चले सुमत हरषाय आय निहारे गुरु चरण ॥

गुरु पद बंदि सहित अनुरागा । अतिशय धन्य मानि निज भागा ॥
हाथ जोरि ठाढ़े भये आगे । गुरु कृपाल देखत अनु रागे ॥
सबप्रकार अधिकारी जानी । निजपद भक्त कर्म मन बानी ॥
तहसहि चरम अर्थ उपदेशा । जानि अनन्य भागवत शेषा ॥
देखि बैष्णावन टहल प्रबीना । बैष्णावदास नाम बर दीना ॥
गये बहुरि बररङ्ग समीपा । शुभ गुण बिमल सदन बर दीपा ॥

बंदि चरण कीनी सिवकाई । भये प्रसन्न तिनपै गुरुराई ॥
तब सब द्राबिड़ वेद पढ़ायो । सकल अर्थ को सार सुहायो ॥
पुनि कृपाल निज मंदिर आये । सुरगुरु जिमि शोभित सुखपाये ॥
शिष्यन कौं सो अर्थ अनूपा । दीने कृपा बिबश यति भूपा ॥

दो० याबिधि कूरेशहि अरु दाशरहि यतिराय ।
चरम अर्थ उपदेश किय लखि सुपात्र हरषाय ॥
सो० यामुन सुत पै जाय, पढ़ो बिशद द्राविड़ निगम ।
राजत भये सुखदाय तेहि व्याख्यान सुबुद्धि करि ॥

इतिश्रीप्र० कूरेश दाशरथिभ्यां चरमार्थोपदेशोनाम
द्वाविंशोध्यायः ॥ २२ ॥

ता पाछे इक समय सुहाये । गोष्ठीपूर्ण रङ्गपुर आये ॥
मालाधर देशिक लै साथा । तेहि मठ गये जहां यतिनाथा ॥
तब मन्नाथ माथ महि धरिके । कियो प्रणाम पुलक तन भरिके ॥
गोष्ठीपूर्ण कहो यतिपति सौं । सहसगीत व्याख्यान सुमति सौं ॥
मालाधर गुरु पै सुनि लीजै । शठजित बिशद सूक्ति मन दीजै ॥
यह कहिके निज पुर पगुधारे । यतिनायक गुरु निकट पधारे ॥
प्रेम नम्रता सहित सुजाना । सुनत सहस्रगीत व्याख्याना ॥
यामुन उक्त भांति मालाधर । उपदेशत गाथा सुअर्थ बर ॥
काहू गाथा को तेहि अवसर । भूलि अपार्थ कियो मालाधर ॥
कह यतिपति तब देशिक पाहीं । गुरुवर अर्थ युक्त यह नाहीं ॥

दो० तब मालाधर कुपित ह्वै जातभये निज धाम ।
गोष्टिपूर्ण बृत्तान्त सो सुनि आये तेहि ठाम ॥
सो० मालाधर ढिग जाय पूछो मर्म कृपायतन ।
शठजित सूक्ति सुहाय क्यों यतिपति सौं कहत नहि ॥

मालाधर कह हम गुरु पाहीं । जाविधि सुनो कहो उन काहीं ॥
यतिनायक प्रमाण नहिं कीनो । ताते हम कहिबो तजि दीनो ॥
पूर्ण कहो तुम ज्ञान निधाना । अजहुँ न यति स्वरूपपहिचाना ॥
सांदीपिन ढिग जिमि यदुचंदा । तैसेहि तुम सौं पढ़त यतिंदा ॥

यामुन हृदय अर्थ जो रहेऊ । सो सब इनहि प्रकाशित भयेऊ ॥
यामुन अरु यतीश को हारद । एकहि जानौ बुद्धि बिशारद ॥
मति जानौ अपने मन माहीं । हम जो कहत ये जानत नाहीं ॥
नर सामान्य इनहि मति जानौ । अतिनर शेषरूप पहिचानौ ॥
या प्रकार इनकौ मन जानी । सादर अर्थ सो कहौ बखानी ॥
तिनको बचन मानि मालाधर । बहुरौं लगे पढ़ावन यतिबर ॥

दो० तव इक थल को अर्थ सुनि पुनि बोले मन्नाथ ।
भगवद्यामुन गुरु यहाँ याबिधि कहत न नाथ ॥
सो० सुनि यतीश के बैन मालाधर बोले तबहिं ।
यामुन लखे न नैन किमि उनको आशय लहो ॥

बोले तब रामानुज स्वामी । जिमि इकलव्य द्रोण अनुगामी ॥
यामुनशिष्य मोहितिमि जानौ।प्रभुममबचनअनृत जिनिमानौ ॥
सुनि यतिराज बचन हरषाने । गोष्ठीपूर्ण बचन सति माने ॥
निश्चय करि तिनकौ अवतारा । बुधि बिवेक बिज्ञान अपारा ॥
जो हमगुरुसौं नहि सुनिपायो । सो यतीश तुमसौं अबपायो ॥
यह कहिके प्रदक्षिणा दीनो । दण्डप्रणाम प्रेमयुत कीनो ॥
ग्रंथ समाप्ति यतीश कृपाला । पूजे गुरु करि प्रीति बिशाला ॥
बहुरौं अपनो सुत मालाधर । सुंदर बाहु भक्ति पथ नागर ॥
कियो समाश्रित यतिपतिचरणा।मोहजनित संशय सबहरणा ॥
बहुरौं हर्षि कहो यतिपतिसौं । ज्ञाननिधान दीनजनगतिसौं ॥

दो० भक्तराज बररंग सौं करि प्रसन्न सिवकाय ।
अर्थ बिशेष करौ श्रवण आनँद अमी अघाय ॥
सो० आनंदे यतिराज देशिक बचन पुनीत सुनि ।
महा अर्थ के काज सेवत भये बररंग कौं ॥

निशिप्रति पावन पब षटमासा॥कियोनिवेदन सहितहुलासा ॥
धनुर्मास उत्सव जबआयो । नाट्यभक्ति गुरुअति श्रमपायो ॥
स्वकर यतीश हरिद्रा लेपत । देशिक अँगको श्रम नितमेटत ॥
उद्वर्त्तन आदिक सिवकाई । अवसर उचित करत यतिराई ॥

हँसि बोले बररङ्ग उदारा । लियो चहत सर्बस्व हमारा ॥
ताते ऐसी सेवा कीनी । मो मन वृत्ति स्ववश करि लीनी ॥
अब तुम सुनौ चरम पुरुषारथ । निगमागम को सार यथारथ ॥
वकुलाभरण देवता अपने । जानौ और न दूजो सपने ॥
पूर्ब भये जिमि मधुर कवीशा । तिमि अब तुम थितहोउ यतीशा ॥
गुरु परब्रह्म परम धन जानौ । परमकाम परप्राप्यहु मानौ ॥

दो० परज्ञान गुरु जानियै पर गति गुरु जिय जान ।
परमधर्म्म उपदेशही को सद्गुरु सम आन ॥

सो० आपहि हरि साक्षात नर बपु धरि विचरत महीं ।
सदाचार्य्य बिख्यात निज सन्मुख लोगन करत ॥

स्वप्नहुँ मैं मानव जिनि जानौ । फल उपाय दोउ उनहीं मानौ ॥
इमि पंचम उपाय यतिपतिकौं । किय उपदेश प्रेम परिमितिसौं ॥
तिनके पुत्र रहो कोउ नाहीं । अर्पत जेहि यतीश पद माहीं ॥
ताते शोट्टनम्य लघु भाई । भये कृतार्थ यति शिष्य कराई ॥
याबिधि सब विद्या यतिनायक । पाय गुरुन सौं जग सुखदायक ॥
अनुदिन सकल लोक हितसाजत । शिष्यन सहित रङ्गपुर राजत ॥
जिमि नृप सुतहित तनअवसाना । सन्मंत्रिन निधि देत सुजाना ॥
तिमि सब अर्थ धरे यामुनगुर । महापूर्ण आदिक शिष्यन उर ॥
ते सब अर्पण करियतिराजहि । भयेकृतार्थकरिनिजगुरु काजहि ॥
पुत्रन शिष्य कराय वहोरी । भूरिभाग भये पदरति जोरी ॥

दो० यतिपति शिर सम्बन्ध ते पूर्व्वाचार्य निकाय ।
भये मुक्त पुनि अपर गुरु पद सम्बन्धहि पाय ॥

सो० मणिवर सम यतिभूप गुरु सब मुक्ताहार सम ।
राजत मध्य अनूप करत प्रकाशित सबन कौ ॥

इतिश्रीप्र० रामानुजाय अर्थोपदेशन्नाम त्रयोविंशोध्यायः २३ ॥

सकललोक हितरत लक्ष्मणमुनि । बैष्णवमारग वृद्धिहृदयगुनि ॥
आराधन क्रम अरु गद्यत्रय । कीन्हो श्रीनायक प्रपत्ति मय ॥
श्रीश दास्य जग जनन रमावत । रङ्गी सेवा सबिधि करावत ॥

अर्चक रङ्ग द्रव्य के बंचक। सो अवकाश न पावत रंचक ॥
पुरुशाधम पापी जे तिनमैं। यतिपति द्रोह बिचारो मनमैं ॥
धनदै बशकिय कोउ लोभी द्विज। करौघात बिषदै रामानुज ॥
तेहिखल दिय बिषान्न तियद्वारा। भिक्षाहित जब यति पगुधारा॥
भिक्षादेत रुदनकिय नारी। नखन लिखो निज पति छलभारी ॥
साध्वी मनलखि करीपरिक्षा। बिष निश्चयकरि त्यागी भिक्षा ॥
अचये तीनि अंजुली पानी। व्रत करि रहे तोष मनमानी ॥

दो० गोष्ठिपूर्ण बृत्तान्त सुनि गये रंगपुर धाय ।
यतिपति गुरु आगवन सुनि आगे लीने आय ॥
सो० श्रद्धा भक्ति समेत परे दण्ड जिमि गुरुचरण ।
कावेरी के रेत घर्मकाल मध्यान दिन ॥

सुहृद परीक्षा हित गुरु ज्ञानी। कहो न उठन तिनहि मृदुबानी ॥
उठे न बिनु नियोग यतिराया। यद्यपि भयो क्लेश अतिकाया॥
तबप्रभु शिष्य प्रणतआरतिहर। अत्रिबंशभूषण करुणाकर ॥
तप्तरेत गुरुदेव निहारी। भये हृदय ब्याकुल अति भारी ॥
परमाचार्यहि बचन सुनाये। कह हमरे गुरु मारन आये ॥
पुनि निज पीठि राखि गुरुराया। आपुन परे रेत धरि काया ॥
तब गुरु शिष्य प्रशिष्य उठाये। प्रेम मग्न दोउ हृदय लगाये ॥
कहो यतीशहि कर गहिके तब। इनसौं पाक करावौ नित अब॥
दूजे द्विज करसौं कछु भोजन। करौ न भूलि प्रतीति आनिमन॥
गुरु आयसु शिरधरियतिनायक।वैसेहि कियो स्वजन सुखदायक॥

दो० अर्धी अर्चकन बहुरि बिष दीनो तीर्थ मिलाय ।
जगदाधारहि सो दियो जानि लियो यतिराय ॥
सो० कियो भक्तियुत पान बिष मिश्रित श्रीपादजल ।
स्वयं शेष भगवान बिष बाधा कछु नहिं भई ॥

हरिजन वर रामानुजमाहीं। भयो बिषबिफल सोअचरज नाहीं ॥
औरौ अभिचारादि कठोरा। यतिपति मारनहित अतिघोरा ॥
किये अर्चकन दुष्ट स्वभावा। भये नष्ट यतिनाथ प्रभावा ॥

जिमि बशिष्ठ द्विजदंड प्रतापा। गाधिसूनुकृत बल नहिं व्यापा॥
तब अर्चक मन माहिं डराने। हैं अवतार अवशि मन जाने॥
यतिनायक को पूजन कीनो। निजकृत दोष सकल कहि दीनो॥
हम अघ सिंधु कुमारगगामी। तुम क्षमतामय कुंभज स्वामी॥
क्षमहु सकल अपराध हमारे। कृपासिंधु हम दास तुम्हारे॥
दीनबचन सुनि दीनदयाला। अभय कियो तिनकौं तेहिकाला॥
निज निपुनाइ यतीश दिशादश। उदासीन अरि मित्र कियेबश॥

दो० सकल जगत रक्षण कुशल छायो सुयश दिगन्त।
जीतत भये अरि बर्ग सब हिमि गिरि सेतु प्रयन्त॥
सो० राजत यतिकुलपाल सुरनायक जिमि भूमितल।
सेवत सज्जन माल सुर समूह जनु तन धरे॥

इतिश्रीप्र० यतीन्द्राय बिप्रान्नप्रदानन्नाम चतुर्बिंशोध्यायः॥ २४॥

यज्ञमूर्त्ति बिद्वान धुरंधर। बिद्या शिष्यादिक सम्पति वर॥
मायमती तुरियाश्रम अस्थित। जीति गङ्गतट सकल बिपश्चित॥
सुनिलक्ष्मणमुनि बिभव अपारा। कियोहृदय मत्सर अतिभारा॥
तिनके जीतनकी करि कामा। लै सँग बिपुल शास्त्रमय सामा॥
शिष्यसमूह अमित लै साथा। आयो जहँ राजत यतिनाथा॥
लक्ष्मण गुरु सौं बोलो बानी। सुनियत तुम निगमागम खानी॥
शास्त्रअर्थ कीजै मम साथा। सुनत बचन कह यतिकुलनाथा॥
शास्त्रअर्थ जीतैं जो तुमसौं। कह फल तासु कहौ सो हमसौं॥
यज्ञमूर्ति तब बोलो याबिधि। जो तुम मोहिं जीतौ बिद्यानिधि॥
तुम्हरे मत प्रवेश हम करहीं। तव पादुका सीस निज धरहीं॥

दो० तुमहूँ ऐसेही करौ जो हारौ हम साथ।
कह लक्ष्मण मुनि सो नही ग्रंथ गहौं नहिं हाथ॥
सो० दुहुन प्रतिज्ञा ठानि अष्टादश दिन अवधि करि।
निज निज जय अनुमानि सभामांझ गरजे युगल॥

बिद्यानिधि तहँ जिमि पंचानन। निगम नाद गरजत सहसानन॥
मद उन्मत्त गयन्द समाना। बादत यज्ञमूर्त्ति बिद्वाना॥

निज निज समरथ प्रकटत दोऊ । तिनमैं धर्षित होत न कोऊ ॥
सत्रह दिन वीते परवादी । यति सुयुक्ति कुयुक्ति कहि बाधी ॥
तव उठि निज बासस्थल गयेऊ । मन अति हर्ष बढ़ावत भयेऊ ॥
यतिनायक निज मंदिर आये । धर्महानि गुनि अति अकुलाये ॥
करि अस्नान पूजि वरदायक । बंदिचरण बिनवत सुखदायक ॥
सुनियै विज्ञापन मम स्वामी । सर्वेश्वर प्रभु अन्तरयामी ॥
वैष्णव पथ तव अचल अनादी । बाधत अब लघु मायाबादी ॥
गुरु शठकोप नाथ मुनि काला । ताड़ित भयो न कबहुँ कृपाला ॥

दो० अबलौं तुम रक्षण कियो भलीभांति जगदीश ।
मम अवसर ताड़ित सदृश देखि परत सो ईश ॥
सो० इतने दिन पर्यन्त निज स्वरूप गुण वैभवहि ।
थापो तुम भगवन्त अब कछु और बिचारहू ॥

सोइ कीजै जो तुमकौं भावै । कौनभाँति जन तुमहिं सिखावै ॥
बहु प्रमाण अबलौं तुम थापे । अब सङ्कल्प और अभिलाषे ॥
यौं कहि बिनु भोजन यति सोये । खेदखिन्न मन शोच समोये ॥
प्रभु प्रसन्न कह स्वपने माहीं । समरथ शोच योग्य तुम नाहीं ॥
मैं करि यत्न कियो सम्पादन । शिष्य तुम्हारो तजौ बिषादन ॥
माया बादकरौ तुम खंडन । यामुनगुरु मनकी रुचि मंडन ॥
हरिर्हरिः कहि यतिपति जागे । करि आश्चर्य बिचारन लागे ॥
निज अर्चा चरणन शिरधारी । भये मुदित प्रभु कृपा निहारी ॥
यज्ञमूर्त्ति जीतन के काजा । चले हर्षि सँग शिष्य समाजा ॥
मुख प्रसन्न मानस गंभीरा । बादसभा आये मतिधीरा ॥

दो० यज्ञमूर्त्ति लखि चकित भो तेज पुंज यतिराज ।
कालि हारि खेदित गये आवत गज गति आज ॥
सो० प्रफुलित वदन निहारि संशय शोच बिहीन प्रभु ।
हरि अवतार बिचारि तिनहि अजय मानस भये ॥

सहसहि मुदितपरेप्रभुचरणा । कहि जय जय प्रणतारतिहरणा ॥
कह लक्ष्मणमुनि है कह आजू । करत न शास्त्रअर्थ केहिकाजू ॥

कह मखमूर्त्ति जोरि युग हाथा । हैं प्रत्यक्ष तुमहिं श्रीनाथा ॥
उनहितुमहिहमभेदनमानहिं। नहिसमरथअबकछुजो बखानहिं॥
यह सुनि हँसि कह यतिकुल मंडन । सुनौ करत हम तवमत खंडन ॥
ब्रह्महि तवमत निर्गुणमानत । अगुण श्रुतिन प्रमाणतहँ आनत ॥
सगुण श्रुतिन सौं परत बिरोधा । तब ताको इमि करत प्रबोधा ॥
है जो ब्रह्म ताड़ित अज्ञाना । ताकौं ये श्रुति करति बखाना ॥
ज्ञानरूप पुनि ब्रह्म बतावत । ज्ञान ते नशति अबिद्या गावत ॥
अति अघटित तेहि जीतब ताको । नहिं संभव पुनि छूटब वाको ॥

दो॰ तव दोहुन कौ नित्यता प्राप्त भई निश्शङ्क ।
इमि अँधरो अद्वैत गज परो द्वैत के पङ्क ॥
सो॰ ऐसे युक्ति अनेक कहत भये यतिमुकुटमणि ।
लेवे दण्ड जो एक यज्ञमूर्त्ति त्याग्यो तुरत ॥

सुनि लक्ष्मणमुनि वचन प्रमाना । मिटो यज्ञमूरति अज्ञाना ॥
करि प्रणाम बोले करजोरी । मैं प्रभु दुर्म्मति धुन्धकधोरी ॥
निज सुबिवेक जीति प्रभुलीनो । ज्ञानांजन मम नैननदीनो ॥
अब निज शिष्य कृपा करि कीजै । यज्ञसूत्र त्रदंड मोहि दीजै ॥
करुणादृष्टि यतीश बिलोकी । सोइ करिहैं काहि कियो बिशोकी ॥
कियो त्याग तुम सूत्र शिखाको । प्रायश्चित्त करौ अब ताको ॥
प्राजापत्य क्रिया षट बिधियुत । गायत्री युत प्रथम करौ द्रुत ॥
तब उपवीत योग्य तुम होहू । सोइ कराय तिनसौं करिछोहू ॥
शिखा सूत्र धारण करवायो । बहुरि ताप संस्कार सुहायो ॥
हरि संबन्धी वेद बिधाना ॥ सबहि जासु अधिकार बखाना ॥

दो॰ ताहि प्रभृति पांचौ किये संसकार शुचि हेतु ।
अब जीवन लौं मति तजौ इन्हैं देखि श्रुति सेतु ॥
सो॰ उर उपवीत त्रदण्ड शिर चूडा जलपात्र कर ।
धारण करौ अखण्ड कोपीनरु कटि सूत्र नित ॥

बरदायक उपकार अपारा । धर्‍यो नाम तिनके अनुसारा ॥
अपने नाम सहित यतिनाथा । राखो नाम देव मन्नाथा ॥

पहिले देवराट पद भाखी । प्रथम नाम संज्ञा यह राखी ॥
देवराज मुनि दूजो नामा । करि लैगये रंगपति धामा ॥
तिनकौ तहां प्रणाम करायो । तीरथ अरु शठकोप दिवायो ॥
निज मठ तिनकौं ल्याय बहोरी । करवायो प्रणाम करजोरी ॥
कहि बरदायक कृपा प्रभावा । बिशद असन कछु भोग लगावा ॥
सो प्रसाद यतिनायक लीन्हो । शिष्ट अन्न पुनि तिनकौ दीन्हो ॥
बहुरौं चरणन को जल दीन्हो । सकल प्रकार कृतारथ कीन्हो ॥
भट्टनाथ आदिक प्रबंध शुचि । देवराज मुनि पढ़े सहित रुचि ॥

दो० चारिसहस द्रिविड़ागम इमि पढ़ाय यतिभूप ।
मेटि घोर परबाद तम राजत दिनकर रूप ॥
सो० देवराज मुनि संग कूरेशादिक शिष्य युत ।
तेज प्रभाव अभंग रंगधाम आनँद सहित ॥

इतिश्रीप्र० यज्ञमूर्त्तिपराजयोनाम पंचविंशोध्यायः ॥ २५ ॥

पुनि यतिनायक कियो बिचारा । यज्ञमूर्त्ति को तेज अपारा ॥
बिद्या बुद्धि तेज श्री यशकरि । काको बल जु सकै निज बशकरि ॥
हैं कछु मोते ज्ञान धुरन्धर । देवराज कटाक्ष मो ऊपर ॥
तातें भये शिष्य ये मेरे । सुरगुरु ते विद्वान घनेरे ॥
अब मैं इनको बिभव बढ़ाऊं । निज सम मठ न्यारो निरमाऊं ॥
ऐसे बहु बिचार मन आनी । कस्यो तुरत तैसेइँ गुणखानी ॥
यतिपतिकृत बैभव लहिकेमुनि । परमप्रकाशितभयेपुनि सोमुनि ॥
आर्यजनन कीन्हो बहु माना । सबहुन सबबिध उत्तम जाना ॥
ता अवसर अनन्त यज्ञेशा । भक्तग्रामपूरण बिप्रेशा ॥
मरुधुग्रामपूरण द्विज चारी । ज्ञान भक्ति निधि श्रुतिअनुसारी ॥

दो० आये यतिपति निकट ते शिष्य होन के काज ।
देवराज मुनि को बिभव तिन्है कहो यतिराज ॥
सो० बहुबिधि भक्ति दृढाय संसकार पंचक सबहि ।
करवायो हरषाय देवराज सकुचत डरत ॥

देवराज मुनि कहत सबन सौं । मैं यह कियो यतीश्वर मन सौं ॥

ग्रामटिंप्प ग्रीवा जिमि कोई । बांध तालफल मम गति सोई ॥
ताते तुम सब यतिपति चरणा । सत्य कहौं जानौ निज शरणा॥
तापाछे यतिपति सेवा हित । आये कोउ भागवत बिमल चित॥
पूँछौ मठ मन्नाथ नाम लै । कहो काहु मन्नाथ यहां है ॥
तुम चाहत मन्नाथ कौन ते । तिन कह हमैं बताय देउ ते ॥
जे हमरे सिद्धान्त प्रवर्त्तक । रामानुज परबाद निवर्त्तक ॥
तब बैष्णव प्रभु मठ दिखरायो । देवराज मुनि यह सुनि पायो॥
भये दुखित मन अरु मठत्यागा । गहि गुरुचरण बिकलअनुरागा॥
करत प्रार्थना सुनियै नाथा । मायाहत यह जीव अनाथा ॥

दो० भ्रमत अपरमित योनि जग घोर नर्क पुनि जाय ।
पुण्य लेश नर तन लह्यो घुन अक्षर के न्याय ॥
सो० शास्त्र ज्ञान अभिमान मोहं ब्रह्म बिमोह यह ।
अस मैं पाप निधान उद्धारयो प्रभु करि कृपा ॥

अब सोइ आत्म नाश को हेतू । आय बनो पुनि यतिकुलकेतू॥
प्रथकस्थान छांड़ि यतिदीपा । रहिहौं चरणसरोज समीपा ॥
तजि पदकमल मोहिं कहँ ऐना । करुणाधाम कमलदल नयना ॥
तुम्हरे मन अनुरूप गुसाईं । करिहौं दास्य देह जब ताईं ॥
कृपासिंधु सुनि मृदु मुसुकाने । बिमल बिबेक देखि हरषाने ॥
हरि आराधनक्रम अविशेषा । ह्वै प्रसन्न तिनकौं उपदेशा ॥
आयसु कीन्ही प्रतिदिन यह क्रम । पूजौ मम अर्चा परिहरि श्रम॥
सोइ कैंकर्य्य मुदित सुरेश मुनि । करत भये बड़भाग हृदय गुनि॥
ज्ञानसार प्रबन्ध पुनि कीना । गुरुसेवी मुनि जगहित लीना ॥
दूजो ग्रंथ प्रमेयसार करि । सेवत गुरु अनन्य व्रत उर धरि ॥

दो० गुरु बिनु मानत और नहि देव दूसरो जाप्य ।
सर्ब भाव सेवत चरण मानि मनहि परप्राप्य ॥
सो० स्वयं श्रीश अवतार आचारज जानत सदा ।
तजि मठ जगब्यवहार यतिभूपति सन्निधि बसत ॥

इतिश्री० ज्ञानसारप्रमेयसारग्रंथद्वयनिर्माणन्नामषटविंशोध्यायः

शिष्यन कहतयतीश बिचक्षण। सहसगीत व्याख्यानबिलक्षण॥
तहाँ अर्थ आयो इक गाथा। भजिये जन्म भरि व्येंकटनाथा॥
ताहि देखि बोले यतिभूपा। को करिहै यह कृत्य अनूपा॥
बसि व्येंकटगिरि पुष्प लगावै। वृंदाविपिन बिशाल बनावै॥
सानुकूल सेवै जीवन लौं। पूजन करै माल तुलसी सौं॥
सो सुनिके अनन्त करजोरे। आयसु लै पुनि चरण निहोरे॥
पहुँचे श्रीव्येंकटगिरि पावन। परम रम्य कलिकलुष नशावन॥
श्रीनिवास पद देखे जाई। बंदत पुलकावलि उर छाई॥
तुलसी पुष्प बाटिका सुन्दर। कीन्ही तहँ भागवत पुरन्दर॥
गुरु नियोग जाबिधि सौं रहेऊ। सो नित करि परमानंद लहेऊ॥

दो० बिबिधि पुष्प तुलसी सहित रचत मनोहर माल।
अर्पत व्येंकटनाथ कौं अन्तर तजि सब काल॥
सो० सो सुनिके यतिचन्द्र मनमें परम प्रसन्न ह्वै।
चले तहां सानन्द पुनि पुनि शठजित सूक्ति पढ़ि॥

लहि रङ्गी आयसु यतिनाथा। चलत भये शिष्यन लै साथा॥
महितक्षेत्र करि हरिहि प्रणामा। पहुंचे पुण्डरीकदृग धामा॥
दिव्य देश मारग मैं जेते। बन्दन करि पूजे सब तेते॥
देहलिनगर त्रबिक्रम देवा। तहं प्रणाम करि कीन्ही सेवा॥
चित्रकूट शैवन युत देखो। तिहि शोधन कौ समय न पेखो॥
तातें सो कारज न बिचारो। अष्टसहस्र ग्राम पगु धारो॥
तहं द्वय शिष्य यतीश्वर केरे। बरद नाम इक दारिद घेरे॥
द्वितिय शिष्य यज्ञेश सुजाना। गुरु पद भक्ति निरत धनवाना॥
शिष्य युगल पठए यतिराजा। निज आगमन जनावन काजा॥
सुनि यज्ञेश देशिकागमनू। मंगल मूल शूल सब दमनू॥

दो० प्रेमातुर लागे सजन गुरु सेवा के साज।
पूजे नहिं बैष्णव युगल गये ते जहँ यतिराज॥
सो० तिन यतिपति सौं जाय कह्यो सकल बृत्तान्त निज।
दो० सुनत फिरे यतिराय तिनके ग्रह गवने नहीं॥

दूजे शिष्य बरद के गेहा । शिष्यन सहित गये करि नेहा ॥
ताखन अक्षयपात्र लै शिल हित । गये रहे बरदार्य धर्मब्रत ॥
लक्ष्मि नाम तिनकी बरनारी । घर मैं रही जीर्ण पट धारी ॥
मंत्ररत्न सुमिरति चित दीन्हे । हरि पदकमल मधुप मन कीन्हे ॥
द्वार आय पूछत सुख धामा । कहाँ गये करपासारामा ॥
साध्वी सुनि मन कियो बिचारा । जन बत्सल गुरुदेव उदारा ॥
कृपा करी आये करुणानिधि । सेवा करौं बसन बिनु काबिधि ॥
जो चुपि रहौं तौ गुरु फिरि जाहीं । शोच बिकल असमंजस माहीं ॥
करि बिचार करताल बजाई । जानि लई चेष्टा गुरुराई ॥
फेंको निज शिर पट घर माहीं । साध्वी लै धार्यो तन माहीं ॥

दो० सन्मुख ह्वै महिमाथ धरि कियो सप्रेम प्रणाम ।
अर्घपाद्य आसन दियो ल्याई भीतर धाम ॥

सो० पूजा बिधिवत कीन ताही बिधि बैष्णव सकल ।
देशिक परम प्रबीन भये मुदित सुठि भक्ति लखि ॥

अहो पूर्व मैं कह तप कीन्हो । कौन दान सतपात्रन दीन्हो ॥
कौन सुपुण्य जासु फल आजू । मेरे घर आये यतिराजू ॥
यमि बड़भाग आपनो मानी । भोजन की चिंता मन आनी ॥
गुरु परब्रह्म परमगति मेरे । यतिपति अवशि अंश हरि केरे ॥
जगत क्षेम हित महि अवतारे । कृपा बिबश मम ग्रह पगुधारे ॥
तन धन असन बसन अरु प्राना । गुरु हित धरै सो शिष्य सुजाना ॥
कह्यो यही श्रुति सुमृतिन माहीं । यमि नहिं होय शिष्य सो नाहीं ॥
नहिं कछु धन न धान्य मम ग्रेहा । पति घर नाहिं परम सन्देहा ॥
अकृतहु करि आराधै गुरुबर । ममबुधि सुकृतनकोउ ताके सर ॥
कुटिल वृत्ति धन करि सम्पादन । किय परकाल तदीयाराधन ॥

दो० रहित बिषाद निषाद जिमि लूट्यो पंथ सुजान ।
याबिधि धन हरिके कियो हरिजन भजनबिधान ॥

सो० पुनि सुनियत परकाल रंगेशहु लूटे बिपिन ।
कीनो यत्न कराल श्रीबैष्णव सिवकायि हित ॥

तिनकौ काहु न दोष लगायो । मोक्ष लही दुख लेश न पायो ॥
संसृत चक्र जीव अविनाशी । भ्रमत करत सद्गुरु सुखराशी ॥
याबिधि सहजशील है जिनको । प्रतिउपकार करै किमि तिनको ॥
तन बिक्रय करि करिहौं सेवा । मेरे सब बिधि हित गुरुदेवा ॥
मम निमित्त पातक जो करई । पुण्य सदृश सो फल अनुसरई ॥
मोहि तजि सुकृतहु पाप समाना । ऐसे कह्यो आप भगवाना ॥
बैश्य धनाढ्य जु या पुर अहई । मदनातुर मोहि निज मन चहई ॥
ताके बश करि अधम शरीरा । सेइहौं गुरु किय दृढ़ मतिधीरा ॥
गुरु सौं कह्यो जोरि युग हाथा । क्षणा बिश्राम करिये यहँ नाथा ॥
तदियाराधन हित सब सामा । प्रभु कटाक्ष आवति यह ठामा ॥

दो० यह कहि सो आतुर गई बैश्य सदन हरषाय ।
तासौं ऐसी बिधि कह्यो बचन मंद मुसकाय ॥
सो० है हौ पूरण काम आज तुम्हारे मनहि जो ।
गुरु आये मम धाम तिनको आराधन करौ ॥

शिष्यन युत गुरुदेव रसोई । जातें होय पठावहु सोई ॥
मदनअंधसुनि मनप्रियबानी । भयोमुदितअतिअचरज मानी ॥
मैं बहु यत्न करे यहि लाई । भूषणा बसन अनूप पठाई ॥
याको मन चंचल न भयो तब । बिनु बोले मम ग्रह आई अब ॥
ऐसे मन सराहि निज भागा । आदर करि समेत अनुरागा ॥
तंदुल दालि शाक दधि क्षीरा । आने तुरत मदन की पीरा ॥
शरकरादि घृत भृत्यन हाथा । पठयो सकल तासुके साथा ॥
तिय सो बस्तु गुरुआगे राखी । आराधन हित बिनती भाखी ॥
लखि दृढ़भक्ति बिमलबुधि ज्ञाना । हरषे गुरु अचरज मनमाना ॥
करुणा बश कह कृपानिधाना । तुहीं पाक करु करि अस्नाना ॥

दो० शिष्यन हूँ तिहि कार्यहित यतिपति आयसु दीन ।
आपु नहाय तिलक करि अर्चा पूजन कीन ॥

सो० अर्थ्यो करुणाकन्द पाक विशद श्रीनायकहि ।
शिष्यन युत सानन्द भोजन करि अति सुख लह्यो ॥

इतिश्रीप्र० कारपामाराभवरदाचार्य्य गृहे रामानुजार्या-
राधनन्नाम सप्तविंशोध्यायः ॥ २७ ॥

तापाछे यतिराज कृपाला । लागे कहन महार्थ रसाला ॥
सन्मुख शिष्य मंडलीराजति । सुर गुरुसभा बिभवलखिलाजति ॥
ताछुण वरदाचारज आये । गुरु भागवत दरश सुख छाये ॥
शिष्यन सहित तृप्त गुरुराई । देखे तियमणि की सिवकाई ॥
मर्म लह्यो सब पूछत ताही । भये मुदित बहु भांति सराही ॥
तैं मम इष्टदेव सम भामिनि । सुकृत पुंज मूरति भई धामिनि ॥
शिष्यधर्म निर्बह्यो यथारथ । नतु गुरुबंचक जन्म अकारथ ॥
याविधि करि सन्मान सुती को । पूरण भयो भावतो जी को ॥
गुरु ढिगजाय कह्यो गहि चरणा । नमो नमो प्रणतारति हरणा ॥
जिमि जग हित श्रीपति अवतारा । ताहीविधि तुम नर बपुधारा ॥

दो० सर्ब सुहृद सर्वज्ञ पुनि हौ प्रत्यक्ष हरि रूप ।
ताते यतिकुलतिलक तव चरित बिचित्र अनूप ॥

सो० भ्रमत जीव दिनरैन हरिमाया वश अन्ध जिमि ।
पावत नाहिं क्षण चैन तुम बिनु को समरथ सुखद ॥

लै दंपति पुनि तीर्थ प्रसादा । ज्ञान जनक अरु शमन विषादा ॥
बैश्यहि जायदियो तिहि धामा । पावतही भई बुधि अभिरामा ॥
परदच्छिण प्रणाम उठि कीना । तात मातु कहि बोल्यो दीना ॥
मोह तिमिर मैं अंध अभागा । दुष्ट बुद्धि तुम सौं अनुरागा ॥
काम बिबश ह्वै पाप बिचारा । तव स्वरूप गौरव न निहारा ॥
जननि सोच्चमहु बहुरिगुरुचरणा । देउमिलाय मोहिं भयहरणा ॥
तहँ मम कृत अघ ओघ अपारा । नाशहिंगे गुरुदेव उदारा ॥
सुनि साध्वी तिहि बचन पुनीता । छल बिहीन जान्यो अघभीता ॥
पति सौं सब वृत्तान्त सुनायो । दंपति उर अति अचरज आयो ॥

नाहि तुरत गुरु ढिग पहुँचायो। सहसाहिं यतिपति शिष्यकरायो॥

दो० संस्कार पंचक कियो जब गुरु करुणाकन्द ।
भयो शुद्ध अघ तजि मनहु बिमल शरद को चन्द ॥
सो० बहु धन भक्ति समेत गुरुवर पद अर्पण कियो ।
शिष्य तोष के हेत यति कृपाल स्वीकार किय ॥

इतिश्रीप्र० वैश्यस्य श्रीबैष्णवत्व सिद्धिर्नाम अष्टाविंशोध्यायः२८

गुरु आराधन हित यज्ञेशा। करि सम्पादन बस्तु अशेशा॥
गुरु आवन की पंथ निहारी। नहिं आये तब भये दुखारी॥
शोध लेन जे मनुज पठाये। समाचार तिन आय सुनाये॥
व्याकुल ह्वै तब आतुर धाये। बरदाचार्य धाम गुरु पाये॥
सहसहिं परे लकुट इव चरना। पाहि उचारि नाम निज बरना॥
प्रेमाकुल ह्वै रोवन लागे। कारण कौन नाथ हम त्यागे॥
तब कर परसि उठाय मृदुलचित। बोले बचन लोक शिक्षाहित॥
सुनौतात भाषत तुम्हरोहित। तदियार्चन रुचिनहिं तुम्हरेचित॥
संसकार पंचक अति चारू। अर्थपंच विज्ञान बिचारू॥
श्रीनिवास अर्चन सुखदाई। गुरु आधीन वृत्ति जो गाई॥

दो० ये सब बादिहि जानियै जो नहिं बैष्णव प्रीति ।
हरिजन प्राण समान प्रिय यह सात्विकजन रीति ॥
सो० आदर पूजन दान अतिथि भागवत को करत ।
सन्तत तजि अभिमान तिनकी बैष्णवता सही ॥

या बिनु सकल धर्म तुम माहीं। दंभ मूल परमारथ नाहीं॥
हमनहिं बसत कबहुँदंभिन घर। सात्विक अन्नलेत करिआदर॥
सुनि गुरुबचन मखेश लजाने। बिनय बचन करजोरि बखाने॥
नाथ अमित मम कृत अपराधा। क्षमहु क्षमावारीश अगाधा॥
प्रभु आगवन हर्ष भयो भारी। बैष्णव पूजन सुरति बिसारी॥
प्रभु आराधन यतनहि लागो। नाहिं अभिमान बिवश ह्वै त्यागो॥
सत्यमानि जनरक्षण कीजै। निजदिशि देखि अनाघन कीजै॥
तब प्रसन्न मन ह्वै गुरु बोले। मंजु मनोहर बचन अमोले॥

सुत या पुर जो रहत श्रीबैष्णव। सेवहु प्रीति सहित संततसब॥
इमि उपदेशि सहित परिवारा। कियो प्रयाण मंगलागारा॥

दो० पहुँचे कांचीपुर तबहिं बरदेशहि शिरनाय।
बासर तीनि निवास करि चले बहुरि सुखपाय॥

सो० कांचीपूर्ण कृपाल श्रीवैष्णव कछु सँग किये।
तिन समेत तेहि काल पहुँचे कापिल तीर्थतट॥

व्येंकटाद्रि दक्षिण अघहरना। लोक बिदित निगमागम बरना॥
शेष शैल प्रवेश जे करहीं। ते यह मारग ह्वै अनुसरहीं॥
शठजितादि दशयोगीश्वर नित। सेवतयातीर्थहि निर्मल चित॥
ताते दिव्यसूरि तीरथ बर। दूजो नाम कहत ताको नर॥
अवगाहन पूजन करि तासू। कियो यतीश्वर तहां निवासू॥
योगीन्द्रन की मूरति देखी। कियो प्रणाम भाग बड़ लेखी॥
तिनहीं के समीप कछु काला। बास कियो यतिनाथ कृपाला॥
बिट्ठलदेव नृपति तहँ केरो। सुनि यतीश को बिभव घनेरो॥
करि सेवा अतिमानुष देखी। भयो शिष्य करि भक्ति अलेखी॥
कियो भेट बहु धनकरि प्रीती। यतिपतिशरण त्रास सब बीती॥

दो० पुनि यतीश तहँ तीस द्विज बोलि दियो इक ग्राम।
तौंडीर मण्डल बिदित बलंमण्डीय सुनाम॥

सो० तीसक्षेत्र युत दान पाय बिप्र संतुष्ट भये।
सुनि गुरु आवन कान अनन्तार्य आये तहाँ॥

तिनसँग औरौ श्रीबैष्णवगण। मिलेआय प्रणामकरि तात्क्षण॥
करतप्रार्थना मिलि यतिपति सौं। चलिदेखियै शेषाचलपति कौं॥
प्रभु मंगलानुशासन पाई। ह्वै है तिनहिं बिभव अधिकाई॥
तबकरिध्यानकहतइमियतिपति। सरआदिकजेयोगिबिमलमति
शेष रूप यह गिरिबर चीन्हो। ताते यापर चरण न दीन्हो॥
यहँहीं बसि मंगलानुशासन। कीनो व्येंकटनाथ उपासन॥
उन जो अनुष्ठान दिखरायो। दास भूत मोकौं सोई भायो॥
शठकोपादि गुरुन सिवकाई। यहाँ बास करि करिहौं भाई॥

अनंतार्य यह सुनि पुनि कहहीं । हमहूं सब प्रभु सेवक अहहीं ॥
तुम नहिंचढ़ौतोकिमि हमलोगा ।गिरवरचढ़ैं सो करौ नियोगा ॥

दो० ऐसेहीं हमहूँ सकल अब करि है सब काल ।
एक बचन सुनि सबन को श्रीयतिनाथ कृपाल ॥
सो० बहुबिधि करत बिचार दिव्यसूरि के चरितबर ।
कीनो मन निर्धार अंजनागिरि के चढ़न कौं ॥

इतिश्रीप्र० बिठ्ठलदेवनृपते रामानुजाश्रयणान्नाम
एकोनत्रिंशोध्यायः ॥ २६ ॥

बहुबिधि करि बिचार यतिराजा । उद्यत भये चलन के काजा ॥
शुद्धि सीम तन पावन कीनो । बंदन करि गिरिवर पगु दीनो ॥
तब श्रीशैलपूर्ण मुनि ज्ञानी । तीर्थ प्रसाद आप दियो आनी ॥
सो सादर लै चरण निहोरी । यतिनायक बोले कर जोरी ॥
नाथ व्येंकटाधीश प्रसादा । आन्यो आप सो मोहि बिषादा ॥
देत पठै कहु बालक हाथा । यह कह उचित रहा नहि नाथा ॥
कह गुरु बिहसि सुनौ यतिपालक।मोते यागिरि और न बालक॥
गुरुमहिमा बरणत यतिराजा । गोपुर ढिगगये सहितसमाजा ॥
यति आगवन सकल सुखरासी । सुनि आये सब शैल निवासी ॥
एकांती अर्चक श्रीबैष्णव । तुरियाश्रमी मिलन आये सब ॥

दो० करि साष्टांग यतीश्वरहि कियो बिबिधि सतकार ।
पहुँचे वृषगिरि भाल तब ज्ञान भक्ति आगार ॥
सो० बिधिवत करि अस्नान ऊर्ध्वपुण्ड्र युत तासमय ।
परिकर सहित सुजान तब तहँ ते आगे चले ॥

चहुं बीथिन प्रदच्छिणा करेऊ।रचना लखि अचरज चितभरेऊ॥
अति बिशाल गोपुर बहु देखे । मणि मंडपन प्रकाश अलेखे ॥
वृंदाबन अनन्त कृत देखा । सुखनिधान सुख लह्यो बिशेखा ॥
उपबन मृग बिहंग बिधि नाना । माने सब निज सूरि समाना ॥
दरशन करि पुनि देव बराहा । हर्षि हृदय निज भाग सराहा ॥
चढ़ि कुलशेखरादि सोपाना । बलिपीठहि पुनि कियो प्रणामा ॥

लख्यो पुष्पमण्डप पुनि जाई । यामुन नाम प्रदक्षिण लाई ॥
आगे देखि स्वामि पुष्करणी । तीर्थ लियो कहि पातक हरणी ॥
धनुर्मास सित द्वादशि प्राता । तीरथ सब आवैं जेहि पाथा ॥
श्रीव्यंकट आलय अति पावन । लखी पानशालादि सुहावन ॥

छन्द हरिगीतिका ॥

देखी रसोई पानशाला बहुरि मणि मण्डप गये ।
सेनेश आदिक देखि परिजन सबन के चरणन नये ॥
आनन्द निलय बहोरि गवने दिव्य यान बिलोकेऊ ।
प्रेमाम्बु युग अम्बक भरे गुनि हानिकारक रोकेऊ ॥
पुनि जाय भीतर देव देव रमेश व्यंकटनाथ कौं ।
साष्टांग करि ठाढ़े भये संपुटित करि युग हाथ कौ ॥
लै तीर्थ माथ नवाय श्रीशठकोप तहँ माथे धरो ।
चित चकित भू वैकुण्ठ मानो परम प्रेम हृदय भरो ॥
अस्नान अवसर श्रीश सेवा करत तहँ ठाढ़े रहे ।
तहँके मनुज पशु बिहँग सब नितसूरिकरि मानतभये ॥

दो० यहाँ उचित नहिं बास मम नित सूरिन के पास ।
होय कछुक अपचार नहि शोचत कृपानिवास ॥

सो० याविधि ज्ञान दृढ़ाय उतरन लागे शैल ते ।
तबहिं कह्यो गुरु आय उचित बास दिन तीनि यहँ ॥

दिव्यदेश बसिये दिन तीनी । सुनि गुरु आयसु शिरधर लीनी ॥
रहे असन तजिके वाठाईं । सेवा करत तीनि दिन ताईं ॥
चलत पाठ कीनी यतिनाथा । भट्टनाथ कृत द्वादश गाथा ॥
युग करजोरि गुरुहिं करिआगे । मानत आयसु अति अनुरागे ॥
तब व्यंकटपति अर्चक प्रेरे । पूरण कृपाकटाक्षन हेरे ॥
तीरथ अरु शठकोप दिवायो । बहुरौं याविधि बचन सुनायो ॥
तुम्हैं तुम्हारिन कौं विभूति द्वय । मैं दीन्ही निश्चय प्रसन्न ह्वय ॥
यौं कहि अधर अरुण फरकाई । द्विज दाड़िम सौंदर्य दिखाई ॥
यतिपति आपहिं धन्य बखानी । आयसु पाय चले सुख मानी ॥
उतरे श्रीगिरि ते गुरु साथा । गुरु मन्दिर आये यतिनाथा ॥

दो० गुरु प्रसाद लीनो तहाँ बहुरौ प्रभु इक बर्ष ।
श्रीमद्रामायण सुनत कियो निवास सहर्ष ॥

सो० देखे तहँ गोविंद निशिदिन गुरु कैंकर्य्यरत ।
पायो परमानन्द द [illegible] मानत भये ॥

गुरु शय्या गोविंद रचि [illegible] दिन । तापरपौढ़े आप एक छन ॥
सोलखि यतिपति दुर्गुणमाना । बारमाहित गुरुनिकट बखाना ॥
पूंछा फल गुरु गोविंद बोली । बोले गोविंद गिरा अमोली ॥
नाथहि निद्रा होय अबाधा । नर्क गये कछु मोहिं न बाधा ॥
गोविंद बचन प्रेम रस साने । सुनि यतिनाथ हृदय पुलकाने ॥
बहुरि एकदिन यतिपति देखा । गोविंदकृत वर चरित बिशेखा ॥
उपबन अहिमुख अंगुलि डारी । बिषधर बिष बाधा न बिचारी ॥
पूंछत कारण कियो बखाना । अहि तालुक कंटक उरझाना ॥
सो मैं काढ़ि दियो तेहिं मुख ते । पीड़ित जानि ताहि बादुखते ॥
अतुलितदया देखि गोविंदउर । चकित मुदितमनभये जगतगुर ॥

दो० रामायण को अर्थ पढ़ि पूरण गुरु के पास ।
करि प्रणाम पद पूजि तब कीनो बचन प्रकास ॥
सो० रंगक्षेत्र अब जाउँ जो प्रभु आयसु होय मोहिं ।
यद्यपि न सेवा अघाउँ अतुलित प्रभु सहबास सुख ॥

कह गुरु तुम आये अतिदूरी । दीजै तुमहिं अर्थ कह भूरा ॥
कहयतिनाथ जो अनहित मोपर । गोविंददेउ मोहिंकरुणाकर ॥
गुरुमन मुदितभये सुनि बाणी । गोविंद दिये तुरतगहि पाणी ॥
तब गुरु आयसुलहि यतिनाथा । चलतभये लै गोविंद साथा ॥
घटिकाचल आये हरषाई । देखे तहं नृसिंह सुखदाई ॥
तिनकौ बन्दि गृध्रसर आये । दरश बिजयराघव के पाये ॥
तहंते कांचीपुर पग धारे । कांचिपूर्ण मिलि भये सुखारे ॥
गुरु सेवाबिनु गोबिंदको मुख । बिबरणभयो लहोमन अतिदुख ॥
देखि दशा बोले यतिदीपा । जाउ तात गुरुदेव समीपा ॥
गुरुपदकमल बंदि फिरि आवौ । मेरोहु गुरुहि प्रणाम सुनावौ ॥

दो० याबिधि गोबिंद कौ पठै बृषगिरि यतिकुलचन्द ।
बरदराज सेवा करत निवसे तहँ सानन्द ॥

सो० गोविंद पहुँचे जाय आतुर वृषगिरि गुरु निकट ।
कह वैष्णवन सुनाय गुरु सौं गोविंद आगवन ॥

सुनि श्रीशैलपूर्ण गुरु ज्ञानी । कोपवन्त ह्वै बोले बानी ॥
यहाँ नहीं उनको कछु काजा । अबहीं जाँय जहाँ यतिराजा ॥
सुनि वृत्तान्त कहति गुरुदेवी । गोविंद नाथ कमलपद सेवी ॥
आश्रित बहुत दूरि ते आये । तीर्थ प्रसादहु देत न काहे ॥
कह मुनि देखहु लोक प्रचारा । देखि पशुहि कोउ देत न चारा ॥
वैष्णवमुखसुनिगुरुअनुशासन । गोविंदअतिनिराशभयेतात्क्षन ॥
तहँते गुरुमठ बन्दि सिधाये । वृषगिरि ते कांचीपुर आये ॥
श्रीगिरिपूर्ण चरितसुनि लक्ष्मन । कहि सर्वज्ञभये विस्मितमन ॥
पुनि निज वात्सल्यादि गुणानते । कष्ट निवारो गोविंद मनते ॥
कांचिपूर्ण सौं आयसु पाई । चले रंगधामहि हरषाई ॥

दो० अष्ट सहस्र ग्राम पुनि गये हरण जन शूल ।
स्वीकृत करि यज्ञेश की पूजा अति अनुकूल ॥

सो० परितोषे यज्ञेश पुनि आये श्रीरंगपुर ।
तहँ पुरवासि अशेष आय चरण पङ्कज नये ॥

दो० पुनि प्रभु रंगनाथ ढिग सेवा कीन्ही जाय ।
स्तुति प्रणाम बहुभाँति करि प्रेम न हृदय समाय ॥
कीन्हो कृपाकटाक्ष प्रभु हर्ष यतिपतिहि देखि ।
कही तात तुम कुशलयुत आये श्रीसख पेखि ॥

सो० दियो तीर्थ शठकोप बहुरि प्रसाद प्रसन्न ह्वै ।
लै यतिनाथ सचोप निज मन्दिर आवत भये ॥

इतिश्रीप्र० श्रीशैलपूर्णायात् बहुप्रकारेण रामायणार्थ श्रवणान्नामत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

यतिनायक गोष्ठी गोविन्दा । पाय लहो मन अमित अनन्दा ॥
लगे करन निशि बासर सेवा । मानत गुरु तजि और न देवा ॥
रहत निकट निद्रालस जीती । करत दास्य अनुभव अति प्रीती ॥
एकसमय यतिपति गुण ग्राही । गोविंदकी सद्वृत्ति सराही ॥
गोविंद सुनि अस्तुति निज काना । आपहु लागे करन बखाना ॥

सुनि यतीश कह हित पर बानी । विद्यावंत तात तुम ज्ञानी ॥
कहबिचारियह अनुचितकरहू।निजमुख निजअस्तुति अनुसरहू॥
सज्जननिज अस्तुतिसुनि कानन।लागत निज नीचता बखानन॥
तब बोले गोबिंद कर जोरी । बचन पुनीत बिनय रस बोरी ॥
मायावश चेतन अविनासी । घूमत योनि लाख चौरासी ॥

दो० कृमि कीटादिक जन्मलै अनुभव करि दुख घोर ।
जियत मरत बहुबार जग भोगत नर्क कठोर ॥
सो० काहू सत्कृति लेश घुनअक्षर के न्याय सौं ।
मानव तन सर्वेश देत कृपा करि आपनी ॥

ताहिपाय मैं कुमति अभागी । भौ तजि सुपथ कुमग अनुरागी॥
कालहस्तिपुर शैव कहायो । सीस जटा तन भस्म लगायो ॥
सो अनर्थ सब प्रभु हरिलीनो । सहज स्वरूप दास्य व्रतदीनो॥
नहि देखत निजसम बड़भागी।भाषत निजअस्तुति यहिलागी॥
सो वास्तव तव अस्तवनाथा । जिनप्रभाव जन भयो सनाथा ॥
गोबिंद बचन गूढ़ मृदुपावन । परमारथ मय श्रवण जुड़ावन ॥
सुनि यतिनाथ मनहि हरषाये । साधु साधु कहि हृदय लगाये॥
एक दिवस गोबिन्द सवारे । बैठे बारमुखी के द्वारे ॥
देखि बैष्णवन यतिपति पासा । तुरत आय वृत्तान्त प्रकासा ॥
गोबिंद सौं पूंछो यतिराजा । वेश्या द्वार कहा तव काजा ॥

दो० हाथजोरि गोबिंद कहो गायकि प्रभु गुणगाय ।
मधुर सुरन गावति रही सो सुनि थित भौ नाथ ॥
सो० निज गाथा मै प्रीति तिनकी अतिशय जानि मन ।
मान्यो तिनहि पुनीत कौतुकयुत यतिमुकुटमणि ॥

सकलकाल तनमनबचगोबिंद । सेवारतजिमि बिषय अकोबिद॥
एकदिवस गोबिंद को माता । आयकही सुत सौं इमि बाता ॥
सुत तवतियहि प्राप्त ऋतुकाला । करौ निगम आयसु प्रतिपाला॥
कह गोबिंद यतिपति सिवकाई । करि एकांत होउं जब माई ॥
आवै तब पत्नी मोपाहीं । सुनि जननी हरषी मनमाहीं ॥

करी प्रतीक्षा बहु दिन ताईं । सो अवसर पायो तिन नाहीं ॥
तब तिन जाय यतीश्वर पासा । कीनो सब वृत्तान्त प्रकासा ॥
गोबिंद सौं तब कह जनत्राता । बिहित भोग दूषण नहि ताता ॥
ऋतु अवसर तिय आरतिनाशा । करौ जाय जिमि वेदप्रकाशा ॥
शय्या शयन करौ अँधियारे । सुनि गोबिंद तब गृह पगुधारे ॥

दो० शय्या बैठि सकल निशि भक्तिबिरति अरु ज्ञान ।
उपदेश्यो तिय कौ तहाँ मनमथ जित बिज्ञान ॥

सो० प्रात मातु सुधि पाय कही तात यह बात तोहि ।
काबिधि उचित लखाय पढ़े सकल सुठिशास्त्र तुम ॥

कह गोबिंद दोष कह मेरो । लखि न परत मोहि कतहुं अँधेरो ॥
गुरू प्रसाद दश दिशि उजियारा । अंतर्यामि प्रकाश अपारा ॥
सुनिभई दुखितबहुरियतिपतिसौं । जायकहीसोकथासुमतिसौं ॥
यतिपति गोबिंद निकट बुलाई । पूंछत भये एकांतहि जाई ॥
कहौ कौन बिधि तुम गृह जाई । आश्रम धर्म निबाह्यो भाई ॥
कह गोबिंद प्रभु इमि मोहिप्रेरो । सेवहु भामिनि देखि अँधेरो ॥
मोहि प्रभु अंतरयामिप्रकाशा । देखिपरत दशदिशि तमनाशा ॥
सुनिबोले यतिनाथ चक्रतमन । चहुं आश्रम मर्याद सनातन ॥
सो श्रुतिबिहित करियेहितजानी । क्रिये अन्यथाआश्रमहानी ॥
होय अनाश्रमि पतित कहावै । आश्रमधर्म जो कोउबिसरावै ॥

दो० सेवै भोग बुद्धि तजि धर्म भूत सब भोग ।
हरि आज्ञा कैंकर्य्य बुधि आश्रम के संयोग ॥

सो० जो मन होय बिराग बिषय असार बिचार तें ।
तौ तिहि आश्रम त्याग करि तुरियाश्रम कौ गहै ॥

याबिधि सुनि गोबिंद करजोरे । यतिनायक पदपद्म निहोरे ॥
अबहीं नाथ देउ सन्यासा । कृपासिंधु मैं तुम्हरो दासा ॥
देखि यतीश तिन्हैंतेहि लायक । दीन्हो तुरियाश्रम सुखदायक ॥
ज्ञान बिराग भक्ति दृढ़ जानी । धरो नाम मन्नाथ सुबानी ॥
सो सुनि गोबिंदभये सभीता । करिप्रणाम कह वचन बिनीता ॥

सकल लोक गुरु तुम यतिनाथा । जग विख्यात नाम मन्नाथा ॥
लोकेश्वर तुमहौ वालायक । अपरहु पर बिभूति के नायक ॥
मैं कृतघ्न पापी दुर्म्मानी । मिथ्याचार निरत अज्ञानी ॥
सेवत जपत देय परधामा । ओ नीचहिं कि सोह प्रभुनामा ॥
लोकहु मैं जानत सब कोई । गुरु सेवक इक नाम न होई ॥

दो० यज्ञमूर्त्ति हित हानि जिमि तैसेहि मेरिहु होय ।
सुनि यतीश मन मुदित ह्वै राखो नाम न सोय ॥
सो० ताही के अनुसार अर्थ शोध भाषा द्रविड़ ।
धरो नाम यम्वार निज सम जग पूजित किये ॥

इतिश्रीप्र०गोविंदस्यतुरियाश्रमस्वीकारन्नामएकत्रिंशोध्यायः ३१

सत्यप्रज्ञ यतिपति तेहिअवसर । कियो विचारविशद उरअंतर ॥
यामुनमुनि जब गये परधामैं । कावेरी तट सुजन सभामैं ॥
कीनोप्रण मुनि शोकहरनकौं । जग हितार्थ श्रीभाष्य करनकौं ॥
ताको अब करिहौं निर्बाहा । पूर्वाचार्य सुमत अवगाहा ॥
कृष्ण व्यास सूत्रन अनुमानी । बोधायन ऋषि वृत्ति बखानी ॥
सो लखि भाष्य रचन के काजा । कीनो दृढ़ विचार यतिराजा ॥
शारद पीठ वृत्ति सो जानी । गये तहं लै कूरेश्वर ज्ञानी ॥
जीते तहंके सब विद्वाना । शास्त्रारथकरि ज्ञान निधाना ॥
करि प्रसन्न शारद विद्यावल । लहीं वृत्ति तवचले रंगथल ॥
रीतो लखि तहं पुस्तक कोषा । धाये पंडित सकल सरोषा ॥

दो० विनु रामानुज पण्डितहि पुस्तक लेय न और ।
इमि विचारि तामारगहि कीनी सबहुन दौर ॥
सो० एक मास सब धाय पाय पंथ मैं दुहुन कौ ।
लैगये ग्रंथ छिड़ाय बरियाई बहु मनुज मिलि ॥

शोच करन लागे यति धोरी । तब कूरेश कहो कर जोरी ॥
खेद तजौ प्रभु वृत्तिन लागी । देखि लई मैं रातिन जागी ॥
प्रभु प्रभाव सब मम उर आहीं । एकौ अक्षर भूलो नाहीं ॥
प्रभु हरषे सुनि तिनकी बानी । आये मुदित रंग रजधानी ॥

सुखनिवास सुखसौं करि बासा । लोकानुग्रह बचन प्रकासा ॥
दाशरथी आदिक कूरेशा । सुनौ बचन बिद्वान अशेशा ॥
तत्त्वमस्यादिक श्रुति को अर्था । ज्ञानहि मोक्ष उपाय समर्था ॥
ज्ञान कर्ममिलि कोउइक कहहीं । याप्रकार कुदृष्टि मत अहहीं ॥
सो निवारि कर्मांग अबाधित । ध्यानोपासन करि प्रतिपादित ॥
भक्तिरूप उपासनात्मक बर । ज्ञान कहो वेदान्त मोक्षकर ॥

दो० इमि लखि भाष्यारंभ कौं उद्यत हम यह काल ।
सुनि हर्षे पण्डित सकल ऐसेहिं करौ कृपाल ॥
सो० कृपासिन्धु यतिराय तब कूरेश्वर सौं कह्यो ।
लिखौ जो तुमहिं सुहाय भाष्य बाक्य हम कहत हैं ॥

जो न रुचै मनमैं कोइ बाता । चुपकरि बैठिरहौ तहँ ताता ॥
कहि तथेति कूरेश सुजाना । लागे लिखन भाष्य बिद्वाना ॥
बोले तहाँ यतीश बिचक्षण । है ज्ञातृत्व जीव को लक्षण ॥
सो सुनि कूरनाथ बिद्वाना । बैठि रहे नहि लिखत सुजाना ॥
लगे करन बिचार मन माहीं । उपजी तर्क सकत कहि नाहीं ॥
बिष्णुशेषता रहित जो ज्ञाना । सो आतमअभिमान समाना ॥
तन अभिमान अज्ञ उर अंतर । तामें अरु यामें कह अंतर ॥
पुनिपुनि कह गुरु लिखत न देखा । बोले तब करि रोषविशेखा ॥
जो ममकह्योबचननहिमानत । तुमहिंन क्योंश्रीभाष्यबखानत ॥
यहकहि तिनकौं दियो उठाई । तबकोइ बैष्णव तिनढिग आई ॥

दो० कहत कुपित ह्वै आज गुरु त्यागो तुमहिं सुजान ।
कह बिचार अब तुम करत हम सौं करौ बखान ॥
सो० कूरेश्वर बिलखाय तिनसौं बोले बचन बर ।
गुरु आयसु के भाय शिष्यहि रहिबो चाहिये ॥

कोप भये दशहूँ दिश माहीं । मोकौं ठौर कहूं पुनि नाहीं ॥
यहाँ यतीश्वर अर्थ बिचारा । बार बार गुण दोष सम्हारा ॥
तब कूरेश बोलि पछिताई । बोले बचन श्रवण सुखदाई ॥
जीव चिन्ह हम प्रथम कहो जो । बिष्णुशेषता सहित लिखौ सो ॥

याबिधि यतिपति बचन कहो जब । लिखन लगे कूरेश तुरत तब ॥
ऐसे लोकानुग्रह हेतू । रच्यो भाष्य बर यतिकुलकेतू ॥
पुनि वेदान्तदीप जिहि नामा । अरु वेदान्तसार सुखधामा ॥
वदअर्थ संग्रह रचि पावन । गीताभाष्य बिमोह नशावन ॥
निर्मित किये शास्त्र सम्मत सब । सकललोक पूजित भये ते तब ॥
यामुनार्य मन खेद अपारा । यतिनायक निर्मूल निवारा ॥

दो० याबिधि रचि श्रीभाष्यबर थाप्यो जगत अखण्ड ।
पहिलो दुख गुरु हृदय को हरो ज्ञानबरबण्ड ॥
सो० निशिपति रबि पर्यन्त छाय रही कीरति बिमल ।
रामानुज भगवन्त राजत परमानन्द युत ॥

इतिश्रीप्र० बोधायनवृत्ति मतानुसारेण श्रीभाष्यनिर्माणन्नाम
द्वात्रिंशोध्यायः ॥ ३२ ॥

तब वैष्णव यतिपतिहि निहोरी । बिनय बचन बोले करजोरी ॥
नाथ रच्यो श्रीभाष्य अनूपा । पूर्व्वाचार्य्य सुमत अनुरूपा ॥
परसिद्धान्त किये सब खंडन । यामुनार्य आदिक मन मंडन ॥
अब सब दिशा बिजय प्रभु कीजै । कृपासिंधु भक्तन सुख दीजै ॥
दिव्य देश देशान्तर नाना । तहँ प्रणाम हित करियै प्याना ॥
वैष्णव बचन मानि शुभदायक । ग्रहण करत भे यतिकुलनायक ॥
रंगेश्वर सौं आयसु मागी । निकसे करन लोक बड़भागी ॥
प्रथम चोलमण्डल यतिराई । बन्दे दिव्य देश सब जाई ॥
जीते शास्त्रअर्थ बिद्वाना । किये सकल जन शिष्य सुजाना ॥
तैसेहिं पांडुमंडलहि जाई । कीनो बिजय सुजन सुखदाई ॥

दो० कुरुकानगरहि आय पुनि शठजित कौ अति प्रीति ।
करि दण्डवत आठ अँग सहित शिष्य की रीति ॥
सो० शठजित कृत दश गाथ अपर अनेक प्रबन्ध सुठि ।
पढ़त भये यतिनाथ सुनि शठारि प्रमुदित भये ॥

शठजित पाय यतीश्वर ज्ञानी । करी दया नहि जाय बखानी ॥
तीर्थ प्रसाद पादुका माला । दायो अर्चक द्वार कृपाला ॥

सोलहियतिपतिमुदितभयेअति।अस्तुतिकरीसप्रेमविमलमति ॥
बकुल धवल माला उर धारक । वेदबाह्यखलकुमति निवारक ॥
पूजनीय कुरुकापुर नाथा । कारिसूनु कविकुलकाशिसाथा ॥
तिनके युगल चरण सुखदाई । दुहूंलोक मोहि होउ सहाई ॥
पुनि गुरु आयसु लहि यतिराजा । चले कुरंगनगर ससमाजा॥
तहँ कुरंगनगरीपूरण हरि । राजत अति ऊंचो विग्रह धरि ॥
तिनकौं बहुत प्रकार प्रणामा । सादर करत भये सुखधामा ॥
देखि अमित हरिजन यतिसाथा । बिस्मितभये कुरंगपुरनाथा॥

दो० एकान्ती द्वादशसहस पीठ सु सत्तरि चारि ।
बिष्णुभक्त औरौ अमित सहित यतीन्द्र निहारि ॥
सो० बोले मृदु मुसुकाय जग रक्षणहित श्रीसहित ।
मैं बहु रचे उपाय नानाबिधि अवतार लै ॥

जग जीवन उर मोह बिशाला । मानतभे मोहि नृप गोपाला ॥
नहि मान्यो रक्षक जग कारण । करुणासागर दीन उधारण ॥
असुरप्रकृतिममनिकटनआये । तुमकाबिधिनिजवशकरिपाये॥
सो उपाय मोहि देउ बताई । कह मन्नाथ चरण शिर नाई ॥
पूछौ जो क्रम सहित उपाई । अबहीं तुमकौ देउं बताई ॥
दिव्यसिंहासनतजितबश्रीपति।आयेउतरियतीश निकटन्निति ॥
भक्तियुक्त लखि तिनहिं यतीशा। मनधरि स्वाचारज पदसीशा॥
दक्षिण श्रवण श्रीश के शेषा । सादर मन्त्ररत्न उपदेशा ॥
याही के बल हम सब लोका । एकबार कहि करत बिशोका ॥
कहि मनु गौरव किय अभिरामा । वैष्णवनम्बीदास सुनामा ॥

दो० तब कुरंग पूरण गुरुहि ब्रह्मयान बैठारि ।
सादर अति अतिशय कियो देशिक हृदय विचारि ॥
सो० यतिनायक शिर नाय तब बहु बिधि अस्तुति करी ।
निज अपचार क्षमाय आयसु लै केरल चले ॥

इतिश्रीप्र० कुरङ्गनगरीपूर्णाय मन्त्ररत्नोपदेशन्नाम

त्रयस्त्रिंशोध्यायः ॥ ३३ ॥

तापाछे यतिनाथ उदारा । तहं ते चले सहित परिवारा ॥
केरल देश ओर सुखदाता । मग हरिथलन करत प्रणिपाता ॥
पद्मनाभ अनंत प्रभु आये । नख शिख लौं शुभ दरशन पाये ॥
तीनि द्वार सौं कियो प्रणामा । जीते तहं पंडित गुणधामा ॥
तहँ रामानुज मठ निर्मायो । केरल देश तुरत नियरायो ॥
दिव्यदेश तहं के सब बन्दे । बाह्य कुदृष्टिन जीति अनन्दे ॥
द्वारावती तहांते आये । पुनि प्रभु मथुरापुरी सिधाये ॥
शालिग्राम क्षेत्र साकेता । तहं ते बहुरि समाज समेता ॥
गये बद्रिकाश्रम श्रमहारी । पुनि नैमिष पुष्कर सुखकारी ॥
वृन्दाविपिन तहांते आये । औरौ हरिथल विपुल सुहाये ॥

दो० इन सब थलन यतींद्र गुरु करि सप्रेम प्रणिपात ।
कीन्हें दूरि कुदृष्टि मत आकरुई जिमि बात ॥
सो० सद्गमण्डपहि जाय शारद पीठहि पुनि गये ।
आये सुनि यतिराय देवी मन हर्षित भई ॥

यतिपतिचरितबिशदसुनि काना । शारद अमितमोदमनआना ॥
सादर मंदिर बाहिर आई । बोली यतिपति सौं हरषाई ॥
श्रुति कप्यास नाम जो गाई । तात्पर्य मोहि कहौ बुझाई ॥
क कहियै जल पी पोषै जो । कपि नामक सूरज कहियत सो ॥
आस जो तातेंहोयबिकासित । सो कप्यास अर्थ श्रुति भाषित ॥
याविधिकमलसदृश हरिलोचन । कृपाकटाक्षप्रणत दुखमोचन ॥
यह श्रुति अर्थ बिशद सुनि बानी । भई प्रसन्न न जाय बखानी ॥
शिर धरि करि श्रीभाष्य प्रमाना । भाष्यकार प्रभु नाम बखाना ॥
हयग्रीव मूरति पुनि दीन्ही । बहु बिधि प्रभु अश्लाघा कीन्ही ॥
शारद अति प्रसन्नता हेतू । पूंछत भये तब यतिकुलकेतू ॥

दो० कह देवी श्रुति अर्थ तुम स्वाभाविक करि आज ।
हरयो शोक मम हृदय को जो शङ्कर उपराज ॥
सो० आय कह्यो उन बैन श्रुति कप्पास अनर्थ करि ।
कपि आसन मम नैन हरि के यह हाँसी बचन ॥

सो दुख आजु आय तुम नाशा । याविधि शारद बचन प्रकाशा ॥
तहां रहे अगिनित विद्वाना । शास्त्र धुरंधर शुक्र समाना ॥
अये कथा सुनि शारद पूजा । मानि प्रभुहि विज्ञान अदूजा ॥
जुरे सकल जीतन कौं पण्डित । जिनको विद्यागर्ब अखण्डित ॥
हारे सब प्रभु सौं करि वादा । गज बरूथ जिमि केहरि नादा ॥
भाष्यकार वैभव अतुलित सुनि । चकृतभयो तहंको भूपतिपुनि ॥
हरि अवतार मानि मनमाहीं । शिष्यभयो सभक्ति सहसाहीं ॥
शास्त्र अर्थ जे पंडित हारे । मत्सराग्नि तिनके उर जारे ॥
सो दारुणज्वाला न सकेसहि । यतिपतिकौ अभिचार कियोदहि ॥
सो कृत्या सहजहि यतिनाथा । वारण करी परी तिन माथा ॥

दो० जब कृत्या कर्त्ता द्ले भये सकल विक्षिप्त ।
प्रेत लगे से फिरत सब बकत मनहुँ मद लिप्त ॥

सो० दशा सो भूपति देखि अति अचरज मान्यो मनहि ।
गुरु प्रभाव मन लेखि करि प्रणाम विनती करी ॥

गुरु पदपद्म सीस तिन नायो । जोरि युगलकर बचन सुनायो ॥
यद्यपि वे अघउदधि अभागी । किये अकृत्य कर्म प्रभुलागी ॥
तद्यपि तुम प्रभु करुणासागर । अधमउधारण जगतउजागर ॥
क्षमा वारि तुम सिंधुअगाधा । करौ क्षमा उनको अपराधा ॥
सेवकबचन बिशद सुनि काना । दीनकृपानिधि बचन बखाना ॥
हम नाहीं कछु यत्न उपायो । निज कृत पातक फल उन पायो ॥
अब जो तुम उनको हित चाहा । श्रीश कृपा मिटिहै सब दाहा ॥
जब प्रभु याबिधि बचन बखाने । स्वस्थभये सब विप्र अयाने ॥
लखि नरेश तव मन अनुराग्यो । द्विजनहुँ नृप बश मत्सर त्याग्यो ॥
आये प्रभु ढिग तजि अभिमाना । हर्षामर्ष न यतिपति माना ॥

दो० तब तहँते यतिमुकुटमणि कीन्हो विजयपयान ।
सभा सहित आये नृपति युग योजन सन्मान ॥

सो० भाष्यकार लहि नाम तहँके नृप अर्चित चरण।
जीति शास्त्र संग्राम देवनदी प्रति गवन किय॥

इतिश्रीप्र० दिग्विजयकथने शारदापीठ बिबुधपराजयन्नाम चतुरस्त्रिंशोध्यायः॥ ३४॥

गिरापीठ ते चलि यतिराजा। बाराणशी गये ससमाजा॥
तहांकियोसुरसरि अवगाहन। जासुसहजब्रत कलिमलदाहन॥
भोगिशयन हरि बंदि बिशदचित। जीतेतहंके सकल बिपश्चित॥
पूजालही बिबिधिबिधि तिनसौं। मानत बिद्यानिधि जग जिनकौं॥
पुनि तहंते जगदुरित नशावन। पहुँचे पुरुषोत्तमपुर पावन॥
बंदनकरि जगदीश कृपालहि। जीति प्रछिन्नबौद्ध सब ख्यालहि॥
रामानुज मठ बिरचि बिशाला। सुखसौं तहं निवसे कछुकाला॥
शास्त्र रहितलखि तहँ उपचारा। बोलि अर्चकन बचन उचारा॥
पंचरात्र आगम अनुसारा। पूजोत्सव शुभ नतु अपचारा॥
जिमि श्रीरंगादिक थल होई। तुमहूँ करौ सकल मिलि सोई॥

दो० अक्षय फलदायक सकल मोक्ष सुसाधन सोइ।
पंचरात्र बिधि सौं करै पूजा हरि की जोइ॥

सो० नहीं न्यूनता कोइ बुध सम्मत शिष्टाचरण।
हरि प्रसन्नता होइ करौ श्रेय लखि मम बचन॥

यतिपति बचन पुनीत प्रमाना। मोह बिबश अर्चकन न माना॥
गयेउठिसब कछुउतरु न दीन्हो। तबयतिनाथक्रोधमन कीन्हो॥
जानि कुटिलतणसमयतिराई। सहसाहिं बलकरि दिये उठाई॥
अर्चक और तहां बैठारे। पंचरात्र बिधि जानन हारे॥
प्रभु प्रतापलखि तहंको राजा। सोउ बशभयो समेत समाजा॥
अर्चक निशि हरि सन्मुख जाई। निजबिपत्ति सब रोयसुनाई॥
निज पूजा सिवकाइ गुसाईं। दीजै हमहि प्रथम की नाईं॥
जो न मानिहौ बिनय सुजाना। अबहीं सकल तजैंगे प्राना॥
याबिधिसबहिनबिनतीकीन्ही। तिनकौ अभयजगतपतिदीन्ही॥

तात्त्वण श्रीबैष्णावकुलदीपा । आवत भये जगदीश समीपा ॥

दो० करि प्रणाम बिनती करी सम्पुट करि युगहाथ ।
पंचरात्र आगम बिधि पूजा पावन नाथ ॥

सो० जैसे शुभग प्रकार रंगादिक थल होति प्रभु ।
कीजै तिमि स्वीकार सुनि बोले जगदीश तव ॥

सुनौ यतीश प्रथम हम कीन्हा । रंगादिक थल तव आधीना ॥
तहां करौ जो तुमहिं सुहाई । निगमागम आयसु सुखदाई ॥
है यह क्षेत्र मोर अधिकारा । इन मनुजन सँग करत बिहारा ॥
सो निजइच्छापूर्वक ताता । सुनि यतिपति पुनिकरिप्रणिपाता ॥
कहत कि ऐसेहि कीजै नाथा । पूजन पंचरात्र बिधि साथा ॥
कह जगदीश यतीश्वर पाहीं । याबिधि यहां सकत है नाहीं ॥
प्रेमाग्रह यतिपति मन ठाना । पंचरात्र उपचार बिधाना ॥
अवशि उचित मैं करिहौं सोई । सेवकधर्म स्वामिहित जोई ॥
यहनिश्चयकरि कियोप्रणामा । आवतभये निजमठ गुणधामा ॥
शयन करी तहं यतिकुलभूपा । निज परिवार सहित सुखरूपा ॥

दो० रंगस्थल सम करौगो श्रीपुरुषोत्तम धाम ।
याबिधि उर अन्तर कियो दृढ़ बिचार अभिराम ॥

सो० सोई परम पवित्र जो प्रभु के भावै मनहि ।
अब सो चरित बिचित्र सुनौ जो हरि आगे कियो ॥

इतिश्रीप्र० जगंनाथ रामानुजार्य संवादोनाम पंचत्रिंशोध्यायः ३५

भक्त बिबश जगदीश उदारा । निज मन मैं याभांति बिचारा ॥
मम नियोगयतिपति नहिमानो । दृढ़व्रत प्रेमबिबश हठ ठानो ॥
रंगस्थल सम यहं अनुसरिहैं । पंचरात्र अनुवर्त्तन करिहैं ॥
ताते मम अर्चक बिनु यागा । शीघ्रहि प्राण करैंगे त्यागा ॥
याते इन योगीशहि आजू । पठवौं दूरि बनै तब काजू ॥
यह बिचार मन करि भगवाना । प्रेरि योगमाया बलवाना ॥
निशि यतिनाथहि कूरमथल मैं । पहुंचायो सोवतही पल मैं ॥
जागे तहं यतिनाथ सबेरे । हरिहरी कहि इत उत हेरे ॥

चकृत भये कूर्मथल जानी । अरु मनमैं चिंता बहु आनी ॥
बिनु अर्चा पूजन अकुलाहीं । मृतिका श्वेत तिलक हितनाहीं ॥

दो० तातें ता दिन व्रत कियो असन पान किमि होय ।
प्रतिमा पूजन तिलक बिनु रहे राति पुनि सोय ॥

सो० मूरति मंजु बिशाल कूर्मनाथ हरि की तहाँ ।
तिन्हैं कहत शशिभाल लिंग सकल तहँ के मनुज ॥

तिन प्रसन्न मुख सपने माहीं । आयसु करी यतीश्वर पाहीं ॥
सुनौ यतीश जगत हितकारी । हम यहं रहत कूर्म तनु धारी ॥
माया अंध यहां के प्रानी । मानत रुद्र लिंग अज्ञानी ॥
मम मठ सन्मुख भूमि खनावहु । श्वेत बिशद मृतिका तहं पावहु ॥
ऊर्द्ध पुण्ड्र करि अरु मम यागा । अर्पौ भोग सहित अनुरागा ॥
सेवहु मम प्रसाद गुणधामा । कछु दिन यहां करौ विश्रामा ॥
जगन्नाथ प्रेरित याठाहीं । ऐहैं तुव जन कछु दिन माहीं ॥
जागि यतीश कियो सब तैसे । बरनौं स्वप्न कूर्मपति जैसे ॥
खोदत श्वेत मृत्तिका पाई । ऊर्द्धपुण्ड्र कीन्हो हरषाई ॥
पूजि कूर्मपति बिगत बिषादा । तिन्है निवेदित लियो प्रसादा ॥

दो० कूर्मनाथ चरणन निकट सुख सौं कियो निवास ।
यति आगमन प्रभाव सौं हरिथल लह्यो प्रकास ॥

सो० तिहि थल बासी लोग भये आश्रत यतिराज के ।
जानि शमन भव रोग दारा पुत्र समेत सब ॥

यह यतिपति को चरित उदारा । भयो तुरत बहु देश प्रचारा ॥
सुनि पुरुषोत्तम नगर निवासी । चकृत भये कूर्मपुर बासी ॥
बहु जन देश देश ते आये । कूरमनाथ बिष्णु दरसाये ॥
यतिनायक को आश्रय लीन्हो । जीवन जन्म कृतारथ कीन्हो ॥
जे यतिनायक शिष्य पुनीता । आयसु तिन्है दई जगदीशा ॥
आये सकल जहां यतिनाथा । गुरुपद बंदि ते भये सनाथा ॥
बहुरि कूर्मपति आयसु पाई । सिंहाचल आये यतिराई ॥
नरहरिकौ तहं कियो प्रणामा । शिष्यन सहित ज्ञान गुणधामा ॥

गरुडाचल आये पुनि शेशा । तहां अहोबल कियो प्रवेशा ॥
श्रीनृसिंह चरणन शिर नाई । शेषाचल आये यतिराई ॥

दो० श्रीनिवास कौं तासमय शैव मूढ़ मतिमन्द ।
शंख चक्र आदिक रहित देखि कहत अस्कन्द ॥
सो० देखो महाविषाद शैवन अरु वैष्णवन को ।
वादिहि करत बिवाद शैवन सौं [illegible] कह्यो ॥

हैं त[illegible] देव चिन्ह शूलादी । [illegible] धर बिष्णु अनादी ॥
आयुध उभय प्रकार कराई । इ[illegible] सन्मुख राखौ आई ॥
ग्रहण करैं आयुध ये जोई । मा[illegible] इन्है रारि तजि सोई ॥
मानि लई शैवन यह बाता । तब सब आयुध लै यतिनाथा ॥
व्येंकटनायक सन्मुख राखे । पूर्व प्रकार बचन तहं भाखे ॥
निज पर जन निकारि यतिराटा । गर्भालय के मूंदि कपाटा ॥
निशि गत दुहुन कपाट उघारे । शङ्ख चक्रधर देव निहारे ॥
शूल डमरु चरणन तर जाने । लज्जित ह्वै तब शैव पराने ॥
भाष्यकार प्रमुदित भये भारी । मंगल मय बहु बचन उचारी ॥
स्वर्णमूर्त्ति लक्ष्मी की लीनी । हरि वक्षस्थल शोभित कीनी ॥

छन्द हरिगीतिका ॥

तब भये रमासख साथ नव सम्बन्ध शु[illegible] योगीश के ।
यक श्वशुर अरु देशिक द्वितिय अति हित बढ़्यो पद श्रीश के ॥
द्वय यती पण्डित तवहि राखे क्षेत्र रक्षा हित तहाँ ।
चलि बहुरि योगीन्द्र आये देवनायक हरि जहाँ ॥
अति प्रेम युत करि दंडवत मधुरांतकहि आवत भये ।
पुनि बीरनारायणनगर मुनिनाथ योगस्थल नये ॥

दो० परम भक्ति श्रीरंगथल रंगेश्वर पदकञ्ज ।
करी दण्डवत आय तब रामानुज भवभञ्ज ॥
सो० यमि कीन्हो यतिभूप भूमि प्रदक्षिण दिग्विजय ।
ते न परैं भवकूप जे सप्रेम गावहिं सुनहिं ॥

इतिश्रीप्र० श्रीकूर्म श्रीव्येंकटेशाय शङ्खचक्रप्रदानन्नाम
षटत्रिंशोध्यायः ॥ ३६ ॥

सुनहु सो अब यतीशजिमि दूजो । यामुनार्य मन भावत पूजो ॥

कांची पश्चिम दिश इक कोषा । अग्रहार जो ग्राम अदोषा ॥
कूर प्रसिद्धि जासु को नामा । सब प्रकार पावन अभिरामा ॥
कूराधिप तहँ बसत निरंतर । जिमि धनेश अलकापुरि अंतर ॥
तिनको विभव बिलास अपारा । शम दम तप निधि परमउदारा ॥
यश भाजन अरु धर्मधुरंधर । सकलशास्त्रवित सब गुण सुंदर ॥
सूर्योदय ते अर्धनिशालौं । अंध पंगु अरु कृपण जहां लौं ॥
आवैं ते सब भोजन लहईं । याबिधि नित निबन्ध निर्बहईं ॥
एक समय अधरात बिशाला । भयो कपाट शब्द तिहि शाला ॥
जगत मातु सो सुनि हरिपाहीं । कहति बचन कांचीपुर माहीं ॥

दो० कहा शब्द यह अर्द्धनिशि सुनियत है नित कंत ।
कूरनाथ बैभव कह्यो तिनसों श्रीभगवंत ॥

सो० देखहिंगी हम ताहि जगतजननि चकृत कह्यो ।
प्रात बुलावहु वाहि पूर्णहि हरि आयसु दियो ॥

तिन्है बुलावन पूरणाज्ञाता । गवने कूराधिप ढिग प्राता ॥
तिनके ज्ञान भक्ति उत्कर्षा । पजे कूरनाथ करि हर्षा ॥
तब श्रीकांचीपूर्ण सुजाना । जगत मातु पितु बचन बखाना ॥
सुनि कूरेश बिचारन लागे । बोले बचन प्रेम रस पागे ॥
कहँ मैं खल कृतघ्न दुर्मानी । कहँ जगजननि जगतपति रानी ॥
ब्रह्मेशादि बंद्य पदपंकज । चाहत निशदिन सकल चरणरज ॥
जग उतपति पालन संहारा । होत जासु कटाक्ष के द्वारा ॥
तिनके चरण कमल सुखदायक । बंदत हौं मोहि होउ सहायक ॥
जाते मिटैं तीनि मद मेरे । रहत जे सदा मोक्षपथ घेरे ॥
इन सम नहि परमारथ बाधक । तजत बिशेष जे हरि आराधक ॥

दो० त्याग किये जिन तीनि मद तिन सम धन्य न कोय ।
करतल गत आमलक सम मोक्ष पदारथ होय ॥

सो० याबिधि कहि कूरेश वाही क्षण बैभव तज्यो ।
मन न बासना लेश गवन कियो श्रीरंग अहँ ॥

कांचीपूर्ण चकित फिरि आये । समाचार सब हरिहि सुनाये ॥

तिनको अनुष्ठान देवेशा । सुनि हरषे श्रीसहित विशेषा ॥
आंदोला कूराधिप नारी । पति बैराग्य देखि अति भारी ॥
हेम कटोरा बसन दुराई । पति अनुगति कीन्ही हरषाई ॥
बन डराय पूँछति पति पाहीं । नाथ कहा यह मग भय नाहीं ॥
कह कूरेश बिहसि तिय पाहीं । द्रव्यवन्त कौं भय सब ठाहीं ॥
अरु जग प्राणवान जे आहीं । रहित मृत्युभय होत सो नाहीं ॥
तुम्हरे पास होय धन जोई । देउ फेंकि भय लेश न होई ॥
कह तिय पिय जब सर्बसु दाना । किय तुम तब मम मन नहि माना ॥
स्वर्ण कटोरा राख्यो तातें । नितप्रति दूध पियत तुम जातें ॥

दो० सो मैं बसन लपेटि के लाई हौ पतिसाथ ।
यह कहिके मणि जटित सो दियो तुरत पति हाथ ॥
सो० लै सो फेंक्यो दूरे बन मैं पुनि तिय सौं कह्यो ।
याही तें भय भू॥ नय मन मैं उपजी रह्यो ॥

आउ चली अब भय कछु नाहीं । सुख अरु अभय दसहुं दिश माहीं ॥
साध्वी मानि बचन पति पाछे । चुप ह्वै रही चली पुनि पाछे ॥
यमि सहधर्म्मचारिणी संगा । पहुंचे आय बेगि श्रीरंगा ॥
बिरति सुनत यतिपति हरषाये । बेगि बुलावन शिष्य पठाये ॥
आय कूरपति किय प्रणिपाता । तब उठि श्रीबैष्णवकुलत्राता ॥
दोउ भुज गहि उठाय उर लाये । अंतरगत सुखसरित अन्हाये ॥
तब कूरेश रंगथल बसिके । उंछवृत्य रत भये तन कसिके ॥
यह कूरेश्वर बिभव सुहायो । सहित त्याग तप संयम गायो ॥
त्रण सम छोड़ि तीनि मद फीके । हरि गुरु बैष्णव रत भये नीके ॥
यतिप्रिय शिष्य कूरपति ज्ञाता । तिन्है न कछु अघटित यह बाता ॥

दो० रामानुज सम्बन्ध ते होत सुपथ आरूढ़ ।
मूढ़हु लहि बैराग्य दृढ़ भक्ति बिवेक निगूढ़ ॥
सो० अब सो सुनहुँ चरित्र रंगपुत्र जिमि अवतरे ।
क्षेत्र सो परम पवित्र श्रीकूरेश महान के ॥

इतिश्रीप्र० श्रीकूरेशस्य सर्वसम्पति परित्यागपूर्वकं श्रीरंगनित्यनिवासोनाम सप्तत्रिंशोध्यायः ॥ ३७ ॥

रंगनगर कूरेश बसत नित । पंचकाल रत सकल शास्त्रवित ॥
निशि दिन गुरु पूजा [illegible] प्रीती । तन निर्बाह उंछकी रीती ॥
इक दिन वृष्टिभई [illegible] । ग्रह तें कढ्यो न कोउ नर नारी॥
भयो न उंछ न घर इक दाना । कूरनाथ तब करि अस्नाना ॥
शालिग्राम पूजि कछुफलदल। अर्पण करि पुनिचरणकमलजल॥
कीनो पान मानि अतितोषा । सुमिरत शठजित सूक्ति अदोषा॥
सोइ रहे निजग्रह निशिकाला । तबहि रंगपति भोग बिशाला॥
गयो भयो तहं काहलि नादा । कूराधिप तिय सुनि सबिषादा॥
रंगी प्रति मन बचन उचारे । सोवत भूखे भक्त तुम्हारे ॥
तुम सानन्द करत ज्योनारा । जानि सो तुरत मंगलागारा ॥

दो० अधिकारी [illegible] स्वप्न महँ आयसु किय भगवन्त ।
कूरेश्वरहि प्रसाद मम दीजै जाय तुरन्त ॥
सो० बैभव विपुल समेत छत्र चॅवर बाजन प्रभृति ।
श्रीकूरेश निकेत अबहीं जाउ बिलम्ब तजि ॥

उत्तमपूर्ण जागि सहसाहीं । पहुंचायो प्रसाद तिन पाहीं ॥
उठि श्रीबत्सचिन्ह अति प्रीती । लियो ताहि सादर श्रुति नीती॥
मन मैं याबिधि करत बिचारा । सब अभीष्ट रंगेश उदारा ॥
दिये प्रथम कछु मोहि न सादा । कौन हेतु अब दियो प्रसादा ॥
याबिधि गुनि मन अचरज मानी । कहत भये तियसौं तब बानी॥
तैं हरिसौं मनमैं कछु यांचा । कह करजोरि बचन तियसांचा॥
भोग समय जब काहलि बाजी । तब मैं यह बुधि मन उपराजी॥
भोजन करत रमा के आगे । भूखे सोवत भक्त तुम्हारे ॥
याच्यो नहि कछु मैं हरि [illegible] । कह कूरेश उचित अस नाहीं ॥
यह अनुचित कीन्हो तैं भारी । तैंहीं यह प्रसाद अब खारी ॥

दो० सेवन कियो प्रसाद तिय पति आयसु धरि भाल ।
रंगी परम प्रसाद ते भई सगर्भ तत्काल ॥
सो० पावन माधव मास मैत्र नखत राका सुतिथि ।
द्वै सुत अतुल प्रकाश लव कुश ज्यों जन्मत भये॥

लखि परतंत्र स्वरूप कूरपति । गुरु करुणा बल रहे निर्भर अति ॥
जातकर्म गुरु सकल करायो । नामकरण को दिन जब आयो ॥
जातशौच के अंत कृपाला । शिष्य भवन करि कृपा बिशाला ॥
आनद युत आये जनपालक । गोबिंद सौं कह आनहु बालक ॥
गोबिंद जाय लिये दोउ गोदा । तिनके रक्षण हित करि मोदा ॥
मंत्ररत्न मन कियो उचारा । मंगल मय जिहि बिभव अपारा ॥
यतिकुलतिलकहि आनि दिखाये । अंग चिह्न लखि प्रभु मनभाये ॥
मुख छबि देखि कहत गोबिंदसन । द्वय सुगंध आवति इनकेतन ॥
सो कारण कछु है तुम कीना । बोले तव गोबिंद प्रबीना ॥
द्वय सुमिरत इनकौ मैं ल्यायो । तब यतीश हँसि बचन सुनायो ॥

दो० तुमही इन दोहून कौं शिष्य कीजियौ तात ।
उपदेशियौ महार्थ सब सम्प्रदाय की बात ॥

सो० यह कहिके यतिभूप पंचायुध मय आभरण ।
शोभित किये अनूप निज कर कंठ दुहून के ॥

गोबिंद सौं दोउ सूनु सुहाये । शङ्ख चक्र चिन्हित करवाये ॥
तब प्रभु श्रीमुख बचन सुनायो । ज्येष्ठ पुत्र को नाम सुहायो ॥
प्रथम पराशर भट्ट बिनानी । द्वितिय राम देशिक गुणखानी ॥
अपर सुतहि कहि वेदव्यासा । यामुनार्य दुख दूसर नासा ॥
तेहि अवसर गोबिंद लघु भाई । बालगोबिंद नाम सुखदाई ॥
तिनहूँके ग्रह प्रकट्यो बालक । सोध लह्यो बैष्णवकुलपालक ॥
ह्वै प्रसन्न गोविंद गृह आये । बाल चिन्ह देखत हरषाये ॥
राख्यो नाम परांकुशपूरण । सुमिरत सुखद भवामय चूरण ॥
ताते त्रतिय मनोरथ नीको । भयो पूर्ण यामुनमुनिजी को ॥
यह सब चरित पुनीत सुहायो । उत्तमपूर्ण रंग प्रति गायो ॥

दो० याबिधि जन्म सुनाम लहि परम रुचिर तिहुँ बाल ।
कृपापात्र यतिनाथ के दिन प्रति होत बिसाल ॥

सो० यामि अभीष्ट तिहुँ पूरि यामुन मन के यतितिलक ।
बैमनस्य करि दूरि राजत परमानन्द युत ॥

इतिश्रीप्र० पराशरभट्टार्याद्यवतारकथनन्नाम अष्टत्रिंशोध्याय:३८

भट्टार्य्यहि रंगेश प्रबीना । पुत्रभाव सौं स्वीकृत कीना ॥
दिनदिन रंगनायकी लालति । नितप्रति पतिप्रसाद दै पालति ॥
बालअर्कसम बाढ़त दिनदिन । तेजप्रताप दुगुणा भयो क्षिनक्षिन॥
तिनके जन्मनक्षत्र बिशाला । उत्सव बिशद भयो इक काला॥
कूरनाथ लखि गुरुकुल रीती । शठजित सूक्ति पढ़त अति प्रीती॥
सो सुनि भट्टारक उठि बोले। बचन बिशद आखर अति भोले॥
बकुलाभरण ग्रंथ के माहीं । निकट महत्व अणुत्व लखाहीं ॥
यामैं यह बिरोध किमि नाथा । तेज तिमिर न होत इक साथा॥
सुनि श्रीवत्सचिन्ह यह बानी । भली भली कहि सुत सन्मानी॥
भयोनहीं उपवीत तुम्हारा । सुनौ न श्रुति न तुमहि अधिकारा॥

दो० बीथी मै खेलन लगे शिशुन संग तेहि काल ।
परो आय श्रवनन तबहि काहलि शब्द बिशाल ॥

सो० जात भट्टसर्वज्ञ लक्ष्मणयोगी मिलन कौं ।
रंगपुत्र अमितज्ञ तिनके सन्मुख आय तब ॥

कतहभये अंजुलि भरि बारू । है यह केतिक करौ बिचारू ॥
सुनत तिन्है उत्तर नहिआयो । भट्टारक तब बचन सुनायो ॥
बारू एक अंजुली है यह । कहि नहि सकत बात इतनी कह ॥
तौसर्वज्ञ नाम क्यों धारो । अति अनुचित अभिमान तुम्हारो॥
तजौ नाम आडम्बर मोहू । बेगि हमारे बश अब होहू ॥
लज्जित चकित सुनि बालक बानी । पुँछि कूरनायकसुत जानी॥
माथे रखि बालक सुख माना । कियो कूरपति ग्रह प्रस्थाना ॥
हेमा नाम नारि अति मोदा । लियो लाय आतुर सुत गोदा ॥
ब्रह्मरंध्र पुनि सूंघि प्रबीना । बहुप्रकार मुख चुम्बन कीना ॥
रक्षा हित द्वय मंत्र उचारो । लैगई मातु निकट सुत बारो ॥

दो० प्रेम विवश जननी कहो बहु बिधि मंगलवचन।
जानि समय कूरेश तब करि तिनको उपनयन॥
सो० बैठारो गुरु पास वेदाध्येन निमित्त तब।
तिन निज पूर्वाभ्यास पढ़े वेद सब प्रथम दिन॥

इक दिन बालकेलि अनुरागे। शाला तें उठि खेलन लागे॥
हँसिकह पितुक्यों खेलत ताता। शालापढ़त अपर शिशुभ्राता॥
तब तिन कह हँसि बचन बिनीता। पढ़त बाल सब पूर्व अधीता॥
वत्स कहा तुम पढ़ेउ प्रथम दिन। दियोसुनाय यथार्थ तुरत तिन॥
तब पितु तिन्है बोलिग्रह आनो। दुष्टदृष्टि ते डर मन मानो॥
गोबिंद संग बहुरि कूरेशा। कियो तत्व शिक्षा उपदेशा॥
करी अर्थशिक्षा पुनि रूरी। तैसेहिं सब शिक्षा करि पूरी॥
यौबन आगम लखि गुरुपासा। जाय कही प्रभु तुम्हरोदासा॥
भयो युवहि प्रापति यतिनाहू। उचितहोय तहँ करिये बिवाहू॥
कह यतिनाथ हर्षि तिन पाहीं। शुचि पूर्णार्य वंशके माहीं॥

दो० बृहत्चरण दुहिता विमल ता सँग उचित विवाहु।
शाखा सूत्र द्विजत्व अरु वैष्णवता को लाहु॥
सो० पत्नी सम्मति पाय मिलि सँग गुरु वैष्णवन के।
बृहत्चरण ढिग जाय मागी तिनसौं कन्यका॥

तिनकरि श्रवण कूरपतिबानी। नव सम्बन्धजानि नहि मानी॥
कूराधिप तब घर फिरि आये। समाचार सब तियहि सुनाये॥
कछु दिन गये बहुरि तिय प्रेरे। गये रंगनायक के नेरे॥
प्रभु तव सुताहे युवा बय आई। करौ बिवाह जो तुमहिं सुहाई॥
कह रंगेश भार यह मोपर। तुम निज भवन रहौ नित निर्भर॥
यहकहि वृहत्चरण प्रतिसपने। कह्योकि मानिभागबड़ अपने॥
मम सुतकौ निज कन्या देहू। जागि तिनहिं भौ हरिपद नेहू॥
आयसु मानि दान करि कन्या। भयेकृतार्थ सुतहि गुनिधन्या॥
एक समय यतिनाथ कृपाला। बैठे वैष्णाव सभा मराला॥
दाशरथिहि त्रदंड अनुमाना। ग्राह्य सीम श्रीवदन बखाना॥

दो० पुनि शठारि श्रीसूक्ति सुनि दाशरथी मतिधीर ।
मोहे सो लखि यतितिलक बोले गिरा गँभीर ॥
सो० रामायण भयो बेद जब परेश दशरथ तनय ।
त्योंहीं नाशक खेद द्राविड़ रूप भयो निगम ॥

इतिश्रीप्र० पराशर भट्टाचार्य्य बिवाहकथनन्नाम
एकोनचत्वारिंशोध्यायः ॥ ३९ ॥

अतिमानुष बैभव यतिपति नित । रंगनाथ कैंकर्य यथोचित ॥
प्रतिदिन करत रंगपुर राजत । सकल लोक शुभ मङ्गल साजत॥
तहां निचोल नगर तिहि काला । मल्लराज इकभयो बिशाला॥
दुराधर्ष चाणूर समाना । कहियत धनुर्दास तिहि नामा ॥
प्रोन्ना नामिनि तासु प्रनयनी । शशिबदनी मृगसावक नयनी ॥
तासु कटाक्ष मोह मदछाको । नित मुख देखत रहतसो ताको॥
रंगी चैत्रोत्सव इक बारा । जन समूह जहं जुरो अपारा ॥
चली नारि तहं देखन मेला । संग सो मल्ल काम को चेला ॥
जात चलो आगे तिहि सन्मुख । ठेवा खात लखतताको मुख॥
कीन्हे क्षत्र तासु के आनन । आन न देखत सुनत न कानन ॥

दो० शिष्य प्रशिष्य बृंद युत यतिकुलतिलक कृपाल ।
कावेरी अस्नान तहँ करत रहे तिहि काल ॥
सो० देखि तासु की ओर शिष्यन प्रति बोले बचन ।
हरि माया अति घोर कैसो यह मोहित कियो ॥

देखौ पुरुषाधम यह कामी । करत लाज तजि नारि गुलामी ॥
आतुर नारि बिबश अति मूढ़ा । काम कृसानु यान आरूढ़ा ॥
ऐंसो यह त्यहिकरि हरिसन्मुख । हरिहौं बेगिहिभवसंभव दुख॥
यह कहिके यक शिष्य पठायो । मल्लबासथल पूंछिसो आयो॥
तब यतिनायक निज मठ आये । धनुर्दास तहं बोलि पठाये ॥
कृपाकटाक्ष हेरि तिहि ओरी । बोले बचन सुधा जनु बोरी ॥
को तुमसुत कहँ धाम तुमारो । कौन काज यापुर पगुधारो ॥
कहौ सत्य ह्वैहै कल्याना । धनुर्दास तब बचन वखाना ॥

मिचुलापत्तन प्रभु मम धामा । कहियत धनुर्दास मम नामा ॥
युद्ध शास्त्र जानत मैं नीके । चैत्रोत्सव रंगेश्वरजी के ॥

दो० सेवा हित आओ यहाँ निज पुर ते यतिभूप ।
याविधि सुनि यतिकुलतिलक बोले गिरा अनूप ॥
सो० सुनौ विशद मम बैन तात क्रोध मति कीजियो ।
किये विवश जे मैन तेहि तिय एकान्त ते ॥

तुम सम मदनातुर महि माहीं । देखो सुनो कबहुँ हम नाहीं ॥
मनुज समूह राजमग अंतर । नारि दास्य तुम करत निरंतर ॥
जानत शूरबीर के धर्मा । कैसे करत निंद्य यह कर्मा ॥
लज्जित भयो बचन सुनि काना । नाथनाथ करजोरि बखाना ॥
नाथ न हम कामातुर आहीं । वेश्यासक्त बहुरि हम नाहीं ॥
हेमानामिनिनारिसुलोचनि । निजछवि कामवाम मदमोचनि ॥
कमलपत्रदृग तासु बिशाला । मोह्यो तहँ मम मन यतिपाला ॥
रबि किरणिन ते नो कुम्हिलाहीं । ताते छत्र लियो कर माहीं ॥
इतनोहिं मम व्यापार कृपाला । सत्य कहौं पदरज धरि भाला ॥
अब जाबिधि हित होय हमारा । सिखवहु प्रभु मैं दास तुम्हारा ॥

दो० बोले कृपानिधान तब विहँसि मधुर मृदु बयन ।
याहू ते सुन्दर बड़े तुमहिं दिखावहिं नयन ॥
सो० धनुर्दास कह नाथ परम लाभ मैं मानिहौं ।
तुरत ताहि लै साथ गये यतीश रंगी निकट ॥

जहँ भोगीश तल्प गुणऐना । जग हित हेतु करत प्रभु शयना ॥
रघुकुलदेव स्वजन हितकारी । मधुरहास मृदु मुनिमन हारी ॥
भुज आजानु कमलदललोचन । निजछबिकोटिकाम मदमोचन ॥
कांतिसदन मणिभूषण राजत । पीतांबर अंगन सुख साजत ॥
दिखराये कंजारुण नयना । कर गहि बोले करुणाअयना ॥
अहो रंगपति जगतअधारा । धनुर्दास यह दास तुम्हारा ॥
दिखरावहु निज दृग सुघराई । यह सुनि आश्रितजन सुखदाई ॥
कियो कटाक्ष कृपामृत पूरण । जो बिषयांतर रोगहि चूरण ॥

मल्लराज तन दशा बिसारी । जोरी दृष्टि निमेष निवारी ॥
उर आनन्द न जाय बखाना । यति सम्बन्ध रंगपति जाना ॥

दो० करी कृपा करुणायतन यतिपति के सम्बन्ध ।
रक्षणीय मानत भये मल्ल मनोभवअन्ध ॥

सो० यतिपति अरु रंगेश कृपादृष्टि चितये जबहि ।
रहो विकार न लेश कामादिक बीते सबै ॥

छन्द हरिगीतिका ॥

ल्याये मठहि लखि बिगत मोह प्रसाद अरु तीरथ दियो ।
पुनि प्रार्थना सुनि तासुकी संस्कार पंचकहू कियो ॥
यतिमुकुटमणि शिष्यत्व लहि ते नित्यसेवा रत भये ।
बृत्तान्त सुनि हेमांगना मन चकित ज्ञानांकुर जये ॥
जितकाम ह्वै लक्ष्मणमुनीश सरोजपद प्रणमित भई ।
संस्कारपंचक काज बिनवति कनलपद पुनि पुनि नई ॥

दो० यतिपति कृपानिधान तब मल्लराज सौं ताहि ।
युक्त कियो जिमि प्रथम निज कृपादृष्टि अब ताहि ॥
धनुर्दास ते शतगुणित अधिक भक्ति अरु ज्ञान ।
दिन प्रति बाढ़ी तासु उर त्यागि मोह मद मान ॥
ते द्वौ परम भक्ति युत लक्ष्मणगुरु पद सेव ।
करत भये अन्तर रहित मानि मनहि परदेव ॥

इतिश्रीप्र० धनुर्दास कनकांगनयो श्रीवैष्णवत्वसिद्धिर्नाम चत्वारिंशोध्यायः ॥ ४० ॥

रंगनगर लक्ष्मणमुनि राजत । जनु दूजे रङ्गेश बिराजत ॥
धनुर्दास भयो भाग्यनिधाना । जिमि रघुपति सेवा हनुमाना ॥
एक समय रंगोत्सव माहीं । तीर्थप्रदान दिवस के माहीं ॥
कर गहि धनुर्दास को हाथा । गवने पुष्करणी यतिनाथा ॥
करिअस्नान बहुरि गहि पानी । आये निज मठ जनसुखदानी ॥
द्विजबरबैष्णवलखि यहचरिता । यतिपतिकृपाअखंडितसरिता ॥
अचरज करि पूँछत सब हेतू । बोले तिनसौं यतिकुलकेतू ॥
बिद्यामद धनमद अरु अभिजन । गहैं दुष्टजन त्यागैं सज्जन ॥
इन तिहुं ते यह मल्ल बिहीना । ताते हस्तग्रहण हम कीना ॥

सुनत जगतगुरु बचन प्रमाना । भये लज्जित मत्सर मनमाना ॥

दो० परम नीच कामातुर शूद्र मल्ल अपवित्र ।
लही साम्य द्विजबरन सौं देखौ दैव चरित्र ॥

सो० अमित असूया मानि ज्ञाता श्रुगवेदान्त के ।
अभिप्राय सो जानि यतिनायक कौतुक रच्यो ॥

धनुर्दास गुण प्रकटन काजा । कियो बिचार मनहि यतिराजा ॥
अंतरंग इक शिष्य सिखायो । सो निशि बैष्णवशालहि आयो ॥
चहुं दिशि लखि सोवत सब जाने । कटि पट सूखत ऊंचे ताने ॥
तिनमें ते इक इक कौपीना । लई फारि गुरु भक्त प्रबीना ॥
सोवत ते जागे जब प्राता । सब वेदान्त कुशल द्विजब्राता ॥
खंडित निजनिज बसननिहारा । कियो परस्पर कलहअपारा ॥
एकहि एक अबाच्य कठोरा । कहि कहि कलह कियो अतिघोरा ॥
सुनि यतिनाथ मंद मुसुकाई । शांत किये मृदु बचन सुनाई ॥
पुनि तिनकौं एकांत बुलाई । यतिपति याबिधि कह्यो बुझाई ॥
धनुर्दास कौं हम बिलमैहैं । बातन में अधरात बितैहैं ॥

दो० जाय सदन तुम तासुके सोवत लखि तिहि नारि ।
भूषण ताके अंग के ल्यावौ सकल उतारि ॥

सो० जानि न पावै कोइ युक्ति सहित कीजौ यतन ।
बहुत बिलम्ब न होय आवौ बेगि समीप मम ॥

प्रभु आयसु इमि बैष्णव पाई । वैसेहिं तत्क्षण कीन्हो धाई ॥
धनुर्दासप्रिय देखी जाई । बामपार्श्व करि सोवत पाई ॥
दक्षिण पार्श्व बिभूषण नीके । लिये उतारि मल्लबर ती के ॥
जागी सो अरु अल्प निहारी । देखे ऊर्द्धपुण्ड्रधर भारी ॥
बैष्णव प्राणन सम प्रिय ताही । सुख मान्यो मन भाग सराही ॥
तातें नयन मूंदि चुप मारी । पुनि मन मैं यह बात बिचारी ॥
बैष्णव चौरवृत्य सौं आये । कङ्कणादि जे पारशु बांये ॥
रहौं जो यौंहीं करवट कीन्हे । फिरि जैहैं बिनु अभरण लीन्हे ॥
ताते दक्षिण करवट लीन्हो । कृत्रिम चोरन भजि तब दीन्हो ॥

जागी जानि मल्लवर नारी। आये गुरु ढिग भय करि भारी॥

दो० आय दिये एकान्त मैं गुरुहि सों भूषण सर्ब।
तब मल्लहि पठयो घरहि हरण स्वजनदुर्गर्ब॥

सो० पुनि तहँ दियो पठाय उनहि बैष्णवन को तुरत।
सुनो गुप्त ह्वै जाय कहा कहत वे तिय पुरुष॥

तिन जाविधि गुरु आयसु पाई। बैसेहिं करत भये तहं जाई॥
मल्लनारि पति आगम जानी। तुरतहि जल झारीभरि आनी॥
अर्ध अंग भूषित तिय देखी। पूछो कारण अचरज लेखी॥
कहतिय तुमतेंपहिले इकक्षण। आये ममग्रहश्रीबैष्णवगण॥
सोवत मम तन अभरण सबहीं। लगे उतारन आतुर जबहीं॥
मैं जगि इष्टदेव पहिचानी। सोवत हांसि रही सुख मानी॥
एक अंग के जब सब भूषण। लिये छोरि जनपङ्कजपूषण॥
तब मैं वाम पार्शु के अभरण। देने काज विचार कियो मन॥
तातें सोवत ही की नाईं। करवट लियो दाहिनी घाईं॥
उन मोको तब जागत जानी। गये भाजि मैं मन पछितानी॥

दो० याविधि सो तिय वचन सुनि कहत मल्ल पछिताय।
मूढे तोहि स्वतन्त्रता अजहुँ न उर ते जाय॥

सो० जाने सरवसु हानि होत नर्क पुनि ताहि ते।
अपने अभरण मानि दीबे की इच्छा करी॥

बस्तु समस्त देह अरु प्राना। हरि गुरु बैष्णव स्वामि न आना॥
सब निरुपाधि उनहिं को आहीं। जाको बस्तु देय कह ताही॥
तातें करवट लियो वृथाहीं। लेते ज्यों भावत मन माहीं॥
तव उर लखि स्वातंत्रि अपारा। किय बैष्णवन न अंगीकारा॥
जाकौं अपनी मानत कोई। बस्तु न लेत भागवत सोई॥
जग चिदचित् अशेष हरिशेषा। पुनि तिनके जे दास सुबेषा॥
तिन समीप जो मान कछु अपना। ताते और न पाप कल्पना॥
श्रीबैष्णाव स्वीकृत जे भूषण। भूषण सत्यरहे सोई दूषण॥
यामि बहु अद्भुत बचन उचारी। सिखै स्वरूप ज्ञान बर नारी॥

गुरु पदपद्म करत मन ध्याना । निद्रा वश तब भये सुजाना ॥

दो० बैष्णव सब वृत्तन्त सुनि आय कह्यो गुरु पास ।
तब यतीश बैष्णवन सों कीन्हो वचन प्रकास ॥

सो० काहू कुटिल अजान तुम सब के कटि पटन ते ।
कोपीनक अनुजान हर्‌यो भाग वह दिवस जब ॥

तब तुम सबहुन आपुस माहीं । कियो कलह कहि जात सो नाहीं ॥
धनुर्दास को ज्ञान अपारा । तासु नारि बर चरित उदारा ॥
तुम सबहुन निज नयनन देखा । बड़ उत्पात बिकार न लेशा ॥
परमारथ पथ जाति न भारी । शुचि गुण ज्ञान परम हितकारी ॥
निष्ठा ज्ञान जासु यह भांती । सो उत्तम नहि केवल जाती ॥
यमि बहुबिधि शास्त्रार्थ विशाला । उपदेश्यो बैष्णावन कृपाला ॥
लज्जित भये सकल सुनि ताही । धनुर्दास मति हृदय सराही ॥
भोर भये बैष्णावकुलदीपा । धनुर्दास कौ बोलि समीपा ॥
कहि वृत्तांत सो भूषण दीने । गुरु परतंत्र ग्रहण तिन कीने ॥
शिरपर राखि सदा गुरु भाषित । सेवाकरत रहत अभिलाषित ॥

दो० परम प्रीति युत दिवस निशि गुरु सेवा लवलीन ।
याबिधि तिनके बहु चरित बरनै कौन प्रवीन ॥

सो० नित प्रति करि अस्नान कर अवलम्बन करि चलत ।
गुरुबर कृपानिधान अमित कृपा तिन पर करत ॥

इतिश्रीप्र० धनुर्दास हेमांगनयोगुणक्तोत्कर्ष प्रकटनन्नाम
एकचत्वारिंशोध्यायः ॥ ४१ ॥

कांचिपूर्ण मुनि जब तन त्यागा । महापूर्ण तब अति अनुरागा ॥
करी क्रिया द्विजमेधि बिधाना । सोलखि बिप्रन अनुचित माना ॥
निंद्यो पूर्णगुरुहि करि कोपा । बरण धर्म आगम क्रम लोपा ॥
सुनिअतुलाअतुलित पितुदुर्यश । सहिनसकीअतिभईक्रोधब[illegible] ॥
रंगी प्रति दुर्बचन सुना[illegible] । इन श्रीपानयोगि तन खायो ॥
इनको तीर्थ प्रसाद न दीजै । चरणनहूं प्रणिपात न कीजै ॥
कहति भई बैष्णावन मझारी । तातहु ते हरि दुर्यश भारी ॥

पूज्यपरांकुश तब करि क्रोधा । कियो रिसाय तासु अनुरोधा ॥
लक्ष्मणमुनि सुनि गुरु दुर्बादा । देशिक निकट गये सबिषादा ॥
मृदुल बचन बोले कर जोरी । महि शिर धरि पदपङ्क निहोरी ॥

दो० बिप्र वृंद सब कहत प्रभु बरण विरोधी कृत्य ।
कीन्हो तुम सो हेतु किहि समुझाइये निज भृत्य ॥
सो० तब गुरु ज्ञाननिधान बोले वचन विनीत वर ।
तुम तौ परम सुजान सुनौ जो अब पूँछत हमहि ॥

धर्मप्रवर्तक रघुकुलत्राता । तिन तें कहा बड़े हम ताता ॥
पूरण कह जटायु ते नीचा । जाहि दाहि हरि बारि उलीचा ॥
धर्मपुत्र तें हम न महाना । पूर्ण निकृष्ट न बिदुर समाना ॥
भगवद्भक्त शूद्र नहि होई । कर्म्म बिमुक्त भागवत सोई ॥
श्रुति सम्मत यह अर्थ अनूपा । देखौ करि बिचार यतिभूपा ॥
सुनि यतिपति प्रमाण गुरु बानी । मुदितभये बिशेष मत जानी ॥
तापाछे यतिनाथ कृपाला । इक मूकहि करि कृपा बिशाला ॥
निज मंगल बिग्रह दिखरायो । संकेतहि यह अर्थ बतायो ॥
यह मूरति निज रक्षक जानौ । गुरु तें बड़ो देव मति मानौ ॥
बात मानि लीनी यह मूका । कीनो संसृत रिपु द्वै टूका ॥

दो० यह रहस्य यद्यपि कियो यतिपति लाय कपाट ।
कूरेश्वर देख्यो तदपि द्वार छिद्र की बाट ॥
सो० मन मैं करत बिषाद मोकौं मूक न बिधि कियो ।
होत यतीश प्रसाद या रस को अधिकार मोहि ॥

पुनि मन मैं यह शङ्का आनी । यासौं हँसी करी गुरु ज्ञानी ॥
शङ्क सो मेटन हित यतिराजा । गोष्टीपुर लै शिष्य समाजा ॥
गोष्टिपूर्ण गुरु जाय निहारे । बैठे ध्यान अखण्डित धारे ॥
करिप्रणिपात धरणि धरि माथा । कर संपुट करि कह यतिनाथा ॥
कौन मंत्र कह ध्यान तुम्हारा । कहौ मोहि मैं दास तुम्हारा ॥
गोष्टीपूर्ण बिहसि तब कहई । यामुन अंग नयन मम अहई ॥
कावेरी मधि करि अस्नाना । अघमर्षणहि जपत भगवाना ॥

कमठ समान प्रष्टि उनकेरी । प्रतिबासर नयनन हम हेरी ॥
सोई तात करत हम ध्याना । यामुन नाम सो मंत्र बिधाना ॥
ध्यान मूल गुरु मूरति भाई । पूजा मूल चरण सुखदाई ॥

दो० मंत्र मूल गुरु नाम है कृपा मोक्ष सुख मूल ।
अंध बधिर जड़ मूक शिशु सबहिन कौं अनुकूल ॥
सो० याविधि सुनि गुरु वयन गुरु महिमा अति विशदबर ।
हरषे करुणाअयन सोई सिखवत निज आश्रतन ॥

इतिश्रीप्र० गुरुमोक्षोपायत्वंप्रकाशनन्नाम द्विचत्वारिंशोध्यायः४२

या प्रकार यतिनाथ कृपाला । जग रक्षा कीनी कछु काला ॥
मंत्ररत्न धन मुक्ति प्रदायक । भूरिद्दान कीनो सुखदायक ॥
पीठ तेजमय सच्चरिचारी । औरौ अमित शिष्य अघहारी ॥
तिनके शिष्यप्रशिष्य अनेका । भक्तिबिरति सब निपुण बिबेका॥
ते गुरुबर की आयसु पाई । परमारथी सकल दिशि जाई ॥
मंत्रराज दै रखि शुभनामा । रामानुज समेत सुखधामा ॥
जड़ मूकादि पंगु शिशु दीना । सब जग श्रीबैष्णव मय कीना॥
सर्ब बिष्णुमय जग तिहि काला ।भयो सत्य श्रुति अर्थ बिशाला ॥
पावन शिक्षा लहि द्विज वृंदा । परम धर्म रत भये सुखकंदा ॥
करैं सुकर्म संग फल त्यागी । हरि किंकर बुधि परपद भागी ॥

दो० परम शान्त वेदान्त युग पारंगामि लखाहिं ।
क्षत्री बैश्य शूद्र तिय ज्ञान रहित कोउ नाहिं ॥
सो० धर्मनिष्ठ नर नारि द्राविड़ वेद कुशल सबहि ।
जाहिं बिष्णुपद झारि रामानुज सम्बन्ध ते ॥

पूरणकाम रमासख कीने । जिमि पितु तोष सुसुत सुख दीने ॥
तजि लौकिक व्यापारनिरंतर । दंपति सुख सोवततिहि अवसर॥
जे जन्मे रामानुज काला । तिनहिं न परस्यो नर्क कराला ॥
पितृ पितामह तजि गति घोरा । हरिपद जात करत किलकोरा ॥
पूर्ब यथा रुक्मांगद राजा । करि हरिबासर व्रत ससमाजा ॥
गये तजि कल्मष त्रबिधि अपारा । श्वेतद्वीप सकल इकबारा ॥

निमि यतिपति सम्बन्ध जगतजन। प्रपदन धर्म पाय प्रमुदितमन॥
पाप ताप तिहुँ विधि करि नासा। जाइँ बिसाबद बिनहिं प्रयासा॥
उदित यतीश प्रताप दिनेशा। लोप भये कलितिमिर अशेशा॥
य म तस्कर सम निर्व्यापारा। श्वेतद्वी सम भो संसारा॥

दो० तब अति शोच मग्न ह्वै यम गवने विधि लोक।
सुरनायक कौ अग्र करि कह्यो सकल निज शोक॥
सो० रुद्रादिक लै संग चतुरानन निज लोक ते।
गये जहाँ श्रीरंग सोवत कमला बिवश ह्वै॥

अस्तुति करि श्रीनाथ जगाये। यम परिताप समग्र सुनाये॥
तिनकी बिनती मानि मुरारी। यतिपति अद्भुत शक्ति निहारी॥
जिनकी परम निपुणता तें जग। चलत निरंतर शुद्धसत्वमग॥
देखी युग बिभूति इक रूपा। किय बिचार तब युगपुर भूपा॥
मम लीला हित यह संसारा। परबिभूति मम नित्य बिहारा॥
यहअनित्यसतरजतमामिश्रित। शुद्ध सत्वमय वह इकरस नित॥
यह अनादि क्रम नहि यक रीती। लक्ष्मणमुनि मेटी सो नीती॥
युग बिभूति इक रूप लखाहीं। उनकी समरथ सम मम नाहीं॥
कीनी जग रक्षा कलिमल तें। गूढ़ अर्थ शिक्षा के बल तें॥
मूक पंगु बहिरे अरु अंधा। सबहि मोक्षप्रद निज सम्बन्धा॥

दो० बिष्णुलोक सबबिधि भयो यतिपति के आधीन।
किये तदीय जन्तु सब माया रहित प्रवीन॥
सो० काहि न होत बिषाद प्रमुदा के परबश भये।
मोह्न भयो प्रमाद सिन्धुसुता के बिबश ह्वै॥

ये अतिनर रामानुजदासा। जीत्यो मम पद बिनहिं प्रयासा॥
शिव विरंचि सनकादिक ज्ञानी। जात न जहां कर्म मन बानी॥
इनकी महिमा कौं को गावै। मोहू कौं लखि अचरज आवै॥
केवल गुरुपद पद्म परायन। पालत गुरु आयसु सब भायन॥
काम क्रोधगत तत्वबोध रत। द्राबिड़वेद सकल पारंगत॥
अर्थपंचज्ञाता समदरशी। स्वप्नहुँ नहिं बिषयान्तर परशी॥

संस्कृत सकल पंचसंस्कारा । सब संपन्न तीनि आकारा ॥
सिंधु सेतु तें हिमिगिरि ताईं । यति सम्बन्ध रहित कोउ नाहीं॥
कछु दिन मैं मोहिं परत लखाई । मम लीला बिभूति मिटिजाई॥
तब ह्वैहैं हम निर्व्यापारा । अरु असत्य सङ्कल्प हमारा ॥

दो० ऐसे बहुत बिचार करि चोलनृपति पापिष्ट ।
प्रकटायो वा काल मैं श्रीश द्वेष नहि इष्ट ॥
सो० जिमि दितिसुत लङ्केश अकथनीय जिमि तासु अघ ।
बिदा किये देवेश तब तुरि निज निज लोक कौं ॥

इतिश्रीप्र० चोलराज निर्माणन्नाम त्रिचत्वारिंशोध्यायः ॥४३॥

चित्रकूट नगरी तिहि काला । भौ कृमिकंठ चोल महिपाला ॥
बैदिक धर्म्मन ते दुःशीला । शिशुपनहू न खेल शुभ लीला ॥
शैव धर्म सर्बोत्तम माना । बिष्णु द्वेष अतिशय मन ठाना ॥
उपरोहितहि अग्र करि धूता । बादत नितप्रति बैदिक यूथा ॥
पुनि यह दुर्बिचार मन ठाना । जे मम देश बसत बिद्वाना ॥
तिनसौं बल करि लेउं लिखाई । शिवतें परे और नहि आही ॥
लागे लिखन डरपि कोउ पंडित । कोउ कछु लाभ लोभ मन मंडित॥
कोऊ क्षेत्र धान्य गृह पशु तजि । धर्म हानि अति देखि गये भजि॥
तहाँ एक बैष्णव हठ ठाना । रंगनाथ इच्छा बलवाना ॥
रंगधाम रामानुज बसहीं । तिनके शिष्य कूरपति लसहीं ॥

दो० ज्ञानी धर्मधुरन्धर दिग्विजयी विद्वान ।
जो वे दोउ जन लिखै तौ सबते अधिक प्रमान ॥
सो० करिहौ कहा लिखाय अगिनित प्राकृत द्विजन सौं ।
वे दोउ बैष्णवराय लिखैं तौ सब जग लिखि चुक्यो ॥

सुनत चतुर्ग्रामाधिप बानी । पठये दूत सुजन दुखदानी ॥
रंगनगर पहुंचे सो जाई । पूंछी कहाँ रहत यतिराई ॥
लहि श्रीबत्सचिन्ह सब भेवा । जिनके सर्बसु श्रीगुरुदेवा ॥
गुरुबर सौं आयसु बिनु लीने । तिनके चिह्न ग्रहण सब कीने ॥
चले तुरंत नृपाधम पासा । दूतनहूं सौं किय न प्रकासा ॥

तिन पाछें यतिपति गुरु ज्ञानी । चले रंगपति इच्छा मानी ॥
दाशरथी वृत्तांत पाय सब । आय कह्यो गुरुबर्य निकट तब ॥
कह मन्नाथ जो याबिधि भाई । उनके बस्त्र देउ मोहि ल्याई ॥
पहिरि सो आर्य शिष्य हित तात्क्षन । करन लगे मंगलानुशासन ॥
तब शिष्यन इमि बिनय सुनाई । प्रभु थिति यह थल उचित न अहई ॥

दो० रंगी आयसु पाय प्रभु गवने पश्चिम ओर ।
लखे नृपाधम दूत तब पाछे आवत घोर ॥

सो० शिष्यन कह्यो सुनाय लै वालू दुहुँ करन तब ।
दई तिनहि यतिराय गाया एक पुनीत पढ़ि ॥

कह्यो याहि मग फेकौ भाई । शिष्यन तत्क्षण दई उड़ाई ॥
तासु प्रभाव दूत वाथल ते । आगे चलि न सके बुधि बल ते ॥
लौटि गये खल सब खिसियाई । कहत मंत्र कीनो यतिराई ॥
तामग षट निशिदिन यतिनाथा । वृष्टि बातबश शिष्यन साथा ॥
भूले फिरत रहे बन माहीं । शीत दुखित अरु असन बिनाहीं ॥
तब निशि इक दिशि शैल समीपा । प्रजुलित अनल देखि यतिदीपा ॥
नर अनुमान आनि मन माहीं । शिष्यन युत चलि गये तहाहीं ॥
पूंछत भये पंथ ऊंचे स्वर । सकल सुमग नीके जिनके उर ॥
मंचन तें सुनि आरत नादा । तब तिन निकट बोलि सबिषादा ॥
सहसहिं अग्नि बारि तत्काला । दूरि कियो तन शीत कराला ॥

दो० श्वेत बसन है सबन कौं पूजि शक्ति अनुमान ।
पूँछत कहँ ते आगवन कीनो कृपानिधान ॥

सो० जात कौनसे देश कारज कह मन मैं धरो ।
हमसौं कहौ अशेष हेतु सहित सब करि कृपा ॥

काहू कारण रंगपुरी ते । पश्चिम जात दिवस षट बीते ॥
कह बनबासिन वाथल माहीं । रामानुज गुरु सुख युत आहीं ॥
कह बैष्णवन उनहिं कह जानौ । तुम हमसौं सो सत्यबखानौ ॥
तब उन कहो नंदिपुर माहीं । दियो मंत्र जब गुरु हम काहीं ॥
हितउपदेश समय हमसौं गुर । कह याबिधि बिश्वास करौ उर ॥

तुम्हरे परम गुरू मन्नाथा । तिनके चरणकमल धरि माथा ॥
मानौ निज रत्तक सब काला। उनतें अधिक न कोउ जनपाला॥
जिनकी महिमा गजगिरिनायक । कही आपने मुख सुखदायक॥
तिनहीं समीचीन गुरु के हम । हैं सेवक यद्यपि बरणाधम ॥
तब बैष्णावन बताये तिनकौं । येई हैं पूंछत तुम जिनकौं ॥

दो० तव वे गुरु चरणन परे बिमल भक्ति उर ठानि ।
बिबिधि अन्न मिष्ठान घृत अर्पण कीनो आनि ॥
सो० रुचि सौं भोग लगाय भक्ति युक्त वह अन्न शुचि ।
परम तोष मन पाय शिष्यन युत सोये तहाँ ॥

नित्यक्रिया कीन्ही उठि प्राता । आर्य शिष्य चिंता अति गाता॥
तिनके समाचार लावन हित । फेरे इक बैष्णाव आतुर चित ॥
कीन्हो व्याध एक तिन संगा । पठये युगल जहाँ श्रीरंगा ॥
आगे चले बहुरि यतिनाथा । पैंतालिस बैष्णाव लै साथा ॥
मिले शवर हित करि ग्रह आने । तहाँ प्रभु इक मुहूर्त्त बिलमाने॥
तिन पुनि निज मन माहिं बिचारी । हम ग्रहतें बैष्णाव सुखकारी॥
भोजन बिना चले जो जाहीं । यातें हानि कहा जग माहीं ॥
ताते पठई इक द्विज धामा । अन्न घृतादिक भोजन सामा ॥
बैष्णावहू तहं लै पहुंचाये । आपुन बिदा मांगि शिर नाये ॥
तहां बैष्णावन पाक बनायो । सुख समेत हरि भोग लगायो ॥

दो० शिष्यन युत यतिपति बहुरि चैला चला निकेत ।
जाय भये निर्भीत मन अभय जे दुहुँ पुर देत ॥
सो० नृपति अधम के व्याज याविधि पश्चिम देश शुचि ।
करत भये यतिराज व्याधन की पूजा ग्रहण ॥

इतिश्रीप्र० कृमिकण्ठव्याजेन मन्नाथस्य पश्चिमदेश
गवनन्नामचतुर्चत्वारिंशोध्यायः ॥ ४४ ॥

बैष्णाव आवत लखि बड़भागी । परमानंद हृदय अनुरागी ॥
अर्घादिक करि पूजि निहोरी । बोली मधुर बचन कर जोरी ॥
करौ रसोई षटरस सानी । भोजन करिये सदन निज मानी ॥

कहवैष्णावन बचनतुवसुनिसब । भयेतृप्त सुनिबहुरिसोकह तब ॥
तजौ सकल शङ्का निज मनकी । मैं दासी यतिपति चरणानकी ॥
लक्ष्मणागुरुसम्बन्धयथाबिधि । प्रापतिभयो सोसुनौकृपानिधि ॥
यहां पूर्ब अति दैव अमर्षा । बर्षा भयी न द्वादश बर्षा ॥
प्रजा सकल चहुं ओर परानी । मैं पति संग रंगरजधानी ॥
गई तहां देखे यतिनायक । राजत मठ सुजनन सुखदायक ॥
उपादान करि सप्त धाम जित । भोजन करत यद्यपि नृपसेवित ॥

दो॰ श्रुतिपारंगत अमित तहँ पूजत पद पाथोज ।
नाम लेत जिनको मिटत कोह बिमोह मनोज ॥

सो॰ एक दिवस यतिराज उपादान हित जात लखि ।
निज अभिमत सिधि काज मैं मग मैं ठाढ़ी भई ॥

तब यतीश बोले मोपाहीं । क्यों हमकौ रोकति मग माहीं ॥
तब मैं बिनय करी करजोरी । नाथ नारि मैं जड़ मति भोरी ॥
शङ्का मोहि होति यह भारी । सेवत तुमहिं भूमि पति झारी ॥
भिक्षा करि तुम खात सदाई । तासु हेतु मोहिं कहौ बुझाई ॥
जे पारंग वेद श्रुति अंगा । पूजत तुमहिं यथा श्रीरंगा ॥
कह गुरु भिक्षा द्विज को कर्मा । यतिहि बिशेष न दूसर धर्मा ॥
कियो मंत्र उपदेश सबहि हम । ताते करत सकल सेवा मम ॥
तब मैं कह मोहि लखि निज दासी । उपदेशिये मंत्रसुखरासी ॥
बिनयबचन ममनिकृपानिधि । मंत्रदानतब कियोयथाबिधि ॥
बिपति बिगत सुनि देशसुकाला । तहंतेचलतिभई जिहिकाला ॥

दो॰ भूलि गई गुरु मंत्र मैं गुरु पद पद्म निहोरि ।
बिज्ञापन करि दोष निज पायो मंत्र बहोरि ॥

सो॰ मंत्र रत्न उपदेश करि दीनी निज पादुका ।
मेट्यो सकल कलेश कब पुनि वे गुरु देखिहौं ॥

तबते नहिं गुरुदेव निहारे । योगेश्वर तिहुं पुर उजियारे ॥
सो शुभ घरी कबहिं धौं ऐहै । गुरु पदकमल दरश पुनि ह्वैहै ॥
यह कहि सुमिरिकृपागुण ऐना । प्रेमपुलकि लीन्हेभरिनयना ॥

पावन प्रीति तासु उर चीन्ही । करौ पाक प्रभु आयसु दीन्ही ॥
कह्यो बैष्णावन सौं पुनि ऐसे । देखौ करति रसोई कैसे ॥
देख्यो ताहि बैष्णावन जाई । पहिर्यो अपरस बस्त्र अन्हाई ॥
गुरुपद बंदि कियो पुनि ध्याना । मुख शरणागति शब्द बखाना ॥
गुरुपादुका देवगृह धरिके । द्वयमनु सुमिरो मन थिर करिके ॥
पुनि गुरुपरंपरा अति प्रीती । जपति सो भई यथाक्रम रीती ॥
गंध पुष्प आदिक पुनि बिधिवत । पूजि पादुका करी दंडवत ॥

दो० षटरस मिश्रित बिबिधिबिधि पावन पाक बनाय ।
भोजन हित बैष्णवन सौं करी प्राथना आय ॥
सो० शिष्यन सब बृत्तान्त आय प्रथम गुरु सौं कह्यो ।
बिशद सो आद्योपान्त भये प्रसन्न सुनि यतितिलक ॥

बोले बैष्णावि प्रति प्रभु बानी । गुरु पादुका दिखावहु आनी ॥
अरु गुरु मंत्र सुनावहु मोही । तब बैष्णाव मानैं शुचि तोही ॥
नतरु न भोजन कारिहैं बैष्णाव । मानिलई प्रभु आयसु तिनसब ॥
बैष्णावजाइँ कियेबिनु भोजन । मानिमनहि सब गलित प्रयोजन ॥
गुरु पादुका आनि दिखराई । धीरे दीनो मंत्र सुनाई ॥
कह्यो मुदितमन सुजन सहायक । यह समूह तव मंत्रप्रदायक ॥
हैं लखि तिन्हैं लेउ तुम चीन्ही । सबकी ओर दृष्टि तिन कीन्ही ॥
जाय यतीश समीप बहोरी । बंदि चरण बोली करजोरी ॥
प्रभु पदयुगल प्रकाशित ऐसे । मम देशिक कृपाल के जैसे ॥
तदपि दंड काशाय अभाऊ । निश्चय है न सकत यतिराऊ ॥

दो० बिहसि कह्यो यतिराज तब मैही हौं मन्नाथ ।
आयोहौं श्रीरंग ते बिष्णुजनन के साथ ॥
सो० काहू हेतु निमित्त श्वेत बस्त्र धारण किये ।
भयो तासु के चित्त अतुल हर्ष सुनि बचन बर ॥

सुनि यतिनाथ बचन सुखसाने । निश्चयकरि निज देशिकजाने ॥
परी चरण अति प्रेम अधीरा । गदगद कंठ नयन बह नीरा ॥
देखि दशा गुरु भये सुखारी । सन्मानी मृदुबचन उचारी ॥

तजि दुर्योधनादि यदुराई । भोजन कियो बिदुर घर जाई ॥
याको अन्न सुरसरीजल सम । सब सद्गुण संयुक्त भोग्यतम ॥
नहीं न्यूनता तुम कौ भाई । भोजन कीजै भोग लगाई ॥
गुरुआयसु सुनि श्रीबैष्णवगन । हरि अर्पणकरि कीनो भोजन॥
किय बिश्राम सबन सुखपाई । तब बैष्णवी पाक गृह जाई ॥
गुरु बैष्णव को शेष प्रसादा । निज पति ज्ञान उदय के काजा ॥
असन माहिं लै मिश्रित कीन्हो । बोलि ताहि सो भोजन दीन्हो॥

दो० आपु प्रथक भोजन बिना सोइ रही दुखपाय ।
पूंछो कारण तासु को पति ताके ढिग जाय ॥

सो० बोली साध्वी बयन आये बैष्णव मम सदन ।
मम गुरु करुणाअयन तिन भोजन कीन्हो नही ॥

बैष्णव धर्म बिमुख तुम ताते । गुरु व्रत कियो दुःख कह याते॥
यह गलानि बश शोचन मरऊं । का प्रकार मैं भोजन करऊं ॥
मम गुरु शिष्य होउ तुम जाई । तौ सहजहि यह क्लेश नशाई॥
नारि बचन करि अङ्गीकारा । करी सपत द्विज बिबिधि प्रकारा॥
तब उठि भोजन कीनो नारी । गई पति निकट छांड़ि दुखभारी॥
प्रातभये द्विज करि अस्नाना । गुरु समीप गयो बुद्धिनिधाना ॥
करौ समाश्रन मोहिं जनरंजन । कृपासिंधु प्रणतारति भंजन ॥
नारिहु बहुबिधि बिनती कीनी । कृपानिधान अभय तब दीनी॥
कियो समाश्रत गत अघ ओघा । संसकार तापादि अमोघा ॥
शुभ श्रीरंगदास किय नामा । कहत सुनत दायक बिश्रामा ॥

दो० करि प्रणाम तब तिय सहित रंगदास मतिधीर ।
पूजे गुरु वहु भेट धरि कंचन भूषण चीर ॥

सो० जे बैष्णव गुरु साथ सादर ते पूजे सकल ।
मुदित भये यतिनाथ दंपति अति अनुकूल लखि ॥

दो० कछु दिन सुख युत बसि तहाँ सुठि त्रदंड काशाय ।
हरि समीप रखि प्रथम जिमि धारण किय हरषाय ॥

कृपा बिबश बहु ग्रामजन बैष्णव करि यतिभूप ।
बिसरे रंगी विरह दुख साध्वी भक्ति अनूप ॥

## इतिश्रीप्र० चैलाञ्चलांबा भर्तुपंचसंस्कारकरणान्नाम पंचचत्वारिंशोध्ययः ॥ ४५ ॥

दंपति कौ सुख दै सुखदायक । चले तहां ते सुजन सहायक ॥
चलि पश्चिम दिश सहित शिष्यगन । गये बह्निपुष्करणि सुजनधन ॥
तहां निवसिदिनतीनि यतीश्वर । जायरहेकछुदिन मिथिलापुर ॥
शालिग्रामहि गये जगतगुर । माया बादि तहां के भूसुर ॥
तिन नहि पूजे आय कृपाला । दीन कृपाबारिध यतिपाला ॥
तातें दाशरथी प्रति याबिधि । बोले बचन विशद करुणानिधि ॥
जिहिसर भरतसलिल नर नारी । बैठौ तुमतहँ चरण पसारी ॥
दाशरथी गुरुभक्त बिचक्षण । जाय कियो ताही बिधि तत्क्षण ॥
तिनके श्रीपद तीर्थ प्रभावा । बिशद ज्ञान कुमतिन उर आवा ॥
अहंकार परिहरि सुधर्म रत । भये यतीश चरण शरणागत ॥

दो० शालिग्राम ग्राम को कियो अमंगल दूरि ।
आंध्रिपूर्ण तिन मैं भये कृपापात्र अति भूरि ॥
सो० कियो तिन्है उपदेश शास्त्र अर्थ अति विशद बर ।
लहि विज्ञान विशेष सेवन लागे गुरुचरण ॥

तिनहि संग लै अरु निज बैष्णव । नरहरि क्षेत्रगये तहँते तब ॥
करिप्रणाम तहँबसि कछुकाला । सुजनन रक्षण हित जगपाला ॥
कीन्हो पुरश्चर्ण अभिचारा । जातें चोलनृपति हत्यारा ॥
पाषंडी हरिदूषक पापी । मरै क्षुद्र हरिजन परितापी ॥
पुनि तहँ ते आये अभिरामा । भक्तग्रामपूरण के धामा ॥
ते यतिपति प्रिय शिष्य सुजाना । पूजे गुरु बैष्णव बहु माना ॥
बसे तहां कछुकाल कृपाला । पूर्ण शिष्य की भक्ति विशाला ॥
तहं को बिट्ठलदेव नृपाला । राक्षस गही तासु की बाला ॥
नृपति दुखित ह्वै गुणी बुलाये । बहुत मंत्र तिन आय उपाये ॥

भयो निवृत्त न राक्षस घोरा । गये हारि करि यत्न कठोरा ॥

दो० थके मंत्रबादी सबै छुटत न ग्रह बरजोर ।
लज्जित दुःखित मातु पितु परो शोर चहुँ ओर ॥

सो० होति नग्न पट फारि उठि भाजति जोई सोई बकति ।
देति गारि कहु मारि सुहृद दुखित खल मन हँसत ॥

भक्तग्रामपूर्ण इक बारा । गुरु आराधन हित नृप द्वारा ॥
जात भयेन द्रव्य तिन पासा । उंछ करत नित सहित हुलासा ॥
महलन गये दुखित लखि रानी । पूंछा तिन सब कथा बखानी ॥
पूर्ण कहो हमरे गुरु ज्ञानी । मंत्रकुशल दीनन सुखदानी ॥
कृपादृष्टि जो देखैं बाला । छूटै दुष्ट प्रेत तत्काला ॥
पुनि जिमि पूर्व यतीश प्रभावा । छुट्यो ब्रह्मराक्षस सो गावा ॥
तुरत रानि नृप सौं कह जाई । नृप कह जो देशिक सुखदाई ॥
करिके कृपा करैं यह काजा । उनको शिष्य होउँ ससमाजा ॥
सो सब नृपति उक्ति सुनि रानी । पूरण सन्मुख आय बखानी ॥
तिन सो आय कही गुरु पाहीं । सुनि गुणधाम कहो कछु नाहीं ॥

दो० तबहि बुद्धगुरु कौ नृपति क्षणकद्रव्य जो मान ।
भोजन हित बोलन चहो तासौं रानि बखान ॥

सो० ऐहैं नहि गुरुबुद्ध वृथा न खोवौ मान निज ।
मानन तुमहि अशुद्ध जाते तुम अँग हीन हौ ॥

नारि बचन नृप मनहिं न लाये । गुरुहि बुलावन दूतपठाये ॥
कहा क्षणक दूतन सौं ऐसे । नृप के भवन जायँ हम कैसे ॥
जब दिल्लीश्वर करी चढ़ाई । गहि नृप की अंगुरी कटवाई ॥
त्याग्यो अंग भंग करि जाको । भोजन करैं कौन बिधि ताको ॥
दूतन मुख सुनि नृप दुख मानो । गुरु को तिरस्कार मन आनो ॥
सो लखि रानि कह्यो पति पाहीं । होत यतीश शरण क्यों नाहीं ॥
करौ जो लक्ष्मण गुरु शरणागति । होय तासु को फल निर्मल अति ॥
मानि बचन तिय को नृपराई । यतिपति ढिग जनमुख्य पठाई ॥
करी प्रार्थना घर आवन हित । पुर प्रवेश न भाव यतिपति चित ॥

करत भये बिनती बैष्णव तब । भक्तग्रामपूर्ण आदिक सब ॥

दो० जो यह नृप बश होय तौ बैष्णव शास्त्र निबाह ।
होय बहुत सुनि मानि मन चलत भये यतिनाह ॥

सो० तब नृप सहित समाज आय गये लै दूरि ते ।
उच्चासन यतिराज शोभित करि पूजन कस्यो ॥

ग्रह पीड़ित कन्या नृप आनी । देखि दशा भई सबहि गलानी॥
तब शिष्यन गुरु तीर्थ उदारा । प्रोक्षण करि ताके मुख डारा ॥
तत्क्षण तजि चित बिभ्रम भारो । सावधान ह्वै बसन सम्हारो॥
छुटि पिशाच सौं बहु छबिपाई । जनु रोहिणितजि कुग्रहसुहाई॥
देखि नरेश बिपुल सुख पायो । परम प्रेम प्रभुपद शिरनायो ॥
पुरबासिन अरु नारि समेता । कस्यो समाश्रय कृपानिकेता ॥
धस्यो बिष्णुवर्द्धन शुभ नामा । दास समेत सकल गुणधामा ॥
नृप सेवा बश सहित समाजा । कस्यो निवास तहां यतिराजा॥
सुनि अचरज वृत्तांत बिशाला । अयुत बुद्ध इक सँग तिहिकाला॥
घेरि लियो यतिराजहि आई । कहत सकल करि क्रोध सुनाई॥

दो० बादसभा जीते बिना हमकौं तुम काभांति ।
शिष्य हमारो देशपति मिलै लियो निज पांति ॥

सो० जैहौ भजि कहँ आज जो पंडित हम संग तौ ।
तर्कबाद कै काज होउ सजग देखैं तुमहिं ॥

सुनि यह बचन यतीश्वर धीरा । हर्ष शोच कछु हृदय न भीरा॥
भये लोकन के देखत माईं । अजगरग्रसित भेक की नाईं ॥
हे हरि यह अवसर कह कीजै । कहांजायँ जहँ यह दुख छीजै॥
याबिधि बुद्धन मोह कराई । गये बिशाल मंडप हरषाई ॥
चहूं ओर आवरण करायो । तामैं सहज रूप प्रकटायो ॥
सहसमुखन करि उग्र सुउक्ती । खंडन करीं सहसदश युक्ती ॥
जीते क्षणक एक क्षण माहीं । जयजयशोर भयो त्यहि ठाहीं ॥
दिव्य शक्ति लखि बुद्ध अभागे । चकित भीत ह्वै जहँ तहँ भागे ॥
कोईकोई भये समाश्रित आई । अभय उभयपुर में तिन पाई ॥

याबिधि दिव्यअलौकिकशक्ती । लखिलोगन प्रकटी अतिभक्ती॥

दो० बिष्णुबिवर्द्धनदास हू मुदित चकित भये भूरि ।
गुरुवर पद पाथोज महँ रही भक्ति भरिपूरि ॥

सो० खलबिजई यतिभूप भगवद्धर्म धुरीण जग ।
करत चरित्र अनूप दिव्य अमानव भवहरण ॥

इतिश्रीप्र० बुद्धपराजयन्नाम षटचत्वारिंशोध्यायः ॥ ४६ ॥

भक्तग्राम बसत यतिनाथा । सुख समेत निज शिष्यन साथा ॥
गुरु पद पूर्ण पूर्ण को रागा । बाढ़त दिनदिन नृप अनुरागा ॥
मृतिकारहि न तिलकके काजा । भये बिकल तब सहित समाजा॥
तात्क्षण यादव शैल बिहारी । प्रणातारति भंजन ब्रतधारी ॥
सोवत कह्यो यतीश्वर पाहीं । श्वेतमृत्तिका मम गिरि माहीं ॥
अरु हमहूं तहं बसत सदाहीं । भूमि गुप्त कोउ जानत नाहीं ॥
तहं चलि हमकौ करौ उधारा । मठ निर्माण करौ नृप द्वारा ॥
जागि यतीश कह्यो शिष्यनसौं । बहुरि बुलाय बिष्णुबर्द्धनसौं ॥
लै संग तिनहि चले हरषाई । पंथ बनायो बिपिन कटाई ॥
पुष्य मास पावन अति सुंदर । अरु बहुधान्य नाम सम्बत्सर ॥

दो० गये वेद पुष्कर्णितट लखी शिला परिधान ।
सहित समाज प्रणाम करि करयो तीर्थ अस्नान ॥

सो० ग्रहण कियो काशाय यतिपति दत्तात्रय यथा ।
ढूंढ़े मन चितलाय यादवाद्रिपति नहि लहे ॥

श्रीश प्रभाव न्यूनता नाहीं । यह चिंता करिके मन माहीं ॥
सोय रहे बहु दुख मन आनी । तबहि स्वप्नकह हरि मृदुबानी॥
यह गिरिवर के दक्षिण भागा । चम्पा बिटप रुचिर इक लागा॥
तहं तुलसी तरु मूल मझारी । रहत सदा हम सुनौ अघारी ॥
अरु मम आयसु खगपति ज्ञानी । मृतिका श्वेतदीप ते आनी॥
राखी या गिरिवर के मूला । कल्यानी के उत्तर कूला ॥
यह प्रत्यक्ष सम स्वप्न निहारी । हरषे जागि सुजन दुखहारी ॥
कह्यो सबन सौं स्वप्न कृपाला । करि मज्जन नृप युत तत्काला॥

जाय तुलसितरु ढिग यतिनाथा । खनतभये बल्मिक निजहाथा ॥
हरि दरशन कौं नयन अधीरा । गद्गद् स्वर अरु पुलक शरीरा ॥

दो० शुभ शकाब्द द्वादश अधिक दशशत पौष सुमास ।
चौदशि नखत पुनर्बसु सुक्ल पक्ष सुखरास ॥
सो० प्रकटे आनदकन्द दीनकृपाकर भक्त हित ।
प्रणतकुमुदबनचन्द यादव गिरिवरनाथ हरि ॥

दियो दरश करुणागुणाश्रयना । भये सबके लखिशीतलनयना ॥
सब जन सिंहनाद करि गाजे । भेरि मृदङ्गादिक बहु बाजे ॥
तब यतीश नृप निकट हंकारी । दिखराये सुख [illegible] अघारी ॥
बिधि सौं पयअभिषेक करायो । पंचरात्र आगम जिमि गायो ॥
बहुरौं निज करसौं दिन तीनी । परम हर्ष प्रभु पूजा कीनी ॥
पुनि कल्याणसर उत्तर जाई । खनि त्रदंड सौं महि यतिराई ॥
श्वेतमृत्तिका लखि सुख लहेऊ । ऊर्द्धपुंड्र करि सो दुख दहेऊ ॥
नृप सौं कहि पुनि बिपिन कटायो । नारायणपुर नगर बसायो ॥
बहुरौं सुंदर मठ बनवायो । गोपुर मंडप सहित सुहायो ॥
परमबिशाल रुचिर अमराई । बसे बरण चहुं गिरिवर आई ॥

दो० राजभट्ट बिद्वानबर रंगराजभट नाम ।
तिनसौं प्रोक्षण आदि कृति करवाई गुणधाम ॥
सो० पंचरात्र बिधि युक्त उत्सव यदुगिरिनाथ के ।
परमानन्द सँयुक्त होन लगे नित प्रति तहाँ ॥

उत्सव मूर्त्ति बिना अकुलाहीं । जिहिबिनु होत महोत्सव नाहीं ॥
सोइ रहे शोचत मन भारी । तबहि स्वप्न मैं कह्यो मुरारी ॥
उत्सवमूर्त्ति रामप्रिय नामा । अहै सो दिल्लीश्वर के धामा ॥
चलि तहंते हमकौ लै आवौ । निज मन कौ परिताप नशावौ ॥
जगि सो यतीश कह्यो नृप पाहीं । मिथ्याहोत स्वप्न मम नाहीं ॥
कहत यथार्थ रमेश उदारा । नहि प्राकृत सम स्वप्न हमारा ॥
करि प्रणाम नृप कह करि सेवा । नाथ स्वयं नारायण देवा ॥
तीनिकाल अरु तिहुं पुरमाहीं । प्रभुहि असाध्य काज कछु नाहीं ॥

इंद्रप्रस्थ जो जाइये नाथा । रामप्रिय हित शिष्यन साथा ॥
तुम्हरे बश ह्वैहै दिल्लीपति । देय रामप्रिय अवशि मोरि मति ॥

दो० तदियाराधन हेतु मम धन धान्यादिक नाथ ।
प्रभु अधीन बैभव सकल लेउ जो चाहिये साथ ॥
सो० यह कहि गुरु रुख पाय बहुत पदारथ द्रव्य लै ।
करयो निवेदन आय प्रेम सहित गुरुदेव पद ॥

तब यतिसार्वभौम सहसाहीं । शोधि सुरुचिर मुहूरत माहीं ॥
द्विषटसहस वैष्णव एकांती । सत्तरिचारि पीठ मति शांती ॥
सब प्रसन्न मन त्रास न रंचक । करत पाठ सब घाटीपंचक ॥
औरौ संग हरिभक्त अनंता । किय पयान यतिपति भगवंता ॥
गुरु सेवाहित भूप सुज्ञानी । करी संग सेना सुखदानी ॥
पहुंचे दिल्लीनगर प्रवीना । घेरि चहूं दिस डेरा कीना ॥
समाचार दिल्लीश्वर लहेऊ । जानि अजेय सभय अतिभयेऊ॥
द्वारपाल करि सजग बिशेशा । मंत्रिन मंत्र पूंछि यवनेशा ॥
जानन काज आगवन हेतू । पठवत भयो सो चार सचेतू ॥
दूतन आदर दै यतिराया । नीतिनिपुण जे शिष्य निकाया ॥

दो० निज वृत्तान्त प्रकाश हित पठये कछु यतिराज ।
सुनि दिल्लीश्वर सुयश वर आयो दरशन काज ॥
सो० संग मुख्य जन पाँति आय यतीश्वर पद नयो ।
पूजन करि बहु भाँति आदर युत पूंछत भयो ॥

कीनो कष्ट आपु किहि हेतू । यह सुनि हंसि कह यतिकुलकेतू॥
रामप्रिय प्रिय देव हमारे । हैं यवनेश्वर सदन तुम्हारे ॥
तिनके लेन काज हम आये । देउ हमारे देव सुहाये ॥
तब नृप बहु प्रतिमा छिखराईं । जे दिग्विजय काल बरियाईं॥
ल्यायो देश देश ते जाई । लखीं जाय नृप गृह यतिराई ॥
निजअभिमत मूरति सुखकारी । तिनमें यतिनायक न निहारी॥
व्याकुल ह्वै तब कह यतिराई । इनमें हमरे देव न भाई ॥
और जो मूर्त्ति होयं तव ग्रेहा । हमहिं दिखावहु सब करि नेहा॥

तब यवनेश कह्यो मुसकाई। देव आपने लेउ बुलाई॥
तुम कौं वे प्रिय तुम प्रिय उनहीं। कहियत वे सब जानहिं सुनहीं॥

दो० जो यह सत्य तौ क्यों नहीं आवत है तुम पास।
सत्य बचन सुनि लजित ह्वै मौन रहे सुखरास॥

सो० चिंता बढ़ी अपार फिरि आये निज बासथल।
सोये बिनहिं अहार रामप्रिय तब करि कृपा॥

कह्यो स्वप्नमधि सब निज भेदा। मम हित तात करिय नहिं खेदा॥
शय्या गृह मिलिहैं हम तुमकौ। पूजति नृपति सुता नित हमकौं॥
जागि यतीश नृपति ढिग जाई। तासौं कह निज स्वप्न सुनाई॥
मन अति अचरज करि यवनेशा। यतिपति संग तहँ कियो प्रबेशा॥
तबहि रामप्रिय युत प्रियबेषा। नृप समेत सब लोगन देषा॥
धारे अनुपम पीत उपरणा। बाजत रुनुझुन नूपुर चरणा॥
मृगमद तिलक रुचिर बनमाला। जगमग कुंडल मुकुट बिशाला॥
शय्यागृह ते करत प्रकासा। दौरि कियो यति गोद निवासा॥
आनदसिंधु मग्न यतिराई। प्रेम बिबश तनदशा भुलाई॥
सम्पतिसुत कहि बारहि बारा। मिले लाय उर प्रीति अपारा॥

दो० तब ते रामप्रियहि सब लोक माहिं नर वाम।
कहत भये सम्पतिसुअन अरु यतींद्रसुत नाम॥

सो० अति अचरज मन आनि दिल्लीश्वर प्रभु पद नयो।
अतिमानुष जिय जानि करत भयो सतकार बहु॥

मंत्रिन सहित मुदित मन राजा। तब यतिनाथ निद्धलखि काजा॥
मागी बिदा यवनपति पाहीं। चलिबे कौ यादवगिरि माहीं॥
यह वृत्तांत सुनो नृपबाला। भई रामप्रिय विरह बिहाला॥
तासु सखी लखि ब्याकुलताई। आतुर नृपहि सुनायो जाई॥
आय नरेश सुता तब देखी। बैठी मनौ चित्र की लेखी॥
नयनन बहति सलिल की धारा। बिबरण मुख उर शोच अपारा॥
पूँछो हेतु बिकल मन राजा। याबिधि दुखित भई किहि काजा॥
पितु सौं सुता कह्यो तब ऐसे। प्राण बिना नहि जीवन जैसे॥

तैसेहि रामप्रिय के नेहा । दुसह बियोग तजौंगी देहा ॥
तासु दशालखि नृपअनुमाना । तजिहै अवशि मूर्त्ति बिनुप्राना॥

दो० ताते यतिनायक निकट जाय चरण शिर नाय ।
करी प्रार्थना देव हित दुहिता दशा सुनाय ॥
सो० कह यतीश मम देव आपहि आये करि कृपा ।
नहीं तुम्हारी सेव सुरति करौ निज बचन की ॥

तुम कह देव जो लेउ बुलाई । लै सँग जाउ न आन उपाई ॥
अब निज देव बोलि हम लीने । कौन भांति करि जातसो दीने॥
यह जिनि बहुरि कहौ हम पाहीं । काहू बिधि दीहैं हम नाहीं॥
भयो यवनपति उत्तर हीना । मंत्रिन संग बिचार तब कीना ॥
शिविकारूढ़ सुता हरि संगा । करि मन आनद लह्यो अभंगा ॥
यतिपति की अस्तुति बहु कीन्ही । बस्तुअनेक भेट पुनि दीन्ही॥
चतुरंगिनी सेन प्रमुदित चित । अरु सुत संग कियो रक्षाहित॥
याबिधि यतिकुलतिलक सुहाये । बधू सहित सम्पतिसुत पाये॥
चरण पुजाय यवनपति पाहीं । आनुकूलता लेश जहं नाहीं ॥
चरणन चलि आये हरि गोदा । जिमि पितु अंक पुत्र करिमोदा॥

दो० चले हरिहि लै यदुगिरिहि सब समाज के साथ ।
ह्वै कृतार्थ जिमि अवध कौं लङ्क जीति रघुनाथ ॥
सो० यतिपति बिशद चरित्र सुखदायक जन मनहरण ।
संसृत जनन पवित्र करत सकृत श्रवनन परत ॥

इतिश्रीप्र० दिल्लीनगरात्दिल्लीशकन्यासहसम्पत्सुतस्य यादवाद्रिं प्रत्यागमनन्नाम सप्तचत्वारिंशोध्यायः ॥ ४७ ॥

शोधि सुदिवस चले यतिराजा । बाजत मंगल मय बहु बाजा॥
वेदध्वनि जयध्वनि अति रूरी । भूतल व्योम दसहुदिश पूरी ॥
शिविकारूढ़ अग्र संपतिसुत । राजसुता युत राजत अद्भुत ॥
दिल्लीश्वर सुत सेना लीने । जात चहूं दिश घेरा कीने ॥
रामानुज समाज तिहि पाछे । अमित बिचित्र बिराजत आछे॥
मारग में यवनेश्वर कन्या । भई लीन हरि तन मधि धन्या ॥

शिविकाकेवलसंपतिसुतलखि।नहिवहबड़भागिनिहरिप्रियसखि
भयेचकितयतिपतिआदिकसब। लखिनपरयोयहकौतुकभोकब॥
तासुभ्रातदुख सुखअचरजकरि। रह्योश्रीशपदप्रीतिहृदयभरि॥
यादवगिरि तब पहुंचे आई। संपतिसुत युत यतिकुलराई॥

दो० यादवगिरिपति निकट तब संपतिसुत पधराय।
किया समागम शास्त्रबिधि दंड प्रदक्षिणा लाय॥
सो० पुत्र भाव दृढ़ ठानि संपतिसुत मधि यतितिलक।
धन्य भाग निज मानि करत भये उत्सव सकल॥

तिहि थल दिव्यदेश प्रभु कीन्हो। तीर्थ प्रसाद सबनकौ दीन्हो॥
बड़भागिनि यवनेशसुता बर। प्रतिमा तासु कराय मनोहर॥
बिधिवत हरि पदकमल समीपा। शोभित कीनी यतिकुलदीपा॥
अर्चारूप सहोदरि देखी। राजपुत्र सुख लह्यो बिशेखी॥
कह वृत्तांत जाय पितु आगे। सुनत नृपति दुखअचरज पागे॥
समुझाये बुधजन तब जागे। श्रीपति चरणकमल अनुरागे॥
सुता नेह बश बहु धन लीन्हो। संपतिसुतहि भेट सो कीन्हो॥
यमि नारायणपुर यतिचंदा। निवसे कछुक काल सानंदा॥
कवरू नाम यवन तिहि काला। भये भक्ति रत बुद्धि बिशाला॥
सुनि यह अचरज लोगन पाहीं। आये नारायणपुर माहीं॥

दो० देखि यवनतनया तहाँ हरि ढिग अर्चा रूप।
अचरज करि पूजत भये प्रीति सहित यतिभूप॥
सो० तिनकी आयसु पाय दिव्य देश बिचरत भये।
रंगक्षेत्र पुनि जाय लखि बैभव अचरज कियो॥

मानि तिनहि निज मन परदेवा। कीन्ही बहुतभांति सौं सेवा॥
भक्ति सहित मांगो बरदाना। देउ मोक्ष मोहि कृपानिधाना॥
यवन बिनय सुनि रंगबिहारी। बोले बचन भक्तभयहारी॥
मोक्ष प्रदान प्रपन्न जनन की। लीन्ही हम दीक्षा सुजनन की॥
पतितन मोक्ष देन के कारण। कीनो जगदीश्वर बपु धारण॥
यह कारण यमि अहै निबंधा। होति मोक्ष चक्रहि सम्बंधा॥

चक्रांकितभुज ह्वै मम दासा । पावत परमधाम को बासा ॥
पुरुषोत्तमपुर चक्र दरस तें । अरि परिहरि तन चक्र परस तें ॥
तातें तुम पुरुषोत्तम धामा । जाउ तौ पावहु पद अभिरामा ॥
सुनि आयसु कवरू सहसाहीं । पहुंचे पुरुषोत्तमपुर माहीं ॥

दो० मन प्रसन्न ह्वै भक्ति युत बहुविधि कियो प्रणाम ।
नाचन लागे प्रेम भरि गाय बिशद गुण ग्राम ॥
सो० भक्ति सहित कछु काल रहे तहाँ कवरू हरषि ।
मेटि सकल जगजाल हरि प्रसाद सौ पोषि तन ॥

जन बत्सल जगदीश उदारा । तासु मोक्ष हित कियो बिचारा ॥
स्वान रूप आये तिहि आगे । तासु असन दसनन गहि भागे ॥
सर्ब सुहृद कवरू मति आछे । लै कर घृत धाये तिन पाछे ॥
कहत भये प्रभु रुक्ष न खाहू । होय न कहूं उदर में दाहू ॥
घृत मिश्रित कीन्हे सुख ह्वै है । रुक्ष अन्न सौं पेट पिरै है ॥
काहेकौं भाजत हौ प्यारे । गये कहत यमि सिंधु किनारे ॥
तहँ प्रत्यक्ष भये भगवाना । शङ्ख चक्र धर कृपानिधाना ॥
देखि भक्तियुत कियो प्रणामा । पायो यवन परम बिश्रामा ॥
याबिधि मोक्ष ताहि दै श्रीपति । पावत मुनिबर कबहुँक जो गति ॥
पुनि निज नगरनिवासिन सौं हरि । कह्योसकल वृत्तांतकृपाकरि ॥

दो० अचरज करि आये सकल कवरू तन ढिग धाय ।
प्रमुदित ह्वै कीन्हो सबन संसकार मन लाय ॥
सो० अब लौं वह अस्थान, मुख्य सिन्धु तट देखिये ।
मानौ करत बखान कवरू कीरति बिशदबर ॥

सुतवृत्तांत सुनत दिल्लीपति । करत भयो दुख सुख अचरजअति ॥
नारायणपुर यतिकुलभूषण । राजत संत कमलबनपूषण ॥
सम्पति सुतहि लेन जिहि काला । इन्द्रप्रस्थ गवने यतिपाला ॥
बरणबाह्य बहु जन निज साथा । गये लिवाय तहां यतिनाथा ॥
तिनकी भक्ति ग्रहण प्रभु कीन्ही । जगमधि बिपुल बड़ाई दीन्ही ॥
बर्ष अंत जब होत महोत्सव । आवत नारायणपुर ते सब ॥

करि मज्जन कल्याण सरोवर। ऊर्द्धपुंड्र करि भाल मनोहर ॥
बासर तीनि चरणचौकी लौं। जाय सकल देखत श्रीपी कौं ॥
यति आयसु तें निधरक फिरहीं। श्रीश बिवान प्रदक्षिण करहीं ॥
तंदुल तेल भेट अर्पण करि। बाहिर जात चरणरज शिर धरि ॥

दो० तब अर्चक हरि को करत प्रोक्षणादि श्रुतिनीति।
शेषोत्सव पुनि करत सब बिधि समेत करि प्रीति ॥

सो० अबलगि वह मर्याद दिव्याज्ञा यतिराज की।
प्रति सम्बत अबिबाद बर्त्तमान तहँ देखिये ॥

निजमठ तहँ निर्माय बिशाला। रहतभये सुखसौं यतिपाला ॥
पुण्यपुंज यहगिरिवरसुखनिधि। कहियत ताके नाम चारिबिधि ॥
श्रीनारायणाद्रि इक नामा। दूजो वेदशैल सुखधामा ॥
यादवाद्रि संतन सुखदानी। पुनि यतिशेष कहत सब प्रानी ॥
सज्जनसुखद हेतु तिहि जानी। लख्योग्रंथ तिमि कहौं बखानी ॥
कृतयुग सनतकुमार सुहाये। दिव्य बिमान बैठि तहँ आये ॥
नारायण की करी प्रतिष्ठा। पूजन कर्‍यो अलौकिक निष्ठा ॥
तबतें नारायणगिरि गायो। त्रेता दत्तात्रय तहँ आयो ॥
वेद पुरुष तिन शिष्य किये तहँ। तपे वेद पुष्करणिबिमल जहँ ॥
ताते वेदशैल कहवायो। द्वापर तहँ यदुपति मन लायो ॥

दो० पूजन कीन्हो आय हरि तब ते सब संसार।
यादवाद्रि तासौं कहत जब यतीश अवतार ॥

सो० भयो भूमि कलिकाल तिनहूँ मन बच कर्म करि।
पूजन कियो बिशाल पर्‍यो नाम यतिशेष तब ॥

शिष्यनयुत यतिपति भगवाना। राजत तहँ सुख सुयश निधाना ॥
नारायणमुनि सदृश सुहाये। इक दिन प्रभु सब शिष्य बुलाये ॥
बोले बचन कृपामृत बोरी। यादवाद्रि महिमा नहि थोरी ॥
नारायणपुर बसिहैं जो जन। पैहैं सकल अभीष्ट प्रयोजन ॥
यह यादवगिरिपति शुभकीरति। कहतसुनत पैहैं नरशुभगति ॥
याविधि जगबिजयी यतिराजा। जीति सकल संकेत समाजा ॥

कीन्ही सुदृढ़ स्वमततरु मूला। हरी दुसह श्रुति उरकी शूला॥
लोकजनन हरिचरण सरोजन। भक्ति बढ़ावत रहित प्रयोजन॥
श्रीश महोत्सव करत यथारथ। उपदेशत शिष्यन परमारथ॥
रंगेश्वर परिपूर्ण कृपा तें। भयो महत्व तहां अब तातें॥

दो० अधिक भयो प्रतिदिन यद्यपि सपनेहुँ नहिं अभिलाष।
सकल दिशन पूजित भये अतुलित तेज प्रकाश॥

सो० सब दुख गयो नशाय भयो जो रंगी बिरह ते।
संपतिसुत मणि पाय परम तोष पायो मनहि॥

नित आपत्ति न लहत महाजन। जैसे जग दुर्जन दुखभाजन॥
सम्पतिसुत लावण्य अपारा। निरखि निमज्जत सुखसरि धारा॥
भूले रंगेशहि वेदाचल। सम्पतिसुत मधि भौ प्रेमाचल॥
नहि अचरज लोकहु यह रीती। पति तें पुत्रलाभ अति प्रीती॥
रामानुज बियोग दुख भारा। कृमिकंधर उत्पात अपारा॥
सहि नहि सके रंगपुर बासी। भये आय वेदाद्रि निवासी॥
आये सकल सहित परिवारा। लह्यो यहां आनंद अपारा॥
भयो रंगपुर बिपिन समाना। नारायणपुर नगर प्रमाना॥
उत्सव सकल निवृत्त भये तहँ। बढ़त महोत्सव वेदाचल महँ॥
यह यतिभूप निवास प्रभावा। रंगराज लखि मन दुख पावा॥

दो० यतिपति रहित नगर निज देख्यो बन की भाँति।
उत्सवगत आनँद रहित हीन तेज श्री काँति॥

सो० तब मन कियो बिचार यह तौ कछु नीकी नहीं।
रामानुज सुखसार आनौं अब कृमिकण्ठ हनि॥

इतिश्रीप्र० दिल्लीशकन्यासह सम्पतिपुत्रस्य प्रतिष्ठाकरणन्नाम अष्टचत्वारिंशोध्यायः॥ ४८॥

रंगनगर तें कोइ इक बैष्णव। रामानुज समीप आये तब॥
तिनसौं यतिपति पूछन लागे। आर्य शिष्य चिंतारस पागे॥
गये चोलनृप सन्मुख दोऊ। तिनकी दशा कहत नहि कोऊ॥
यह सुनि के बैष्णव करजोरी। कहत सुनौ प्रभु यतिकुलधोरी॥

कहि न जात वृत्तांत कठोरा । तद्यपि प्रभु आयसु बरजोरा ॥
जबहि रंगपुर ते दोउ काहीं । गये लिवाय दूत नृप पाहीं ॥
कह खल लिखौ पत्र पर दोऊ । शिव तें परे और नहि कोऊ ॥
कह कूरेश बचन नृप पासा । श्रुतिस्मृतिहु पुराण इतिहासा ॥
सो सब पुनि पुनि करि हम हेरे । श्रीश परत्व कहत सब टेरे ॥
जगकारण रक्षक संहर्त्ता । श्रीनायकहि मोक्ष के कर्त्ता ॥

दो० उनके वशवर्त्ती सदा सूर्य्यादिक ग्रहसर्व ।
इन्द्रादिक दिक्पाल सव तुम्बुरादि गंधर्व ॥
सो० विधि शिवादि सुर यूथ पुत्र पौत्र उनके बहुरि ।
चर अरु अचर बरूथ दासभूत निश्चय सकल ॥

काहू चरणसरोज पसारा । इक धोयो सभक्ति जल धारा ॥
एक सो जललै माथे राषा । अजहु न तजत प्रेम अभिलाषा ॥
चोलराज मन लेउ विचारी । कौन बड़ो इन तीनि मझारी ॥
सुनत खलहि उत्तर नहि आयो । कूरनाथ पुनि वचन सुनायो ॥
बावन पद जल अमित प्रभावा । जोशिरधरि शिवपद शिवपावा ॥
नतरु कपालि अशिव जग जानत । रहेप्रथमसो पुराणबखानत ॥
यह सुनि नृपति जरो सबगाता । कह्यो कि वृथा बकत बहुबाता ॥
लिखौ बेगि जो प्रथम कहा हम । बारबार इमि कह्यो नृपाधम ॥
जब याबिधि बहुआग्रह कीन्हो । द्रोणबड़ो ताते लिखि दीन्हो ॥
हास्य बचनलखि कोप्यो नीचा । मानौ बरत अनल घृतसींचा ॥

दो० दूतन सों कह दुहुन के काढ़ि लेउ दोउ नयन ।
करत भये ते तैसिहीं जाबिधि कह खल बयन ॥
सो० नेत्रोत्पाटन पीर गुरु कृपाल प्रभु के जरठ ।
रखि नहि सके शरीर तहँ ते चलि मग तन तज्यो ॥

मारग माहिं तजत तन जाना । कूरेश्वर तब बचन बखाना ॥
आपति दशा प्राप्त भई भारी । चलैं शीघ्र श्रीरङ्ग मझारी ॥
कह पूर्णार्य काज कछु नाहीं । जायँ जु शीघ्र रंगपुर माहीं ॥
करिहैं बैष्णव शंकित मोही । क्षेत्रत्यागतन बुधि रह ओही ॥

राखि शीश कूरेश्वर अंका । नारि गोद धरि पग तजि शंका ॥
करत भये यामुन पद ध्याना । कीन्हो परमधाम प्रस्थाना ॥
पंचाधिक शताब्दि के माहीं । गये नित्य हरि सेवा माहीं ॥
कोई बैष्णव कूरेशहि आई । रंगधाम तब गये लिवाई ॥
शोचत कूरनाथ या भांती । गवने पूर्ण सूरिगण पांती ॥
मोहिं अजहुं रंगेश उदारा । दियो न परमधाम सुखसारा ॥

दो० याबिधि बर्त्तमान तहँ कूरेश्वर मतिधीर ।
सुनि बृत्तान्त बिषादमय भये प्रभु शोक अधीर ॥
सो० देशिक बिरह बिषाद नयनहीनता शिष्य की ।
भये बिगत अहलाद समुझायो तब बुधजनन ॥

गुरु श्रीपूर्ण परिपालनबिधि । परमभक्ति युत करी कृपानिधि ॥
चारिसहस प्रबंध अति अद्भुत । अरु चहुं वेद पाठ अंगन युत ॥
भाष्य बिष्णुपुराण रामायण । हरिमंदिर कराय पारायण ॥
षटरस संयुत असन सुहाये । गुरुदेश बैष्णवनि जिमाये ॥
बस्त्रादिक दै पूजि सप्रीती । शोधि शास्त्रमत वैदिक रीती ॥
पुनि कूरेश शोचरस पागे । किये नयन बिनु नृपति अभागे ॥
पठये बैष्णव तिनके पासा । तेहि दिशतें देउ दिलासा ॥
कहिमम कुशल तिनहिं समुझावौ । तजहिं न तन सो यत्न उपावौ ॥
तुम जग तात धर्मधुर पंडित । हरि परत्व मठ शेष अखंडित ॥
जे जन्मे जग धर्मनिधाना । पाये तिन सबहुन दुख नाना ॥

दो० होत अवशि परिणाम सुख जो तुम सन दढ़ होय ।
अन्त अमृत सम आदि दुख सात्विक सुख है सोय ॥
सो० इमि बहुबिधि समुझाय पठवत भये बैष्णवन तहाँ ।
आपु रहे मन लाय सम्पतिसुत सेवा बिमल ॥

इतिश्रीप्र० कूरनाथकृमिकण्ठबृत्तान्तकथनन्नाम
एकोनपंचाशोध्यायः ॥ ४९ ॥

पुनि बोले बैष्णव शिर नाई । कूरेश्वर की कथा सुहाई ॥
गये रंगेश द्वार जेहि काला । जहं चोलपति दूत कराला ॥

रोक्यो तिनहिं कह्यो तब काहू । ये कूरेश कहो तिन जाहू ॥
पूँछो कूरनाथ सो कारण । काहे कौं मोहि करत निवारण ॥
बोले द्वारपाल करि क्रोधा । नृप सौं यतिपति कियो बिरोधा ॥
तातें कहूं गये छिप के भजि । रंगस्थल अरु निज मठकौं तजि॥
अर्चक यहां रहन तब पाये । जब रामानुज बिमुख कहाये ॥
अबयहंजिहि यतिपति सम्बन्धा । नहिप्रविशै नृप कियो प्रबन्धा॥
तद्यपि तुम सज्जन द्विजराजा । जाउ रंगपति सेवा काजा ॥
सुनि सविषाद कहा कूरेशा । हम अवश्य यतिपति के शेशा ॥

दो० जो यतीश सम्बन्ध ते मिलै न रंगी सेव ।
तौ न मिलौ कछु हानि नाहि मोहि सर्वसु गुरुदेव ॥
सो० पुनि पुनि यही सुनाय कुटुम सहित तहँ ते चले ।
सुन्दरगिरि कौ जाय सुन्दर भुज चरणनि नये ॥

बसे तहां सुत युत सहनारी । रचे चारि अस्तव सुखकारी ॥
सुंदर भुज अस्तव अभिरामा । श्रीस्तव अरु अतिमानुष नामा॥
श्रीबैकुण्ठस्तोत्र अनूपा । जो सुनि बिवश होत सुरभूपा ॥
प्रेमाकुल तिहि अस्तव माहीं । याचतभये सुंदरभुज पाहीं ॥
रंगधाम रामानुज गुरुबस । रहैं प्रथम सम मग्न दास्यरस ॥
बिनवत सुंदरभुज दिनराती । निवसत भये तहां यह भांती ॥
तिहिअवसर गोष्ठीपूरण गुर । पांचअधिकशताब्द बसि निजपुर॥
गुरु भागवत श्रीशपद प्रीती । बय बिताय अति पावन रीती ॥
श्रीनायकपुर गवन बिचारा । शिष्यन तब कर जोरि उचारा ॥
आर्य कहा तुम श्रेष्ठ गुनत मन । दीजै सो हमकौं संचितधन ॥

दो० कह गुरु सार्बभौमसुत उर मधि अण्डज कोइ ।
बृण उत्पन्न करत भयो तात सुमिरि उर सोइ ॥
सो० निर्भर हम सब भांति यद्यपि प्रीतिहु होउ नहि ।
लही सबन अति शांति सुनि देशिक ब्यवसाय दृढ़ ॥

यह कहि गुरुपदकमल सुहाये । सुमिरत श्रीपति सदन सिधाये॥
भये सुत शिष्य बिरह दुख दीना । उत्तर कृत्य यथाश्रुति कीना॥

रामानुज प्रेरित श्रीबैष्णव । रंगधाम आतुर पहुंचे तब ॥
तहंते सुंदरगिरि लहि शोधा । जाय लखे कूरेश सुबोधा ॥
बारबार करि दण्डप्रणामा । कही यतीश कुशल अभिरामा ॥
आदि अंत वृत्तांत पुनीता । सुनि कूरेश सकल दुख बीता ॥
कही बहोरि यतीश्वर बानी । करुणा बिरह ज्ञानरस सानी ॥
महापूर्ण बियोग मय दाहा । दारुण दुख पायो यतिनाहा ॥
बहुरौं सुनि तुव लोचनहानी । भये बिकल जन आनददानी ॥
सुनि बोले कूरेश्वर ज्ञानी । पूजि तिनहिं यतिपति सम मानी ॥

दो० लक्ष्मणगुरु जो कुशलयुत हैं सोइ सर्वसु मोहि ।
नहि यह सम जग लाभ कछु देउँ कहा प्रभु तोहि ॥
सो० फूले तन न समात सुनि लक्ष्मण गुरु की कुशल ।
बैष्णव लाये गात वारवार पूजन कियो ॥

इतिश्रीप्र० कूरेशस्यसुंदराचल नित्यनिवासोनाम पंचाशोध्यायः

हरिदूषक चोलेश्वर पापी । वेद धर्म्म हरिजन परितापी ॥
पूर्ण कूरपति नयन कढ़ाई । बिष्णुथलन पर करी चढ़ाई ॥
रंगधाम बिनु जो तिहि देशा । किये ध्वंस हरिधाम अशेशा ॥
बहुरौं रंगस्थल की ओरा । चलो ठानि मन सोई अघ घोरा ॥
सेना सहित बस्यो मग राती । देह धरे जनु धर्म्म अराती ॥
उठी उदर मधि दारुण पीरा । कंठ भयो वृण उपजे कीरा ॥
मरो बेगि खलकलिमल रूपा । चले शिष्य सुनि जहं यतिभूपा ॥
करि प्रणाम प्रिय खबरि सुनाई । मरो दुष्ट हरिजन दुखदाई ॥
सुनि वृत्तांत परमप्रिय कानन । आनद मग्न भये सहसानन ॥
नहि यह सम तिहुंलोक लखाई । तुमकौं देउं कहा सुनु भाई ॥

दो० उठि आतुर अति प्रेम युत भेटे हृदय लगाय ।
बहत दृगन आनँद सलिल उर पुर मै न समाय ॥
सो० तिहुँ पुर राजसमाज रजित कनक मणिगण सकल ।
देत लगति अति लाज लघु लखि यह प्रिय बचन तें ॥

रावणबध सुनि जाबिधि सीता । कहत भये तिमि बचन बिनीता ॥

मंत्ररत्न तब तिनकौं दीन्हो । सकल प्रकार कृतारथ कीन्हो ॥
कहत आजु कल्याण सरोवर । भयो सत्य जस नाम परो बर॥
गये नृसिंह समीप बहोरी । बंदि चरण बोले कर जोरी ॥
जाबिधिनाथ प्रथम जनद्रोही । कियोनिधनखलदितिसुत कोही॥
तैसेहिं हति यह हरिजनकंटक । कियो चोल मंडलहि अकंटक ॥
थाप्यो धर्म राखि जन दीना । दिव्य देश प्रभु पावन कीना ॥
सुनि नरकेहरि अति सुखपायो । तिनहिं तीर्थ शठकोप दिवायो॥
पंचमाल लहि आयसु पाई । नारायण सन्मुख तब आई ॥
वैसेहिं बिनय करी शिर नाई । सम्पतिसुतहू सौं हरषाई ॥

दो० आयसु मांगी दुहुन सौं यतिकुल के शिरमौर ।
चलिबे कौं उद्यत भये रंगधाम की ओर ॥

सो० सादर लिये बुलाय तहँके बैष्णव बृंद सब ।
कहो तिनहि समुझाय मृदुल बचन अति प्रीतियुत ॥

हमकौं त्याग किये रंगस्थल । बीते वर्ष द्विषट वेदाचल ॥
भयो देश वह रहित उपद्रव । रंगी सेवा हित जैहैं अब ॥
तुम सबसावधान रहि या थल । करौ श्रीश कैंकर्य रहित छल॥
सम्पतिसुत अरु यादवगिरिपति । उत्सव सब नितकरौ मानिरति॥
रहौ यहां मम आयसु मानी । सुख समेत तजि हानि गलानी॥
वैष्णव सुनत बचन यतिपतिके । शूचक देशिक विरह विपतिके॥
सहि नहिं सकेभरे जल नयना । कहत वंदि पद गदगद बयना ॥
जीवन प्रभु पदपंकज हीना । रखि न सकतजिमि जल बिनुमीना॥
लोकानुग्रह के हित नाथा । जाउ जहां तहं राखौ साथा ॥
लखि यतीश तिनकी गतिदीना । सत्यजानि विचार मन कीना॥

दो० ये सब मम सेवा विषय प्रेम युक्त छल हीन ।
इनके सेवन भजन हित बिग्रह रचौं नवीन ॥

सो० शिल्पी निपुण बुलाय तिनसौं प्रभु आज्ञा करी ।
मूरति रची बनाय तिन तुरतहि प्रतिबिंब सम ॥

तामधि प्रभु निज शक्ति बिशाला । आवाहन कीनी तिहि काला॥

आदर युत परिरंभन दीना । पुनि बिधिज्ञ जे बिप्र प्रबीना ॥
तिनके संग प्रतिष्ठा कीनी । शिष्य बोलि तब आयसु दीनी ॥
तुम्हरे हित बिग्रह निर्मायो । परिपूरण निज तेज बसायो ॥
जानि हमहिं पूजौ करि प्रीती । मम अर्चा नित बैदिक रीती ॥
रहौ परस्पर करि सुहृदाई । हम तुमते कछु दूरि न भाई ॥
याबिधि करि शिष्यन कौं शीक्षा । दै अर्चा पूजन की दीक्षा ॥
सो लहि तिन अतिशय सुख पावा । मिटा बिरह दुख दारुण दावा ॥
रंगधाम कौ चले यतिन्दा । दण्डक ते जिमि रघुकुलचन्दा ॥
सम्पतिसुत बियोग दुख भारी । रंगी दरश आस सुखकारी ॥

दो० पुनि पुनि दंड प्रणाम करि आयसु लै तिहि काल ।
पहुँचे श्रीरंगेशपुर आनद हृदय बिशाल ॥

सो० यतिशेखर कौं देखि शिष्य बृंद अरु नगरजन ।
मुदित भाग बड़ लेखि प्रेममग्न बंदन करत ॥

छन्द हरिगीतिका ॥

दाशरथि कर गहि छत्र गोविंद चवँर प्रभु शिर ढोरहीं ।
बाजे बिबिधि बाजे सकल जन जयति कहि किलकोरहीं ॥
श्रुतिपाठ चहुँ दिश करत बिप्र अपार बैभव युत तबै ।
ल्याये प्रभुहि श्रीरंगधामहि सुहृद जन हरषित सबै ॥

रंगी पद लखि प्रभु हरषाये । जैसे रंक महानिधि पाये ॥
करत प्रणाम चरण अनुरागे । ठाढ़े भये जोरि कर आगे ॥
कहत भये तब रंगबिहारी । दिय कृमिकण्ठ तुमहिं दुख भारी ॥
तातें मोहि तजि शिष्यन साथा । बसे जाय श्रुतिगिरि यतिनाथा ॥
कह यतितिलक मधुर मृदुबानी । बिनय बिबेक भक्तिरस सानी ॥
तुमहिं अछत प्रणतारतिभंजन । दासन कौं कह दुख जनरंजन ॥
तब हरि दियो सहित अहलादा । श्रीशठकोपरु तीर्थ प्रसादा ॥
मठ प्रवेश हित आज्ञा दीनी । यतिकुलतिलक दंडवत कीनी ॥
रंगक्षेत्र तब सकल निहारो । पुनि कूरेश्वर ग्रह पगु धारो ॥
सुनि कूरेश्वर उठि सहसाईं । चरणन परे लकुट की नाईं ॥

दो० भुज गहि लीने लाय उर बहत प्रेमजल नयन ।
मग्न भये दुखसिंधु प्रभु बोले गद्गद् बयन ॥
सो० दयाधाम तुम तात किमि यह दारुण दुखलह्यो ।
पुनि पुनि करि प्रणिपात कहत भये कूरेश तब ॥

ऊर्द्धपुंड्र श्रीबैष्णव केरो । बारक हँस देखि हम टेढ़ो ॥
कीन्हो यह बैष्णव अपराधा । तातें भई नयनन की बाधा ॥
कह यतिनाथ हमारे पापा । तुम कौं तात भयो परितापा ॥
तुम तौ सर्ब सुहृद जग माहीं । दुस्कृत लेश तुम्हारे नाहीं ॥
ऐसे प्रभु बहु बिधि पछिताये । कूरेश्वर युत निज मठ आये ॥
लोगन समाचार सुनि पाये । रंगधाम रामानुज आये ॥
देश नगर बासी बहु लोगा । चले दरस हित दुखित बियोगा ॥
आय यतीश्वर चरण निहारे । करि प्रणिपात मुदित भये भारे ॥
जोरि जोरि कर करत प्रबोधा । तुम जगगुरु परिपूरणबोधा ॥
महापूर्णगुरु गये हरिलोका । अरु कूरेश दृगन को शोका ॥

दो० त्याग करौ बिज्ञाननिधि जानि कालगति मंद ।
हम तौ यह मानत बहुत तुम आये सानंद ॥
सो० यतिपति दीनदयाल यथायोग्य तिन सवन पर ।
कीन्ही कृपा बिशाल दान मान पूजन बचन ॥

तिहि अवसर बैष्णव इक आई । जगगुरु सौं इमि बिनय सुनाई ॥
प्रभु पाछे चोलेश्वर पापी । हरिदूषक बैष्णव संतापी ॥
चित्रकूट थल कियो बिनाशा । हरिजन यूथ दिखाये त्राशा ॥
बारिध फेकन चह गोबिंदा । उत्सव मूरति युत मतिमंदा ॥
तब हरि अर्चक प्रेरि सुहाये । उत्सवमूर्त्ति शेषगिरि ल्याये ॥
पुनि खल अचलमूर्त्ति उखराई । लवणसिंधु मधि डारन चाही ॥
तिल्या नाम नारि बर कोई । माया बिबश कियो शठ सोई ॥
लैगई सोउ मूरति शेषाचल । रंगधाम तब चलो नृपति खल ॥
तहँ मग मध्य कुमति फल पायो । यमपुर गयो दुसहदुख छायो ॥
सुनि गोविंद वृत्तांत सुजाना । शिष्यन युत प्रभु कियो पयाना ॥

दो० तब व्येंकटगिरि जाय के हर्षि प्रतिष्ठा कीन्ह ।
तिल्य सहित गोबिंद बर नाम गोबिंदहि दीन्ह ॥
सो० पुनि व्येंकटगिरिनाथ निकट जाय साष्टांग करि ।
आवत भये यतिनाथ सत्यव्रत है रंगथल ॥

इतिश्रीप्र० तिल्यगोबिन्दराज प्रतिष्ठापनन्नाम एकपंचाशोध्यायः

इक दिन करुणासिंधु यतीश्वर । बोले बचन बोलि कूरेश्वर ॥
अर्थिन अर्थ देन के काजा । दीक्षा लई हस्तिगिरिराजा ॥
तिनकी अस्तुति कीजै ताता । दीहैं नयन प्रणातसुखदाता ॥
कह कूरेश जोरि कर बयना । ह्वैहै कहा नाथ लहि नयना ॥
पुनिपुनि गुरु आग्रह करि कहेऊ । अस्तव हित तब उद्यम ठयेऊ ॥
जय जय जय बारणागिरिभूषण । करौ कृपा जनपंकजपूषण ॥
जिनकौ बिषम भाव ते न्यारे । कहत सदा उपनिषद पुकारे ॥
नील जलद तन सुंदर स्यामा । अंजन सदृश केश अभिरामा ॥
तरुणअरुण बरबारिज नयना । कर पद कमल अमल छबिअयना ॥
सो मोहिं दिखरावौ अघमोचन । संतत दै अप्राकृत लोचन ॥

दो० ह्वै प्रसन्न बरदेश तब कह्यो स्वप्न के माहिं ।
दिव्य चक्षु दीहैं तुमहि यामे संशय नाहिं ॥
सो० भोर भये कूरेश करि समाप्त अस्तोत्र बर ।
गुरु सौं कह्यो अशेश दियो जो बर सोवत बरद ॥

पुनि वह अस्तव बिशद सुनायो । जो बरदेश्वर हित निरमायो ॥
सुनि लक्ष्मणगुरु मुदित भये अति । कह्यो जोरि कर बहुरि कूरपति ॥
मैं याबिधि मागो बरदाना । देन कह्यो सोइ कृपानिधाना ॥
नित्यलोक जिन सौं नितसूरी । करत दरश नित प्रभु छबि रूरी ॥
सोई दिब्य चक्षु मोहि स्वामी । देउ कृपा करि परपुरधामी ॥
सुनि मन मुदित कहत यतिनाथा । कांचीअबहिं चलौ मम साथा ॥
यह कहि तिनहिं समेत तुरंता । गये सत्यव्रत माहिं अनंता ॥
तहँ बरदेश चरण धरि सीसा । कूराधिप कौ प्रेरि यतीशा ॥
अस्तव बिज्ञापन करवायो । मुदित बरद तब बचन सुनायो ॥

मागौ तात जो कछु मन होई । परम प्रसन्न जानि मन मोही ॥

दो० मांग्यो तब कूराधिपति मुदित धरणि धरि माथ ।
चतुर्ग्रामपति जाय तहँ जहँ मै तन तजि नाथ ॥

सो० कह तथास्तु तब श्रीश यह चरित्र लखि जगतगुरु ।
करि नीचे कौ शीश कहत भये बरदेश प्रति ॥

देव देव कंजारुण लोचन । सर्व्वज्ञान प्रणतारतिमोचन ॥
कूरेशहि याबिधि बरदाना । काविधि दीनो कृपानिधाना ॥
पुनि कूरेशहि खीजन लागे । तजि मम आयसु नयन न मागे ॥
सहसहिं मांगिलियो कछु आना । अब कि मिलै अभीष्ट बरदाना ॥
याबिधि दुखित होत पछिताहीं । संभ्रम कछु बनि आवत नाहीं ॥
है प्रसन्न बरदेश कृपाला । यतिपति सौं बोले तिहि काला ॥
काहें कौं चिंता मन लावत । दीनो हम तुम्हरो मन भावत ॥
इतनी कहत भये तत्काला । दिव्यदृष्टि मय नयन बिशाला ॥
शोभासिंधु पीतपट धारे । सन्मुख श्रीवरदेश निहारे ॥
पुनि यतिसार्वभौम गुरु देखे । मूरतिवन्त भाग निज लेखे ॥

दो० भाल तिलक अंशन लसत शंख सुदरशन अङ्क ।
राकाशशि जनु भूमितल उतरचो खोय कलङ्क ॥

सो० शोभित पटकाशाय कर त्रदंड पङ्कज नयन ।
यज्ञसूत्र सुखदाय देखि परम आनद लह्यो ॥

छन्द त्रोटक ॥

लखि चक्षु अनूप रमेश दिये । उमग्यो सुख सिंधु यतीश हिये ॥
करि बारहिबार प्रणाम मुदा । कहि श्रीश कृपा महिमा बहुधा ॥
यमि पाय अभीष्ट रजायसु लय । यतिनायक दायक लोक उभय ॥
कूराधिप संग चले तहँ ते । पहुँचे पुनि आय गये जहँ ते ॥
तहँ रंगमहीपति भेट लही । प्रणिपात कियो धरि माथ मही ॥

इतिश्रीप्र० कूरेश नेत्रलाभन्नाम द्विपंचाशोध्यायः ॥ ५२ ॥

गोदा पूर्व कियो अस्तव बर । इकसौचालिस गाथ मनोहर ।
तामधि इक गाथा के माहीं । बिनय करी सुन्दरभुज पाहीं ॥
हे करुणाकर सुन्दर बाहू । जो प्रभु होउ हमारे नाहू ॥

तौ शत घट गुड़ान्न प्रभु भेटा । करिहौं घृत क्षीरादि समेता ॥
शतघट बहुरि सद्य नवनीता । अर्पण करिहौं तुमहिं पुनीता ॥
याबिधि लिखित देखि यतिराजा । गोदाभीष्ट देन के काजा ॥
ह्वै न सक्यो तिनसौं निज भाषा । गये बनाद्रि जानि अभिलाषा॥
जो उन देन कह्यो सो दीनो । नवनीतादि समर्पण कीनो ॥
धन्वानाथपुरहि पुनि जाई । देखे हरि बट पल्लवशाई ॥
बिष्णुचित्त तनया पुनि देषी । कियो प्रणाम भाग बड़ लेखी ॥

दो० गोदा सन्मुख यतितिलक शिष्यन युत कर जोरि ।
ठाढ़े भये सप्रेम मन पुनि पुनि चरण निहोरि ॥
सो० गोदाम्बा हरषाय निज अभीष्टदायक निरखि ।
धरो नाम मन लाय गोदाग्रज अति प्रेम युत ॥

तीर्थ प्रसाद पाय हरषाने । गोदा तोषित देखि अघाने ॥
कुरिकानगर चले गुणधामा । मिल्यो पंथ चिंचाकुटि ग्रामा ॥
वीथी खेलत लखि इक कन्या । बय दशाब्द वैष्णवकुल धन्या ॥
तासौं यतिपति पूँछन लागे । शठजित दरश तुरा रस पागे ॥
पुत्रि यहां ते केतिक दूरी । श्रीशठारिनगरी अति रूरी ॥
कह बालिका जगनगुरु पाहीं । गीतीसहस पढ़ी तुम नाहीं ॥
बोले प्रभु अचरज करि तासौं । यह किमि बिदित होतिहै यासौं॥
शठजित ग्रंथ माहिं कह बाला । यह अस्पष्ट लिखो यतिपाला॥
चिंचा तें इक कोश लबाई । कुरिकापुरि पढ़ि गाथ सुनाई ॥
सुनि आनँद अचरज प्रभु मानी । परदेवता सदृश सो जानी ॥

दो० कृपा निकश पूँछो सदन सो गृह गई लिवाय ।
जननि जनक प्रति यति कथा तिन सब कही सुनाय ॥
सो० ते धाये तजि पाक मिले यतीश्वर सों हरषि ।
पूजे तन मन वाक शिष्यन युत अति प्रेम करि ॥

लखि सुभक्ति यतिनाथ अघाने । तिन पुनि बहु प्रकार सनमाने॥
पावन अन्न पाक करि बिधि सौं । कियो निवेदन करुणानिधि कौं॥
बरदायकहि अर्पि यतिराजा । भोजन कीन्हो सहित समाजा॥

पात्र जानि दंपति अरु बाला । बहुरि तासु भ्राता यतिपाला ॥
कियो विशेष अर्थ उपदेशा । कुरिकानगर गये तब शेशा ॥
आदिनाथ शठजित मूरति बर । देखि प्रणाम कियो करुणाकर ॥
लहि प्रसाद अरु तीर्थ अघाने । चिर तिंतृणी देखि हरषाने ॥
दरसन करि पुनि मज्जन उत्सव । अद्वितीय अतिमानुष वैभव ॥
मुदित चकित यतिपति भये भारी । कह वैष्णवन समूह मझारी ॥
शठाराति उपकार अपारा । ताते होय कि मम उद्धारा ॥

दो० आदिशून्य निस्तुल्य जग श्रीसम्प्रदा उदार ।
गुप्त होत कलिकाल लखि कियो तासु उद्धार ॥
सो० द्राविड़ रूप प्रकाश सुरदुर्लभ वेदार्थ बर ।
कीन्हो कलिमल नाश जगत सबहि अधिकार दै ॥

बहुबिधि कियो लोक उपकारा । कृपा भार मम सीस अपारा ॥
कह निष्कृया करौं अब ताकी । है न सकति समता कछु वाकी ॥
होतो पुत्र जो हमरे कोई । होते उऋण नाम रखि सोई ॥
सो हमको अलभ्य जग आही । हैं हम थित तुरियाश्रम माही ॥
तब श्रीशैलपूर्णसुत ज्ञानी । यतिपति भक्त कर्म मन बानी ॥
करि प्रणाम बोले कर जोरी । बहुबिधि प्रभु पदपद्म निहोरी ॥
मोकौ नाथ पुत्र करि मानौ । छल बिहीन सेवक निज जानौ ॥
पूर्ण मनोरथ कीजै अपना । मन ते छांड़ि बिषाद कल्पना ॥
भये सुनि मुदित यतीश कृपाला । मानि तिन्है निज सुत तिहि काला ॥
धरो नाम कुरिकेश तुरंता । भाये शठजित मनहि अनंता ॥

दो० परम भक्ति लखि मुदित है निज पद दीनो धाम ।
तब तें शठजितपाद यह भयो यतीश्वर नाम ॥
सो० जिमि शठारि हरिपाद नाम बखानत सकल जग ।
ताही विधि अविबाद शठजित पद यतिपति भये ॥

यतिनायक पदकमल समाना । भये प्रसिद्ध दाशरथि सुजाना ॥
श्रीपति सौं मांगिये शठकोपा । शठजित सौं यतिपति करि चोपा ॥
यतिचूड़ामणि सन्मुख जाई । मागिये दाशरथी शिर नाई ॥

यह रहस्य जानहिं जे प्रानी । ते मुमुक्षु श्रीबैष्णव ज्ञानी ॥
परम प्रसन्न भये यतिराई । पुनि लहि तीर्थ प्रसाद अघाई ॥
बकुलाभरण चरण तब बन्दे । आय रंगपति देखि अनन्दे ॥
निजमठ शिष्यनसहित बिराजे । बिशद अर्थ शिक्षासुखसाजे॥
एकब्रह्म देहातमबादी । कहत अनित्य जे जीव अनादी ॥
रहित ईश मीमांसक पापी । कापिल ब्रह्मनिमित्त अलापी ॥
माया रचित बिबिध सङ्केता । श्रीश बिमुख सब नर्कनिकेता ॥

दो० जीति सहज निज ज्ञान बल स्वबश किये प्रभु सर्ब ।
भवबूड़त रक्षा करी मेटि कुमति दुर्गर्ब ॥

सो० पाषंडी बुद्धादि श्रुतिदूषक चार्वाक खल ।
अगिनित मायाबादि भये शरण यतिराज की ॥

छन्द मोतीदाम ॥

यतिपति कृपा तजि भर्म । भये सकल बैदिक पर्म ॥
भुज धारि शंखरु चक्र । बिनु श्रम दल्यो भव नक्र ॥
धरि उर्द्धपुण्ड्रहि भाल । गर कमल तुलसी माल ॥
यतिराज दास कहाय । लहि मोक्ष पदवी धाय ॥

इतिश्रीप्र० गोदाभीष्टप्रदानन्नाम त्रिपंचाशोध्यायः ॥ ५३ ॥

सब सङ्केतन जीति अनंता । थप्यो स्वमत शशि रवि परियंता ॥
साधु जनन करि सम्मतनीको। सुरसरि सम अति हित सबहीको॥
सब जग धर्मनिरत प्रभु कीना । युग वेदांत ज्ञान रस लीना ॥
तत्व बोध पूर्बक हरि माया । जीति तरत भव जीव निकाया ॥
यह यतिनाथ प्रभाव अनंता । शङ्ख चक्र महिमा बलवंता ॥
नतरु कराल कालकलि माहीं । काहू बिधि संभव यह नाहीं ॥
बहुधा जगजन हरिपद पंकज । कियेभृंग शिर रखि निज पदरज ॥
गोबिंद कूरेशादि अनेका । भये व्युत्पन्न एक ते एका ॥
देश देश भई वृद्धि अपारा । कोऊ लहि न सकहि गणि पारा ॥
तिनमें नित्य निरत सेवा जे । भये नाम कहि कछु बरणौं ते ॥

दो० श्रीकूरेशभट्ट अरु श्रीबरदेश सुजान ।
भये सहाय यतीश के रमाभाष्य व्याख्यान ॥

सो० देवराज मुनिवर्य प्रभु अर्चा पूजन करत।
गुरु आयसु कैकर्य्य मानत मन न उपाय फल॥

प्रणतारतिहर आचारजबर। भ्राता सहित पाक सेवा पर॥
आंध्रिपूर्ण मज्जन की सेवा। करत मानि गुरु कौ परदेवा॥
श्रीवालार्य्य चलत लै साथा। गुरु पादुका कमंडल पाथा॥
हस्तदान कैंकर्य्य बिशदचित। धनुर्दास तामैं नित्य स्थित॥
आमंगी नित औटत क्षीरा। उत्कलार्य्य बैष्णव बर बीरा॥
भुक्तपात्र सो लेत निरंतर। उत्कलबरद सुहृद अभ्यंतर॥
पाकधाम ते व्यंजन अर्प्पत। यथायोग्य सब बस्तु समर्प्पत॥
श्रीकलङ्कदेशार्य्य सुजाना। जीतत परबादी बलवाना॥
चण्डशुद्ध बर मल्ल गुणाकर। रहत सदैव राजसेवा पर॥
मठ न्यूनता होय नहिं जाते। करत धनार्ज्जन गुरुसेवा ते॥

दो० तिनमैं आंध्रिपूर्ण तहाँ भये अति बुद्धिनिधान।
मानि उपाय उपेय दोउ गुरुचरणन सुज्ञान॥

सो० अष्टोत्तरशत नाम गुरु के आराधन करत।
नहीं तिनहि कछु काम गुरु पद तजि परदेव सौ॥

श्रीरामानुज पंकजनयना। यतिनायक करुणागुणअयना॥
कान्तिमतीनन्दन श्रीमन्ता। लीलामानुष बिग्रहवन्ता॥
शास्त्र अशेष तत्व के ज्ञाता। सर्बज्ञान सज्जन सुखदाता॥
कुलहारीत के तिलक उजागर। भूतपुरी परिपालन नागर॥
पावन अनघ भक्तसुरतरुवर। केशवार्य्य आनन्द दानकर॥
कांचिपूर्णसख प्रणतारतिहर। बिशदकीर्त्ति द्विजप्रेतशमनबर॥
यादवकृत अपार्थ तरु भारा। तासु नाशहित तीब्र कुठारा॥
शारदशोकशमन मुनिलक्ष्मण। जनअज्ञानबिनाशबिचक्षण॥
युग वेदांत तत्व के ज्ञानी। जयति अमोघ बरद जलदानी॥
तत्व पराभिप्राय सुजाना। यामुन करज मोक्ष बिद्वाना॥

दो० षड्वाक्यार्थ महोदधि बरद कृपा सौ पाय।
महापूर्णगुरु सौं लह्यो मंत्ररत्न सुखदाय॥

सो० हरिपद मधुकर भृत्य ब्रह्मज्ञानि त्रदण्डधर।
ब्रह्मध्यान पर नित्य रंगेश्वर कैंकर्य्य रत॥

गोष्ठीपूर्ण दत्त मनुराजा। तासु प्रकाशक जगहित काजा॥
युगबिभूतिनायक सुखसाने। बररंगानुकंपि जगजाने॥
द्रविड़वेदनिधि तत्वनिधाना। मालाधरगुरु तें सुज्ञाना॥
किय चौहत्तरि शिष्य समाश्रत। पंचाचार्य पदांबुजआश्रत॥
बिषमिश्रित तीरथ करि पाना। प्रकटायो प्रभाव बलवाना॥
प्रणातारतिहर भोजनग्राहक। भिक्षा एक ओर निर्बाहक॥
यज्ञसूत्र कूरेश्वर माने। दाशरथी त्रदण्ड अनुमाने॥
कूरेशादि शिष्य समुदाई। तिनकौ चरमअर्थ सुखदाई॥
वृषगिरीश रङ्गेश प्रभृति को। कियो प्रकाशित बैभव नीको॥
अर्चन निरत देव बरदायक। मूकहि मुक्ति पदारथ दायक॥

दो० यज्ञमूर्त्ति शोभाकरण धरणीधर मन्नाथ।
देशिक बरद सुभक्त के बिदित बिशद गुणगाथ॥

सो० यज्ञेशार्ति अशेश हरण अनंताभीष्टप्रद।
पूजितपद बिठलेश प्रपदन मय धर्मैक रत॥

श्रीगिरिपूर्ण कृपा तें पाये। रामायण के अर्थ सुहाये॥
गोबिंद के प्यारे लघु भ्राता। ब्याससूत्र तत्वार्थ के ज्ञाता॥
बोधायन मत के अनुसर्त्ता। श्रीभाष्यादि ग्रंथ के कर्त्ता॥
कलिनाशन अद्वैतमत घालक। मत बिशिष्ट अद्वैत के पालक॥
श्रीकुरंगनगरीपूरण हरि। तिनहि मंत्रदायक कौतुक करि॥
अखिल कुमत नाशक जग केरे। शेषी कृत श्रीपति सब चेरे॥
पुनि पुत्रीकृत शठआराती। शठजित ऋण मोचक भलिभांती॥
भाषादत्त तुरंगमआनन। प्रकटन सहज रूप सहसानन॥
बहुरौ भाष्यकार अतिशय यश। कृत पवित्र भूभाग कृपा बश॥
कूरमनाथ प्रकाशन हारे। नारायण प्रकटावन वारे॥

दो० श्रीबृषाद्रिनायक हरिहि शंख चक्र दातार।
व्येंकटेश के श्वशुरप्रिय देशिक बहुरि उदार॥

सो० करुणा मात्र प्रसन्न गोपी मुक्ति प्रदान कर ।
सतकृतित्व सम्पन्न बौद्ध तिमिर भास्कर प्रबल ॥

दो० समीचीनगुरुशिष्यसत नाश करण कृमिग्रीव ।
हरिबर्धननृपपालक मंत्रसिन्धु निःसीव ॥
भक्तग्रामपूर्ण गुरु वैष्णवप्रिय सबकाल ।
शालिग्राम प्रतिष्ठक अर्चित दिल्लीपाल ॥
आंध्रिपूर्ण अंगीकरण नगरीकृत श्रुतिशैल ।
संपत्पुत्र प्रमोचक धृत काशाय सुचैल ॥
साधु लोक चूणामणी पूर्णमनोरथ सर्व ।
संपतिसुत के जनक प्रिय दलन कुदृगण गर्व ॥
गोविंदराज प्रतिष्ठक संशय सकल विनाशि ।
गोदाग्रज दिग्विजयकर सब आनँद के राशि ॥
दायक गोदाभीष्ट के करि हरिभोग समाज ।
महतवर्त्म अव्याहत जगतगुरू यतिराज ॥
यह अस्तव यतिराज को युक्त अष्टशत नाम ।
पढ़ै सुनै जो भक्ति सौं पावै सब मन काम ॥
जगहितकौ निर्मित कियो आंध्रिपूर्ण विद्वान ।
ताहि प्राण सम जासु मन रामानुज भगवान ॥

इतिश्रीप्र० अष्टोत्तरशतनामवर्णनन्नाम चतुःपंचाशोध्यायः ५४

याबिधि आंध्रिपूर्ण गुरु सेवा । करत सदैव मानि परदेवा ॥
यात्रा हित कहुँ गुरुबर संगा ! चलत भये मन प्रेम अभंगा ॥
गुरुपादुका संग गुरु अर्चा । लै कै चले तबहि गुरु चर्चा ॥
करत कहा यह अनरथ ताता । आंध्रिपूर्ण कह करि प्रणिपाता ॥
नाथदेव तें कह मम देवा । हैं कछु न्यून करौं घटि सेवा ॥
भये मुदित गुरु सुनि यह बानी । तिनकी गुरु निष्ठा दृढ़ मानी ॥
पुनि हरि सेवा हित यतिनाथा । गये आंध्रिपूरण लै साथा ॥
देखि परम सुंदर हरि नयना । आंध्रिपूर्ण प्रति बोले बयना ॥
लखौ रंगपति नयनन शोभा । देखि कटाक्ष होत मन लोभा ॥
बोले आंध्रिपूर्ण सुनि बानी । नाथ नयन छबि मम मन मानी ॥

दो० ताते मम नयननि नहीं दूजे नयन समान ।
रंगी नयनन छबि दरश मम लोचन नहिं जात ॥

सो० देखि अलौकिक भाव अधिकारी उत्तम परम ।
भये प्रमुदित यतिराव अजित कृपा तिन पर करी ॥

काहूसमय आंध्रिपूरण मुनि । गुरुप्रसाद महिमा अति गुरुगुनि ॥
पात्र सहित सिष्टान्न कृपा करि । दीनो गुरु सो पुलकि सीस धरि ॥
स्वीकृत करि धोये बिनु हाथा । बैठि रहे पोछे निज माथा ॥
ताहि देखि यतिनाथ रिसाने । तब कर धोय सुभाग बखाने ॥
पुनि रंगी प्रसाद करि साधा । लियो यतीश भाग तेहि आधा ॥
शेष अर्ध तिनकौ प्रभु दीन्हो । स्वीकृत करि तिन अचवन लीन्हो ॥
धोये हाथ देखि यतिकेतू । पूछो तब बरनो यह हेतू ॥
कीन्हो अस प्रभु आयसु मानी । तुमहिं ठीक गुरु कह इमि बानी ॥
औटत रहे दूध इक बारा । गुरु हित सो गुरुभक्त उदारा ॥
त्यहि अवसर यतिनाथ बुलायो । रंग बिवान बीथि नियरायो ॥

दो० उत्सव काल रमेश को अति वैभव युत यान ।
आवत सो दरशन करौ दौरि शक्ति अनुमान ॥
सो० आंध्रिपूर्ण कह नाथ हम तव देव न देखि हैं ।
जायँ तुम्हारे साथ उफनि जाय मम देव पय ॥

आंध्रिपूर्ण के सदन सुहाये । एक दिवस कुटुंब जन आये ॥
गये चले दूजे दिन ते सब । ग्रह शुद्धी कीन्ही पूरण तब ॥
ग्रह के पात्र फेंकि सब दीन्हे । प्रायश्चित्त भांति बहु कीन्हे ॥
मन मैं यह दृढ़ कियो बिचारा । गुरु सम्बन्धहि शुचि निरधारा ॥
सदन समीप दाशरथि जी के । परे पात्र सो मन गुनि नीके ॥
धरे उठाय भवन निज आनी । गुरु सम्बन्ध सहित शुचि मानी ॥
नित प्रति पान करत करि नेमा । गुरु श्रीपादतीर्थ अति प्रेमा ॥
गुरु पादुका देव आराधन । मानत और न कछु सिधि साधन ॥
बोले चरमदशा के माहीं । बोलि स्वान्तरंगिन के पाहीं ॥
भाष्यकार पद कमल निरंतर । रक्षक मानि रहौ उर अंतर ॥

दो० याबिधि आंध्रिपूर्ण के बिपुल चरित्र उदार ।
चित्रगुप्त हू ने सकल गणत न पावहिं पार ॥

सो० अचरज मय सब सोय गुरु परत्व हित बीज सम ।
राखै उर जो कोय लहै भक्ति गुरु चरण दृढ़ ॥

इतिश्रीप्र० अांघ्रिपूर्ण माहात्म्यकथनन्नाम पंचपंचाशोध्याय:५५

गुरु आयसु नित रहत अनन्ता । व्यंकटेश सेवा रतिवन्ता ॥
कियो तहां वृन्दाबन भारी । रामानुज तड़ाक सुखकारी ॥
रचत तासु को सेतु बिशाला । करत नारि युत श्रम इक काला ॥
गर्भवती सो नारि सभागी । ढोवति मृतिका पति हित लागी ॥
लैलैजाति सूर्प अति दूरी । रमासखहि करुणा भई भूरी ॥
आये तहाँ शुभग बटु रूपा । तिय सौं मांगि पंथ मधि सूपा ॥
अपने शिर धरि डारत धाई । देत तुरत ताकौ पुनि आई ॥
आवति जाति शीघ्र लखि नारी । पूछो हेतु अनंत बिचारी ॥
बटु चरित्र तब तिन कहि दीनो । सुनत अनंत कोप मन कीनो ॥
जाय देखि बटु सौं कह ताक्षन । गुरु कैंकर्य्य हमारो जीवन ॥

दो० काहेकौ तुम करत हौ व्यघ्न तासु मधि बिप्र ।
यह कहिके बटु गहन कौं पाछे धाये क्षिप्र ॥
सो० तव व्यंकटपति धाय निज मंदिर राजत भये ।
रहो हर्ष अति छाय श्रीपति जानि अनंत उर ॥

वह आनद सरवर ते काढ़ि पुनि । करन लगे सोइ बिधि अनंतमुनि ॥
काहू समय बाटिका माहीं । तुलसी लेत मुदित मन माहीं ॥
तहां भुजंग डस्यो तिनके कर । करि अस्नान रहे सेवा पर ॥
देखि तिनहिं अति चिंता हीना । नाहि उपचार तासु कछु कीना ॥
पूछत इक बैष्णव तिन पाहीं । अहि बिष यत्न करत क्यों नाहीं ॥
बोले अनंतार्य्य सुनि बानी । ज्ञान बिराग भक्ति रस सानी ॥
जो बिष तें जीवन बलवाना । तौ पुष्करणिस्वामि अस्नाना ॥
करि नित करत रमासख सेवा । अरु जो सर्प बली सुनु देवा ॥
तौ अन्हाय बिरजा सुखदायक । जाय सेय हैं परपुरनायक ॥
कौशल देश अटन इक काला । चले अनंत सप्रेम बिशाला ॥

दो० जाय दूरि कछु नित्यकृति कीन्ही करि अस्नान ।
हरिप्रसाद दध्योदन काढ्यो तबहि सुजान ॥
सो० क्षुधावन्त तिहि काल भोजन की उच्छा करी ।
लखि पिपीलिका माल ओदन माहिं बिचार किय ॥

पूर्वजनन हरि सों बर याचा । येनकेन तन वृषगिरि बासा ॥
ताते ये सब हैं नित सूरी । होत वृषाद्रिनाथ तें दूरी ॥
यह मन गुणि ओदन लै हाथा । फिरि आये जहँ व्येंकटनाथा ॥
बहुरौं अनन्तार्य्य इक अवसर । श्रीवृषशैल पुष्पमण्डप तर ॥
पुष्पहार बर रचत सुहायो । वृषगिरीश निज निकट बुलायो ॥
गये न तहां न उत्तर दीना । ताही कृत्य रहे मनलीना ॥
ह्वै निवृत्त अर्पण के काजा । गये समीप तब वृषगिरिराजा ॥
अनंतार्य्य प्रति बचन सुनाये । हम बोले तब क्यों नहि आये ॥
कह अनंत अब कारज कहियै । हम नित गुरुआयसु निर्बहियै ॥
मालादिक कैंकर्य्य तुम्हारी । कीजत गुरु कैंकर्य्य बिचारी ॥

दो० कह हरि जो यह शैल तें तुमकौं देयँ निकारि ।
तौ तुम कह करि सकत हौ हम सौं कहौ बिचारि ॥
सो० कह अनंत मुनि बयन तुम आश्रत बात्सल्य बश ।
कियो शेषगिरि अयन रमासहित बैकुण्ठ तजि ॥

छन्द मोतीदाम ॥

मायाबि परमानन्द । युत ज्ञान गत दुखद्वन्द ॥
तुम बसत अपने छंद । हम गुरु बिबश सानंद ॥
यह भांति हम तुम दोउ । घटि अधिक नाहिन कोउ ॥
मम काढ़िबे के अर्थ । नहि तुम कदापि समर्थ ॥
भये चकित सुनि सुरभूप । गुरु भक्ति देखि अनूप ॥
यामि भये प्रेमागार । यतिनाथ शिष्य अपार ॥
चहुँ ओर किय अघ नाश । गुरुभक्ति अमित प्रकाश ॥
सो सब सकै कहि कौन । ह्वै लजित रह कबि मौन ॥

इतिश्रीप्र० अनन्तार्य्य प्रभाववर्णनन्नाम षटपंचाशोध्यायः ५६॥

याबिधि रंगनगर यतिनाथा । राजत नित निज शिष्यन साथा ॥
एक दिवस रंगेश समीपा । बिनु पूछे बैष्णवकुलदीपा ॥
जाय कूरनायक अनुरागे । ठाढ़े भये जोरि कर आगे ॥

बोले रंगभूमिपति बानी। तुम कछु कहो चहत हम जानी॥
कहौ सो तात कूरपति तात्त्वण। कहो एक अश्लोक मुदित मन॥
सो सुनि बोले कृपानिधाना। मागि लेउ बांक्षित बरदाना॥
कह श्रीवत्सचिन्ह करजोरी। बाणी मधुर प्रेमरसबोरी॥
प्रथम दियो सब बांछित मेरो। अब कह मागै चरनन चेरो॥
पुनि कह प्रभु कछु मागौ काजू। यतिपति सपत देउँ सब आजू॥
कह कूरेश जोरि युगहाथा। अबहीं देउ परमपद नाथा॥

दो० कह रंगेश्वर बिहसि तब मागत कह बरदान।
जो तव सम्बन्धीन के सम्बन्धी बिद्वान॥
सो० चरमावधि लौं तात सब कौ दीनो प्रथमही।
जानत नहि यह बात क्यों संशय आनत मनहिं॥

यह कहि दीनो तीर्थ प्रसादा। कीन्हे बिदा सहित अहलादा॥
तिन यतिशिष्यन माहिं नवीना। अर्चिरादि पथ भूषित कीना॥
सो वृत्तांत पाय गुरु ज्ञानी। नाचन लगे मुदित कहि बानी॥
दियो परमपद रंगबिहारी। सम्बन्धिन समेत सुखकारी॥
हमहूँ कूरनाथ सौं नातो। मिलिहैं हरि प्रभु बचन न हांतो॥
सत गुरु अरु सत शिष्य मझारी। नही बिशेष उभय भय हारी॥
शोक मग्न पुनि भये अनन्ता। शिष्यन युत तहँ गये तुरन्ता॥
लखि कूरेशहि कहत कृपानिधि। तुमकौ उचित रही कह यहबिधि॥
हम सौं बिनु पूछे सहसाहीं। मागि लियो परपुर हरि पाहीं॥
बोले बहुरि यतीश्वर बानी। अब सुत हम सौं कहौ बखानी॥

दो० देखि परत तुम कौ कहा परमधाम बृत्तान्त।
कूरनाथ बोले तबहि गुरुबर सौं निर्भ्रान्त॥
सो० गये जे पूर्ब महान परमधाम तिनके अनुग।
तिनही के अस्थान जात परत लखि मोहि सब॥

मम सन्मुख आवत नितसूरी। वर्त्तत आगम पथ करि दूरी॥
सो वह चरित परमपद केरो। देखि होत मोहि मोह घनेरो॥
कह गुरु नहि बैकुंठ शास्त्रक्रम। होय न किमि तहँ तासु बितिक्रम॥

भोगविभूति शास्त्र अनुसारा । कियो प्रबृत्त रमेश उदारा ॥
तबहि कूरपति भये दुखारी । लखि शेषत्व चकित चित भारी ॥
देशिक तब तिनके श्रुति माहीं । द्वय उपदेश कियो सहसाहीं ॥
सोलखि वैष्णवगण अचरज भरि । पूछन लगेगुरुहिंअंजलिकरि ॥
निर्भर सर प्रपन्न अवगाही । अंतिम अस्मृति तिनहिं न चाही ॥
शास्त्रन के अनुमति यह बानी । तुमहीं प्रभु बहुबार बखानी ॥
सो यह अवसर यतिकुलराजा । द्वय उपदेश कियो किहि काजा ॥

दो० कह प्रभु जिमि नृपसुत रसन बिनु करपूरघुटीर ।
सूखि जाति तिमि द्वयमनु रहित इनहुँ कौ पीर ॥
सो० यह कहि पुनि यतिराय भये बिकल तिनके बिरह ।
बोले अति बिलखाय कूरनाथ प्रति बचन बर ॥

तात जात तुम परमनिकेता । त्यागि मोहि वैष्णवन समेता ॥
रंगराज युत हम सब केरो । उदित भयो कह पाप घनेरो ॥
कौन सो सुकृत परेश्वर कीन्हो । संग लाभ तुम्हरो जिन लीन्हो ॥
बोले थिर करि मनहि बहोरी । बानी प्रेम सुधारस बोरी ॥
बहुत कहौं कह मानस शोका । कीजै व्यग्र कि तव परलोका ॥
सुख युत दिव्यलोक सुत जाहू । पावौ दम्पति सेवा लाहू ॥
फेरि कमल कर तिनकी पीठी । देखि परम करुणामय दीठी ॥
उरअन्तर मठ गवन बिचारो । तब तिन गुरु चरणन शिर धारो ॥
प्रभु भुज भरि उठाय उर लाये । तिन पुनि पद युग सीस धराये ॥
श्रीपदतीर्थ दियो गुरु निज कर । लीनो परमभक्ति कूरेश्वर ॥

दो० पढ़ि योनित्यमच्युत यह अश्लोकहि कर जोरि ।
मठ पधारिये नाथ अब पुनि पुनि कह्यो निहोरि ॥
सो० बिनयो जब बहुबार कूरनाथ तब यतितिलक ।
सहि बियोग दुख भार कियो गवन मठ कौ बिकल ॥
कैसेहुँ धीरज धारि श्रवत नयन जल यतितिलक ।
कूरेशहि लौटारि निज मठ कौ गवनत भये ॥
कूरेश्वर बिद्वान मठप्रवेश लौ गुरु लखे ।
गुरु तिन गुणन बखान करन लगे अपनी सभा ॥

इतिश्रीप्र० कूरेश चरमदशावर्णनन्नाम सप्तपंचाशोध्यायः ५७ ॥

बहुरौं कूरनाथ निज धामहिं । गये तहां पूछत भये बामहि ॥
कौन सो अर्थ मानि मन माहीं । अस्थित होति कहौ हम पाहीं ॥
कह तिय अर्थ नाथ उर जोई । दासी मन अस्थित नित सोई ॥
यथा सत्यसङ्कल्प रमेशा । प्रभु सङ्कल्पहु व्यघ्न न लेशा ॥
यह कहि ठाढ़ि भई कर जोरी । पुनि पुनि चरण सरोज निहोरी ॥
पुनि दोउ सुतन कह्यो कूरेशा । जिनके बाप आप रंगेशा ॥
जननी रंगनायकी राजति । तिनके श्री सम्पति नित भ्राजति ॥
रहौ सदा निर्भर दोउ भाई । नहि कदापि लघुता नियराई ॥
उत्पति पालन कारक दोऊ । तुम्हरे हरि जानत सब कोऊ ॥
बहुरि यतीश्वर पद जलजाता । शरण मानि रहियो दोउ भ्राता ॥

दो० अरु निज जननी पंथ को कीजो नित अनुसार ।
हरिदासन को भूलिहु कीजो मति अपचार ॥
सो० ऐसे कहि दोउ भाय लिये उठाय पद कमल तें ।
नयन पोंछि उर लाय कहत भये पुनि बचन बर ॥

जो तुम मम तन को सम्बन्धा । मानि मनहि आनिहौ दुख गंधा ॥
तौ यतिनाथ चरण कमलन तें । ह्वै जैहौ न्यारे कुलधन तें ॥
ऐसी भांति सुतन समुझाई । भये कृतकृत्य दाशरथि भाई ॥
शिर धरि शिष्य पुत्र की गोदा । नारि अङ्क रखि चरण समोदा ॥
यतिपति चरणकमल निश्चल मन । करि गवने परधाम त्यागि तन ॥
सुनि आये यतिपति सहसाहीं । कूरनाथ के मन्दिर माहीं ॥
ज्ञान धैर्य्य उपदेशि अपारा । भट्टारक उर शोक निवारा ॥
चरमक्रिया पितु की श्रुति नीती । बेगि करौ उठि पंडित रीती ॥
सुनि भट्टारक तुरत बुलाये । ब्रह्ममेधि ज्ञाता जन आये ॥
तिनके सँग पितु उत्तर कृति कौं । बिष्णुसूक्ति अरु गायत्री सौं ॥

दो० नारायणअनुवाद करि पितु शरीर अन्हवाय ।
ऊर्द्धपुण्ड्र श्रीचूर्ण बर परिपालन करवाय ॥
सो० हरि अर्पित वह देह मंगल मय द्विजमेधि सौं ।
हारीतस्मृति नेह करि कीन्ही सब चरम कृति ॥

बांधव जनन सहित लघु भाई । उत्तर कृत्य कियो मन लाई ॥
दश एकादश द्वादश दिन को । कियो कर्म जिमि होत मुनिन को॥
वृद्धि आदि सहस्त्र शाखाबर । द्विजहि उचित अध्येन तासु कर॥
ब्रह्मसंहिता द्राविड़ि जोई । त्रय के अन्त पढ़ावै सोई ॥
यह ब्रह्मांड पुराण बतायो । बिधि युत तासु पाठ करवायो ॥
पुनि श्रीबैष्णव वृन्द बुलाये । पादोदक लै सीस चढ़ाये ॥
जाते और न तीरथ दूजा । कीनी बिबिधि भांति करि पूजा ॥
असन बसन भूषण बिधि नाना । करि सन्मान दियो बहुदाना॥
जन्म नखत कूरेश्वर जी को । हस्ति नक्षत्र पौष मधि नीको ॥
लै भट्टार्य्य संग यतिनायक । गये जहँ रंगनाथ सुखदायक ॥

दो॰ किय प्रणाम महि सीस धरि तब प्रभु करुणाअयन ।
बोले अर्चक बीच करि भट्टारक प्रतिबयन ॥

सो॰ मति शोचौ मन माहिं कूराधिप के मरण ते ।
तुमहि न्यूनता नाहि बिद्यमान तव जनकहम ॥

सुनियतिपति कह महिधरिमाथा । देउआयु निज सुतकौनाथा॥
करिहैं हम इनकौ बिद्वाना । शास्त्रज्ञन मैं परम सुजाना ॥
प्रतिउत्तर न दियो कछु श्रीशा । तब लै शठकोपादि यतीशा ॥
रंगपुत्र संग निज मठ आये । गोबिंदार्य्य निकट बुलवाये ॥
तिनसौं आयसु किय यतिराजा । हमरे शास्त्र निबाहन काजा॥
इनकौ सब सतशास्त्र पढ़ावौ । नीके मम आयसु मन लावौ ॥
यह कहि तिनकी बांह गहाई । गोबिंद आयसु सीस चढ़ाई ॥
याबिधि श्रीकूरेश चरित बर । दिव्यज्ञानप्रद सुख सम्पतिकर ॥
पढ़हिं सुनहिं कर अनुसंधाना । श्रीयतिनाथ गाथ सँग गाना ॥
ते तजि कलिमल बिनहि प्रयासा । पावैं परमधाम सुखरासा ॥

दो॰ मन निशिबासर गाइये यतिभूपाल चरित्र ।
पुनि तिनके जे शिष्य प्रिय संतत करत पवित्र ॥

सो० श्रीरामानुज नाम कलि कल्यान सुकल्पतरु ।
देत परम बिश्राम सब दिन छाया तासुकी ॥

## इतिश्रीप्र० कूरेशस्य परमपदप्राप्तिवरणनन्नाम अष्टपंचाशोध्यायः ॥ ५८ ॥

रंगनगर राजत यतिनायक । शिष्यन कहत अर्थ सुखदायक ॥
बैभव बिशद अनूप अपारा । अग्र कहौं तिन किय बिस्तारा ॥
व्येंकटेश रंगी बरदेशा । सुन्दरभुज कुरंगनगरेशा ॥
सम्पतिसुत शठबैरि नाथमुनि । महापूर्ण गोष्ठीपूरण पुनि ॥
अरु श्रीशैलपूर्ण मालाधर । रंगदेव कूरेश गुणाकर ॥
श्रीबररंग आदि गुरुधीरा । बिपुल शिष्य बैष्णवबरबीरा ॥
द्विजराक्षस मूकादि तत्वबित । कियो प्रकाशित बिभव अपरमित ॥
वृषगिरीश रंगेश्वर श्रीमुख । दीनो पुनिपुनि युगबिभूति सुख ॥
तिहि अवसर गोपी इक आई । राजत वृषगिरि यतिसुखदाई ॥
दीनो दही मोल हित ठाढ़ी । छोटे जन्म भाग की बाढ़ी ॥

दो० प्रणतारातिहर उर तबहि करुणा भई अपार ।
यतिपति तीर्थ प्रसाद शुचि दीनो ताहि उदार ॥

सो० तत्क्षण तासु प्रसाद उपजो ज्ञान बिराग उर ।
तजि सब जगत बिषाद अध्यातम चिंता भई ॥

जाय यतीश निकट तिहिकाला । कहति जोरिकर बचन रसाला ॥
मोकौ दीजिये मोक्ष कृपाला । भये चकित सुनि यतिकुलपाला ॥
कहत जाउ जहँ हरि सुखदायक । दीहैं मोक्ष शेषगिरिनायक ॥
तिन पुनि कह्यो कृपा प्रभु कीजै । व्येंकटेश कौ पाती दीजै ॥
बिनती तासु मानि भलिभांती । लिखि सोई अर्थ दई प्रभुपाती ॥
सबहुनके देखत वह गोपी । परपुरनाथ मिलन कौ चोपी ॥
यतिपति पद अरु बैष्णवचरणा । बंदिचली जहँ अशरणशरणा ॥
तुरत स्वामिपुस्करणि अन्हाई । ऊर्द्धपुण्ड्र कीन्हो हरषाई ॥
आनदबल्लि प्रदक्षिणा करिके । गरुड़खंभ ढिग पाती धरिके ॥

मोक्ष देउ यह कहि महि लोटी । छोटे बरण भाग की मोटी ॥

दो० भक्ताधीन शेषगिरिनायक ताहि तुरन्त ।
दई मोक्ष लखि लोक सब हरषे मन अत्यन्त ॥
सो० रामानुज सम्बन्ध सर्वोपरि मानत भये ।
कहत न तिनते अन्ध यतिपति पद आश्रत न जे ॥

को बरनै इनके गुणगाथा । प्रादुर्भूत जिनहिं श्रीनाथा ॥
यज्ञमूर्त्ति शास्त्रारथ काला । कांचीपुर देवेश कृपाला ॥
भक्तग्राम यादवगिरिनायक । सम्पतिसुत सुत जिमि सुखदायक ॥
ये सबही प्रत्यक्ष यतिभूपहि । लीला नर तन धरण अनूपहि ॥
प्रमुदित सुन्दरभुज इक बारा । कृपा अमीमय वचन उचारा ॥
रामानुज सम्बन्धि जो होई । आवै मम समीप चलि सोई ॥
गये सकल रामानुजदासा । पूर्ण शिष्य नहि तिनके पासा ॥
तिनहि बोलि तब कह सुखदाई । तुम काहे आये नहि भाई ॥
तुम यतिशिष्य बुलाये स्वामी । हम तिनके गुरुके अनुगामी ॥
यह सुनि हँसि कह असुरअराती । महापूर्ण बुधिहै यह भांती ॥

दो० जैसे दशरथादि मोहि जानत सुत न प्रभाव ।
तैसे यतिपति के विषे पूर्ण शिष्य को भाव ॥
सो० ता पाछे इक काल अत्रिबंशि प्रणतार्त्तिहर ।
जहँ वृषभाचलपाल अस्तव रत्न पढ़त भये ॥

अगतिं शरणागत यह पढ़िके । कियोप्रणाम सीस महि धरिके ॥
सो सुनि हरि बोले मृदुवानी । अगतिबचन क्यों कहत बखानी ॥
समरथ श्रीलक्ष्मण गुरु ज्ञानी । रक्षक विद्यमान गुणखानी ॥
पापिहु को जिनके सम्बन्धा । सहजहि छूटि जात भवबन्धा ॥
बहुरि पूर्व जिमि दिग्जय काला । गये कुरंगनगर यतिपाला ॥
तहँ कुरंगनगरीपूरण हरि । उच्चासन ते उतरि भक्ति करि ॥
सिंहासन आसीन यतीशा । करि मनुरत्न सुन्यो जगदीशा ॥
सबसौं गुरु गौरव प्रभुताई । श्रीमुख श्रीपति कही सुनाई ॥
रामानुजपूरण यह नामा । लहि पूरण भये पूरणकामा ॥

यमि बहुबार अनेक प्रकारा । अखिलेश्वर अर्चा अवतारा ॥

दो० कीनी गौरव मान्यता कृपाकटाक्ष प्रकास ।
देशिकादि सम्बन्ध करि बहुबिधि रमानिवास ॥

सो० मन यतीश पद ध्यान करिये सदा अति प्रीति युत ।
जो चाहत कल्यान हरि पद रति संसृत बिरति ॥

इतिश्रीप्र० रंगादिप्रकाशित रामानुज बैभववरणनन्नाम
एकोनषष्टितमोध्यायः ॥ ५६ ॥

पूर्व परमपद मधि सेनेशा । अतिशय शोचत देखि रमेशा ॥
जग रक्षण हित करी प्रतिज्ञा । उतरे कुरिकापुरि लहि अज्ञा ॥
कारिसूनु ह्वै लखि कलिकाला । दुरगम दुरित दुरंत कराला ॥
भये भीति वश मूदे नयना । तिंतृणि कोटरकियनिज अयना ॥
सोरह बर्ष ते रहे तहांहीं । काहू तिनकौ जान्यो नाहीं ॥
शठआराति कहो तब बरनी । ईश्वर सौं असाध्य जो करनी ॥
सो हम सौं बनिआवै कैसे । कीन्हो बादिहि प्रण हम ऐसे ॥
चारिसहस्र बर्ष के बीते । रामानुज अवतार प्रतीते ॥
सकल लोक तिनके सम्बन्धा । तजि पातक छूटि है भवबन्धा ॥
कलिमल सकल बिकल तिहिकाला । ह्वैहै नष्ट नर्क बिकराला ॥

दो० ह्वै जैहै तिहि काल में अन्तक निर्ब्यापार ।
सिंधु सेतु लौं भूमितल रामानुज अवतार ॥

सो० अविधि अर्थ दिखाय परमधाम शठजित गये ।
बहुरि नाथमुनि आय कह तटाक तट वचन बर ॥

पुण्य बीरनारायणपुर जहं । अन्तिम बचन कहो याबिधि तहं ॥
जिमिभ्रममारगयहसरतेजल । उमगिउमगिकरिसींचतक्षिदल ॥
तिमि श्रीपति मारग मधि निश्चल । निर्मलवेद अर्थ रूपीजल ॥
भरि मन्नाथ रूप हृदि माहीं । बहु आचारज भ्रम जग माहीं ॥
सिंचिहैंअगिनितप्राणि कृषीगण । याबिधिकहोनाथमुनिकरिप्रण ॥
सोप्रण मुनि त्रकालदरशी को । कियो बिशद अवयतिपतिनीको ॥
पुनिश्रीरवन महाजलनिधिसौं । भरि वेदार्थ रूप जल बिधिसौं ॥

शठजित स्याममेघ नाथाचल। बरषे हर्षि बिशद शीतलजल॥
यामुनार्य्य सरिता सो भरिके। भाष्यकार हृदि रह्यो ठहरिके॥
चौहत्तरि शिष्यन भ्रम द्वारा। जीव कृषीगण बढे अपारा॥

दो० बिमल सो जल अस्थित भयो जहँ पावन थल संत।
फैलि रह्यो माधुर्य्य रस शशि दिनकर पर्य्यंत॥
सो० पुनि यामुन मुनिराय लक्ष्मण मुनि को बिभव सुनि।
वारणाद्रि पर जाय देखि तिनहि बोले बचन॥

जो ये ग्रहणकरैं वैष्णवमत। होइँ अमित जन परम भागवत॥
एक समय पूरणगुरु ज्ञाता। लक्ष्मणमुनिहि कियो प्रणिपाता॥
सो लखि पूरणसुता चकित मन। पूछा पितु सौं अचरज कारन॥
तुम देशिक लक्ष्मणमुनि जीके। निगमागम पथ जानत नीके॥
कौन हेत प्रणाम तुम कीनो। महापूर्ण सुनि उत्तर दीनो॥
इनके सम हम त्रभुवन माहीं। गौरव युत कोउ देखत नाहीं॥
बहुरौं आवत पंथ मझारी। महापूर्ण यतितिलक निहारी॥
करी दंडवत महि धरि माथा। अंजुलि करत भये यतिनाथा॥
शिष्यन लखि पूछा गुरु पाहीं। मगन सकल अचरज सर माहीं॥
गुरु प्रणाम अंगीकृत कीना। यह अचरज प्रभु हमहि नवीना॥

दो० कह यतीश गुरु जिमि कहैं शिष्य रहैं तिहि भाँति।
ताते हम सोई करत हैं ज्यो उनके मन शाँति॥
सो० पुनि पूरण ढिग जाय तासु हेतु पूछत भये।
नाथ शिष्य यतिराय क्यों साष्टांग तिनहि करत॥

महापूर्ण बोले सुनि बानी। कहैं सत्य हम तुमहिं बखानी॥
हम कौ तौ इनके मधि भाई। यामुनार्य्य मूरति दरशाई॥
शास्त्र अर्थ आचारज संपति। देखि परति इनमें सब निज मति॥
तब हम भूलि शिष्य कर नाता। प्रेमाधीन करत प्रणिपाता॥
गोष्ठीपूर्ण मंत्र जब दयेऊ। अति रहस्य राखन हित कहेऊ॥
भूरिदान सो यतिपति कीनो। पुनि गुरु सौं यह उत्तर दीनो॥
जायं बहुतजन परपुरधामहिं। हमइक नर्क शोच कह यामहिं॥

तब गुरु मानि तिनहिं अवतारा । नाम धरो मन्नाथ उदारा ॥
आदि शून्य बैदिक मत जोई । यतिसिद्धान्त कहन कह सोई ॥
मालाधर ढिग गये यतिराजा । सहसगीत पढ़िबे के काजा ॥

दो० तहँ इक गाथा अर्थ जिमि ग्रहण न कीनो शेश ।
तब गुरु मन मे कुपित ह्वै किय निबृत्त उपदेश ॥
सो० गोष्ठीपूरण आय तब मालाधर के निकट ।
कहत भये समुझाय यतिकुलतिलक प्रभाव वर ॥

ये निज शिष्य लखौ तुम ऐसे । सांदीपिन ढिग यदुपति जैसे ॥
अरु यह गाथ अर्थ यामुनमुनि । ऐसेहि कहत रहे यह सुनि पुनि ॥
लागे प्रभुहि पढ़ावन हित करि । पूरण बचन पुनीत हृदय धरि ॥
पुनि इक गाथा सुनि यतिभूपा । कहत भये कछु अर्थ अनूपा ॥
कहत रहे यामुन गुरु ऐसे । नहिं याभांति कहत तुम जैसे ॥
कह मालाधर तुम कह जानौ । बिनहिं समागम बचन बखानौ ॥
उनको शिष्य हम हिं कह यतिपति । जानौ प्रभु याबिधि अनन्यगति ॥
द्रोनशिष्य इकलव्य भांति जिहि । मानि लियो गुरु बचन समय तेहि ॥
दिब्यसूरि तिनको जियजाना । सुतहि शिष्य कराय सुखमाना ॥
पुनि जैसे बररंग समीपा । चरमोपाय लह्यो यतिदीपा ॥

दो० सेवा करि निज बश कियो तिन पुनि अतिशय मानि ।
अनुज कराय समाश्रत अति बड़भाग बखानि ॥
सो० याबिधि यतिकुलभूप सकल गुरुन पूर्वोक्त बिधि ।
मानि आदिगुरु रूप करत भये गौरव अमित ॥

इतिश्रीप्र० पूर्णाचारियादि प्रकाशित रामानुज बैभवकथनन्नाम षष्टितमोध्यायः ॥ ६० ॥

कांचीपुर श्रीबैष्णव बंशा । भयो मूक इक कुल अवतंशा ॥
बढ्यो बेगिही भयो सयानो । युगल बर्ष लगि नहि दरशानो ॥
पुनि आकस्मिक लोगन देखो । बचन युक्त लखि अचरज लेखो ॥
पूछत भये ताहि सब धाई । अबलौं कहां रहे तुम भाई ॥
क्षीरसमुद्र जाय परदेवा । देखि करी उनकी तहँ सेवा ॥

कांचीपुरी बहुरि चलि आयो । सुनत सबहि अचरज अधिकायो ॥
चहुँदिस ताहि घेरि बोले सब । होत कहा तहां कहौ हमाहिं तब ॥
बोल्यो मूक क्षीरनिधि बासी । कहत रहे यमि सब सुखरासी ॥
शेष सहसमुख जग रक्षण हित । भूतपुरी अवतरे बिशद चित ॥
रामानुज यह नाम सुहायो । सुनत सबन मन आनद छायो ॥

दो० तहँ ते तात्क्षण मूक पुनि भयो सो अन्तरधान ।
फणिनायक अवतार कहि रामानुज भगवान ॥
सो० बहुरि पूर्व द्विजप्रेत यादव प्रति वरणन कियो ।
परमानन्द निकेत बिभव बिशद यतिराज को ॥

सब के सन्मुख बचन बखाना । ये नितसूरिन मध्य प्रधाना ॥
जग रक्षण हित नर तनु धारा । आश्रित ह्वै निज करौ उधारा ॥
यह कहि शिर धरि चरणान को जल । तत्क्षण लहत भयो पद निश्चल ॥
बहुरौं आंध्रिपूर्ण बिद्वाना । सुजन सभा बहुबार बखाना ॥
आचारज पद यथा बिधाना । इनहीं मधि पायो अस्थाना ॥
यतिपति चरण छांड़ि जग माहीं । अपर उपाय तरण हित नाहीं ॥
रक्षक यतिपति चरण सुहायो । सब कौ यह निश्चय करवायो ॥
कृष्णग्राम नरपति जग जाना । श्रीबैष्णव सिद्धांत सुजाना ॥
बालस्वामि ख्याति तिन केरी । बैष्णव सभा कह्यो तिन टेरी ॥
सबहि श्रेयपद आपद गंजन । यतिपति पद ध्रुव कलुष बिभंजन ॥

दो० देवराजमुनि प्रथम जिमि अनंतादि संस्कार ।
करि कीनो उपदेश इमि नाहिन मम शिर भार ॥
सो० यतिपति आज्ञा मानि हम कीनो यह काज बड़ ।
मानौ यह अनुमानि रक्षक उनहीं के चरण ॥

कूरनाथ को शिष्य सुजाना । नाम पुत्रपुत्रार्य्य बखाना ॥
करत बैष्णवन संग बिवादा । रंगबासि सुनि करत बिषादा ॥
दोष कूरपति को ठहरायो । सो सुनि कूरनाथ दुख पायो ॥
पुण्यकाल सो शिष्य बुलायो । तिल जल दै सङ्कल्प करायो ॥
लीन्हो करणत्रय को दाना । तिनहूं भक्ति बिवश सुख माना ॥

अस्थितभये जायनिज ग्रहतब। सुमिरत गुरुपदचेष्टा तजिसब॥
एक दिवस लखि बैष्णव कोई। आतुर जात चले मग सोई॥
मनमें तिनको दोष बिचारी। तापाछे यह बुधि उर धारी॥
हम गुरु कौं करणत्रय दीनो। तासौं यह अनरथ अब कीनो॥
गुरु की द्रव्य करी हम चोरी। धृक धृक मैं खल धुंधक धोरी॥

दो० देहत्याग निश्चय करि बैठे दर्भ डसाय।
करि प्रायोपवेश बिधि प्राणायाम चढ़ाय॥

सो० कूरनाथ सुधि पाय गये शिष्य ढिग तुरतही।
बानी मधुर सुनाय कहत भये तिनसौं बचन॥

बत्स वृथा जिनि त्यागौ देहा। दीनो मनमें तुमहिं सनेहा॥
सो लै उठौ कहे सुत मोरे। परअपवाद करौ मति भोरे॥
उपजै कलुष जो मन के माहीं। सुमिरौ यतिपति चरण तहाहीं॥
ताते ते निर्मूल नशैहैं। अरु प्रमाद बश जे अघ ह्वैहैं॥
तन अरु बचन करण के द्वारा। राज दंड ह्वै है निरधारा॥
एक समय कवेरजा तीरा। पुण्य काल भई पण्डित भीरा॥
मोक्षोपाय बिचार बिशाला। तत्व अर्थ शङ्कट के काला॥
उठि श्रीबत्सचिन्ह सहसाईं। बोले वेदव्यास की नाईं॥
करि अस्नान उठाय युगल भुज। सत्य सत्य पुनि श्रीरामानुज॥
जगदाचार्य्य सर्व हित मेरे। उद्धारक सोई सब जग केरे॥

दो० बाद काज बिद्वान कोउ मरीच्यादि करि नाम।
आये दाशरथी निकट श्रीरंगेश्वर धाम॥

सो० यह निश्चय ठहराय शास्त्रबाद भौतुङ्गन को।
हारो कंध चढ़ाय जीतन हारहि लै चलै॥

शास्त्रबाद तिहि बिनहि प्रयासा। जीतत भे रामानुजदासा॥
मरीच्यादि तब कंध चढ़ाई। रंगधाम प्रदक्षिणा लाई॥
तिनके देहस्पर्श प्रतापा। मरीच्यादि खोयो सब पापा॥
तबहि जोरि कर बचन सुनाया। हित उपदेश करौ करि दाया॥
दाशरथी सुनि बचन बिनीता। भवभय त्रसित जानि छल रीता॥

यतिपुङ्गव समीप लै आये । करि बिनती बैष्णव करवाये ॥
सबके सन्मुख हित उपदेशा । ये पद तजि नहि कहुँ सुखलेशा ॥
कोई श्रीबैष्णव बिद्वाना । लोकाचार्य्य नाम जग जाना ॥
गोबिंदार्य देखि सुख मानी । कहत भये तिनसौं हित बानी ॥
भगवद्विषय अर्थ तुम जाना । शास्त्र अशेष यथेष्ट सुजाना ॥

दो० उपदेशत शिष्यन बिशद शास्त्र अर्थ भलि भाय ।
रहौ न यह अभिमान करि हित बश कहौं सुनाय ॥
सो० मानौ एक उपाय रामानुज पद कमल युग ।
उभयलोक सुखदाय सब प्रकार करि प्रणत हित ॥

भट्टारकहि पढ़ाय शास्त्र सब । कह इमि तिनसौं गोविंद गुरु तब ॥
सुनौ तात इक बचन हमारो । कीजत हित उपदेश तुम्हारो ॥
पुत्रभाव हम कौ सर्वेशा । स्वीकृत कियो आप रंगेशा ॥
कूरनाथ के पुत्र सुजाना । सकल वेदवित शास्त्रनिधाना ॥
उत्तमबंश जन्म श्रीमन्ता । ज्ञानी भक्ति बिरति रत सन्ता ॥
याबिधि गर्व न मनमैंआनौ । यतिपति चरण शरण निजमानौं ॥
अपर उपाय श्रेयहित अपने । बिनु यतीश जिनि जानौ सपने ॥
बहुरि पराशर भट्ट सुजाना । वेदांती प्रति बचन बखाना ॥
रंगपुत्र गुरु करि हम पाये । दै बहु गुरुदक्षिणा रिझाये ॥
ऐसे बर्त्तमान जिनि होहू । हम तुमकौ सिखवत करि छोहू ॥

दो० यतिपति दिव्य पदाम्बुजनि रक्षक मानौ तात ।
उभय लोक हित करन कौ और न दूजी बात ॥
सो० श्रीरामक्रतनाथ कुरुकानाथ समीप बसि ।
चलत नवायो माथ तीनि बार श्रीभाष्य पढ़ि ॥

हाथ जोरि इमि बिनय सुनाई । मोक्ष हेतु प्रभु कहौ उपाई ॥
ज्ञान भक्ति ते सुकर जो होई । सेवक कौ उपदेशियै सोई ॥
तबहि कृपा करि कह कुरुकेश्वर । पढ़े प्रभाकरादि आगम बर ॥
ताते हम अति हैं बिद्वाना । त्यागौ यह उर ते अभिमाना ॥
श्रीमन्नाथ चरण निज रक्षक । मानौ सकल दोष दुख भक्षक ॥

पुनि नारायणपुर बैष्णव कोउ । नाम मासभट आगमज्ञ सोउ॥
तिन निज शिष्यन प्रति सुखरूपा । उपदेश्यो श्रीभाष्य अनूपा॥
उपन्यास ताको सुनि ते सब । अति अचरज युत होत भये तब॥
कहत भये ते सब कर जोरी । पुनिपुनि गुरु पदकमल निहोरी॥
श्रीभाष्यार्थ श्रवण हम कीन्हो । गंग प्रवाह सदृश सब चीन्हो॥

दो० अनुष्ठान बल अल्प लखि नहि समरथ हम माहि ।
सुलभोपाय बताइये बिनु श्रम पारहि जाहिं ॥
सो० सुनि आचार्य्य कृपाल मोक्षोपाय बिनीत अति ।
कहत भये तिहि काल रामानुज पद कमल युग ॥

बहुरि बरदबिष्णवार्य निकट कोइ । बैष्णव सुनत भये सुग्रंथ सोइ॥
कहत भये तिनसौं शिर नाई । अति गुरु भक्ति उपाय लखाई॥
तहां न प्रभु हमरो अधिकारा । कहिये सुलभ उपाय उदारा ॥
कहो प्रपत्ति मार्ग अभिरामा । तबहूं तिन न लहो बिश्रामा ॥
याहू में मम शक्ति न नाथा । लघु उपाय कहि करौ सनाथा ॥
तब उन कही यतीश्वर चरणा । सब प्रकार प्रणतारति हरणा॥
सेवन ध्यान करौ उनही के । गावहु सुनहु विशद गुण नीके ॥
याबिधि निरत निरन्तर रहहू । बिनु श्रम मोक्ष पदारथ लहहू॥
ऐसेहि पीठहु सत्तरि चारी । शिष्यन कहत यत्न अघहारी ॥
सकल लोक बैभव अति चारू । कीनो श्रीबैष्णवन प्रचारू ॥

दो० याबिधि अमित प्रकाश युत शिष्यन सुजन समेत ।
जग रक्षा हित जगतगुरु राजत रंगनिकेत ॥
सो० तिनही के बड़भाग करतल हरिसायोज्य फल ।
यतिपति पद अनुराग जिनके हृदय अनन्य व्रत ॥

इतिश्रीप्र० कूरेश दाशरथ्यादि प्रकाशित रामानुज बैभव
वरणनन्नाम एकषष्टितमोध्यायः ॥ ६१ ॥

श्रीरंगेशादिक ते भारी । भौ यतीश बैभव सुखकारी ॥
नाथमुनीशादिक सुठि कीरति । ताहू ते देखियत बिमल अति॥
श्रेष्ठ यतीश्वर तिनकी पांती । नहि न्यूनता कहत यह भांती ॥

वेद शास्त्र करि सम्मत सोई । कहत सुनत अपचार न होई ॥
हरि अवतार अनंत मझारी । दश अवतार मुख्य सुखकारी ॥
नरहरि रामकृष्ण तिन माहीं । श्रेष्ठ कहत कछु अघटित नाहीं ॥
तप स्वाध्याय निरत ऋषि नाना । तहां पराशरादि परधाना ॥
अष्टरु शत दिव्यस्थल माहीं । चारि मुख्य कछु संशय नाहीं ॥
रंगी श्रीनिवास सुखदायक । यादवाद्रिपति करि गिरिनायक ॥
भूतादिकयोगिनमधिशठजित।मुख्य कहतनाहिनकछुअनुचित॥

दो० ऐसेहि नाथादिकन ते मुख्य यतीश कृपाल ।
हेतु सहित सो कहौं अब सुनत मिटै भ्रमजाल ॥
सो० प्रकटे खंभ बिदारि जनवत्सल प्रह्लादपति ।
असुराधिपहि पछारि भक्त वचन सांचो कियो ॥

ताते श्रेष्ठ नृसिंह कृपाला । कहौं मुख्य जिमि रघुकुलपाला ॥
अभयप्रदानपात्र कपिराजा । कियो बिभीषण सहित समाजा ॥
सखा भाव निषादपति हेरी । द्विजमख क्रिया करी खग केरी ॥
भक्ति युक्त शवरी के दीन्हे । अति रुचि करि फल भोजन कीन्हे ॥
इत्यादिक चरित्र बर नाना । ताते यह अवतार प्रधाना ॥
गीताशास्त्र प्रकाशित कीनो । चरम अर्थ पारथ कौ दीनो ॥
भीष्म द्रोण कृपादि बिहाई । विदुर पुनीत ज्ञान निपुनाई ॥
मानि तासु ग्रह भोजन कीन्हो । शत्रु कोटि दुर्योधन चीन्हो ॥
ताते मुख्य कृष्ण अवतारा । भयो विशद गुण अमित उदारा ॥
याबिधि तिहुँ अवतार प्रधाना । षडैश्वर्य्य पूरण भगवाना ॥

दो० रंगराज मुनिबाहनहि अंगीकार जो कीन्ह ।
ताते तिनकौ मुख्यता बरणत सुजन प्रवीन ॥
सो० कुरवपूर्ण के साथ तुंडीमान महीप सँग ।
बोले ब्यंकटनाथ ताते तिनकौ मुख्यता ॥

कांचिपूर्ण प्रति नित संभाषन । करि भये बरदराज मुख्यासन ॥
भोजन कियो यतीश्वर अर्पित । कीन्हो निज थल राज समर्पित ॥
पुत्र भाव तिनके सुख माना । ताते यदुगिरिनाथ प्रधाना ॥

वेदव्यासहि गौरव ताते। जग उपकार कियो बहु जाते ॥
चारौ वेद लोक बिस्तारे। कर्म ब्रह्म काण्डन करि न्यारे ॥
कर्मकाण्ड हरि काण्ड लगायो। पुरुषसूक्ति छांदोग्य बनायो ॥
बाजसनेय तैतर्य्योपनिषद। स्वेतास्वेत बिमल आनँदप्रद ॥
उपब्रंहन मय सकल पुराना। भारत बर इतिहास बखाना ॥
भुजा उठाय तत्व निरधारो। तीनि बार कहि सत्य उचारो ॥
केशव ते परदेव न आना। नहीं शास्त्र वेदान्त समाना ॥

दो० ताते मुख्य व्यास मुनि भये ऋषिन के माहिं।
पराशर्य्य यश कहौं अब जो सुनि कलुष नशाहिं ॥
सो० चिदचिदीश निर्धार कियो स्वरूपादिक बरनि।
काढ़ो मथि श्रुति सार रचिके विष्णुपुराण बर ॥

शुकमुनि सुरतटिनी तट जाई। तत्व निरूपण किय सुखदाई ॥
सब ते श्रीपतिपर बरने इमि। शौनक बिष्णुधर्म मैं पुनि तिमि ॥
बिष्णु परत्व कियो निरवारण। बरने उत्पति थिति लय कारण ॥
बिधि शिवादि सब लोकनियंता। मोक्षदानि केवल भगवंता ॥
तिनहि महर्षिन हूँ शिर नायो। सर्वोत्कर्ष व्यास पद पायो ॥
देवर्षिन मैं यमि ऋषि नारद। कहे जात बिज्ञान बिशारद ॥
कह्यो सुदर्शन शङ्ख सुअंका। जे भुजमूल धरहिं अकलंका ॥
हरि को नाम रसन नित भ्राजै। हरिचरणाकृति तिलक बिराजै ॥
तुलसीमाल कंठ छबि पावै। तिनकी अनुचरता मोहिं भावै ॥
दशशत शाखा युत सुखरूपा। चहुँ वेदन को अर्थ अनूपा ॥

दो० द्रविड़प्रबन्ध कियो महा करि सब को अधिकार।
नाथमुनिहिं पुनि करि कृपा उपदेश्यो सुखसार ॥
सो० ताते मुख्य शठारि योगीशन की मण्डली।
यतिकुलकमलतमारि तैसेहिं नाथादिकन ते ॥

अभयप्रदान भूमि प्रकटायो। चरमअर्थ भूतल दरसायो ॥
ऋषिप्रोक्त प्रमाण व्याख्याना। दिव्यप्रबंध अर्थ बिधि नाना ॥
कियो प्रचार सहित बिस्तारा। श्रीभाष्यादिक ग्रंथ उदारा ॥

श्रीबैष्णवसिद्धान्त सुहायो । अपने नाम लोक प्रगटायो ॥
ताते श्रीयतिभूमिनरेशा । नाथादिक ते भये सुदेशा ॥
बहुरि दाशरथि आदिक जेते । शिष्य समूह तेजनिधि तेते ॥
तिन सबहू ते निःसन्देहा । श्रेष्ठ यतीश सर्वमत एहा ॥
ताते लक्ष्मणगुरु जग माहीं । लोकगुरू कछु संशय नाहीं ॥
उनके दिव्य बिशद सम्बन्धा । बधिर मूक पँगुरे अरु अंधा ॥
सब गुणहीन दीन अघ लीना । लहत मोक्ष मतिमंद मलीना ॥

दो० पांवरहु गति पावहीं बिशदन की कह बात ।
बैभव यतिकुलचन्द को कासौं बरनो जात ॥

सो० मन यतीशपद ध्यान करिये सदा तजि मोह मद ।
जो चाहत कल्यान श्रीनिवास कैंकर्य्य मय ॥

इतिश्रीप्र० रामानुजे सर्वमुख्यत्ववरणनन्नाम द्विषष्टितमोध्यायः ॥

हरिआयसु लहि जगत अधारा । जगरक्षा हित नर तन धारा ॥
अमित युक्ति अगिनित परमाना । सद्गुरुमूर्त्ति स्वयं भगवाना ॥
माता पिता बंधु सबही बिधि । सर्वदेश रक्षक करुणानिधि ॥
सो गुरुमूर्त्ति यतीश्वर माहीं । स्थित सबबिधि कछु संशय नाहीं ॥
उनके चरणकमल की सेवा । सब कौ उचित मानि परदेवा ॥
कह अतेव गोबिंद कूरेशा । यतिपति बिनु शरणत्व न लेशा ॥
गोबिंद कूरेशादि महाना । ताही ते निश्चय यह आना ॥
बिनु यतिराजचरणपंकजदोउ । भवनिधितरि न सकत कबहूं कोउ ॥
तिनके गुरु साक्षात शठारी । कारण मात्र अपर गुरुभारी ॥
यह सिद्धान्त होत दृढ़ याते । श्रीशठकोप सूक्ति निज जाते ॥

दो० रामानुज अवतार के शूचक वाक्य पुनीत ।
बरणन कीन्हे प्रेमबश सादर सहससुगीत ॥

सो० यतिनायक सम्बन्ध महापूर्ण आदिक गुरुन ।
पायो शिष्यनिबन्ध परपुर कूरेशादिकन ॥

ताते आचारज की मूरति । यतिपति मध्य यथाबिधि पूरति ॥
जे गुरुपंक्ति समर्थ बिशेषा । करै जो तहँ बिश्वास अशेषा ॥

तिनहि न प्राप्त होय कछु दोषा । गुरहु प्रसाद कराहिं नहिं रोषा ॥
अस्तवरत्न मध्य यामुनमुनि । अर्थ सो प्रकट कियो ताकी धुनि ॥
राममिश्र कमलाक्ष बिहाई । नाथमुनी की करी बड़ाई ॥
उभय लोक त्राता गुरुदेवा । शिष्यहि उचित जन्म भरि सेवा ॥
उनको कृत उपकार अपारा । शिष्यहि माननीय अति भारा ॥
शिष्यस्वरूपोज्जीवन कारण । गुरु तजि अपर न कोउ भवतारण ॥
मधुरकवीश्वर आदि महाना । यहै अर्थ तिनके मन माना ॥
जब क्रमिकंठ चोलनृप व्याजा । पश्चिम दिशहि गये यतिराजा ॥

दो० यति शास्त्रोपन्यास तब सुनि तहँके विद्वान ।
चकित भये लखि तिनन प्रति कह प्रभु बचन प्रमान ॥
सो० हम कीन्हो यह काज परमाचारज ग्रंथ लखि ।
यामुनार्य्य गुरुराज जो मिलते इक दिवस हू ॥

छन्द त्रोटक ॥

तिनके सहवास प्रभाव ते हौं । रचतो सिढ़ियां महि ते हरि लौं ॥
तिहि मारग लोक अशेष तहाँ । पहुँचावत लै कमलेश जहाँ ॥
यमि दिव्य समर्थ यतीश्वर की । लखिजाति न तादृश ईश्वर की ॥
तिनके सम्बन्ध अघी बहुधा । बिनहीं श्रम पावहिं धामसुधा ॥
यह पंचमयत्न महाबिशदं । उर आनि यतीश्वर युग्मपदं ॥
दृढ़ भक्ति करै अति सादर जे । कृतकारज होत सदा नरते ॥

इतिश्रीप्र० आचार्य्य बैभवन्नाम त्रिषष्ठितमोध्यायः ॥ ६३ ॥

एक समय निज मठ यतिभूपा । श्रीमद्रामायण सुखरूपा ॥
कालक्षेप करत शिष्यन प्रति । कही बिभीषण की शरणागति ॥
धनुर्दास सो सुनत बिरागे । सहसहि उठन तहांते लागे ॥
लखि लक्ष्मणगुरु पूछी बाता । काहे उठे जात तुम ताता ॥
धनुर्दास तब कह कर जोरी । बानी बिनय सुधा रस बोरी ॥
रावणअनुज दार पुत्रादी । सब तजि शरण भये निरुपाधी ॥
निरालम्ब थित भये आकाशा । बिषयांतर ते परम निराशा ॥
सब प्रकार रक्षक प्रभु मानी । कहत बदन अति आरत बानी ॥
तबहुं भालु कपि अति रिसियाये । पापवंत कहि मारन धाये ॥

हमतौ सुत बित नारिहि माहीं । रहत मग्न मन सहित सदाहीं ॥

दो० तातें रघुबर की सभा युक्त भालु कपि बृन्द ।
तहँ हमरो अधिकार नहिं सुनियै करुणाकन्द ॥

सो० बोले कृपानिधान श्रीबैष्णवन समूह मधि ।
तुम सौं करैं बखान तुम्हरो हित सुत सुनौ सो ॥

महापूर्ण गये श्रीपति गेहा । तौ हमहूं सन्देह न एहा ॥
जो यामुनमुनि मोक्ष लही है । तौ पूर्णहुँ की मुक्ति सही है ॥
या क्रम पूर्वाचार्य्य निकाया । गये परधाम तौ उनकी दाया ॥
उनके शिष्य अवशि तहँ जैहैं । नित्य दास्य श्रीपतिकी पैहैं ॥
हमरे प्रथमाचार्य्य शठारी । श्रीमुख कह्यो प्रबन्ध पुकारी ॥
प्राप्त भये हम परपुरधामा । उनके आप्त बचन अभिरामा ॥
तातें परपुर यात्रा उनकी । है निश्चय पुनि हम सबहुन की ॥
रहिये यह निश्चय करि ताता । बहुरौं पुरस्कार श्री माता ॥
तातें सब आत्मन की मुक्ती । सुलभ लखाति लोक यह युक्ती ॥
नित्ययोग श्री को हरि संगा । ता शृंखला जे बंधे अभंगा ॥

दो० तिन मैं जो काहू लही मोक्ष तौ सब निरधार ।
पावैंगे परपद बिमल यह अति सुदृढ़ बिचार ॥

सो० सचिव बिभीषण चारि प्रथक न शरणागति करी ।
भये सकल अधिकारि अभयदान रघुनाथ के ॥

तातें जो हम परपुर जैहैं । शिष्य हमारेहु वह पद पैहैं ॥
निश्चय करि यह अर्थ पुनीता । सुख सौं रहौ छाड़ि भवभीता ॥
रहे शत्रुहन भरत समाश्रित । मधुरकवीश आदिगुरु आश्रित ॥
गोदा बिष्णुचित्त आश्रय करि । ऐसेहि अपर महानहुँ उर धरि ॥
छल बिहीन सद्गुरु सिवकाई । श्रीपति प्राप्ति हेतु सुखदाई ॥
सदाचार्य्य परमार्य्य उदारा । करै सदा तिनको अनुसारा ॥
ज्ञानवान देशिक जा ठाईं । दिव्यदेश सब रहत तहाईं ॥
सकल वेद सम्मत यति बानी । जन कल्याण अखिलकी खानी ॥
सुनि सब श्रीबैष्णव अनुरागे । धनुर्दास बिशेष सुखपागे ॥

याबिधि यतिपति को सम्बन्धा । है सद्गति को परम निबन्धा ॥

दो० अरु उनके पदकमल की परम प्राप्य सिवकाय ।
श्रीबैकुण्ठ बृषाद्रि पुनि नारायणगिरिराय ॥

सो० इत्यादिक अस्थान अष्टोत्तर शत श्रीश के ।
तहँ जो बसत भगवान बासुदेव आदिक सकल ॥

जब यतिशेखर भूतल आये । भूतपुरी सादर सब छाये ॥
बास कियो यतिपति उर माहीं । कबहूं बिलग होत सो नाहीं ॥
ताते लहत जो लोग बिमल फल । कीन्हे हरि कैंकर्य सकल थल ॥
सोइ फल भाष्यकार पद पूजे । होत प्राप्त नहि साधन दूजे ॥
कर्म ज्ञानआदिकबहुसाधन । कलि मति बिकल न होय अराधन ॥
श्रीरामानुज पद सिवकाई । सुलभ सुखद सुरधेनु सुहाई ॥
रामानुज पावन यह नामा । जाप करत नाशहिं अघ नाना ॥
रामानुज चतुराक्षर त्यागी । मंत्र न भव ग्रह भंजन लागी ॥
रामानुज पदपङ्कज पूजा । है पुरुषारथ परम न दूजा ॥
याबिधि करत रंगपुर गाना । बरदाबिष्णु कूरेश सुजाना ॥

दो० रंग नाम बैष्णव बहुरि श्रीरामानुज नाम ।
मानत भये प्रपन्न हित गायत्री सुखधाम ॥

सो० जो न होत संसार रामानुज चतुराक्षरी ।
क्यो जाते भव पार हम से नर साधन रहित ॥

करामलक जिन ईश दिखायो । तिनको बिग्रह दिव्य सुहायो ॥
मानतपरमप्राप्यअपने हित । याबिधि प्रभुआश्रत जोबिमलचित
ते मम प्राप्य सदन यतिराया । उनको दास करौ करि दाया ॥
निज भक्तन मधि भक्ति अमाया । देउ नाथ मन बच अरु काया ॥
सुनि मन मुदित यतीश उदारा । कियो प्रपन्न कोटि स्वीकारा ॥
ताहि गाथ रंगार्य्य सुजाना । चरमोपाय बिधान बखाना ॥
महालक्ष्मि अरु श्रीपति दोऊ । करिके पुरस्कार जो कोऊ ॥
भाष्यकार शरणागत होई । भवबन्धन ते छूटै सोई ॥
जिमिशतकोटिचरितरघुपतिके।तिमिमनबचन अगोचरयतिके॥

बिनु तरणी भुजबल नर कोई । जलनिधि पारहि होय तौ होई॥

दो० यतिपति चरित गँभीर अति अगिणित अमित प्रकार ।
काहू की समरथ नही बरणत पावै पार ॥

सो० यतिपति कृपा प्रसाद कह्यो यथाश्रुत भक्ति युत ।
शमन अशेष विषाद सज्जन विस्तारित करौ ॥

जिमि कोशलपुर बसिरघुनाथा । कियो जगत हित भ्रातनसाथा॥
तैसेहि रंगधाम गुरुलक्ष्मण । जग रक्षण किय सहित शिष्यगण॥
रामराज जिमि प्रजा अदीना । शांत धर्मरत रोग बिहीना ॥
तिमि लक्ष्मण गुरु रक्षित लोका । बिष्णुधर्म पर भये बिशोका॥
दीर्घआयु सब सुकृति महात्मा । लखि न परत जग कतहुं दुरात्मा॥
चारौ चरण धर्म तिहि काला । कृतयुग सम बर्त्यो कलिकाला॥
समय उचित बारिदबरषहिंजल । पूरितमहि कृषिअंकुर फलदल॥
धर्मवान नृप भये तिहिअवसर । सब नर बिगत क्रोध मद मत्सर॥
याबिधि यतिपति काल सुहायो । जग परपुर कछु भेद न पायो॥
यम अरु चित्रगुप्त व्यापारा । भयो निवृत्त यतिपति अवतारा॥

दो० जिमि रुक्मांगद के समय भई महि बिगत अधर्म ।
यतिपति अवसर तिमि प्रकट भयो लोक सद्धर्म ॥

सो० लीलामनुज यतीश दिव्य चरित तिनके बिशद ।
रहत नही अघ लेश जे सप्रेम गावैं सुनैं ॥
शुद्धसत्व मय धाम बिधि शिवादि हू कौ अगम ।
यतिनायक गुणग्राम गाय लहत नर सहज सो ॥
जगमंगल हित रूप धरि प्रकट्यो परमार्थ जिन ।
नमोनमो यतिभूप पारंगत वेदान्त के ॥

इतिश्रीप्र० भाववरणनन्नाम चतुःषष्टितमोध्यायः ॥ ६४ ॥

याबिधि बैभव बिपुल समेता । राजत प्रभु श्रीरंगनिकेता ॥
साठि बर्ष बीते यह धामा । साठि भूतपूरियादिक ग्रामा ॥
लोकानुग्रह मय सुखसानी । बीस अधिक शत वर्ष बिहानी ॥
वेदन के सब बचन सुहाये । सबहि बिष्णुमय प्रकटि दिखाये ॥
पूर्वसिंधु ते पश्चिमसागर । सेतुबन्ध हिमिशैल उजागर ॥

तासुमध्यअशिष्ययतिपतिको।लखिनपरतकोउमनुजकुमतिको॥
इमि निज उदय भानु यतिराया। हरिमाया मय तिमिर नशाया॥
ताते जग अगिणित नर वृंदा। पावत भये मोक्ष सानंदा॥
देख्यो नहि बहुकाल फणीशहि।अपर बिचार भयो तब श्रीशहि॥
प्रथम बिचार रहो सो भुलाने। देखन को लोचन अकुलाने॥

दो० तब योगींद्रहु के मनहि तैसोई भयो बिचार।
सेवन कौ बैकुण्ठपति बाढ़ी प्रीति अपार॥

सो० तब बोले रंगेश यह कह बात बिचारहू।
बंदि चरण कह शेश मम विज्ञापन सुनिये प्रभु॥

पुरुष आयु शताब्द यह काला। तुम निश्चय कीन्ही जनपाला॥
कालातिक्रम भो प्रभु मोही। सुनत कहो जनदूषक द्रोही॥
तात काल मम कृत जग माहीं। रहौ और कछु काल यहांहीं॥
मम आयसु मम सेवा माहीं। तुमको सुत कछु क्षति यहँ नाहीं॥
याबिधि रंगनाथ कह यद्यपि। मांगी मोक्षहि यतिपति तद्यपि॥
मानि बिनय तब रंगमहीशा। मागौ बर कछु कह जगहीशा॥
सुनि मन मुदित यतीश्वर कहई। जे तवकृपा ममाश्रत अहई॥
ते चरमावधि मम सम्बन्धा। लहहिं परमपद सहित निबन्धा॥
एवमस्तु कहि जनकुलपाला। याय तीर्थ प्रसाद अरु माला॥
श्रीशठकोप राखि यति सीसा। बहु सन्मानि बिदाकिय श्रीसा॥

दो० पुनि पुनि दण्ड प्रणाम करि आयसु लहि यतिनाथ।
निज मठ कौ आवत भये लिये बैष्णवन साथ॥

सो० तहँ सब बैष्णव जोरि बाक्य बहत्तरि करुणमय।
निगमागमहि निचोरि भूरिदान प्रभु करत भये॥

सुनौ सकल श्रीबैष्णाव वृंदा। कहौं परम हित अशुभ निकंदा॥
करिबे योग्य अर्थ को सारा। तुम सबको स्वरूप आधारा॥
निजदेशिकश्रीबैष्णावगनकी। करियेदास्य सम मानि दुहुनकी॥
पूर्वाचार युक्त बचनन को। करै बिश्वास न इतर सबन को॥
ह्वै न रहै इंद्रिन को किंकर। अरु सामान्य शास्त्र मधि रुचिपर॥

भगवद्विषयक शास्त्र पुनीता । तामधि नितप्रति रहै सप्रीता ॥
सद्गुरु कृपा जो ज्ञान प्रकासा । पुनि न होय शब्दादिक दासा॥
शब्दादिक बिषयन कौ सम करि । देखै सब इंद्रिन कौ दम करि॥
चंदन पुष्पादिक ताम्बूला । सबते रुचि त्यागे निर्मूला ॥
श्रीश नाम कीर्त्तन जो प्रीती । सोई हरिभक्तन नाम प्रतीती ॥

दो० महाभागवत आश्रयण हरिप्रापति कौ हेतु ।
उनकी आयसु मे रहै लखि भवसागर सेतु ॥
सो० हरि हरिजन कैंकर्य्य तजि रागादिक भयो प्रबल ।
होय यद्यपि बुधवर्य्य तद्यपि नाशहि कौं लहत ॥

अनुष्ठान जो बैष्णव ठानै । फल मय लखै उपाय न मानै ॥
कबहूँ महाभागवत माहीं । एक बचन कहि बोलिये नाहीं ॥
श्रीबैष्णव दरशन अभिरामा । होतहि कीजै प्रथम प्रणामा ॥
हरि हरिजन समीप जब जाई । पाइँ पसारि न बैठे भाई ॥
हरि गुरु बैष्णव मंदिर धाईं । कबहूं पग करि सोइये नाईं ॥
दिनप्रति कहै शयन ते जागी । श्रीगुरुपरम्परा अनुरागी ॥
महाभावत लखि हरि सन्निधि । मंत्रराज जपि करै प्रणाम बिधि॥
श्रीबैष्णवन करत हरि कीर्त्तन । देखि तहां ते बिनु कृत पूजन ॥
उठि जो जाय बीच तिहिकाला । ताहि होत अपचार बिशाला॥
सुनत श्रवण भागवत अवाई । ल्यावै बोलि दूरि कछु जाई ॥

दो० चलत समय उनके बहुरि पहुचावै कछु दूरि ।
जो न करै याभांति तिहि दोष होत अति भूरि ॥
सो० आतमयात्रा हेतु बिनयादिक शेषत्व तजि ।
बुधसम्मत श्रुतिसेतु जो अनुसरै न मोह बश ॥

प्राकृतजनन सदन नित जाई । तनयात्रा हित नाम सुनाई ॥
नियमादिक तजि रहै जो बैष्णव । तासु स्वरूप हानि जानौ तब॥
हरि मठ गोपुर यान लखाहीं । अंजलि करै तुरत सहसाहीं ॥
इतर देव यानादिक देषी । करै न तहं आश्चर्य्य बिशेषी ॥
तैसेहिं आनदेव कीर्त्तन सुनि । बिस्मित होय न ताहि मनहि गुनि॥

हरि हरिजन कीर्त्तन सुनि काना । पुण्यपुरुष जो करत नितगाना॥
सो सुनि जो नहि होय सुखारी । करै कुतर्क तौ पातक भारी ॥
लांघिये नहि श्रीबैष्णाव छाहीं । निज प्रतिबिंब छुवाइये नाहीं॥
संसारी नर जो छुइजाई । बैष्णाव परसि दोष सो जाई ॥
श्रीबैष्णाव दरिद्र बश जानी । आदर करै न कहि प्रिय बानी ॥

दो० दासोहं कहि बैष्णवहि करत प्रणाम निहारि ।
आदर तासु करै नहीं लगै दोष अति भारि ॥
सो० वैष्णव निद्रालस्य जन्मादिक सामान्य लखि ।
प्रकटै सोऽ कालुष्य दोष त्यागि गहिये गुणहि ॥

हरि हरिजन पादोदक लीजै । प्राकृत नर समीप नहि पीजै ॥
जो तत्वत्रय ज्ञान बिहीना । नहि रहस्यत्रय ज्ञान प्रबीना ॥
लीजै नहि पादोदक तासू । जो मम बचन करै बिश्वासू ॥
अनुष्ठान अरु ज्ञान समेता । सदाचार रत निपुण बिबेका ॥
याबिधि लखि पादोदक लीजै । नित्यनियम करि सादर पीजै॥
भक्ति बिरति रत बैष्णाव ज्ञानी । चरमजन्म तिनको मन मानी॥
कीजै उर बिश्वास बिशेषी । प्रीति पुनीत भागबत् लेषी ॥
प्राकृत पुरुषन के ग्रह माहीं । हरिपादोदक पीजै नाहीं ॥
पुनि तहं करै नहीं हरि सेवा । जिनके उरग्रह हरि तजि देवा॥
प्राकृत सन्मुख तीर्थ प्रसादा । दिव्यदेश लीन्हे न बिषादा ॥

दो० श्रीबैष्णवन कृपा करि बिष्णु समीप प्रसाद ।
दीन्हो तहँ न बिचारियै उपबासादि बिबाद ॥
सो० बिष्णुप्रसाद पुनीत सब व्यघ्नन कौ नाशही ।
लीजै ताहि अभीत करिय न बुधि उच्छिष्ट की ॥

निज गुण श्रीबैष्णाव के पासा । कबहूं नहि कीजियै प्रकासा ॥
पुनि तिनके समीप औरन को । तिरस्कार नहि करियै जनन को॥
समीचीन बैष्णाव शुचि गाथा । करिये न साम्य बुद्धि तिन साथा॥
भूलि जो प्राकृत नर परसाई । तासु दोष याभांति नशाई ॥
बस्त्रन युत तन मज्जन कीजै । श्रीबैष्णाव पादोदक पीजै ॥

भगवद्विषयक शास्त्र पुनीता । तामधि नितप्रति रहै सप्रीता ॥
सद्गुरु कृपा जो ज्ञान प्रकासा । पुनि न होय शब्दादिक दासा॥
शब्दादिक बिषयन कौ सम करि । देखै सब इंद्रिन कौ दम करि॥
चंदन पुष्पादिक ताम्बूला । सबते रुचि त्यागे निर्मूला ॥
श्रीश नाम कीर्त्तन जो प्रीती । सोई हरिभक्तन नाम प्रतीती ॥

दो० महाभागवत आश्रयण हरिप्रापति को हेतु ।
उनकी आयसु मैं रहै लखि भवसागर सेतु ॥
सो० हरि हरिजन कैंकर्य्य तजि रागादिक भयो प्रवज ।
होय यद्यपि बुधवर्य्य तद्यपि नाशहि कौ लहत ॥

अनुष्ठान जो बैष्णव ठानै । फल मय लखै उपाय न मानै ॥
कबहूँ महाभागवत माहीं । एक बचन कहि बोलिये नाहीं ॥
श्रीबैष्णव दरशन अभिरामा । होतहि कीजै प्रथम प्रणामा ॥
हरि हरिजन समीप जब जाई । पाइँ पसारि न बैठै भाई ॥
हरि गुरु बैष्णव मंदिर घाईं । कबहूं पग करि सोइये नाईं ॥
दिनप्रति कहै शयन ते जागी । श्रीगुरुपरम्परा अनुरागी ॥
महाभावत लखि हरि सन्निधि । मंत्रराज जपि करै प्रणाम बिधि॥
श्रीबैष्णवन करत हरि कीर्त्तन । देखि तहां ते बिनु कृत पूजन ॥
उठि जो जाय बीच तिहि काला । ताहि होत अपचार बिशाला॥
सुनत श्रवण भागवत अवाई । ल्यावै बोलि दूरि कछु जाई ॥

दो० चलत समय उनके बहुरि पहुचावै कछु दूरि ।
जो न करै याभांति तिहि दोष होत अति भूरि ॥
सो० आतमयात्रा हेतु बिनयादिक शेषत्व तजि ।
बुधसम्मत श्रुतिसेतु जो अनुसरै न मोह बश ॥

प्राकृतजनन सदन नित जाई । तनयात्रा हित नाम सुनाई ॥
नियमादिक तजि रहै जो बैष्णव । तासु स्वरूप हानि जानौ तब॥
हरि मठ गोपुर यान लखाहीं । अंजलि करै तुरत सहसाहीं ॥
इतर देव यानादिक देषी । करै न तहं आश्चर्य्य बिशेषी ॥
तैसेहिं आनदेव कीर्त्तन सुनि । बिस्मित होय न ताहि मनहि गुनि॥

हरि हरिजन कीर्त्तन सुनि काना । पुण्यपुरुष जो करत नितगाना ॥
सो सुनि जो नहि होय सुखारी । करै कुतर्क तौ पातक भारी ॥
लांघिये नहि श्रीबैष्णव छाहीं । निज प्रतिबिंब छुवाइये नाहीं ॥
संसारी नर जो छुइजाई । बैष्णव परसि दोष सो जाई ॥
श्रीबैष्णव दरिद्र बश जानी । आदर करै न कहि प्रिय बानी ॥

दो० दासोहं कहि बैष्णवहि करत प्रणाम निहारि ।
आदर तासु करै नहीं लगै दोप अति भारि ॥
सो० बैष्णव निद्रालस्य जन्मादिक सामान्य लखि ।
प्रकटै सोइ कालुष्य दोप त्यागि गहिये गुणहि ॥

हरि हरिजन पादोदक लीजै । प्राकृत नर समीप नहि पीजै ॥
जो तत्वत्रय ज्ञान बिहीना । नहि रहस्यत्रय ज्ञान प्रबीना ॥
लीजै नहि पादोदक तासू । जो मम बचन करै बिश्वासू ॥
अनुष्ठान अरु ज्ञान समेता । सदाचार रत निपुण बिबेका ॥
याबिधि लखि पादोदक लीजै । नित्यनियम करि सादर पीजै ॥
भक्ति बिरति रत बैष्णव ज्ञानी । चरमजन्म तिनको मन मानी ॥
कीजै उर बिश्वास बिशेषी । प्रीति पुनीत भागवत लेषी ॥
प्राकृत पुरुषन के ग्रह माहीं । हरिपादोदक पीजै नाहीं ॥
पुनि तहं करै नहीं हरि सेवा । जिनके उरग्रह हरि तजि देवा ॥
प्राकृत सन्मुख तीर्थ प्रसादा । दिव्यदेश लीन्हे न बिषादा ॥

दो० श्रीबैष्णवन कृपा करि बिष्णु समीप प्रसाद ।
दीन्हो तहँ न बिचारियै उपबासादि बिबाद ॥
सो० बिष्णुप्रसाद पुनीत सब ब्यञ्जन कौ नाशही ।
लीजै ताहि अभीत करिय न बुधि उच्छिष्ट की ॥

निज गुण श्रीबैष्णव के पासा । कबहूं नहि कीजियै प्रकासा ॥
पुनि तिनके समीप औरन को । तिरस्कार नहि करियै जनन को ॥
समीचीन बैष्णव शुचि गाथा । करिये न साम्य बुद्धि तिन साथा ॥
भूलि जो प्राकृत नर परसाई । तासु दोष याभांति नशाई ॥
बस्त्रन युत तन मज्जन कीजै । श्रीबैष्णव पादोदक पीजै ॥

बैष्णव गुण अनुभव सिवकाई । इक क्षणहू कीन्हे बिनु भाई ॥
कीजै नहीं इतर व्यापारा । दिनप्रति याबिधि करिये बिचारा ॥
पुनि दिनप्रति घटिकाद्वय एका । गुरु सद्गुण बरणिये करिटेका ॥
बहुरौं एक घरिहु प्रतिबासर । प्रीति प्रतीति राखि उर अंतर ॥
शठजितादि प्रबन्ध कौ गावै । अथवा निज गुरुकृत मन लावै ॥

दो० तन अभिमानी जो मनुज संग न कीजै तासु ।
बहुरौं बैष्णव चिन्ह करि बिषयातुर मन जासु ॥
सो० याबिधि बंचक जोय ताहू को सँग नहि करै ।
परनिन्दा रत होय तासौं सम्भाषण तजै ॥

होय देवतांतर भक्तन को । कर्म बिबश जो संग बिमुखन को ॥
करै सदा सो दोष निपाता । श्रीबैष्णवन संग करि बाता ॥
जे बैष्णवन लगावैं दोषा । तिनसौं भाषण तजै सरोषा ॥
अरु जे गुरु अपचार कराहीं । तिनको बदन देखियै नाहीं ॥
जे द्वयमंत्र निष्ठ हरिदासा । तिनको सदा करै सहवासा ॥
अन्य उपाय निष्ठ जे लोगा । तिनसौं कबहुंन करै संयोगा ॥
प्रपदन धर्म युक्त जे प्रानी । तिनको संग करै सुख मानी ॥
अर्थ कामपर नर दुखदाई । तिनको संग न करै भुलाई ॥
जे रहस्यत्रय सार सुजाना । तत्वत्रय बिज्ञान निधाना ॥
तिनको संग सदा सुखदाई । करै खोजि नतु बिपिन बसाई ॥

दो० सम्भाषण तिनसौं करै जे हरिनिष्ठ महान ।
अरु जो श्रीबैष्णव करै तिरस्कार अपमान ॥
सो० अपकारस्मृति त्यागि रहै मौन ह्वै वा समय ।
हरि पद प्रापति लागि हित करै श्रीबैष्णवन को ॥

औरौ कहौं सुनौ मन लाई । निगमसार सब बात बुझाई ॥
देखिये फल बड़ धर्म बिहीना । नहि वह कर्म सेव्य हित हीना ॥
हरि अर्पण कीन्हे बिनु कबहूं । करिये न भोजन आपति जबहूं ॥
तिमि फल दलपटादि श्रकचंदन । धारियै अर्पित करि जगबंदन ॥
लाभ साधनान्तर करि जोई । धन कामादि हेतु पुनि होई ॥

यद्यपि तासु प्राप्ति अनयाचित । ग्रहण करै नहि तबहुं कदाचित ॥
जात्यादिक को दोष बचाई । भोजन करै अन्न सुखदाई ॥
निज तनाप्रिय अरु शास्त्र अयोगा । हरि अर्पण न करै वह भोगा ॥
हरि अर्पित जो अन्न अरु पानी । भक्ति सुगन्धादिक सुखदानी ॥
ताहि प्रसाद बुद्धि करि लीजै । भोग्य बुद्धि नहि मनमैं कीजै ॥

दो० निष्ठ मंत्रत्रयअर्थ के, जे बैष्णव सिरमौर ।
नहि तिनके अपचार बिनु आत्मनाश कछु और ॥
सो० करै जे पुरुष सुजान मुखोल्हास तिनको सदा ।
नहीं तासु सम आन आत्ममोक्ष को हेतु कछु ॥

हित युत हरिभक्तन की पूजा । नहि पुरुषार्थ तासु सम दूजा ॥
तैसेहि उनके द्वेष समाना । आत्मनाश कारण नहि आना ॥
जे हरिअर्चा कौ शिल मानैं । आचारज मधि नर मति आनैं ॥
बैष्णव माहिं जाति बुधि जिनहीं । तिनको पादोदकजल गिनहीं ॥
सकल मंत्रमय उनके नामा । हरहिं त्रिबिधि पातक दिन थामा ॥
तिनहिं शब्द सामान्य समाना । मानहिं श्रीशहि जिमि सुर आना ॥
जिनके अस दुर्मति दुखदाई । तिनहिं नारकी जानौ भाई ॥
भक्तन को पूजन अपराधा । हरि ते दोनौ अधिक अगाधा ॥
हरि पादोदक सब सुखकारी । ताहू ते भक्तन को भारी ॥
ताते श्रीबैष्णव आराधन । करौ सजग तजि सब सिधि साधन ॥

दो० याबिधि प्रभु बरणन कियो निगमागम को सार ।
उभय लोक सुखप्रद सकल निर्मल सिष्टाचार ॥
सो० हर्षित सकल समाज मानि आपु कौ कृत्यकृत ।
धन्य धन्य यतिराज तुम बिनु को सिख देय इमि ॥

इतिश्रीप्र० चरमदशायां शिष्यजनायद्विसप्ततिबाक्योपदेशोनाम पंचषष्टितमोध्यायः ॥ ६५ ॥

याबिधि तीनि दिवस यतिभूपा । उपदेश्यो तत्वार्थ अनूपा ॥
मुक्ति हेतु अक्षर सुखकारी । सुनि शिष्यन भयो अचरज भारी ॥
तब सब पूछन कौ अभिलाषे । नाथ न कबहुं अर्थ इमि भाषे ॥

तातें शङ्का होति बिशाला। कहो हेतु ताको जनपाला॥
कहा जगत गुरु तब सो कारण। दिय परधाम हमहिं जनतारण॥
चौथे दिवस तहां हम जैहैं। नित्यदास्य अनुभव मन लैहैं॥
श्रीमुख बिरह बचन सुनि घोरा। परे सकल भूतल करि शोरा॥
निरालम्ब गुरु बिनु अति दीना। मानौ तरुवर मूल बिहीना॥
गुरु बियोग दुःसह अति आरत। देह त्याग हित बुद्धि बिचारत॥
तब यतिनाथ सकल समुझाये। सावधान करि बचन सुनाये॥

दो० जे जन मम बियोग वश तजिहैं तन अकुलाय।
शठजित यामुन पूर्ण की करौ सपत सनिभाय॥
सो० नही समागम होय तिनकौं नितसूरीन कौ।
सुनि डरपे सब कोय वचन भयंकर हित सहित॥

कहत भये तब सब कर जोरी। पुनि पुनि चरण सरोज निहोरी॥
प्रभुपदकमल दास्यतजि स्वामी। इक मुहूर्त्त हमसब अनुगामी॥
राखि न सकततनअतिदुखदीना। जलबिहीनजिमि ब्याकुलमीना॥
कहौ नाथ कछु तासु उपाई। यह सुनि करि बिचार यतिराई॥
तिनके तन अवलम्बन हेतू। पुनि जग रक्षण हित यतिकेतू॥
शुचि मुहूर्त्त बिग्रह निर्मायो। मानौ निज प्रतिबिम्ब सुहायो॥
ब्रह्मरंध्र सौं सूँघो ताही। आलिंगन करि शक्ति बसाई॥
मनौ दीप ते दीप प्रकाइयो। देखि सबन मन को दुख नाइयो॥
बिधिवत कीन्ही तासु प्रतिष्ठा। कह प्रभु सब सौं जो तव निष्ठा॥
है हम माहिं अधिक ताते अब। या मूरति के मध्य करौ सब॥

दो० मानौ निज परदेवता ह्वैहौ मंगलकोष।
इमि तुमकौ लखि होयगो मोहू कौ संतोष॥
सो० सुनि लक्ष्मणगुरु बयन नीके निज हितमय बिमल।
भयो सबन उर चयन शिर धरि तैसेहिं करत भये॥

यतिपति के अनेक बिग्रह बर। प्रकटित भये देश देशांतर॥
तिनमैं अतिशय मुख्य तीनि थल। भूतपुरी यदुगिरि रंगस्थल॥
बहुरि बिशेष भूतपुरि ताते। श्रीमन्नाथ जन्मथल जाते॥

जाबिधि निज अर्चा यतिनाथा । थप्यो भूतपुरि सुनौ सो गाथा ॥
पूर्व दाशरथि सुत बिद्वाना । श्रीरामानुजदास सुनामा ॥
सब गुण युक्त रहित सब दूषण । श्रीबाधूलबंश बर भूषण ॥
यतिपति चरणकमलशिरनाई । अंजलिकरि तिन बिनयसुनाई ॥
निज अवतारस्थल थापन हित । अर्चाबिग्रह देउ मृदुलचित ॥
जाते रक्षा होय हमारी । हम प्रभु जन तुम जन दुखहारी ॥
बिनती सुनि तिनकी सुखदाई । अंगीकार करी यतिराई ॥

दो० शिलिपन सौं मूरति रुचिर सब लक्षण संयुक्त ।
शुभ मुहूर्त्त करवाय पुनि भेटे आनँद युक्त ॥
सो० ऊर्द्ध स्वास के ब्याज धारण कीन्हो तेज निज ।
हर्ष्यो सकल समाज दीप प्रकट जिमि दीप ते ॥

याबिधि अर्चा रचि यतिभूपा । जनु दूजो प्रतिबिंब अनूपा ॥
तब यतीशकरि परमअनुग्रह । दियोतिनहिं वह पावन बिग्रह ॥
आप प्रतिष्ठा दिन प्रभु शोधा । हर्षि दाशरथि सूनु सुबोधा ॥
परम भक्ति युत बिग्रह लीना । भूतपुरी लै गये प्रवीना ॥
जो दिन निश्चय किय यतिनाथा । लै बिद्वान बैष्णवन साथा ॥
केशव हरि समीप पधराई । करी प्रतिष्ठा आगम गाई ॥
अभिषेकादि काल जलबासा । भयो यतीशहिं बहुत प्रयासा ॥
भो जब अर्चानयनोन्मीलन । बहो रुधिर यतिनायक नयनन ॥
आकस्मात खेद यतिपतितन । देखिभयो अचरज सबके मन ॥
तन आयास दिवस प्रभु केरो । मूर्त्तिप्रतिष्ठा दिन सोइ हेरो ॥

दो० बिस्मित भये लोक सब तब रामानुज दास ।
अर्चा अस्थापन कियो भूतपुरी सुखरास ॥
सो० कहि पठयो हरषाय यतिपति सौं बृत्तान्त सो ।
प्रभु शोधित दिन आय मूरति पधराई यहाँ ॥

ताते भूतपुरी यतिचंदा । सुजन चकोरन के सुखकंदा ॥
सकल कला पूरण अबताईं । देखि परत सबकौं वाठाईं ॥
याते यह थल मुक्तिप्रदायक । जो सेवै करि प्रीति अमायक ॥

पुनि सब दिव्यदेश पति जातें । यतिपति मध्य विराजत तातें ॥
सकलथलनते पावन यहथल । सब थलबसेजोहोतविमलफल॥
सोई फल किये भूतपुरि बासा । सबकौ सेव्य सहित विश्वासा॥
मोक्षार्थी तहँ रहै विशेषा । करि निर्माण कुटी सविवेका ॥
होय जो महापाप करि युक्ता । अथवा सकल पाप संयुक्ता ॥
नवत यतीश पदांबुज माहीं । नशहिं सकल कछु संशय नाहीं॥
चैत्र मास आर्द्रा नक्षत्रा । करहिं जो प्रभु अभिषेक पवित्रा ॥

दो० सकल कलुष तजि ते मनुज विष्णु परमपद जात ।
पुनि जग सोइ कृतकृत्य जो यतिपति पदजलजात ।

सो० भक्तिमान दृढ़ होय सर्व पूज्य सोई भूमितल ।
छल प्रपंच सब खोय हेतु छांड़ि अनुरागई। ॥

छन्द हरिगीतिका ॥

यतिनाथपदपाथोज सेवा परमप्राप्य सो ताहिते ।
अतिनर प्रभाव बहोरि तिनको को सकै सब गायके ॥
यह भूतपुरि अर्चावतार यतीश महिमा पावनी ।
आद्यंत जगहित हेतु पूरण अघ समूह नशावनी ॥
सो जानि जो मन आनि प्रीति समेत नर सेवन करै ।
कृतकृत्य सोजानिये जगत पूर्वोक्त विधिकरि अनुसरै॥
श्रुति सुमृति लौकिकसार निरुपम अति अदोप बखानिये ।
मोक्षैक कारण जानि सेवहि ब्रह्मवित सोई जानिये ॥

इतिश्रीप्र०श्रीभूतनगरीरामानुजार्चावतारमाहात्म्यवर्णनन्नाम षटषष्टितमोध्यायः ॥ ६६ ॥

तापाछे सब श्रीबैष्णव गण । बसत जो रहे रंगथल ताक्षण ॥
करी प्रार्थना यतिपति पाहीं । कर संपुट शिर धरि महि माहीं॥
बर्त्तितव्य जो अंश कृपाला । कहौ हमहिं करि कृपा विशाला ॥
सुनि पुनि बोले यतिकुलपूषण । मधुर मंजु बर बचन विभूषण॥
ज्ञानवंत प्रपन्न जो होई । यह प्रकार सौं बरतै सोई ॥
तन निर्बाह कर्म अनुसारा । हरि आधीन आतम निस्तारा ॥
उभय काज संदेह न करई । निर्भर बुद्धि हृदय नित धरई ॥

चिंता करै तासु हित जोई । आत्मसमर्पण मिथ्या होई ॥
बहुरौं बोले सब अनुगामी । सुनिये अपर बिनती कछु स्वामी ॥
जब लौं देह न गिरै कृपाला । कौन मार्ग सौं बितवैं काला ॥

दो॰ बोले पुनि करुणायतन सुनौ महात्मा लोग ।
नित्यदास्य तब मिलैगी जब श्रीपतिसंयोग ॥
सो॰ तब लौ करै जो कर्म तामै साधन बुधि तजै ।
किङ्करता निज धर्म आनि मनहि नित कीजिये ॥

परमप्राप्य श्रीपति सिवकाई । अरु वैष्णाव कैंकर्य्य सुहाई ॥
करौ सदा सो प्रीति समेता । ताको सुनौ प्रकार सचेता ॥
सुनि श्रीभाष्य लोक प्रकटावहु । जो इतनी समरथ नहि पावहु ॥
शठजितादि दश योगि प्रबंधा । दिव्य न तहां हेयरस गंधा ॥
करौ सदा तिनको अभ्यासा । शिष्यन प्रति नित करौ प्रकासा ॥
यहौ न होय तौ दिव्य देश बसि । करौ तहां कैंकर्य देह कसि ॥
ताहू मैं बुधि लगै न भाई । तौ यादवगिरि मम मठ जाई ॥
बिरचि कुटी तन अभिमत खोई । बसौ तहां जो यहौ न होई ॥
तौ भरि जन्म द्वयार्थ निरंतर । अनुसंधान करौ उर अंतर ॥
जो याहू में बुद्धि न होई । चरमोपाय सुनौ सब कोई ॥

दो॰ युक्त ज्ञान भक्त्यादि जो बैष्णव पावौ कोय ।
उनकी आज्ञा मै रहौ दुराभिमानहि खोय ॥
सो॰ तीनि भांति के लोग हैं सिगरे संसार मैं ।
तहँ संयोग वियोग यथाविधि करै प्रपन्न जन ॥

अनुकूलहु बिरोधि पुनि अनुभय । सुनौ अर्थ इन तिहुँको चित दय ॥
श्रीबैष्णाव अनुकूल बखानौ । हरिद्वेषी बिरोधि जन जानौ ॥
अनुभय कहिय बद्ध संसारी । विष्णुद्वेष न भक्ति उर धारी ॥
अनुकूलन सौं रहै अनुकूला । करै न कछु तिनके प्रतिकूला ॥
वे प्रसन्न मन होयँ यथाबिधि । बुद्धिवंत करै कारज ताबिधि ॥
तजै बिरोधि अनल अहि जानी । संसारी तृणावत अनुमानी ॥
बैष्णाव संग उपज सुज्ञाना । तासौं प्राप्त होय कल्याना ॥

तातें सब विधि करे सप्रेमा । बैष्णाव सतसंगति करि नेमा ॥
तजै बिरोधिन को संसर्गा । संभाषणा सन्मान सबर्गा ॥
जे बिपरीत बुद्धि बश कादर । अनुकूलन को करहिं निरादर ॥

दो० अर्थलाभ के लोभ पुनि जे सेवहिं प्रतिकूल ।
सो लखि श्रीपति के हृदय उपजत है अति शूल ॥
सो० जिमि महराज कुमार पितु तजि याचै आनकौ ।
चक्रवर्त्ति दुखभार कहौं कौन सौं जायकहि ॥

तैसेहिं सकल अभीष्ट प्रदायक । दुखित होत लखि कमलानायक ॥
तातें अर्थ काम की आसा । नहि जायये बिरोधिन पासा ॥
पुनि तैसेहि संसारी तजिये । लाभ लोभहू करि नहि भजिये ॥
अरु तिनको कीन्हो सन्माना । अंतर रहै नहि प्रथम समाना ॥
जैसे चपला की चपलाई । तिमि खल प्रीति पुराणान गाई ॥
कबहुँ न होति सो कारजकारी । बैष्णाव प्रीति सकल दुखहारी ॥
कंचन लोहै अंतर जैसे । कौड़ी रत्न वीच पुनि तैसे ॥
ऐसेहि जानि तजिये प्रतिकूला । ग्रहणा करियै संगति अनुकूला ॥
सर्वकाल मधि अरु सब देशा । मुक्तिविचन्नणा खोजि सुवेशा ॥
श्रीबैष्णावन संग नित कीजै । दूरिते हरिबिमुखन तजि दीजै ॥

दो० गततृष्णा जे श्रीशजन तिनके संग निवास ।
करौ सदा आदर सहित ह्वैहै सकल सुपास ॥
सो० कौन सो फल जगमाहिं सतसंगति करि नहि मिलै ।
यह बिचारि मन माहिं सेइयै संतत संत जन ॥

इतिश्रीप्र० श्रीबैष्णावलक्षणानुवरणानन्नाम सप्तषष्टितमोध्यायः॥

इमि यतिनाथ कृपामृत साने । शास्त्रसारतम बचन बखाने ॥
अमित प्रकार बिशद उपदेशा । करि शिष्यन हरषे अति शेशा ॥
बहुरि सर्व हित रुचि मन आनी । भट्टारक दीक्षा प्रभु ठानी ॥
ल्याय संग रङ्गेश समीपा । करवायो प्रणाम यतिदीपा ॥
तीरथ अरु शठकोप दिवायो । बहुरि आप लै बचन सुनायो ॥
सुनौ सकल श्रीवैष्णाव वृन्दा । अब ये रंगपुत्र सुख कन्दा ॥

जगमैं श्रीसम्प्रदा बढ़ैहैं । तुम सबहुन के रक्षक ह्वैहैं ॥
इनकी आयसु मैं सब रहऊ । भक्ति सहित अति आनँद लहऊ ॥
इमि रङ्गेश समीप यतीश्वर । कहि प्रियबचन प्रमाण जगतगुर ॥
सेवासाम्राज रंगी को । कीन्हो भट्टारक शिर टीको ॥

दो० लोकानुग्रह शीलबपु रंगनाथ महराज ।
मन हर्षित अति होत भये देखि पुत्र को राज ॥
सो० सुजनन भौ आनंद देखि बिभव भट्टार्य्य को ।
यतिपति करुणाकन्द पूर्ण कृपा जिनपर करी ॥

तापाछे यतिसार्वभौमबर । रंगी आयसु पाय कृपाकर ॥
भट्टारक कर करगहि लीन्हो । सानँद गवन तहांते कीन्हो ॥
बहुरौं तिनसौं मध्य समाजा । आज्ञा करतभये यतिराजा ॥
पश्चिम दिश इक पंडित ज्ञाता । है वेदान्ति नाम बिख्याता ॥
बेगिहि तुम जीतौ सुत ताही । आनौ निज मत शास्त्र निवाही ॥
याबिधि कहत सबन के साथा । आये निजमठ यतिकुलनाथा ॥
तहां बहुरि निजशिष्यन केप्रति । भयेकरावत निज बियोग धृति ॥
मेरी सपत तुमहिं सब काहू । जो तन तजौ बिरह मम दाहू ॥
मानी सबन जो आयसु पाई । निश्चय करी चरण परसाई ॥
परमधाम यात्रा के बासर । प्रात बुलाय शिष्य सब सादर ॥

दो० भोजन करवायो सबहि पुनि अर्चकन बुलाय ।
क्षमा करौ अपराध मम तिनसों कहो सुनाय ॥
सो० बोले सब कर जोरि तुम रक्षक सब जगत के ।
क्षमि हमरी कृत खोरि सुत ज्यों नित रक्षा करी ॥

सर्वसुहृद तुम नाथ अबाधा । तुममैं अति अघटित अपराधा ॥
अब हम किमि बर्त्तिहैं सुखऐना । यह कहि सबन भरे जल नैना ॥
तिन सबहुन समुझाय यतिंदा । रङ्गेश्वर सेवा सानंदा ॥
सादर करि नित आगम नीती । रहौ बैष्णवन सौं करि प्रीती ॥
याप्रकारयतितिलकयथोचित । भाष्योश्रीमुखसबहुनको हित ॥
ह्वै कृतार्थ शिर गोविंद गोदा । चरण आंघ्रिपूर्णाङ्क समोदा ॥

धरि पौढ़े तब मिलि सब किंकर । लगे पढ़न उपनिषद बिशदबर ॥
ब्रह्मबल्लि भृगुबल्ली कोउजन । उचरत शठकोपादि प्रबंधन ॥
महापूर्ण पादुका मँगाई । रखवाईं सन्मुख सुख पाई ॥
यामुनार्य पदपङ्कज ध्याना । करत भये यतिपति भगवाना ॥

दो० माघशुक्लदशमी बिमल शनिबासर मध्यान ।
ब्रह्मरन्ध्र शिर भेदि किय विष्णुलोक प्रस्थान ॥

सो० शब्द भयो आकाश सकल बिकल सो सुनि भये ।
भयो धर्म्म को नाश अब इन बिनु संसार ते ॥

जब योगीश तजो यह लोका । लह्यो भाव भोगीश बिशोका ॥
एक मुहूर्त्त शिष्यगण दीना । रहे चित्र सम चेष्टा हीना ॥
पुनि सब हाहाकार पुकारे । धर्म हानि दुख व्याकुल भारे ॥
पुनि प्रभु उत्तरकृत्य मझारी । उद्यत भये शिष्यबर चारी ॥
दाशरथी कुरुकेश्वर गोविंद । आंध्रिपूर्ण निगमागम कोबिद ॥
तद्यपि मुख्य कुरुकेश्वर याते । गुरु उर सुत अभिमत रह जाते ॥
सब उत्तर कैंकर्य यथागम । भयो बिस्तार सहित यामुन सम ॥
गोविंदार्य्य यतीश अनंतर । उनके चरण राखि उर अंतर ॥
रंगपुत्र सँग रहि कछु काला । कीन्हो यतिसिद्धान्त बिशाला ॥
पुनि उनको वियोग दुखभारा । सहि न सके हरिपुर पगु धारा ॥

दो० चरमकर्म तिनको सकल लखि निगमागम रीति ।
रंगनाथसुत करत भये सिष्टाचार सप्रीति ॥

सो० तापाछे भट्टार्य रामानुजसिद्धान्त बर ।
गुनि सर्वोपरि कार्य भये बढ़ावत भूमितल ॥

दो० रंगनगर राजत सदा बिद्वानन के संग ।
कहत महार्थ निकर सबहि यतिसिद्धान्त अभंग ॥
भई प्रसिद्धि कीरति बिमल देशिक कृपा अनंत ।
जैसो यतिपति यश रुचिर हिमिगिरि सेतु प्रयंत ॥

इतिश्रीप्र०रामानुज चरमदशावरणनन्नाम अष्टषष्टितमोध्यायः ॥

आश्रत कल्पतरोवर रूपा । भाष्यकार गुरु यतिकुलभूपा ॥
तर तम अर्थ बिरोध निवारी । कियो निरूपण आनदकारी ॥

कहि वेदान्तसार सुखसारा । अरु वेदान्तदीप उजियारा ॥
वेदअर्थसंग्रह निरमायो । तिनको बिवरण भाष्य बनायो ॥
तहँ बरणी दुर्लभ हरिभक्ती । गद्यत्रय कहि सुलभ प्रपत्ती ॥
ताहू मैं न जिनहिं अधिकारा । तिनके हित निज चरण अधारा॥
सबहि दिखाय गये परधामा । तब कूरेशपुत्र अभिरामा ॥
रहि समीप गोबिंद गुरुजी के । युग वेदान्त पढ़त भये नीके ॥
रामानुज सिद्धान्त अनूपा । निर्बाह्यो नीके सुखरूपा ॥
दिव्य देश बासी द्विज कोई । देश सकल प्रजटन करि सोई ॥

दो० रंगधाम आवत भये रंगपुत्र के पास ।
चरण बंदि बिश्राम करि पायो सकल सुपास ॥
सो० रंगसूनु महराज तिनसौ बोले बचन मृदु ।
कहौ बिप्र किहि काज कहँते आये जात कहँ ॥

कौन कौन सुदेश तुम देखो । कौन कौन तहँ पण्डित पेखो ॥
तत्वअर्थ पारङ्गत जोई । हमसौं कहौ बिप्र तुम सोई ॥
कह द्विज सुनिये कृपानिधाना । देखे नाथ देश हम नाना ॥
पण्डित हू तहँ के सब देखे । प्रबल एकते एक बिशेखे ॥
तद्यपि यहां ते पश्चिम ओरा । है प्रभु यक पण्डित बरजोरा ॥
वेदान्ती कहिये जिहि नामा । जीते सब बुध बिद्याधामा ॥
अव्याहत ऐश्वर्य्य समेता । लोक प्रकाशित बसत निकेता ॥
आये हैं तहंते यह देशा । करिहैं प्रभु पुनि तहीं निवेशा ॥
यह कहि बिप्र गये वेदाचल । निवसत वेदान्ती जहं निश्चल ॥
वेदान्ती ढिग जाय कियो तब । भट्टारक वृत्तान्त प्रकट सब ॥

दो० पुनि आये श्रीरंगकौ भट्टारक ढिग क्षिप्र ।
तिनके पद बंदन किये परम कौतुकी बिप्र ॥
सो० तुम्हरे पठये नाथ वेदान्ती ढिग हम गये ।
प्रभु बैभव गुणगाथ कहि आये उनसौ तहाँ ॥

सुनि द्विज बचन रंगसुत बीरा । जीतन हित सो पंडित धीरा ॥
करत भये याभांति बिचारा । शुभ प्रबंध परकाल उदारा ॥

विरचे द्राविड़ भाषा माहीं । हरिप्रभाव मय प्रकट लखाहीं ॥
तिनसौं जीतो चाहिये ताही । यह मन गुनि हरि सन्मुख जाई ॥
करत भये तिनसौं बिज्ञापन । जो मोहि नाथ देउ अनुशासन ॥
पश्चिम दिश पण्डित वर कोई । वेदान्ती कहियत है जोई ॥
जासु बिजय करिबे के काजा । परपद जात कहो यतिराजा ॥
जीतैं तिहि करि आगमबादा । नाथकृपा यतिनाथप्रसादा ॥
सुनि रंगी अनुशासन कीन्हो । शिविकादिक समाज सब दीन्हो ॥
ध्वजा छत्र चँवरादि समाजा । भेरी शङ्ख आदि बहु बाजा ॥

दो० याविधि बिजयसमाज दै बिदा किये रंगेश ।
अतुलित बैभव संग करि कृपाकटाक्ष अशेश ॥
सो० करन चले भट्टार्य्य दिग्याज्ञा यतिनाथ की ।
सर्वदेश अनिवार्य्य यद्यपि वेदान्ती अजय ॥

इतिश्रीप्र० भट्टार्यबिजयवेदांती वृत्तांतकथनन्नाम
एकोनसप्ततिमोध्यायः ॥ ६९ ॥

चले रंगपति सुत मति धीरा । लिये संग शिष्यन की भीरा ॥
परिपालन हित यतिपति आयसु । पाय बहुरि रङ्गेश रजायसु ॥
यादवाद्रि ढिग पहुंचे जाई । वेदान्ती जहं बसत सदाई ॥
तहं आये कोइ पण्डित ज्ञाता । लहि वृत्तांत कही तिन बाता ॥
यह बैभव संयुत तिन पासा । गये नहीं मिलिहै अवकाशा ॥
जो संन्यासिन संग लै जैहौ । तौ तिनसौं भाषण करि पैहौ ॥
कहि तथेति सोइ वेष बनाई । बेदान्ती के सन्मुख जाई ॥
मांगी भिक्षा शास्त्रबाद की । अभिलाषा यतिपति प्रसाद की ॥
कहत मायमत परमधुरीणा । अहो आर्य तुम महाप्रवीणा ॥
आये करि परिब्राजक वेषा । हम निज मन निश्चय करिलेषा ॥

दो० हौ अवश्य भट्टार्य्य तुम नहि दूजो जग कोइ ।
मम सन्मुख शास्त्रार्थ हित भय तजिके थित होय ॥
सो० रंगपुत्र सुखअयन ऐसे ताको बचन सुनि ।
बोले मंजुल बयन हमहीं हैं कूरेशसुत ॥

वेदान्ती कह तुम्हरो रूपहि । कहत तुम्हारे महत अनूपहि ॥
नाथ दरशहीते हम जाने । तुमकौं श्रीबैष्णाव पहिचाने ॥
यह कहि उठिपद बंदि जोरि कर । पूजा करि पुनि कह्यो बचनबर॥
तत्वज्ञान कुशल यह काला । हैं आपुन बैष्णावकुलपाला ॥
सो हमसौं तत्वांश यथारथ । कहौ नाथ परमार्थ पदारथ ॥
तब वेदान्ती प्रति बिद्यानिधि । बरनो श्रीभाष्यार्थ यथाबिधि ॥
सुनि तत्वार्थ बिशद वेदान्ती । नाशी कुमति भई मन शान्ती ॥
तजि सिंहासन गतसन्देहा । भये शिष्य तब सहित सनेहा ॥
कहत बचन तब रंगपुरोहित । तुमपर रंगनाथ कीनो हित ॥
अब नहिं कहुं न्यूनता तुम्हारी । लहि श्रीबैष्णावता सुखकारी ॥

दो० सकल सिद्धि कौ प्राप्त ह्वै रहौ लोक बहु काल ।
होउ विशिष्टाद्वैत दृढ़ श्रीबैष्णवकुलपाल ॥

सो० तापाछे भट्टार्य्य तिनहिं पंचसंस्कार करि ।
करत भये गुरुकार्य्य धर्मधुरन्धर ज्ञाननिधि ॥

बहुरौं तिनहिं कहो बिज्ञाना । जो कमलापति श्रीभगवाना ॥
चित अरु अचित कलेवर तिनके। बिधि शिवादि सब सेवक जिनके॥
बिष्णु कमललोचन नारायण । निगमागमप्रतिपाद्य गुणायण ॥
सर्वेश्वर दीनन दुखहर्त्ता । जगकारण पालन संहर्त्ता ॥
धर्म अर्थ अरु काम प्रदायक । भक्त जनन प्रति मोक्ष बिधायक॥
तिनहीं की कैंकर्य्य सुहाई । आत्मोज्जीवन कारण भाई ॥
इत्यादिक महार्थ उपदेशी । कियो तिनहिं हरितें अद्वेषी ॥
माधवदास धरो पुनि नामा । गावत सुनत होय बिश्रामा ॥
याबिधि श्रीभट्टार्य्य महाना । किये शिष्य वेदान्ति सुजाना ॥
लहि तिनको सतकार यथाबिधि । होतभये संतुष्ट कृपानिधि ॥

दो० फिरि आये रंगेशथल करि साष्टांग प्रणाम ।
करी निवेदन सब कथा सुनि हरषे सुखधाम ॥

सो० रंगरजायसु पाय आवतभये निज सदन कौ ।
परिजन युत हरषाय जीति धुरन्धर मायमति ॥

इतिश्रीप्र० भट्टार्य्य बिजयोनाम सप्तितमोध्यायः ॥ ७० ॥

माधवदास भये बड़भागी । जिनकी मति माधवसौं लागी ॥
गुरुप्रसाद उर कियो प्रकासा । ज्ञान बिराग भक्तिअनयासा ॥
पुनि बिचार कीन्हो मन माहीं । जो अबहूं पूर्बहिकी नाईं ॥
रहैं युक्त जगलोगन संगा । होय तौ गुरुकटाक्षफल भंगा ॥
तब सबधन करितीनिबिभागा । दै निज जनन तासु द्वयभागा ॥
एक भाग अपने संग लीना । लोक त्यागि गुरुपद मन दीना ॥
आयनिकटगुरुचरणन सो धन । तनमनसहित कियो सब अर्पण ॥
तृणसम तजि लौकिक अनुरागा । लै तुरियाश्रम बिमल बिरागा ॥
गुरुपदकमल बंदि अनुरागे । ठाढ़ेभये जोरि कर आगे ॥
लखि गुरुवर उत्तम अधिकारी । उपजी कृपा हृदय अति भारी ॥

दो० रंगी आयसु पायके यतिपुंगव जगदार्य्य ।
हमकौं आज्ञा करिगये यह बिचारि भट्टार्य्य ॥

सो० लिये शिष्य उर लाय धरो नाम अस्मद्यती ।
तब माधव शिर नाय हाथ जोरि बिनती करी ॥

प्राण समेत शिष्य निज तन धन । सदाचार्य्य कौ करै समर्पन ॥
तैसेहि करि प्रभु निज आधीना । रक्षा करौ जानि जन दीना ॥
भये प्रसन्न यह सुनि गुरुराया । द्रबिड़वेद सब तिन्है पढ़ाया ॥
रहस्यार्थ पुनि सकल सुनायो । शास्त्रमार्ग अबिरुद्ध बतायो ॥
चरमअर्थ उपदेश कियो पुनि । पूरण अधिकारी तिनकौ गुनि ॥
याबिधि सदाचार्यकटाक्षफल । जानि तत्व सबभये अतिनिर्मल ॥
श्रीवैष्णवन मध्य भय ऐसे । शरदकाल पूरणशशि जैसे ॥
पुनि भट्टारक कृपानिधाना । सकल शास्त्रवित पूरणज्ञाना ॥
मोक्षार्थिन के कालक्षेप हित । पांच ग्रंथ कीन्हे कृपालचित ॥
सहसनाम को भाष्य सुहायो । हरिआराधनक्रम पुनि गायो ॥

दो० अष्टश्लोकी पुनि कहो मंत्रअर्थ सुखधाम।
श्रीगुणरत्नकोष अरु श्रीशस्तव अभिराम॥
सो० याबिधि है कृतकृत्य लखि वेदान्ती योग्यता।
तजिये लोक अनित्य यह मनमैं इच्छा करी॥

लखि सबबिधि असार संसारा। दिव्यलोककौ गवन बिचारा॥
तब एकान्त बोलि वेदान्ती। कह्यो तजौ मन ते यह भ्रान्ती॥
हमसब निगमागम पढ़ि लीन्हो। गुरुदक्षिणा द्रव्य बहु दीन्हो॥
श्रीवत्साङ्कपुत्र भट्टारक। हैं हमरे संसार निवारक॥
यह अभिमत मनते तजि दीजे। श्रीयतीशपद आश्रय कीजे॥
उनहींकौ निज रक्षक मानी। निश्चय करौ मानि मम बानी॥
अपर एक आयसु मम कीजै। श्रीशठारि प्रसाद मन दीजै॥
कुलगुरु यतिपतिहू सुख पैहैं। जग हित कारण जानि अघैहैं॥
यथा प्रथम कुरुकेश महाना। सहसगीत व्याख्यान बखाना॥
षटसहस्र बरनो उन वाही। तुम नवसहस कहौ सुत ताही॥

दो० मम अनुशासन तात तुम बहुत काल यह लोक।
रामानुज सिद्धान्त कौ पालौगे निरशोक॥
सो० सुनि माधव हरषाय माथे धरि गुरुवचन वर।
चरणकमल शिर नाय बहुत भली भाषत भये॥
पुनि गुरुवर सुख पाय वैष्णव मत साम्राज्य पर।
वेदान्ती बैठाय गुरुसेवा बुधि करत भये॥

इतिश्रीप्र० वेदान्ती मुख्यार्थोपदेशोनाम एकसप्ततिमोध्यायः॥

गुरुपुंगव सौं तत्वअर्थ सब। लहि कृतकृत्य भये माधव जब॥
बंदिचरण बोले तब बानी। नाथकृपा भ्रम निशा सिरानी॥
तत्वअर्थ सम्पति कौ पाई। भये कृतार्थ प्रभुकृपा अघाई॥
दिव्यसूरि प्रभाव सुखरासा। तासु श्रवण की अति अभिलाषा॥
अरु बहु दिव्यदेश संसारा। सब तजि द्रविड़देश अवतारा॥
शठजितादि सूरिन क्यों लीन्हो। पुनि द्राबिड़ भाषा मन दीन्हो॥
कहे प्रबंध सबन ता माहीं। सुरभाषा बरने क्यों नाहीं॥

अरु संस्कृतहू ते वह बानी। क्यों सबहुन उत्तम करि मानी॥
जो मोहि नाथ होय अधिकारा। कहौ सकल करि कृपाअपारा॥
सुनि वेदांति बचन सुख माना। स्वीकृत करि कह कृपानिधाना॥

दो॰ सुनौ तात हम कहत हैं दिव्यसूरि सुचरित्र।
जासु श्रवण अघ नाशहीं होय सुपरम पवित्र॥

सो॰ शङ्कर गौरि बिवाह पूर्वकाल जब होत भयो।
बढ़ो परम उत्साह सकल लोक वासी जनन॥

अखिललोक बासी उठि धाये। सुर नर मुनि सब देखन आये॥
भई असंख्य भीर कैलासा। पूरित भये शिखर चहुँपासा॥
भयो दक्षिणदिशि भार अभावा। चलो शैल अधकौ जिमिनावा॥
भये बिकल सब सुर मनमाहीं। कछु उपाय बनि आवत नाहीं॥
बिशुकर्मा तब कहो उपाई। जो दक्षिण कुम्भज ऋषिराई॥
जायँ तौ यह पर्बत ठहराई। नातर अबहिं रसातल जाई॥
इंद्रादिकन सत्य मन मानी। ऋषिनायक प्रति बिनय बखानी॥
करौ लोक रक्षा करि दाया। सुनि अति कुपित भये मुनिराया॥
बहुत काल ते उमा बिवाहू। देखन कौ मन रहो उछाहू॥
बिशुकर्मा नहि देखन दीन्हो। महाव्यघ्न बीचहि इन कीन्हो॥

दो॰ ताते याकौ शाप यह देउँ आज करि क्रोध।
होउ निकृष्ट सलोक निज कियो कर्म बिनु बोध॥

सो॰ अरु जे जन यह कर्म ह्वैहैं रत संसार मैं।
ह्वैहैं ते गत धर्म सब निकृष्ट अरु अलपमति॥

यह प्रकार कुम्भज करि दापा। दिये बिश्वकर्महिं बहु शापा॥
सुनत बिश्वकर्महुं अति कोपी। मुनि महिमा मनते सब लोपी॥
सुर समूह सन्मुख अकुलाई। लागे देन शाप दुखदाई॥
जगमैं तुम्हरी द्राविड़ बानी। होउ पिशाच तुल्य दुखखानी॥
अरुतव कृत व्याकरण अबंदित। होउ म्लेच्छ भाषा सम निंदित॥
द्रविड़देश सब बुद्धि मलीना। होउ चोर द्विज भक्ति बिहीना॥
मायावी अरु पिशुन कलहप्रिय। इमि दीन्हे बहु शाप कोपि जिय॥

याप्रकार दोहुन के माहीं । दारुण कलह भयो गिरिपाहीं ॥
शान्त किये देवन समुझाई । पुनि मुनिसौं सोई बिनय सुनाई ॥
सो मन मानि प्रथम की नाईं । रहे जाय दच्छिण दिशि माहीं ॥

दो० कुम्भज हृदय क्लेश अति शापित देश निहारि ।
व्याकुल लागे तप करन हरि उद्देश बिचारि ॥

सो० अयुत बर्ष परियंत निराहार किय तप महा ।
ह्वै प्रसन्न भगवंत दियो दरश तब प्रकट ह्वै ॥

मैं तुमपर प्रसन्न मुनि ज्ञानी । मागौ बर बरदायक जानी ॥
सुनि मुनि हर्षित चरण निहोरी । अस्तुति करन लगे करजोरी ॥
नमो नमो कारण के कारण । निस्कारण पुनि अद्भुत कारण ॥
कमलनयन जगउत्पतिकारी । सर्बांतरयामी दुखहारी ॥
जय वेदान्तवेद्य अखिलात्मा । अणुते अणु श्रुति बेदित आत्मा ॥
जय वेदान्त तत्व के पंडित । सकल पुराण वेद शिर मंडित ॥
बिद्याधरप्रिय गरुड़ारूढ़ं । नमो नमो चरणाम्बुज गूढ़ं ॥
आदिपुरुष नंदसूनु बिनीतं । जय अखिलार्य हरणनवनीतं ॥
नारायण केशव भगवाना । निगमोद्धर जय पुरुषप्रधाना ॥
जय अच्युत हयबदन मुरारी । जगनिवास मुकुंद असुरारी ॥

छन्द हरिगीतिका ॥

नममेति बिष्णु सुरेस मन्दरगिरिबहन करुणामयं ।
नित नौमि मधुमदमथन माधव अप्रमेय मनामयं ॥
श्रीरमण जग हितकरण चरणसरोज नित शिव बंदितं ।
मनमथनजनक बराह मीन नृसिंह बावन बपुधरं ॥
जय कनकलोचन कनककश्यप बिपुलबल मदगंजनं ।
गोबिंद जय चिन्मय मनोमय भक्तजन मनरंजनं ॥
जय गोपरूपअनूप जन प्रह्लाद रक्षण कारणं ।
जय देवदेव नरेन्द्र जयति उपेन्द्र भवभयतारणं ॥
बलिबन्ध परमसुजान कृपानिधान महिमासागरं ।
जय परशुधर तन असुर नृप कुलगहन दाहननागरं ॥
जय रावणान्तक रघुबरं सीतापते अति सुन्दरं ।
जय सेतुनाथ प्रभावअतुलित हरिकृपाकर श्रीधरं ॥

दो० नमो नमो यदुवंशमणि विशदचरित कंसारि ।
पार्थसारथि जनकल्पतरु गोपीपति असुरारि ॥

सो० पद्मनाभ भगवान कृष्ण कमलदलनयन हरि ।
कृतयुगधर्मत्राण कलिभंजन म्लेच्छान्तकर ॥
इमि कुम्भजऋषिराय विशद विपुल अस्तुतिकरी ।
सुनि हरषे सुखदाय परमप्रेम तिनको निरखि ॥

इतिश्रीप्र० अगस्त्य विश्वकर्मणोरन्योन्यशापावाप्तिर्नाम
द्विसप्ततिमोऽध्यायः ॥ ७२ ॥

सुनि अस्तुतिवर करुणाअयना । मन प्रसन्न ह्वै बोले बयना ॥
तुम तपकरि तन कौ अति तायो । अस्तुतिकरि मोहिंबहुतरिझायो॥
दियो विश्वकर्मा जो शापा । तुमहिं कृपा बश अति संतापा॥
करौं दूरि सो अब निर्मूला । द्राविड़देश करौं अनुकूला ॥
लीहौं तहां आपु अवतारा । निज पार्षदन समेत उदारा ॥
विष्वक्सेन आदि बहु सूरी । शङ्ख चक्र आदिक सुर भूरी ॥
अवतरिहैं सब द्राविड़देशा । करिहैं मम कैंकर्य्य अशेषा ॥
ताम्रपर्णी जहँ नदी सुहाई । अरु कुरुकानगरी सुखदाई ॥
हमहीं भक्तरूप तहँ धरिहैं । वेदअर्थ भाषा अनुसरिहैं ॥
चारिसहस्र प्रबंध दिव्यबर । मैं मम भक्त करैंगे सादर ॥

दो० वेदअर्थ को सार सब दिव्य प्रबंधन माहिं ।
ह्वैहैं तिनहिं जे गायहैं तिनकौं भवभय नाहिं ॥

सो० अति उत्तम तिनमाहिं श्रीसहस्रगीती बिशद ।
पैहैं मम पद काहिं श्रवणमात्र नर तासुके ॥

पढ़िहैं जे सहस्रगीती बर । पायहैं ते मम लोक शीघ्रतर ॥
मम रुचि वा प्रबंध मैं भारी । ह्वैहै पुनि सबकौ सुखकारी ॥
जे वह द्राविड़ दिव्यसंहिता । सकल वेद अर्थोपबृंहिता ॥
पढ़ि सुनि तनमन धारण करिहैं । पुनि तिनको जे दर्शन करिहैं॥
ह्वैहैं अघिहु मुक्ति अधिकारी । वह संहिता मोहिं अति प्यारी॥
ताते कलियुग तासु प्रचारा । ह्वैहै मुनिवर सब संसारा ॥

हम चर अचर रूप के माहीं । मुक्ति हेतु यह देश बसाहीं ॥
अरु द्राविड़ भाषा जग माहीं । फैलिहै सकल देश के माहीं ॥
गूढ़अर्थ जो वेदन माहीं । सब द्राविड़ भाषा दरशाहीं ॥
ह्वैहै सब जग माहिं प्रचारा । बहुरि जे तासु रहित संसारा ॥

दो० निगमागमकोबिद बहुरि मंत्ररत्न मनुराज ।
अर्थ कुशल सब गुणबिमल निर्द्भादि समाज ॥
सो० जानत चरमउपाय दिव्य प्रबंध बिहीन नर ।
तासु सकल गुण जाय नहिं वैष्णव नहि भक्तमम ॥

यथा जातकर्मादिक हीना । नहिं द्विजत्व वेदादि बिहीना ॥
तैसेहिं संसकार सर पाई । द्राविड़वेद पढ़े सुखदाई ॥
होति जनन बैष्णवता पूरी । नाहितौ सब करि रहति अधूरी ॥
अति सन्देह तासु कल्याना । द्राविड़वेद न जिन जग जाना ॥
याबिधि निज मत भूतल थापी । करिहैं तुमहिं बिगतसंतापी ॥
जिमि यजाति शापित यदुबंशा । मैं किय सकल बंशअवतंशा ॥
अरु मम कृपा भई कावेरी । गंगहुते यशवती घनेरी ॥
ताही बिधि यह द्राविड़भाषा । गौरव युत पायहै प्रकाशा ॥
दिव्यसूरि बैकुंठ बिहाई । आवेंगे मम आयसु पाई ॥
ह्वैहैं सकल शास्त्रपारंगत । उपदेशिहैं सबहि प्रपदन मत ॥

दो० परउपकार प्रवृत्त सब ह्वैहैं कलियुग माहिं ।
द्राविड़ देश पुनीत मधि यामै संशय नाहिं ॥
सो० क्यों शोचत हौ तात देखे सकल पुराण तुम ।
सबही मैं बिख्यात महिमा द्राविड़ देशकी ॥

ब्राह्मि और ब्रह्माण्ड पुराना । वृद्धपाद्मि भागवत बखाना ॥
श्रीकुरुकामाहात्म भारगव । भरतखण्ड द्राविड को बैभव ॥
याबिधि कहा सबन के माहीं । कृतयुग प्रजा यहां प्रकटाहीं ॥
याप्रकार श्रीपति भगवाना । दै कुम्भज मुनिकौ बरदाना ॥
बहुप्रकार सन्तोष कराई । अन्तरधान भये सुखदाई ॥
आयेकलशयोनिनिज आश्रम । श्रीशकृपातजिसबदुखभ्रमश्रम ॥

बहुरि सत्यसङ्कल्प रमेशा । पठये नित्यसूरि तिहि देशा ॥
बिष्वक्सेनादिक नितसूरी । लिय अवतार बरण कुल भूरी ॥
जग रक्षण मधि सब आरूढ़ा । निगमसार सब अर्थ निगूढ़ा ॥
चारि सहस्र प्रबंध मझारी । कहे द्रविड़भाषा अघहारी ॥

दो० दियो सबहि अधिकार सब किये भूमि बिस्तार ।
जगहित करि कृतकृत्य ह्वै गये श्रीश आगार ॥
सो० तिनमें श्रीशठकोप तेजनिधान महान मुनि ।
होत बिष्णुमत लोप कलियुग में रक्षा करी ॥

बहुरि नाथ आदिक देशिकबर । लेतभये अवतार महीपर ॥
करी बिष्णुमत की रखवारी । बहुरौं फणिनायक अघहारी ॥
रामानुज बपु धरि करुणानिधि । यह बैष्णव सिद्धांत यथाबिधि ॥
कियोप्रकाशित सब जगमाईं । सेतुबंध अरु हिमगिरि ताईं ॥
अब जे हमहिं आदि बिद्वाना । श्रीमन्नाथ चरण रतिवाना ॥
यतिसिद्धान्त पुनीत उदारा । करिहैं सब जग माहिं प्रचारा ॥
ताते हरि आयसु उर आनी । श्रीबैष्णव आवश्यक जानी ॥
द्राविड़वेद पढ़ै मनलाई । शठजितादि बरणित समुदाई ॥
चारिसहस प्रबंध पारायन । उत्तम मानि करै चित चायन ॥
शक्ति हीन याबिधि मन लावै । गीतसहस्र जन्म भरि गावै ॥

दो० द्विज नृप बैश्य शूद्र तिय इतरहु जे हरिभक्त ।
सबही कौ अधिकार तहँ ग्रेही तथा बिरक्त ॥
सो० संस्कृत को ब्योहार जैसे बैदिक कर्म मैं ।
सकल स्मृति अनुसार तिमि बैष्णव कौ चाहिये ॥

हरिपूजादि कार्य्य ब्योहारा । द्रविड़ागम करिये निर्धारा ॥
वेदमंत्र सँग द्राविड़भाषा । हरि अर्चन मधि करै प्रकाशा ॥
उत्सव आदि मध्य अवसाना । कालोचित गाथा कर गाना ॥
श्रीबैष्णवमत करत प्रवेशा । द्राविडभाषा करै निवेशा ॥
पुनि द्राविड़ प्रबंध मन लावै । गाथा साठि प्रथम तहं गावै ॥
युत दश गाथ प्रबोधकि अस्तव । तीस गाथ बहुरौं गोदास्तव ॥

बहुरि पढ़ै प्रपन्नगायत्री । श्रीबैष्णव हित मनौ पवित्री ॥
पुनि सहस्रगीती अभ्यासा । अथवा तासु सार सुखरासा ॥
प्रकटति बैष्णावता पढ़ि जाही । सहभोज्यता योग्यता ताही ॥
तात बहुत कह कहौं बुझाई । द्राविड़वेद श्रवण बिनु भाई ॥

दो० पावत नहिं कलिकाल नर कैसेहुँ उत्तम ज्ञान ।
तातें मोक्षार्थी जनन द्राविड़वेद प्रधान ॥

सो० पूर्वाचार्य्य महान शठजितादि बिज्ञान निधि ।
कीन्हे सबन बखान द्रबिड़ागम गूढ़ार्थ सब ॥
श्रीमन्नाथ उदार अरु हम पुनि जे होयँगे ।
द्रबिड़ागम सुखसार किय प्रचरित अरु करैंगे ॥
ताही ते सब लोक जे पढ़िहैं द्रबिड़ागमहि ।
त्यागि सकल अघ शोक बिष्णु परमपद जायहैं ॥
सकल बिशद आख्यान कहो पुराण प्रसिद्ध हम ।
अब कह करहि बखान बिद्वन् सो हमसौं कहौ ॥
तोषे माधवदास उरतें सब सन्देह तजि ।
मानो मन बिश्वास सुने जे गुरु के बचनबर ॥
उठिके कियो प्रणाम भट्टारक पदकमल युग ।
दिव्यसूरि गुणग्राम सुनिबेकौ मन करत भये ॥

इतिश्रीप्र० द्राविडाम्नाय बैभवकथन्नाम त्रिसप्ततिमोध्यायः ७३ ॥

गुरुपदकमल निहोरि बहोरी । माधवदास कह्यो करजोरी ॥
प्रभु शास्त्रज्ञ लोक बिख्याता । सकल पुराणन के पुनि ज्ञाता ॥
मोहि चरणसेवक निज जानी । कहौ नाथ शुभगाथ बखानी ॥
कैसे दिव्यसूरि किहि काला । आये तजि बैकुण्ठ कृपाला ॥
कौन गुरू को शिष्य कहाये । कौन कौन प्रबंध किन गाये ॥
कितने दिवस रहे महि माहीं । सकल चरित्र कहौ मोपाहीं ॥
तिनकी संख्या कहिये दयाला । पूर्वाचार्य्य कौन जनपाला ॥
सुनि भट्टार्य्य प्रश्न सुखपायो । दिव्यसूरि चरित्र मन लायो ॥
लगे सप्रेम करन उर ध्याना । मनहीं मनमैं दंड प्रणामा ॥
बहुरौं सावधान ह्वै बोले । बचन अमीमय मंजु अमोले ॥

दो० सुनौ तात हम कहत हैं थिर करि चित की वृत्य ।
दिव्यसुयोगि प्रभाव बर ह्वैहौ सुनि कृतकृत्य ॥
सो० जैसे दशावतार चरित सुनत हरि हर्षहीं ।
सूरि चरित्र उदार तिमि सुनि होत प्रसन्न प्रभु ॥

धर्मस्थापन हित संसारा । हरि जिमि दिव्यसूरि अवतारा ॥
श्रीनाथार्य कमललोचन पुनि । राममिश्र अरु श्रीयामुन मुनि ॥
महापूर्ण अरु गोष्ठीपूरण । मालाधर अरु श्रीगिरिपूरण ॥
श्रीबररंग प्रभ्रति समुदाई । कांचीपूर्णादिक गुरुराई ॥
यतिनायक तें प्रथम भये जे । पूर्वाचार्य्य सकल जानौ ते ॥
दिव्यसूरि अव सुनौ सुजाना । कोउ दश कह कोउ द्वादश माना ॥
सरोयोगि कोउ कह कासारा । महत्नाम श्रीभूत उदारा ॥
भक्तिसार शठारि कुलशेखर । बिष्णुचित्त भक्तांघ्रिरेणु बर ॥
मुनिबाहन अरु चतुष्कवीन्द्रा । याबिधि गिनियत दश योगीन्द्रा ॥
श्रीगोदा यतिनाथ समेता । द्वादश पुनि कोउ कहत सचेता ॥

दो० कोउ गोदा तजि मधुरकवि संयुत द्वादश मान ।
जाते गोदा सबन की पूज्या सब जग जान ॥
सो० जग रक्षत भगवान श्री कौ पुरस्कार करि ।
करत न कछु श्रीमान लक्ष्मी बिनु स्वातंत्रि ते ॥

उत्पति पालनादि हरि करहीं । अनपायनि चितयुत अनुसरहीं ॥
ताहीते सब जग व्यापारा । है श्रुति सिद्ध श्रियहि निर्धारा ॥
सुनि गुरुबचन कहत अस्मद्यति । कहो नाथ श्री को बैभव अति ॥
कारणत्व कर्तृत्व जगत को । लक्ष्मी कौ बरनो श्रुति मत सो ॥
यह शङ्का उपजति मन माहीं । कासारादि योगि गण माहीं ॥
योषित बिष्णुचित्त की बाला । ताहि भयो क्यों बिभव बिशाला ॥
बोले भट्टारक गुरुराई । जिन श्री की महिमा हम गाई ॥
सोई गोदा तन धरि अवतारी । जग रक्षा उर माहि बिचारी ॥
शठजित सेनापति अवतारा । फणिपति यतिनायक बपु धारा ॥
लोकानुग्रह कार्य्य मझारी । तीनौ भये प्रसिद्धि अति भारी ॥

दो० तद्यपि इन दोहून ते अरु नित योगिन माहि ।
लक्ष्मी गोदा अधिक है यामै संशय नाहि ॥
सो० सुनि गुरुवर उपदेश अस्मद्यति सन्देहगत ।
भयो अभिलाष बिशेष अपर चरित के सुनन कौं ॥

इतिश्रीप्र० भट्टार्य्य वेदान्तिसंवादे श्रीगोदादिव्यसूरि पूर्वाचार्य्य वरणनन्नाम चतुःसप्ततिमोध्यायः ॥ ७४ ॥

अस्मत्यती बहुरि कर जोरी । बोले गुरु पदकमल निहोरी ॥
नित्य अपाय रहित जगजननी । अति रत पतिसेवा हरिभवनी ॥
तजि बैकुंठ लोक केहि काजा । आईं महि जहँ हेय समाजा ॥
सो सब हेतु कहौ प्रभु दासहि । जो सुनि मम मन को भ्रम नाशहि ॥
कहत भये तब गुरु बिज्ञानी । श्री अवतार कथा सुखसानी ॥
यद्यपि हरि हरिजन अवतारा । जग रक्षण हित होत उदारा ॥
यतिपति शठकोपादिक योगी । भये ताहिते श्रीश बियोगी ॥
तद्यपि सुनौ कथा सुखदाई । जिमि लक्ष्मी महिमंडल आई ॥
पद्मपुराण लिखित इतिहासा । भार्गवहू पुनि कियो प्रकासा ॥
तहां प्रथम हरिपुर कौ ध्याऊँ । महिमा तासु यथामति गाऊँ ॥

दो० श्रुति स्मृतिहु पुराण पुनि द्रविड़वेद समुदाय ।
पूर्वाचार्य्यन जो कहो सब इककंठ लखाय ॥
सो० यह बिभूति इकपाद अखिलकोटि ब्रह्माण्ड मिलि ।
नित्यबिभूति त्रपाद सूरिद्रश्य हरिपरमपद ॥

अक्षर परमव्यूम जेहि गावैं । सूरी जासु दरश नित पावैं ॥
परम पुरुष अधिपति हरि ताके । अति अचिंत्य बल्लभ कमला के ॥
सेवहिं चहुँदिश भक्त बरूथा । भू नीलादि नारिबर यूथा ॥
रवि कृशानु ते अधिक प्रकाशा । निज सुकांति तम बीज बिनाशा ॥
याबिधि श्रीपति परमस्थाना । सुर दानव दुर्पेक्ष्य बखाना ॥
बन उपबन क्रीड़ामंदिर बर । राजत बिबिधि जलाशय सुंदर ॥
जग परिणाम हेतु बिकराला । तहँ परिणाम पाव सोउ काला ॥
ब्रह्मादिक देवतन अगोचर । योगिनहू कौ अप्रमेय तर ॥

जिहि स्वरूप वेदान्त बतायो । सबबिधि बचन अगोचर गायो ॥
महाभार्त अरु बिष्णुपुराना । पंचरात्र पुनि अस्मृति नाना ॥

दो० औरौ बिबिधि पुराण शुचि पूर्वाचार्य्य सदोक्ति ।
द्रविड़ाम्नाय बिधान सौं प्रतिपादित कण्ठोक्ति ॥

सो० याबिधि श्रीपरधाम बहुप्रकार प्राकार युत ।
शोभित अति अभिराम यान सौध बहु मणि खचित ॥

ध्वजपताक तहँ बिबिधिबिधाना । अगिणितमंदिर लसतबिताना ॥
सहसस्तंभ रचित मंडप बर । जगमगात मणिमय अति सुंदर ॥
नित्य मुक्त सेवित चहुँपासा । सामगान सुनि होत हुलासा ॥
तहां अनंत भोगि गुणसागर । सकल अंग सेवा बिधि नागर ॥
शुभ्र रुचिर मृदु तिनकी अंका । शोभित सुखनिधि करि परियंका ॥
जिनकौ अध्यातम के ज्ञानी । ज्योतिज्योति करि कहत बखानी ॥
तहं रबि शशि न प्रकाश कराहीं । बिद्दत अनल तहां पुनि नाहीं ॥
शोभासिंधु प्रकाश अपारा । सकल तेजमय तेहि उजियारा ॥
पुष्पमाल अभरन पट नाना । सब चेतन पुनि तेजनिधाना ॥
अतुल रूप गुण छबि के अयना । सीचत नित्य मुक्तगण नयना ॥

दो० याबिधि सौं सुखसिंधु धरि बैस युवा कौमार ।
सुखसमेत श्रीसंग तहँ करत अनेक बिहार ॥

सो० जिहि प्रकार उड़राज सहज प्रकाशित निजप्रभा ।
तैसेहिं सहित समाज श्रीश सुखी निज सहज सुख ॥

नित्य जीव जे सहज समदरशी । संसृतगंध जिनहिं नाहिं परशी ॥
दोष लेश न जिनहिं नियराया । सेनाधीश प्रभृत्य निकाया ॥
मुक्तजीव तहं लखिये न तरतम । अंतरंग हरिके नित्यन सम ॥
सबहि नित्य कैंकर्य्य अधारा । सबके प्रभु पद प्रेम अपारा ॥
परमभक्त सेवामधि सबही । नहि श्रम लेश अघात न कबही ॥
सेवा शक्ति सबहि अति भारी । बहुबिधि करत अमित तन धारी ॥
याबिधि कोटिन सूर्य्य समाना । शोभित तहं हरि किंकर नाना ॥
तहं सबके अधिराज रमेशा । तिनहीं हम जानत सर्वेशा ॥

ओई शंभु प्रजापति सोई । देत साम्य निज दासन जोई ॥
उभय त्रिभूतिन के निर्बाहक । अशरण शरण दीनजन ग्राहक ॥

दो० श्रुति स्मृतिन प्रतिपादित परपुर महत अपार ।
वेद नेति कहि गावहीं कवि किमि पावहि पार ॥
सो० हरि लक्ष्मी संवाद सुनौ तात अब कहत हम ।
सुनि उपजो अहलाद ध्यान करत अस्मद्यती ॥

इतिश्रीप्र० बैकुण्ठवरणानन्नाम पंचसप्ततिमोध्यायः ॥ ७५ ॥

अस्मद्यति करि हरिपुर ध्याना । तहं मणिमंडप मनमैं आना ॥
पुनि दंपति शोभा उर आनी । नितसूरिन की छबि सुखखानी ॥
गुरुपदकमल बंदि अनुरागे । बहुरौं श्रवणामृत रस पागे ॥
तबहीं भट्टारक मृदु बानी । लागे कहन कथा सुखसानी ॥
ऐसे नित्यधाम के माहीं । करि निर्हेतु कृपा जग पाहीं ॥
जगत जननि जग व्याकुल देखा । तपत ताप तिहुंमाझ बिशेखा ॥
हरिपद बिमुख न मंगल लेशा । ग्रह सुख में नित मग्न अशेशा ॥
प्रीतम सौं कह मंजुल बानी । श्रवण सुखद करुणामृत सानी ॥
नाथ कृपामृतसिंधु अपारा । जग निर्व्याजबंधु निर्धारा ॥
जननि जनक सब जगके आपू । निगमागम इमि कहत प्रतापू ॥

दो० युग बिभूति जे चर अचर तुमकौ सकल समान ।
ऐसे प्रभु कह तुमहुँ कौ बिषम भाव नियरान ॥
सो० याको फल कह नाथ कोइ दुखमय कोइ अति सुखी ।
प्रकृति तुम्हारे हाथ की तुम वाके बिबश हौ ॥

प्रभुकटाक्ष ते बद्ध जीव गण । मुक्तपांति पावहिं सुख तत्क्षण ॥
तौ तुमकौ कह हानि कृपाला । हंसि बोले तब दीनदयाला ॥
पूर्बकाल ये जीव निकाया । रहे निःचेष्ट करण बिनु काया ॥
जैसे विहंग पंख बिनु दीना । लखि निर्हेतुक हित हम कीना ॥
करण कलेवर सबकौ दीन्हो । बुद्धि ज्ञान मन संयुत कीन्हो ॥
उन मम प्रद सम्पति समुदाई । मम पद सेवन कबहुं न लाई ॥
बिषयांतर लगाय सब दीनी । मम बिमुखन की सेवा कीनी ॥

सभिद ल्यायबे हित कोउ काहू । देय खड्ग कहि कानन जाहू ॥
सो खल कर गो बाल निकंदा । देवी तिमि इनकी मतिमंदा ॥
सरित तरण हित प्लव कोउ पाई । महागर्त लै डारै जाई ॥

दो० तैसेहिं भवतारक तन पाय कुबुद्धी प्रानि ।
शब्दादिकन लगावहीं समुझैं नहिं हित हानि ॥
सो० कर्मप्रवाह निमग्न भये सकल निज कुमति बश ।
कौन भाँति भव भग्न होय प्रिया इन सबन को ॥

पुनि तिनको लखि दुखित बिशेषी । बिषयअम्बुनिधि बूड़त देखी ॥
करअवलंबन सम सब आगम । रचे लहैं सुख जासु समागम ॥
उनवाको किंचित चितआनी । पुनि तिहि लिखित न कछुमनमानी ॥
हम ईश्वर हम सिद्ध सुजाना । भोगी सुखी हमहिं बलवाना ॥
आढ्य कुलीन न हम सम कोई । याबिधि गर्ब मग्न खल सोई ॥
आत्मा सहज दास मम आही । मानत और भांति करि ताही ॥
आतमघाती चोर सो आहीं । कौन पाप कीन्हो तिन नाहीं ॥
सब पापन को बीज समाना । तिहि स्वातंत्रि परम हित माना ॥
ताते भये आत्म अपहारी । कर्मन सौं दूखित अति भारी ॥
तब मैं जगनृपबिधि मनआनी । निज आज्ञा उल्लंघित जानी ॥

दो० राम कृष्ण आदिक ह्वै लीलालोकहिं जाय ।
तबहुँ न मानी मम कही हारो बहुत सिखाय ॥
सो० परे आसुरीयोनि जन्म जन्म ते हमहिं तजि ।
तिनहि अधमगति होनि करत अवज्ञा मूढ़ मम ॥

मानत नहीं हमहिं सर्वेशा । काबिधि ममपुर करैं प्रवेशा ॥
अब कह करैंसोसुमुखि बतावहु । वृथाहमहिं जिनिदोषलगावहु ॥
कांतबचन सुनि अति सुखदाता । करुणामूर्त्ति अखिल जगमाता ॥
कर्म बद्ध जीवन को क्लेशा । सहि न सकी उर ताप बिशेशा ॥
कहति भईं प्रभु को रुख जानी । जो तुम मोहिं कहो सुखदानी ॥
नित्यन संग लीलातन धरऊं । बद्धात्मन प्रभु सन्मुख करऊं ॥
नाथ चरणपङ्कज रतिवंता । प्रभु आयसु अनुसारक संता ॥

सुनि श्रीवचन जगतहितकारी । कुंभज को बरदान बिचारी ॥
आज्ञा करत भये भगवाना । जगरक्षण कीजै मनमाना ॥
प्रभु बनमाल बैजयन्ती शुभ । पंचायुध श्रीवत्स कौस्तुभ ॥

दो० विहँगराज सेनप प्रभृति जिनको महदधिकार ।
तिन समेत हरिवल्लभा किय अवतरण विचार ॥
सो० भागवतोक्त प्रकार द्रविड़ देश काबेरि जहँ ।
ताम्रपर्णि सुखसार कृतमाला जहँ सरितबर ॥
दो० पयस्वनी सरिता विमल अरु प्रतीचि शुभ नाम ।
तहाँ आय सब अवतरे नित्यसूरि गुणधाम ॥

इतिश्रीप्र० बैकुण्ठसंवादकथनन्नाम षटसप्तितमोध्यायः ॥ ७६ ॥

अस्मद्यति गुरु पद शिर नाई । करसंपुट पुनि बिनय सुनाई ॥
योगिन के प्रभु अवतारस्थल । कहिये चरित्र किये जिन जाथल ॥
कहत भये तब गुरुभट्टारक । अखिललोक भवबंध निवारक ॥
अवध मधुपुरी माया कासी । कांची अवंतिका सुखरासी ॥
पुरी द्वारिका युत ये साता । बरने वेद मुक्ति के दाता ॥
तिनमैं कांचीपुरी बिशद अति । विधि हयमख करि पूजे श्रीपति ॥
तहां अष्टभुज अस्थल पावन । जिहि उत्तर हरि कलुष नशावन ॥
नाम यथोक्तकारि जिन पायो । उत्तर ओर तटाक सुहायो ॥
फूले हेमकमल तामाहीं । परम मनोहर बरनि न जाहीं ॥
द्वापर लक्षवेदयुग सम्बत । बीते षष्टिसहस्र एकशत ॥

दो० शुभ वत्सर सिद्धार्त्ति विच तुलामास सितपक्ष ।
तिथि अष्टमि मंगल दिवस सरोयोगि प्रत्यक्ष ॥
सो० श्रवण नक्षत्र पुनीत शंख अंश हेमाब्ज ते ।
कबिजन गावत गीत धर्म्मथपन कासारके ॥

अबिंदीय प्रबन्ध तिन गायो । मुक्तिमूल सब चरित उपायो ॥
जगरक्षण कारण अवतारा । शुद्धसत्वगुण युक्त अपारा ॥
संसृत बिपुल दवानल नाशी । शशि सम शीतलता परकाशी ॥
बचन पियूष प्रवाह बहायो । सरो नाम ताते प्रकटायो ॥

बंदौं तिनके चरण सुहाये । हरि प्रभाव जनु तन धरि आये ॥
तासु द्वितिय दिन सिंधु किनारे । माधुरि पुष्प लता अवतारे ॥
भूतयोगिवर कलिमलहारी । कौमोदकी अंशतनधारी ॥
नखत धनिष्ठा मध्य कृपाला । प्रादुर्भूत भये जगपाला ॥
मल्लीपुरपति कहि कवि गायो । ज्ञानदीप जिन ग्रंथ बनायो ॥
तासु प्रात पुनि जलनिधि तीरा । श्रीमहदाख्य योगि बरधीरा ॥

दो० मल्लीपुर ते उतर दिशा नगर मयूर अनूप ।
तहँ मैलादिकेशव निकट तिलक नाम वर कूप ॥
सो० तिहि मधि प्रकटे आय नंदकांश जग अघ दमन ।
अरुणकमल सुखपाय श्रीपति आयसु आनि उर ॥

महायोगि वर परम विपश्चित । पद्मापतिपद प्रेम भ्रांतचित ॥
तातें भ्रांतयोगिहू नामा । तिनके पद युग करौं प्रणामा ॥
सेनापति तव श्रीश पठाये । हरिपुर ते तिनके ढिग आये ॥
संसकार पंचक तीनौ को । जो एकांति हेतु कीनो सो ॥
पुनि सब अर्थ पुनीत सुनायो । जाते तत्वज्ञान उर छायो ॥
सो सब व्याज वेद मर्यादा । तिनके ज्ञानहि कौन बिषादा ॥
दशा अलौकिक तिनके माहीं । पुलक भरे सब अंग लखाहीं ॥
निर्भर आनद वारि बिलोचन । निशिदिन ध्यावत शोच बिमोचन ॥
पुलक अंग सब गद्गद बानी । अस्तव गान अमृत रस सानी ॥
अधिक भक्ति महदाह्वय हरिपद । ताते पायो महायोगि पद ॥

दो० हरि अनुभव मै मग्न मन रहत भ्रांत की नाहि ।
भ्रमित भ्रमर जिमि रहत पुनि वा पदपङ्कज माहिं ॥
सो० इमि ये तीनौ संत भये अयोनिज पुष्पते ।
रज तम गत अत्यंत शुद्धसत्वमय भक्तिनिधि ॥

कार्य्याकार्य्य प्रवृत्य निवृत्ती । भय अरु अभय बंध अरु मुक्ती ॥
जानै सो बुधि सात्वकि गाई । इन तीनौ सोई मति पाई ॥
ज्ञान बिराग भक्ति रत्नाकर । एककाल भये तिहूँ सुधाकर ॥
जन्महि ते बिनु अन्नहि पाना । हरिगुण अनुभव पोषत प्राना ॥

श्रीश दास्य रस के अति भोगी । शब्दादिक रस परम बियोगी॥
बिषयांतर अस्पर्श डराहीं । निशिदिन रहत एक थल नाहीं ॥
अनजानत सम आपुस माहीं । प्रथक्प्रथक् निशि ग्राम बसाहीं॥
तब श्रीपति जगहित मन दीन्हो । देहलि नगर समागम कीन्हो ॥
माधव सुनौ तासु बिस्तारा । दिव्ययोगि वर चरित उदारा ॥
आकस्मिक तिहुं श्रीश प्रेमधुर । सांझसमय आये देहलिपुर ॥

दो० जहँ श्रीवामन क्षेत्र वर होन लगी अति बृष्टि ।
रक्षा हित कासार तब चहुँदिश कीन्ही दृष्टि ॥

सो० काहू द्विज के द्वार लघु थल तिनकौ लखि परो ।
कीन्हो मनहि बिचार ज्यो त्यो करि निशि काटि है ॥

आये भूतहु योगि तहांहीं । मागो बासस्थल तिन पाहीं ॥
अर्द्धस्थल कारुणिक अशोचा । दियो यद्यपि अति भयो सकोचा॥
भ्रांतहु बहुरि तहां चलि आये । बर्षत और ठौर नहि पाये ॥
मागत दुहुन बीच करि दीनो । ठाढ़े भये सकुचि तहं तीनो ॥
जानि परस्पर भगवद्दासा । करत दंडवत सहित हुलासा ॥
तिन मधि प्रभु कौतुकी कृपाला । प्रकटे आय तहां तिहि काला॥
रूप अनूप मनोहर कीन्हे । शङ्ख सुचक्र गदांबुज लीन्हे ॥
तीनौ रहे सकुचि तहं ठाढ़े । तब सब भये सकोच बश गाढ़े ॥
अर्द्धनिशा बर्षत जल भारी । लखि न परत कछु अति अंधियारी॥
तीनौ कहत भये तिहि काला । यह चतुर्थ को प्रकट बिशाला ॥

दो० दृढ़ कपाट यह द्वार के लागे है यह काल ।
देहलि में सकुचे खड़े हम तीनो बेहाल ॥

सो० ये आये को और देखन की इच्छा करी ।
ज्ञानिन के शिरमौर ज्ञानदीप प्रज्वलित कियो ॥

भूमि दीप समुद्र घृत कीन्हो । सूर्य्य ज्वाल करि तिनको चीन्हो ॥
गरुड़ारूढ़ लखे सुखदाई । तड़ित सहित जनु घन छबिछाई ॥
बक्षस्थल जगजननि बिराजैं । नीला भूमि पार्श्व युग राजैं ॥
भुज आजानु मनोहर अंगा । मंदस्मिति शशि सदृश अभंगा॥

पहिरे पीतबसन दामिनि सम । भूषित भूषण सकल अनूपम॥
चर्चित चंदन अंग चतुर्भुज । बिंबाधर बर कुंद सरिस द्विज ॥
शरदचंद्र निंदक मुख शोभा । बिलुलित अलकदेखि मनलोभा॥
कुंडल मुकुट अतुल छबि क्रांती । अंगद निरखत नवग्रह भ्रांती॥
मुक्ताहार कलित बनमाला । परशति चरणन ललित बिशाला॥
रत्नजटित मुदरी अति सोहैं । हेमसूत्र कटि मुनि मन मोहैं ॥

दो० परम मनोहर मेखला मणिमंडित मंजीर ।
चरण कमल शोभा निरखि नहिं अघात मतिधीर ॥
सो० रुचिर माल मंदार केशबंध तासौं किये ।
उर श्रीबत्स उदार कंठ मंजु मणिबर लसत ॥

अमित रूप सुंदर बर वेषा । दिव्यायुध शुचि धरे सुदेशा ॥
नेति नेति कहि वेद बतावैं । मनसा अगम प्रकृति पर गावैं ॥
अद्भुत दिव्य अनंत अनूपम । तेज प्रकाश अमित रबि शशि सम॥
योगी जाहि देखि सुखपावैं । शिव सनकादि समाधि लगावैं ॥
ज्ञान दृष्टि सो लखि तिहुं योगी । भये मग्न अनुभव सुख भोगी॥
ताते भौ आनद अभिरामा । पुनि पुनि लागे करन प्रणामा ॥
अनुभव सुख उर अंतर राखा । उपजे अर्थ बिशद लहि शाखा॥
सो अद्भुत रस उर न समायो । ह्वै प्रबंधमय बाहिर आयो ॥
तीनौ मुनिन प्रबंध सुहाये । शत शत गाथ युक्त शुचि गाये ॥
निज प्रबंध कासार सुजाना । बिष्णुथलन को बिभव बखाना ॥

दो० अष्टोत्तरशत मुख्य कहि ताहू में पुनि चारि ।
निज अभिमत बरणन किये मुनिबर हृदय बिचारि ॥
सो० प्रथम बरनि श्रीरंग व्येंकटाद्रि कांचीपुरी ।
देहलिपुर तिहि संग बरनो अतुल प्रभाव बर ॥

भूतयोगि अभीष्ट निज गाये । रंगस्थल शेषाद्रि सुहाये ॥
देहलिपुर अरु निज जन्मस्थल । दरश परश सेवत अतुलितफल॥
महायोगि पुनि चारि गिनाये । परमसेव्य अस्तुति करि गाये॥
रंगधाम अरु श्रीनिवासपुर । तीजो बरणन करि देहलिपुर ॥

श्रीमयूरनगरी सुखदाई । कैरविनी महिमा अति गाई ॥
ते प्रबंध तिहुँ पढ़ि संसारी । तरत अविद्यासरि अति भारी ॥
हरिजन ह्वै हरिपुर कौ जाहीं । माधव यामैं संशय नाहीं ॥
याविधि हरि निज बांछित रूरो । करवायो योगिन सौं पूरो ॥
करि उपाय कीने इक ठाईं । आपहु प्रकटे आय तहाईं ॥
अंतरधान भये तिहि काला । जगरच्छक प्रभु दीनदयाला ॥

दो० तब सर भूत भ्रांत तिहुँ एक संग मुनिराज ।
बिचरन लागे प्रथम जिमि लोकानुग्रह काज ॥

सो० यह आख्यान रसाल जे सप्रेम गावैं सुनैं ।
ते न परैं भवजाल जाईं बिष्णुपद हरि कृपा ॥

इतिश्रीप्र० देहलीनगरे भगवद्दर्शनप्राप्तिकथन्नाम
सप्तसप्तितमोध्यायः ॥ ७७ ॥

माधव सुनि यह चरित पुनीता । कहत बंदि पद वचन विनीता ॥
कासारादि योगि सुचरित्रा । नाथ कृपा यह सुनो पवित्रा ॥
भक्तिसार बैभव सुखरासा । अब मन सुनिबे की अभिलाषा ॥
सुनि भट्टार्य्य कियो प्रारंभा । भक्तिसार शुचि चरित अदंभा ॥
पंचोपनिषद मय बर बिग्रह । देखत नाशहिं मोह परिग्रह ॥
तिनके पदपङ्कज शिर नाईं । याबिधि कहत भये गुरुराई ॥
जगरच्छण हित कृष्ण समाना । प्रकटे भक्तिसार बिद्वाना ॥
जिमि हरि देवकि उर प्रकटाई । वाढ़त भये नंद ग्रह जाई ॥
तैसेहिं भक्तिसार मुनिराई । कनकांगा उरते प्रकटाई ॥
वेत्रपिटारी वेचनहारा । बढ़े तासु ग्रह जाय उदारा ॥

दो० वेदान्ती अब सुनौ सो कथा सहित विस्तार ।
पूर्ब अत्रि वशिष्ठ भृगु भार्गव मुनि इकबार ॥

सो० ब्रह्मलोक कौ जाय पुलस्त्यंगिरा ब्रह्मऋषि ।
बिधि सौं कह शिरनाय उत्तम क्षेत्र बतावहू ॥

जहँ हम सकल करैं तप नाथा । करि हरिअनुभव होहिं सनाथा ॥
तब बिधि बिशुकर्मा बुलवाई । सर्वोपरि शुचि भूमि सुधाई ॥

बिशुकर्मा बिधि आयसु पाई । तौली महि तब तुला धराई ॥
सकल मही राखी इक ओरा । महीसार थल दूजे छोरा ॥
भई मही सब मिलि लघु भारा । महीसारथल गरुव अपारा ॥
तब बिधि धरो नाम महिसारा । बहुरि ऋषिन सौं बचन उचारा॥
जायकरौ तप यहथल सबमुनि । सकल महीते अति पावनगुनि॥
गये सकल तहँ तप मन आना । भार्गव दीर्घ यज्ञ तहं ठाना ॥
यह सब अर्थ सुनौ बिद्वाना । लिखो अहै ब्रह्माण्ड पुराना ॥
पुनि भार्गव मुनिराज प्रवीना । हरिके हेतु महातप कीना ॥

दो० देखि देव सो अमित तप डरपे अति मन माहिं ।
तप हरिबे कौ अप्सरा पठवत भये बन माहि ॥

सो० देखत गईं डराय मुनिबर तेज कृशानु सम ।
लौटिगईं घबराय देवलोक सब हारि हिय ॥

तिनमैं कनकांगा अति धृष्टा । सुबरण सम तन रूप बरिष्टा ॥
निज छबि बिश्व बिमोहनहारी । सँग ऋतुराज कुसुमसरधारी ॥
महीसार रचि स्वर्ग समाना । अद्भुत नृत्य गान तिन ठाना ॥
तिय बपु हरिमाया बलवाना । परम अजेय सुनौ बिद्वाना ॥
सुनि भार्गवप्रिय गान रसाला । दीने खोलि नयन तिहि काला॥
तब तिन किये बिलास मनोहर । पीनोन्नत दिखराय पयोधर ॥
हाव भाव कटाक्ष बिधि नाना । तन लावण्य अनूपम गाना ॥
अभिप्राय निज ऋषिहि जनायो । मुनिबर हृदय मोह उपजायो॥
कामबिबशइमि करि मुनि धीरहि । बिरहन लागी सारमहीरहि॥
योगभ्रष्ट है मुनिवर योगी । भये कछु काल स्वर्गसुख भोगी ॥

दो० तब ऋषिते देवांगना धारयो गर्भाधान ।
तहँ श्रीचक्र सुदर्शन आये तेजनिधान ॥

सो० बिभव सुसंबत नाम पुष्यमास दशमी असित ।
मघा नखत अभिराम भक्तिसार मुनि अवतरे ॥

तुला सुलग्न देवगुरु बारा । निरावयव तन पिण्डाकारा ॥
प्रकटे लखि कनकांगी तत्क्षन । गई स्वर्ग तजि बेत्रसघनबन ॥

भये दुखित ऋषि तासु बियोगा । लज्जित जानि भ्रष्ट तप योगा॥
जाय और थल भये तपलीना । भक्तिसार गति सुनौ प्रबीना ॥
जरा बिदारि अंड जिमि खगपति । कढ़े भये पुनि अंग बिमलअति॥
रोवन लगे क्षुधा वश तात्क्षन । दुग्धपान अभिलाष आनि मन ॥
तब अम्बुजबासिनि कटाक्ष लहि । तिनको पालनकियो देविमहि॥
पुनि तहँ महीसार अवतंशा । आये हरि जनपंकजहंसा ॥
सुधा सदृश दै दरश सिधारे । क्षुधा पिपासा रोग निवारे ॥
तब हरिदरश विरह रस पागे । प्रथम भांति पुनि रोवन लागे ॥

दो० तहँ श्रीखड्ग नाम इक आयो संपुटकार ।
बेत्र लेन हित ता बिपिन नित्य वृत्य अनुसार ॥
सो० बाल रुदन सुनि कान गयो धाय तहँ सो तुरत ।
लखि शिशु तेजनिधान नहि कोइ इत उत नारि नर ॥

भयो चकित निज भाग सराही । लियो उठाय बाल हरषाई ॥
अप्रज रही तासु की बामा । पङ्कजबल्ली जासु सुनामा ॥
ताहि आनि सुठि बालक दयेऊ । समाचार प्रापति को कहेऊ ॥
जिमि कीन्हे विनु यत्न यशोदा । पाये कृष्ण भयो अति मोदा ॥
तिमि अंबुजबल्ली सुभागनिधि । अनायास पाई सुपुत्र सिधि ॥
फूली नहि समाति निज तनमैं । अतुलित आनँद बाढ़ो मनमैं॥
लियो गोद अति मोद बढ़ायो । दोउ अस्तनन क्षीर भरि आयो॥
दियो पयोधर शिशु सुख माहीं । उन पयपान कियो पै नाहीं ॥
तिनहिं कि इतर पान अभिलाषा । हरिअनुभव अमृत जिन चापा॥
रहत तृप्त नित तारस माहीं । क्षुधा तृषा कछु बाधति नाहीं ॥

दो० खान पान कछु करत नहि ध्यान सुधा संतुष्ट ।
उदित भानु जिमि बढ़त भये हरिगुण अनुभव पुष्ट ॥
सो० रहित सकल व्यवहार संभाषण कौ आदि ह्वै ।
दैहिकादि दुखभार तिनकौ कछु न सतावही ॥

इतिश्रीप्र० भक्तिसारावतारकथनन्नाम अष्टसप्तितमोध्यायः७८॥

माधवदास सुनौ तदनंतर । महीसारपुर को कोउ नर बर ॥

शूद्र जन्म बयवृद्ध सुजाना । बाल प्रभाव बिशद सुनि काना ॥
गुनि अवतार मुदित मन भयेऊ । पावन क्षीर तहां लै गयेऊ ॥
लखो जाय शिशु तेजनिधाना । अतिमानुष बल बैभव ज्ञाना ॥
क्षीर भेट आगे धरि दीन्ही । पान करन कौ बिनती कीन्ही ॥
भक्तिसार सो पय शुचि जाना । तासु प्रेम लखि कीनो पाना ॥
रहो पुत्र बिहीन सो बूढ़ा । जानि तासु अभिलाष निगूढ़ा ॥
क्षीर सिष्ट ताकौ लै दयेऊ । निकट बुलाय बचन पुनि कहेऊ ॥
दंपति पान करौ यह क्षीरा । ह्वैहै सुत तुम्हरे मतिधीरा ॥
पियो दूध तिन हर्ष बढ़ाई । पाई तुरत दिव्य तरुणाई ॥

दो० गर्भवती पुनि नारि भई बहुरि गये दश मास ।
जन्मो सुत हरिभक्त तिन सुंदर तेज निवास ॥
सो० बिदुरोपम सो बाल दंपति लखि प्रमुदित भये ।
राखो नाम रसाल मधुराक्षर कनकृष्ण यह ॥

भक्तिसार प्रसाद सो बालक । बिद्याधाम भयो कुलपालक ॥
पुनि भगवत्कबि भये कनकृष्णा । सकल कला शिक्षक गततृष्णा ॥
भार्गवसुत सेवक हरिदासा । स्वप्न न आन देव की आसा ॥
सुनौ बहुरि भार्गवसुत लीला । सुजनन की सुखदायक शीला ॥
बिगत क्षुधादि बिकार शरीरा । श्रीशदयामृत पूरण धीरा ॥
तद्यपि बिश्व बिमोह करन हित । करत भये व्यवहार कुलोचित ॥
बेचत सूर्प बनाय बनाई । सातबर्ष या भांति बिताई ॥
आपहि अन्न पान अनुरागे । ग्रहते कढ़ि तब बिचरन लागे ॥
हरिके पुण्यथलन यात्राहित । जात भये चहुँदिश आनंदित ॥
योग आठअंग वेद जो भाषा । भई तासु प्रापति अभिलाषा ॥

दो० जगकारण कह बस्तु है यह चिन्ता उर आनि ।
लोक बिबिधि सङ्केत दृढ़ करि प्रवेश अनुमानि ॥
सो० अक्षपाद अरु शाक्य कापिल मत औलूक्य पुनि ।
देखि पतंजलि बाक्य बाह्य कुमत छाड़त भये ॥

बैशेशिक अरु माया बादी । शैव प्रभाकर भट्ट बिबादी ॥

न्यायप्रभृति जेबहुकुदृष्टि मत।देखिसकलशिव मत किय अभिमत॥
शिव कौ मानि जगत को कारण। इतर तुच्छ गुण किये निवारण॥
शिव परत्व उर दृढ़ करि राखा। किये ग्रंथ बहु द्राविड़ भाखा॥
सर्वोपरि शिवमत मन मानी। अपर मतन तृण सम अनुमानी॥
विगतज्वर बिचरत महि माहीं। काहूसों कछु बोलत नाहीं॥
इतर मतन सौं परम बिरागा। दरश परश संभाषण त्यागा॥
अग्रगण्य शिवभक्तन पांती। रहे सहस्र बर्ष यह भांती॥
महायोगि तब हरिके प्रेरे। आये भक्तिसार के नेरे॥
ऊर्द्धपुण्ड्र कीन्हे बर भाला। पहिरे तुलसी अंबुज माला॥

दो० शंख चक्र चिह्नित भुजा रवि सम तेज प्रकाश।
जिनके दरशन मात्रतें होत मोह तम नाश॥

सो० भक्तिसार लखि नयन महदाह्वय हरि भक्तियुत।
ते शिवनिष्ठा अयन बिमुख भये बोले नहीं॥

इतिश्रीप्र० कनिकृष्णावतारकथनन्नामैकोनाशीतमोऽध्यायः ७९॥

भक्तिसार की देखि रुखाई। महदाह्वय मुनि युक्ति उपाई॥
उनके बासस्थल के आगे। उलटे बृक्ष लगावन लागे॥
उर्द्ध मूल नीचे करि शाखा। थापि मही पुनि करि अभिलाखा॥
फूटे घट जल भरि भरि सींचत। मौन गहे महि बारि उलीचत॥
भक्तिसार तब तिन ढिग जाई। हँसे बहुत पुनि गिरा सुनाई॥
बिष्णुदास कह भर्म भुलाने। क्यों बिपरीत कृत्य उरआने॥
अवसर लखि महदाख्य सुनायो। हम तुम्हरो अनुकरण बनायो॥
कारणभूत जगत को जोई। तुम बिमोह बश भूले सोई॥
मत तत्वार्थ फिरत भ्रम टेकी। हम थिरमति तत्वार्थ बिबेकी॥
एक धर्म कौ धारण कीन्हे। परपदार्थ अवलम्बन लीन्हे॥

दो० कह शिवभक्त तत्ववित तुम काविधि सौं तात।
हम अज्ञात तत्व किमि हमहि बतावहु बात॥

सो० हम तौ निःसन्देह ज्ञाता तत्व पदार्थ के।
श्रुति पुराण मत एह शिवते परे न और कोउ॥

जगकारण वेदान्त बखाना। व्यासादिक मत यही बिधाना॥
हरि ब्रह्मादि बंद्य शिव गाये। परते पर शिव श्रुतिन बताये॥
महदाह्व सुनि तिनकी बानी। ह्वै प्रसन्न इमि कहत बखानी॥
तुम जो कहत सत्य सब बाता। यामें कछु संदेह न ताता॥
तदपि जो परतर प्राप्य पदारथ। सूक्ष्म बुद्धि लखि परत यथारथ॥
सुनियत कबहुँ न उत्पति जासू। किनहूँ रक्षा करी न तासू॥
सब जग को रक्षक पुनि जोई। जगकारण श्रुति सम्मत सोई॥
परतर प्राप्य पदारथ सोई। शिव उत्पति जानत सब कोई॥
ब्रह्मादिक सुर गण जग जेते। उपजे हरि सकास सब तेते॥
श्रुतिस्मृतिहु इतिहास पुराना। सबही करि यह भेद बखाना॥

दो० पुनि सबकौ आपति परी करि न सके निर्बार।
सबही की रक्षा करी कमलापति बहु बार॥

सो० बहुरि विष्णु भगवान शुद्ध सत्व मूरति बिदित।
ब्रह्म रजोगुणवान रुद्र तमोगुण मय कहे॥

शङ्कर भक्त लेउ मन जानी। इनमें कौन मोक्ष को दानी॥
बहुरि एक निज चरण पसारा। एक सो धोय कमंडल धारा॥
एक सो जल लै सीस चढ़ायो। भक्ति सहित निज जटन बसायो॥
इनमें बड़ो बिचारन काजा। नहि चाहिये कछु ज्ञान समाजा॥
तुमहीं शोधि लेउ मन माहीं। हम निरणय करिहैं कछु नाहीं॥
तिनके बेषहि करत विचारा। होत परापर को निरधारा॥
शिवकी आकृति वेद बखानी। अंग मसान भस्म लपिटानी॥
दिसा बसन शिर जटा बिशाला। व्याघ्र चर्म कपाल उर माला॥
बिधि आकृति याबिधि श्रुति गाई। सादर पढ़त वेद समुदाई॥
सृक अरु श्रुवा लिये कुश हाथा। भरे कमंडल तीरथ पाथा॥

दो० अक्षमाल धारण किये ध्यान करत परतत्व।
अधिक अर्थ इच्छा किये सूचित निष्पूर्णत्व॥

सो० विष्णु रूप बिख्यात श्रुति पुराण या भाँति करि।
चंदन चर्चित गात भू लीलादिक पार्श्व युग॥

भुजन मध्य शोभित जगदम्बा । जिहि कटाक्ष सब जग अवलम्बा ॥
मुकुट किरीट आदि मंजीरा । राजत तन वर भूषण चीरा ॥
शुभ मन्दार माल उर सोहै । पीतवसन देखत मन मोहै ॥
याविधि विष्णु चिह्न बहु आहीं । सबविधि पूर्णकाम इरशाहीं ॥
लखौतिनहिं शिववाक्य सुजाना । विधि शिवके अधिपतिभगवाना ॥
जब जब दैत्य असुर दुखदाई । करत अनिष्ट दुहुन कौं आई ॥
तब तब विष्णु दूरि करि ताही । देत इष्ट प्रसिद्धि यह आही ॥
सकल शास्त्र सम्मत पुनि एहा । लहिये विचारत नहिं संदेहा ॥
धेय सदा जानत विद्वाना । श्रीनायक दूजो नहिं आना ॥
ताके अमित प्रमाण लखाये । सकल यथार्थ श्रुतिस्मृति गाये ॥

दो० महत नाम मुनि बिमलमति जगहित रत भगवान ।
करि सुबाद निरणय कियो तत्व विचार विधान ॥
सो० पराशरादि प्रकार नारायण परतत्वकरि ।
करत भये निरधार योगीश्वर विज्ञान निधि ॥

सुनि महाख्य के वचन रसाला । भक्तिसार उर हर्ष विशाला ॥
भयो निवृत्त संदेह अशेशा । जाने परतर प्राप्य रमेशा ॥
देशिक मानि चरण शिर नाई । शिष्य करन हित विनय सुनाई ॥
तब महदाख्य हर्ष उर आनी । मेनाधीश कृपा फल जानी ॥
भक्तिसार मुनि के संस्कारा । कीन्हे तापादिक सुखसारा ॥
जगकारण पदार्थ उपदेशा । ध्यानादिक अष्टांग विशेषा ॥
याविधि ह्वै कृतकृत्य कृपाला । पायो उर आनंद बिशाला ॥
बहुरौं तिन्है शास्त्र के द्वारा । दिखरायो करवदर प्रकारा ॥
दिव्यातम स्वरूप हरिकेरो । ज्ञानादिक गुण बिशद घनेरो ॥
तासु प्रकाशक मंगल बिग्रह । श्रीभूम्यादिक नारि परिग्रह ॥

दो० मुकुट नूपुरादिक बिबिधि भूषण युत नित सोह ।
शंख चक्र आदिक शुभग दिव्यायुध मन मोह ॥
सो० ऐसे कमलानाथ नित्य मुक्त सेबित सदा ।
परबिभूति शुचि गाय शास्त्रन सौ दिखराय पुनि ॥

दै अष्टांगिक योग सुहायो । साक्षात करि सकल दिखायो ॥
भक्तिसार लहि दिव्य बिबेका । रचत भये तब ग्रंथ अनेका ॥
दिव्य द्रविड़ भाषा के माहीं । परम बिशद बरणो नहिं जाहीं ॥
जीव प्रकृति स्वरूप हरि लीला । सद्वारक अद्वारक शीला ॥
कहि बिभूतिद्वयनाथकृपानिधि । नाभिकमलजिनके उपजेबिधि ॥
जिनके षष्टम सुत भये शङ्कर । जहँ नर परभ्रम करत भयंकर ॥
बहुबिधि कहत भये परमारथ । सकल परापर भेद यथारथ ॥
बहुरि भक्ति युत पावन रीती । सादर गुरु पूजे अति प्रीती ॥
तब महदाख्य तीर्थयात्रा पर । जातभये तहँते दिश उत्तर ॥
याबिधि भक्तिसार बरयोगी । भये श्रीरवन दास्य रस भोगी ॥

दो० बिपरीतात्मज्ञान अरु संशयमिश्रत ज्ञान ।
तत्व दरशते त्यागि द्वौ लहौ बिशद बिज्ञान ॥

सो० खंडि इतर सिद्धान्त निज मत दृढ़ थापो जगत ।
जाने कमलाकान्त ध्येय सदा योगीश हरि ॥
पद्मनाभ जगदीश नारायण जगदेकपति ।
सब जगकारण श्रीश सर्बान्तरयामी सुखद ॥

दो० ध्यान करत निवसत भये कैरविणी के तीर ।
बर्ष शतसात योगपर भक्तिसार मतिधीर ॥
यह आख्यान पुनीत सुनि धारण करैं जे लोग ।
होइँ मोक्ष चिंता निरत पुनि न सहैं भवरोग ॥

इतिश्रीप्र० भक्तिसारमहदाख्यतत्वोपदेशोनामासीत्तमोध्यायः

अस्मद्यती बहुरि हरषाई । कहत भये गुरुसौं शिर नाई ॥
भक्तिसार को बिभव बिशाला । कहिये रहे महि केतिक काला ॥
सुनि बेदान्ति बचन गुरुज्ञानी । बंदि योगिपद मन क्रम बानी ॥
भक्तिसार बैभव सुखदाई । लगे कहन मन हर्ष बढ़ाई ॥
पावन कैरविनी तट बसहीं । हरिगुण गण उर अंतर लसहीं ॥
दिनकर सरिस तेज बिपुलाई । तपप्रभाव नहिं बरणि सिराई ॥
तबहिं नारि युत शिव सुरराई । गगन पंथ निकसे तहं आई ॥

वृषभारूढ़ शूल कर लीन्हे । दिसन स्वतेज प्रकाशित कीन्हे ॥
देखि परम बैदिक मुनिराई । उनकी छाया परस बचाई ॥
आवरणस्थल बैठे जाई । वृषभस्थित किय तब सुरराई ॥

दो० शैलसुता पूछति भई तब पतिसों शिर नाय ।
कंथा लीन्हे कौन ये कहौ मोहि सुरराय ॥
सो० इनको कहा प्रभाव चलौ यहाँ भावै तुमहि ।
मोहि जानन को चाव को ये करत कहा यहाँ ॥

कह शङ्कर ये अतुलप्रभावा । भगवद्भक्ति पार इन पावा ॥
मोकौ नहीं गिनत मन माहीं । मोसौं इन्है काज कछु नाहीं ॥
पारवती तब कहा विशेषा । ऐसे हरिप्रिय चाहिये देषा ॥
तब शिव भक्तिसार ढिग आये । तिनसौं कहि इमि वचन सुनाये ॥
तुमहि अभीष्ट देन के काजा । हम तुम ढिग आये मुनिराजा ॥
मांगि लेउ हमसौं मनबांछित । ते कह कहैं नहीं कछु कांछित ॥
उदासीन बोले कछु नाहीं । कंथा सियत प्रथमकी नाईं ॥
क्षण थित ह्वै पुनि शंकर कहहीं । हम देवनके अधिपति अहहीं ॥
तुम हमकौ पूजन बिनु कीन्हे । बैठे उदासीन व्रत लीन्हे ॥
तामें कहा हेतु मुनिराया । भक्तिसार तब बचन सुनाया ॥

दो० हमरो कछु कारज नहीं तुमसौं सुनौ महेश ।
तातें हम बोले नहीं यद्यपि तुम देवेश ॥
सो० कही शंभु पुनि बात तुमकौ प्रिय वर देन हित ।
हम आये हैं तात मॉगि लेउ मन भावनो ॥

दुर्लभ हू मागौ जो पदारथ । देउँ सकल स्वारथ परमारथ ॥
सकल अर्थ निस्पृह ते योगी । श्रीशानुभव स्वधा रस भोगी ॥
बोले पुनि गिरिजापति पाहीं । रुद्र हमहिं कछु बांछित नाहीं ॥
ताते कछु न देउ बरदाना । यह सुनि पुनि इमि शंभु बखाना ॥
मम दरशन अमोघ जगमाहीं । कबहूं व्यर्थ होत है नाहीं ॥
ताते कछु मांगौ बरदाना । भक्तिसार तब बचन बखाना ॥
सूत्र सुई कंथा मम धाई । जाय यत्न बिनु आप समाई ॥

यह बरदान हमहिं शिव देहू । जो आये तुम करन सनेहू ॥
कुपित भये शिव लखि परिहासा । कह मन भस्म करौं हरिदासा॥
कामदेव हम दियो जराई । नर कौ दहत कौन कठिनाई ॥

दो० दियो खोलि हग तीसरो जो कपाल के माहिं ।
प्रलयकाल जिहि खोलतहि तीनौ लोकं नशाहि ॥

सो० ज्वालमाल रहि छाय महि अकाश दशहू दिसा ।
गये सकल घबराय तिहुँ पुरवासी चर अचर ॥

भक्तिसार शिव कोपित देखे । तिहुंपुर जीव जरत सब लेखे ॥
भई न यद्यपि तिनहिं कछु बाधा । तदपि लोकरक्षा की साधा ॥
दक्षिण पग अँगुठा के माहीं । रहो नयन जिहि सम रबि नाहीं॥
तुरतहि दियो खोलि सो लोचन । कीन्हो शिव चख तेज बिमोचन॥
भई शांत ज्वाला दुखकारी । जीव चराचर भये सुखारी ॥
भयो शंभु उर अचरज भारी । योगेश्वर को तेज निहारी ॥
निज तेजहि खद्योत समाना । उनके तेज जरत तन जाना ॥
तबहिं प्रलय के मेघ बुलाई । जासु वृष्टि प्रलयाग्नि नशाई ॥
तिनसौं घोर वृष्टि करवाई । शांत भई तब शिव बिकलाई ॥
भक्तिसार हरिभक्त अगाधा । रहे अचल जलवृष्टि की बाधा ॥

दो० भई न तिनकौ कछु व्यथा सुमिरत हरिगुण ग्राम ।
लखि प्रभाव शिव अमित अति भक्तिसार रखिनाम ॥

सो० कहत शिवासौं रुद्र अंबरीष अपमान करि ।
भये दुर्वासा क्रुद्र इन जीतो तिमि मोहि अब ॥
लोक अजय हरिदास लजित भये शिव हारि हिय ।
जात भये कैलाश करत प्रसंशा पंचमुख ॥

इतिश्रीप्र० भक्तिसारेणारुद्रपराभवन्नाम एकासीत्तमोध्यायः ८१॥

तापाछे कोइ इक सिद्धेशा । पूजत जिहिं सुर सिद्ध अशेशा ॥
सिंहारूढ़ गगन पथचारी । अव्याहत गति बैभव भारी ॥
भक्तिसार थल ऊपर आयो । चाहत सो थल लांघि चलायो ॥
भक्तिसार के तेज बिशाला । हतगति भयो व्याघ्र तिहि काला॥

सिद्धराज तब दश दिश देखा । भूमि महान योगनिधि पेखा ॥
बिस्मित ह्वै उतरो तजि बाहन । लागो तिनको तेज सराहन ॥
कवच भेट धरि बोल्यो बानी । कंथा तजि पहिरौ मुनि ज्ञानी ॥
दिव्य बसन निर्मित यह आही । कीजै ग्रहण कृपा करि ताही ॥
भक्तिसार निज तेज प्रभावा । दिव्य कवच इक तुरत बनावा ॥
रबि पकाश लखि कवच अनूपा । भयो लज्जित सिद्धन को भूपा ॥

दो० दई उतारि सिद्धेश तब निज उरते मणिमाल ।
पहिरौ प्रभु यह कहत भयो भक्तिसार तिहि काल ॥

सो० तुलसी अंबुज माल दिखराई निज कंठते ।
शोभा तेज बिशाल अति अमोल मणिजटित सो ॥

शूक्तिहार तब कह कर जोरी । पुनि पुनि मुनि पदकमल निहोरी ॥
तुम महान परिपूरण कामा । विद्यानिधि सब गुण अभिरामा ॥
सिद्धराज हरिभक्ति अधारा । तुमहिं न कोउ जग जीतनहारा ॥
ऐसे बहुविधि करत बड़ाई । गयो सिंह चढ़ि मन हरषाई ॥
कौंकण नामक सिद्ध सुजाना । भक्तिसार वैभव सुनि काना ॥
अचरज करि तिनके ढिग आयो । रसगुटिका दै बचन सुनायो ॥
या गुटिका के परसत सन्ता । लोहो सोनो होत तुरन्ता ॥
प्राण सदृश रक्षा करि याकी । राखौ मुनि जाविधि हम राखी ॥
भक्तीसार फेंकि सो दीन्ही । निज तन मलि इक गुटिका कीन्ही ॥
कौंकन सौं कह तिहि प्रभाववर । याके परसत कंचन भूधर ॥

दो० तासु परीक्षा लेन हित सिद्ध सो पर्वत जाय ।
डारी गुटिका तुरत सो कंचन परो लखाय ॥

सो० दूजो मनौ सुमेरु लखि कौंकन विस्मित भयो ।
मुनि महिमा को मेरु मानौ हिमगिरिते अधिक ॥

भक्तिसार पद बंदन करिके । गौ निज ग्रह पदरज शिर धरिके ॥
भक्तीसार गुहा के अंतर । योगध्यान करि रहत निरंतर ॥
तब कासार भूत महदाह्वै । बिचरत निकसे आय तहां ह्वै ॥
देश देश हरिअस्थलनाना । करत तीर्थ दर्शन अस्नाना ॥

भक्तिसार के अस्थल आये । अप्राकृत तप तेज सुहाये ॥
लखि हरषे अति भार्गवनंदन । बिधिवत पूजि किये पदबंदन ॥
तब तिनसौं पूछत तिहुँ योगी । भारगवसुत तुम रहत अरोगी॥
अविच्छिन्न पुनि योग तुम्हारो । भक्तिसार सुनि बचन उचारो॥
तुम्हरी करुणा ते जगमाहीं । दासन कबहुँ न्यूनता नाहीं ॥
इमि करि कुशलप्रश्न परस्पर । भये सब अनुभव मग्न योगपर॥

दो० चारौ मिलि वह थल रहे कछुक काल सानंद ।
करत योग अष्टांग बिधि सुमिरत करुणाकंद ॥

सो० बहुरौं कासारादि वा थलते गवनत भये ।
सुमिरत श्रीश अनादि करत भूमिसंचार तिहुँ ॥
रहत एक निशि ग्राम मौनव्रत धारण किये ।
देहलिपुर सुखधाम तीनौ पहुँचे जाय तब ॥

दो० तीनि सहस अरु तीनिसौ पंचविंश गत बर्ष ।
तीनौ करि महि परिक्रमण परमधर्म निष्कर्ष ॥

सो० करि जगजीव विशोक अगिणित निज तप तेज बल ।
जात भये हरिलोक देहलिपुर तिहुँ योगिबर ॥

इतिश्रीप्र० सरोयोग्यादिनां परमपदप्रातिर्नाम
द्वासीत्तमोध्यायः ॥ ८२ ॥

निज जन्मस्थल भार्गवनंदन । आवत भये जगशोक निकंदन॥
श्वेत मृत्तिका तहां न पाई । ऊर्द्धपुण्ड्र बिनु भई बिकलाई ॥
भक्ताधीन शेषगिरि नायक । आय कहो तिनसौं सुखदायक ॥
सरोयोगि जन्मस्थल जहवां । श्वेत मृत्तिका है बहु तहवां ॥
सो लै ऊर्द्धपुण्ड्र करि धारण । करौ तात मन शोच निवारन ॥
भक्तीसार तुरत तहं जाई । कीन्हो ऊर्द्धपुण्ड्र मृदलाई ॥
पुनि भूसार क्षेत्र चलि आये । जगदीश्वर पद सीस नवाये ॥
करि अष्टांग योग कछु काला । रहे तहां भार्गवकुलपाला ॥
पुनि सत्यव्रत कौ मन लायो । जिहि प्रभाव अघनाशक गायो॥
अति उत्तम सब पुण्यथलनमें । मोक्षसिद्धि जिमि चारि फलनमें॥

दो० जहाँ शेष पर्यंक पर राजत रमानिवास ।
नीलजलद तन रूपनिधि कमलनयन सुखधाम ॥
सो० सरोयोगिसर तीर ध्यान करत पद्मेश पद ।
राजत भये मतिधीर वर्ष शतशत लौं तहां ॥

करत योग अष्टांग विधाना । तहां आय कनकृष्णा सुजाना ॥
सेवा करत रहत नित तिनकी । पायो जन्म कृपावश जिनकी ॥
भगवत्प्रवणा भये तिहि श्रद्धा । तहँ तब कोई इक तिय अति वृद्धा ॥
दिनप्रति योगस्थल सप्रेम अति । मार्जनकरि गोबर लै लीपति ॥
ह्वै प्रसन्न भार्गवकुलराया । वृद्धा सौं कह इमि करि दाया ॥
मैं प्रसन्न सेवा वश तेरे । नहिं तोकौ अदेय कछु मेरे ॥
मांगौ बर जो वांछित होई । प्रमुदित ह्वै बोली तब सोई ॥
वृद्धापन वश हौं अघहारी । बिबिधि भांति करि रहति दुखारी ॥
ताते मोहिं अप्सरन प्रकारा । अचल युवा दीजियै उदारा ॥
तासु बचन करि अंगीकारा । कृपादृष्टि तिहि ओर निहारा ॥

दो० देवांगना सदृश भई नित्य युवा कौं प्राप्त ।
सकल लोक सौंदर्य जनु तापर भई समाप्त ॥
सो० वल्लभ नृप तिहि काल तासु अलौकिक रूप लखि ।
काम बिबश बेहाल ह्वै बहु विधि बिनती करी ॥

भूषण बस्त्र द्रव्य बहु दीन्ही । लाय अग्रमहिषी ग्रह कीन्ही ॥
तब बहुकाल स्वर्गसम भोगा । करत भये नृप तासु संयोगा ॥
दिनप्रति भूपति युवा सिरानी । जिमि क्षण क्षण अंजुलिगत पानी ॥
नारि युवा नित नव अधिकाई । देखि नृपति अति विस्मयपाई ॥
ताको कारण पूछो ताही । उन भार्गवभूषणहि सराही ॥
तिनकी करुणा तेज प्रतापा । सेवत मिट्यो जरा संतापा ॥
रहत सो याही पुरके माहीं । तिन सम कोउ दयालु जग नाहीं ॥
वृद्धा बश मैं अति दुख पायो । सो उन सब निर्मूल नशायो ॥
यद्यपि वे परिपूरणकामा । सकल अर्थ निस्पृह सुखधामा ॥
तद्यपि भक्तियुत पूजा कीन्हे । प्राप्त होत अभिमत तजि दीन्हे ॥

दो० सेवा काबिधि करौगे तुम राजन के राज ।
एक यत्न तुमसौं कहौं यौबन प्रापति काज ॥
सो० उनके शिष्य महान गुरुसेवी कनकृष्णा मुनि ।
आवत ते विद्वान भिक्षा कारण मम सदन ॥

ऊर्द्धपुण्ड्र शोभित बर भाला । पहिरे तुलसी अंबुज माला ॥
पुरस्कार जो होयँ तुम्हारे । भक्तिसार मुनि बर के प्यारे ॥
करैं कृपा तौ भार्गवनन्दन । सहजहिं करैं जरादुख कंदन ॥
सुनत बात नृप हर्ष बढ़ायो । सादर कनिकृष्णाहि बुलवायो ॥
कहत भये तिनसौं नृप याबिधि । तपसी तुम्हरे गुरु करुणानिधि ॥
कियो चहत हम तिनकी सेवा । ल्यावो यहां बोलि तुम देवा ॥
कह कनिकृष्णा नृपति सौं बाता । योगिराज हमरे गुरुज्ञाता ॥
वे काहू के घर नहिं जाहीं । तुमसे नृपन निहारत नाहीं ॥
शङ्करजित निस्पृह सब काजन । दुराराध्य तुमकौ अति राजन ॥
सुनि नरपतिहि शोच भयो भारी । निज बांछित निराश उर धारी ॥

दो० तब नृप शुभचिंतक जनन कीन्हो तहाँ जनाव ।
जे जानत कनिकृष्ण को बैभव अतुल प्रभाव ॥
सो० इनके काव्य नरेश हरित होत सूखे बिटप ।
गाथा तव उद्देश करै तौ तुम यौबन लहौ ॥

बल्लभदेव सुनत हरषाना । कनिकृष्णाहि करि अति सन्माना ॥
पूजा करी सहित अनुरागा । गाथा करन काज बर मांगा ॥
कह कनिकृष्णा सुनौ नृपराई । नरगाथा हम कबहुँ न गाई ॥
भगवत् बिषय गाथ हम गावत । तथा भागवत यश मन लावत ॥
आगम मत नरकीरति गाना । कबिजन कौ कर्तव्य बखाना ॥
हम भगवज्जन गाथ तुम्हारी । करैं तौ लागै पातक भारी ॥
तब नृप तिनसौं आग्रह कीन्हो । तिन वा काजहि मन नहिं दीन्हो ॥
भोगासक्त नृपति गतबोधा । कनिकृष्णाहि बोले करि क्रोधा ॥
जो मम हित नहि करत प्रवेशा । तौ तुम छांड़ि जाउ मम देशा ॥
सुनि कनिकृष्णा महीपति बानी । देशत्याग बुधि मनमैं आनी ॥

दो० तुरत सकल वृत्तान्त सो गुरुहि सुनायो जाय ।
देशत्याग हित नृप वचन पुनि अपनो व्यवसाय ॥
सो० गुरुपद कियो प्रणाम आयसु मांगी चलन हित ।
तब गुरु करुणाधाम चलत भये उठि शिष्य सँग ॥

शेषशयन हरि के ढिग जाई । कहो सकल वृत्तान्त सुनाई ॥
मागत बिदा कहो श्रीनाहू । शिष्य भक्तिबश जिमि तुम आहू ॥
भक्ताधीन हमहुं तिमि आहीं । चलिहैं हम तुम जात तहांहीं ॥
तुम बिनु यहां रहन के अर्था । एकौ क्षण हम नाहिं समर्था ॥
भक्तिसार तब कहो सुनाई । जो प्रभु के मन याविधि आई ॥
तौ करुणाकर अम्बुज नयना । लेउ लपेटि कक्ष निज शयना ॥
चलौ हमारे संग कृपाला । सोइ हरि करत भये तत्काला ॥
अग्र चले कनिकृष्ण सपरिजन । तिन पाछे भार्गवकुलनंदन ॥
चले यथोक्तकारि तिन पाछे । शेषासनहि कक्ष लै आछे ॥
लखि तहँके सब सुर अनुरागे । देवेशादि संग उठि लागे ॥

दो० प्रजा सकल लखि जात हरि कांचीपुरहि विहाय ।
रामगवन बन अवध जिमि चले संग उठि धाय ॥
सो० कांची पश्चिम ओर एक कोश इक थल बिमल ।
तहँ बसि कीन्हो भोर उठे प्रात पुनि चलन हित ॥

भये इक निशि अस्थित तिहि ठामा । तबते एकस्थित भो नामा ॥
कांचीपुरी भई अंधियारी । मानौ कालनिशा भयकारी ॥
उदय अस्त नहिं परत लखाई । लखि निष्पुरुष नृपति दुख पाई ॥
मंत्रिन सहित बिकल मन राजा । जात भये जहं सकल समाजा ॥
बरदराज प्रति बिनय सुनाई । लौटि चलौ कांची सुखदाई ॥
तिन यह अंगीकार न करेऊ । तब यथोक्तकारी पग परेऊ ॥
तिन कह नृप हम भक्तअधीना । उनकी अनुगति व्रत हम लीना ॥
भक्तिसार जो सत्यव्रत जाहीं । प्रथक बिचार हमहिं कछु नाहीं ॥
तब नृप भक्तिसार ढिग जाई । लौटन हित प्रार्थना सुनाई ॥
उन कह जो कनिकृष्ण फिराहीं । हमहिं जान कौ आग्रह नाहीं ॥

दो० तब नरेश कनिकृष्ण कौ कीनो दंड प्रणाम ।
क्षमा करा अपराध मम करुणा गुण अभिराम ॥
सो० सुनि कनिकृष्ण कृपाल सहज सरल चित दीन हित ।
कर जोरत तत्काल नृप अपराध क्षमा कियो ॥

हरि गुरु सौं बिनती कीन्ही तब । उनकी अनुमति पाय फिरे सब ॥
बल्लव लखिपुर प्रथम समाना । बिगत बिषाद हर्ष अति माना ॥
भक्ति प्रभाव देखि अति भारी । भये भक्त दुर्मतिहि निवारी ॥
शेषशायि प्रति भार्गवनंदन । करी प्रार्थना करि पद बंदन ॥
भये प्रत्यक्ष सबकौ सुखधामा । लह्यो यथोक्तकारि यह नामा ॥
अब करि कृपा रहौ याही थल । सबकौ देत मनोबांक्षित फल ॥
मानि बिनय हरि रहे तहाईं । वाही थल देखिये अबताईं ॥
अरु यथोक्तकारी यह नाऊं । है तिनको प्रसिद्ध सब ठाऊं ॥
श्रीपति इतर थलन के माहीं । दक्षिण पारशु शयन कराहीं ॥
वह थल तादिनते अबताईं । शयन करत हरि पारशु बाईं ॥

दो० बेगवती पावन नदी ताहित करुणाअयन ।
प्राचीदिशि शिरकरि तहाँ करत भये प्रभु शयन ॥
सो० तबते दक्षिण ओर मस्तक करि सोवत तहाँ ।
मुनि मन जासु चकोर वदनचंद पश्चिम किये ॥
रहे तहां कछु काल भक्तिसार सारग्रही ।
हरि छबि मुक्ताजाल ध्यानमानसर चुँगत नित ॥
कनिकृष्णहु तिन संग रहत सदा हरिगुण गुणत ।
सेवन करत अभंग भक्तिसार पद प्रेम युत ॥

इतिश्रीप्र० भक्तिसारबैभवकथनन्नाम त्र्यासीत्तमोध्यायः ८३ ॥

तापाछे भार्गवसुत ज्ञानी । शार्ङ्गपाणि दरशन रुचि आनी ॥
जो हरि कुंभकोण मधि लसहीं । तहं जे मनुज अर्द्धक्षण बसहीं ॥
ताके कर केवलपद आही । अपर सिद्धि कहिये कह ताही ॥
तहं नित बास करन के काजा । गवने भक्तिसार मुनिराजा ॥
शार्ङ्गपाणि सेवा मन भाई । पहुंचे पंथ व्याघ्रपुर जाई ॥
बैठिगये इक थल मुनिराया । पढ़त वेद तहं बिप्र निकाया ॥

मुनिवर तेज प्रभाव उदारा । जानो नहिं तिन द्विजन अपारा ॥
निज मन तिनहिं अद्विज अनुमानी । करी निवृत्त वेदकी बानी ॥
लखि भार्गवसुत अस्थल आना । बैठे जाय करत हरिध्याना ॥
तब द्विज वेद पाठ अनुरागे । भूले बाक्य उठत नहिं आगे ॥

दो॰ चितामग्न बिप्रगण भयो पाठ क्यो भंग ।
शोचत अस्मृति होति नहि भूले सब इकसंग ॥

सो॰ भक्तिसार यह देखि जात भये तिनके निकट ।
निज अघको फल लेखि क्षमाकियो सो आपही ॥

नखसौं छीलि शालि दिखरायो । याविधि श्रुति संकेत जनायो ॥
सो संज्ञा देखत बिप्रन कौं । पाठस्फूरित भयो सबन कौं ॥
यह प्रभाव मुनि को जब देखो । पूजा करि सुभाग निज लेखो ॥
भगवद्भक्त शूद्र नहिं होई । जानिये बिप्र भागवत सोई ॥
सब बरणन में शूद्र सो सांचे । जिनके मन हरिभक्ति न राचे ॥
यह कहि चरण बंदि अनुरागे । पुनि श्रुति पाठ करन सब लागे ॥
उंछ वृत्य रत मुनि सुखधामा । बीथिन फिरन लगे तिहि ग्रामा ॥
वापुरके अर्चा भगवाना । फिरत संग सब तजि अस्थाना ॥
यह अचरज लखि अर्चक धाये । पुरबासी बहु बिप्र बुलाये ॥
तिनकौ यह अचरज दिखरायो । लखि मृत्युजन अचंभो आयो ॥

दो॰ सुनत यज्ञशाला तजि चलि आयो यजमान ।
अतिमानुष प्रभाव लखि कीन्हो मन अनुमान ॥

सो॰ इन सम नहिं कोउ आन श्रीपतिप्रिय योगीश ये ।
भक्ति विराग निधान जिनके बश याभाँति हरि ॥

करि प्रणाम बहु भांति बड़ाई । कहि बहुविधि निज भाग निकाई ॥
जगतबंद्य आगमन तुम्हारे । भये मनोरथ सफल हमारे ॥
नयन सफल लहि दरश तुम्हारे । जीभ सफल प्रभु नाम उचारे ॥
सीस सफल पदबंदन कीन्हे । हाथ सफल पूजन मन दीन्हे ॥
बहु बिनती करि मुनिहि रिझाई । ल्यायो मखशालहि सुखपाई ॥
श्रुति वेतनकी सभा मझारी । तिनकौ अग्रासन बैठारी ॥

धर्मराज नृप निज मख जाबिधि । पूजत भये गोबिंद कृपानिधि ॥
पूजन प्रथम करो तिमि तिनको । अति प्रभाव कहि जात न जिनको ॥
लखि अध्वर्यादिक द्विजबृंदा । करत भये दीक्षित की निंदा ॥
दई गारि बहु जिमि शिशुपाला । कीन्हो बिप्रन कोप बिशाला ॥

दो० मूढ़ कियो तैं काज यह अति अचेत की भांति ।
श्रुति पारंगत ब्रह्मवित् तजि बिप्रन की पांति ॥
सो० शौचाचार बिहीन शूद्रहि अग्रासन दियो ।
देखत लगत मलीन प्रथम तासु पूजन कियो ॥

ताते नष्ट यज्ञ तव भयेऊ । इमि बहु कटुकबाद तिन कहेऊ ॥
यद्यपि अतिनर लख्यो प्रभावा । तद्यपि शठन मत्सर उपजावा ॥
सो सुनि दीक्षित भयो दुखारी । भक्तिसार निंदा दुख भारी ॥
भक्तिसार प्रति बचन सुनायो । नाथ निगम आगम इमि गायो ॥
हरि हरिजन निंदा सुनि काना । जो न जायउठि तजि सो थाना ॥
सो नर सुकृत भ्रष्ट ह्वै जाई । अंत अधोगति धाम बसाई ॥
नाथभक्त हम क्यों यह सहईं । प्रभु निंदा द्विज भाषत अहईं ॥
दीक्षित बचन मानि मुनिनायक । ईर्षावंतन हूं सुखदायक ॥
निज महिमा दिखरावन काजा । इच्छा करत भये मुनिराजा ॥
हृदयकमल में हरि कौ ध्यायो । याबिधि तिनकौ बचन सुनायो ॥

दो० होउ प्रकट प्रभु यासमय लोकानुग्रह काज ।
भक्ताधीन मानि तब लक्ष्मीपति महराज ॥
सो० शेषतल्प पर शयन चक्रादिक आयुध लिये ।
प्रकटे अम्बुजनयन योगिवर्य्य के सीस ते ॥

नीलजलद तन सुंदर स्यामा । शोभित पीताम्बर अभिरामा ॥
तब अध्वर्यादिक सब ब्राह्मण । भये चक्रत यह लखि बिरोधिगण ॥
हरिकौ करि प्रणाम तिहि काला । मानो निज अपराध बिशाला ॥
भये हरिभक्त कुमति सब त्यागी । भक्तिसार चरणन अनुरागी ॥
करि प्रणाम अपराध क्षमायो । पूजि ब्रह्मस्यन्दन बैठायो ॥
याबिधि भक्तिसार मतिमाना । द्विजन छुड़ाय दुष्टअभिमाना ॥

उपदेश्यो बहु ज्ञान अनूपा । गये कुम्भकोनहि मुनिभूपा ॥
तहँ शारंगपाणि पद बन्दे । रूप अनूपम देखि अनन्दे ॥
शयन किये हरि लखि इक गाथा । करी महाकवि द्राविड़भाषा ॥
सो सुनि भक्तबछल सहसाईं । उठे शयन तजि के वाठाईं ॥

दो० भक्तिसार अपचार निज गुणि डरपे मन माहि ।
करत भये तब प्रार्थना शयन त्यागिये नाहि ॥
सो० भक्तविवश भगवान शयन करी पुनि तुरतही ।
देखिये उठत समान अबलगि सो मूरति रुचिर ॥

लखि उद्वेग शयन हरिकेरी । मुनिवर अस्तुति करी घनेरी ॥
अद्भुततेज लोक सुखदाई । फणिप अंक परियंक बनाई ॥
दक्षिण शिर उत्तर मृदुचरणा । प्राचीदिश मुख शशि द्युतिहरणा ॥
कीन्हे शयन कमलदल लोचन । शारंगधर जनअनहित मोचन ॥
अरुणअधर नवपल्लव मानो । करपद मुख लखि चंद्र लजानो ॥
कुम्भकोणपति रविछविहारी । बसौ हृदय मम मंगलकारी ॥
इमि अनुभव कीनो सुखसारा । ताते उपजो प्रेम अपारा ॥
तब द्वय दिव्यप्रबंध बनाये । रुचिर द्रविड़भाषा मनभाये ॥
षोड़शअधिक युगलशत गाथा । तिनमैं करतभये मुनिनाथा ॥
चतुर्मुखांत नाम इक अद्भुत । चारिन्यूनशत गाथ बिशदयुत ॥

दो० श्रीचंद्रव्रत दूसरो गाथा शत अरु वीश ।
एकादश अस्थलन की अस्तुति करी मुनीश ॥
सो० रंगी शेषगिरीश बीक्षारण्य बखानि पुनि ।
कहो बहुरि योगीश श्रीयथोक्तकारी विभव ॥

पारथसारथि गानग्रह गाये । शेषग्रेह त्रिबिक्रम भाये ॥
पार्थसूत कैरविणि बताये । सहित नृकेहरि आदि सुनाये ॥
कुम्भकोण बरणे शारंगधर । कहे कपिस्थल मधि गजार्तिहर ॥
प्रेमपुरी शुभांग बरणन करि । कहे महापुर अपूपेशहरि ॥
याबिधि कुम्भकोणके माहीं । करत महाद्भुत ध्यान सदाहीं ॥
रहे बर्ष द्वयसहस तीनिशत । भक्तिसार शारंगधर पदरत ॥

तीनि सहस्रशतसप्त बर्ष भरि । रहे अन्न तजि क्षीर पानकरि ॥
याबिधिसौं सप्ततिशत बर्षा । रहे भूमि योगीश सहर्षा ॥
द्वापर कलियुग संधि मझारी । करि भव पीड़ित लोक सुखारी॥
निगमसार बर दीप जगायो । मोह तिमिर निर्मूल नशायो ॥

दो० जगरक्षण करि भांति बहु बरणि प्रबंध अनूप ।
कुंभकोण थल विमल मैं पायो सहज स्वरूप ॥
सो० शुद्धचित्त करि लोग लही सुदरशन मूर्त्ति निज ।
ते न सहै भवरोग गावै सुनैं जे चरित यह ॥

इतिश्रीप्र० भक्तिसारबैभवकथनन्नाम चतुरासीत्तमोध्यायः८४ ॥

भक्तिसारकोचरित सुहायो । अस्मद्यति सुनि अति सुखपायो॥
पुनि कह गुरुचरणन धरि माथा । कहौ नाथ शठजित गुणगाथा॥
ताहि सुनन कौ आतुर ममचित । कहत भये तब रंगपुरोहित ॥
अवतारक्रम शठजित बैभव । बिद्वन् हम तुमसौं कहिहैं सब ॥
पहिले अंग निरूपण कीजै । अंगी कथन बहुरि मन दीजै ॥
याबिधिआगमक्रमजानौनित ।अवयवसकलअवयवीशठजित॥
कासारादि चारि योगिनको । कहो चरित्र भक्ति भोगिनको ॥
अब कुलशेखर चरित सुनावत । जिनको सकललोक यशगावत॥
दिनप्रति जिनके नगर अदोषा । होत रंगयात्रा हित घोषा ॥
बंदौ सो कुलशेखर राजा । शिर धरि धरणि समेत समाजा ॥

दो० दक्षिण पश्चिम बीच इक पावन केरल देश ।
ताल क्रमुक तरु राजहीं संपति शुभग अशेश ॥
सो० लसत तासु के माहि अनुपम रजधानी रुचिर ।
जिहि सम सुरपुर नाहि कुक्कुटकूट सुनाम शुभ ॥

जासु कोटपरिघा की नाईं । घेरि रहो जलनिधि चहुँ घाईं ॥
तौलो बिधि यह पुर महि रहेऊ । लघुताबश सुरपुर नभगयेऊ॥
दृढ़व्रत नाम तहां के भूपा । चोल बंश जलनिधि शशि रूपा ॥
सुयश पुनीत तिहूँपुर छायो । श्रीपति भक्ति पार जिन पायो ॥
रामजन्म हित जिमि अवधेशा । कियो अश्वमेधादि बिशेशा ॥

तैसेहि पुत्रजन्म लगि दृढ़व्रत। हरि हित बहुबिधि कियो बिशदकृत॥
ह्वै प्रसन्न तब रमानिवासा। दीन्हो पुत्र सहज सुखरासा॥
शुभग पराभव बर्ष मझारी। कुंभ मास दशमी उजियारी॥
नखत पुनर्बसु सुरगुरुबारा। कौस्तुभांश लीन्हो अवतारा॥
पुत्र देखि दृढ़व्रत अनुरागे। दिये दान बिप्रन मुँह मांगे॥

दो० अतुलित तेज न जाय कहि सुखमानिधि मुदग्राम।
नामकरण बिप्रन कियो कुलशेखर शुभधाम॥

सो० आगमबिधि संस्कार यथाकाल भूपति किये।
चौलादिक सुखसार पुनि बिद्याआरंभ किय॥

अल्पकाल बिद्या समुदाई। लक्ष मात्र करि गुरुसौं पाई॥
धनुर्वेद पुनि लह्यो यथारथ। मातु पिता लखि भये कृतारथ॥
पितु आयसु लहि राजसिंहासन। किये जीति रिपु निज अनुशासन॥
प्रजात्राण रघुबीर समाना। बैभव लखि पितु अति सुखमाना॥
देखे लायक सकल प्रकारा। ह्वै कृतकृत्य बिपन पगु धारा॥
तबहिं चोलकुलबिमलबिभूषण। सबगुणसहित रहितसबदूषण॥
पालत राज धर्म हित लागी। सपनेहुँ बुधि न बिषयरसपागी॥
करत निरंतर षोड़श दाना। गोसहस्र नित राम समाना॥
जिमि न बाध निबलहि बलवाना। राजऋषी सोई करत बिधाना॥
तिनको कृपासिंधु श्रीनाहा। उभय बिभूत करत निर्बाहा॥

दो० स्वाभाविक रज तम रहित शुद्धसतोगुणवान।
हरि तदीयशेषत्व लौ तिनहिं सहज शुचि ज्ञान॥

सो० हरिपुर ते सेनेश आय किये संस्कार सर।
करि महार्थ उपदेश पुनि गवने बैकुण्ठपुर॥

पायो उनकी कृपा महाना। पूरण भक्ति बिरति बिज्ञाना॥
याबिधि परमधर्म के ज्ञाता। कुलशेखर जग मंगलदाता॥
हरिगुण रूप प्रकाशित करहीं। अकृतिकरण पावक जिमि डरहीं॥
अर्थ कामकी रुचि नित त्यागी। रहत मत्त जिमि हरि अनुरागी॥
जे बिषयातुर तन अभिमानी। तिनको संग दुसह दुखदानी॥

याबिधि दृढ़ बिचार मन कीन्हो । तन अनुबंधिनहूं तजि दीन्हो ॥
सम्पति सब करि हरि आधीना । रघुपति चरणाकमल चित दीना ॥
क्षेत्र मित्र सुत तिय समुदाई । दिये लगाय रघुपति सिवकाई ॥
बिभव रूप रघुपति मन भाये । व्येंकटपति अर्चा चित लाये ॥
करत प्रार्थना दिन अरु राती । व्येंकटेश सौं नृप याभांती ॥

दो० सोपानहुँ करि निज बदन कमल कृपासुखसिंधु ।
दिखरावहु शेषाद्रिपति निशिदिन आरतबंधु ॥

सो० सुनो बहुरि नरपाल रंगस्थल माहात्म्यबर ।
उपजो प्रेम बिशाल तिनकी सेवा दरश हित ॥

रंगधाम कीजै नित बासा । याबिधि करत भये अभिलाषा ॥
यह निश्चय निज मन ठहरायो । तब यात्राहित घोष करायो ॥
मंत्रिन सुनि मन कियो बिचारा । जो नृप रंगधाम पगुधारा ॥
तौ निजपुर आवन कठिनाई । भक्ति बिराग नृपहि अधिकाई ॥
शोभासागर छबि के अयना । बहुरै कौन देखि भरि नयना ॥
येतौ अग्रगण्य तिन माहीं । प्रेमपात्र हरिके जे आहीं ॥
जो इन रंगनाथ मुख देखा । रहिहैं तहं सब त्यागि बिशेखा ॥
ताते इनकी यात्रा माहीं । व्यग्र किये कछु अनुचित नाहीं ॥
यह बिचारि बैष्णावन बुलाई । तिनसौं कहत भये शिरनाई ॥
जात प्रात नरपति रंगस्थल । ह्वैहैं अवशि जाय तहँ अविचल ॥

दो० देश कोश पुरजन प्रजा साधु बिप्र गुरुवृंद ।
कर्म धर्म आगम निगम सबके आनद कंद ॥

सो० इन बिनु कोउ रक्षपाल देखि परत नहि दूसरो ।
ह्वै है बिपति बिशाल सबहुन इनके परिहरे ॥

तुम्हरो बचन सुनत नरपाला । जिमि तिमि नृप राखौ यह काला ॥
रंगधाम न जायँ नरनाथा । हित सबही को तुम्हरे हाथा ॥
याबिधि सुनि सचिवनकी बानी । श्रीवैष्णावन लई मन मानी ॥
यात्राहित जब नृपति सिधारे । तब सन्मुखते आय पधारे ॥
देखि राजऋषि बैष्णाव आये । करि साष्टांग हृदय हरषाये ॥

करत भये नृप मनहि विचारा । निगमागम इमि किय निर्धारा ॥
मिलै जो हरिभक्तन की पूजा । तासम नहिं पुरुषारथ दूजा ॥
तैसेहि उनके द्वेष समाना । नाहिन आत्मनाश कछु आना ॥
सुनो पुराणनहू यह भेवा । संबत षष्टिसहस हरिसेवा ॥
किये जो नरहि महाफल होई । सकृत जो बैष्णव पूजै कोई ॥

दो० होय नहीं षोडशकला सदृश सो हरिउपचार ।
यह महातम बैष्णवन को करि नृप मनहि विचार ॥
सो० फिरि आये राजर्षि बैष्णवगण के संग मिलि ।
आनि सदन मन हर्षि पूजन कीन्हो प्रेम युत ॥

आराधन समाप्ति लगि राजा । आपहि कीन्हो बैष्णव काजा ॥
अरु बैष्णव भोजन पर्यंता । बिनु आहार रहे नृपसंता ॥
तापाछे बैष्णव चरणामृत । लीन्हो सिष्टप्रसाद महाब्रत ॥
दै तांबूल बसन अरु भूषण । मालादिक उपचार अदूषण ॥
सबबिधि करि पूरण सिवकाई । हरिगुण कथन सुनो मनलाई ॥
याबिधि सौं अनुदिन बहुकाला । रंगप्रयाण करत नरपाला ॥
सचिव बैष्णावन देत पठाई । फिरि आवत तिनसंग हरषाई ॥
करत राज बैष्णावन अधीना । श्रुति वेदांत पार जिन लीना ॥
करत सदा तिनको सहबासा । नित नवमंगल भक्ति हुलासा ॥
सुनो महात्म व्येंकटाचल को । सहित स्वामिपुष्करणि बिमलको ॥

दो० गंगादिक तीरथ सकल मिलि सब जासु समान ।
सुर गंधर्व परमऋषि कियो सवन अस्थान ॥
सो० अस्तव किय नृपराज श्रीमुकुंद माला रुचिर ।
लोकानुग्रह काज प्रकटो यश प्रह्लाद सम ॥

इतिश्रीप्र० कुलशेखरप्रभाववरणनन्नाम
पंचासीत्तमोध्यायः ॥ ८५ ॥

तापाछे नरनाह महाना । यह बिचार उर अंतर आना ॥
वेदवेद्य परपुरुष कृपाला । दशरथ पुत्र भये जिहि काला ॥
रामायण बपु भो तब वेदा । प्राचेतस कहिले तजि खेदा ॥

यह निश्चय करि सुनत निरंतर । श्रीमद्रामायण अति सादर ॥
रामचंद्र पद प्रेम अपारा । नितप्रति बढ़त तैल जिमि धारा ॥
सुनो प्रकर्ण तहां नृपराई । चौदह सहस निशाचर धाई ॥
जिनके अतुल भयंकर कर्मा । घेरे रघुपति निश्चल धर्मा ॥
बिसरे प्रभु परत्व प्रेमाकुल । चिंता कोप बिवश भये व्याकुल ॥
चलिवे कौ सम्हरे तत्काला । लीन्हे धनुष बाण असि ढाला ॥
चतुरंगिनी सयन बहु साजी । आतुर चढ़े नृपति बर बाजी ॥

दो० रामसहाय करण हित चलौ सकल जन धाय ।
सुनि आयसु अचरज मगन भये लोग समुदाय ॥
सो० मंत्रिन कियो बिचार नृपति प्रेम वश भ्रांतचित ।
नहीं अपर उपचार श्रीबैष्णवन सहाय बिनु ॥

तब श्रीबैष्णव समरथ जानी । पठये सन्मुख पंडित ज्ञानी ॥
नृपसौं सो सब जाय पुकारे । रघुपति यातुधान सब मारे ॥
निश्चर दल सहस्र द्वयसाता । तीनि घरी मधि राम निपाता ॥
शत्रुदमन महर्षि सुखदाई । पतिसौं हर्षि मिली सियआई ॥
सुनि कुलशेखर अति प्रियबानी । श्रीबैष्णव प्रतीति मन आनी ॥
दिये तिन्है अंबर बर भूषण । रघुपति भक्त कमल कुल पूषण ॥
ह्वै आनंद मगन तिहि काला । यात्रा करी निवृत्त नृपाला ॥
कुलशेखर की कथा पवित्रा । अपर सुनौ वेदान्ति बिचित्रा ॥
असदृश रामभक्ति तिन माहीं । बिनु बैष्णव मुख देखत नाहीं ॥
श्रीवैष्णव मय निज रजधानी । करत भये नृपबर बिज्ञानी ॥

दो० बिद्वानन सँग रहत नृप ध्यान मग्न दिन रैन ।
रामायण को श्रवण नित करत बहत जल नैन ॥
सो० निशि दिन यही अधार पुलकित तन गद्गद गिरा ।
तनकी नहीं सम्हार प्रेम मग्न मन मौनव्रत ॥

तिनकौ तहां चतुर पौराणिक । कहत कथा नित सुख अस्थानिक ॥
रामबिजय यश बिनय बड़ाई । कहत खेद थल सदा बराई ॥
इक दिन ते बिद्वान सुजाना । भये युक्त कछु कारज आना ॥

तादिन तिनके सुत तहँ आई । राजऋषी कौ कथा सुनाई ॥
नृपको अभिप्राय नहि जानत । बिपिन कांड द्विज भये बखानत ॥
तहँ यह अर्थ दुसह दुखकारी । कढ़त भयो नृप आनँदहारी ॥
रावण हरी जनकजा ऐसे । नभ रोहिणी हरी बुध जैसे ॥
सुनि यह नृपहि क्रोध अति जागा । चरणप्रहार सीस जिमि नागा ॥
सबके सन्मुख बचन कहो पुनि । रामचंद्र तिय परमयशस्वनि ॥
ताकौ किमि रावण दुखदाता । हरत दुष्ट राक्षस मम माता ॥

दो० भस्म करत लङ्का अबहिं जाय सिंधु के पार ।
निज जननी ल्यावत खलहि दलयुत करि संहार ॥

सो० धनुष बाण लै हाथ खड्गादिक आयुध सकल ।
धसे सिंधु के पाथ लङ्का सन्मुख सेन युत ॥

प्रेमाविष्ट क्रोध मन माहीं । रोकनकौ समरथ कोउ नाहीं ॥
लांघी सिंधु महामर्यादा । रामभक्त नृप बिगत बिषादा ॥
उनको यह चरित्र अति देवा । देखन कौ आये नभ देवा ॥
धसे सिंधु जब भूप उदारा । भयो भूमि नभ हाहाकारा ॥
नृपके धसत धसी सब सयना । कंठ प्रयंत भयो जलअयना ॥
चलत सबेग जलधिके माहीं । जल थलकी कछु सुधि तननाहीं ॥
भक्त बश्य रघुनाथ कृपाला । सीता लखन सहित तिहि काला ॥
मुख प्रसन्न नृप सन्मुख आये । बिहसि मधुर मृदुबचन सुनाये ॥
अब जिनि करौ परिश्रम ताता । खल हति मैं ल्यायो तव माता ॥
शत्रु पुत्र बांधव अरु सैना । मारे सकल करौ चित चैना ॥

दो० सकल लोक सद्भक्ति तव सुस्थिर भई सुजान ।
अब जिनि मन चिंता करौ मेरे जीवन प्रान ॥

सो० यह देखौ निज मात अबहीं ल्यायो लङ्क ते ।
लखि हरषे सब गात करी दंडवत पुलकि तन ॥

दो० ताम्रचूड़पुर सेन युत प्रभु भूपहि पहुँचाय ।
सबके देखत होत भयं अंतर हित रघुराय ॥

भये क्षणक बिगतस्मृति बिनु रघुपति नरनाथ।
बहुरि स्वस्थ ह्वै सुनत भये बिशद रामगुण गाथ॥
यह कुलशेखर चरितबर गावहिं सुनहि जे लोग।
पाप पुंज तजि ते लहै रामभक्ति बरयोग॥

इतिश्रीप्र० श्रीकुलशेखरस्य रामप्रत्यत्तन्नाम
षडासीत्तमोध्यायः॥ ८६॥

बहुरौं बोले रंगपुरोहित। अस्मद्यति पर अतुल कृपा चित॥
रामभक्त राजर्षि महाना। उनके अमित चरित बर नाना॥
सो सब कहिबेकौ को समरथ। तदपि जो लह गुरुपरंपरापथ॥
सुनौ सो अब तुमसौं हम कहहीं। जासु सुनत अघ संकुल दहहीं॥
चारि कोटि श्रीबैष्णाव नितप्रति। युगवेदांत ज्ञाननिधि सदव्रति॥
तोषत षटरस पायस भोजन! औरौ बैष्णाव रहित प्रयोजन॥
बहुत कहांलगि कहौं प्रवीना। कियो राज बैष्णावन अधीना॥
रहत भये ह्वै उनके दासा। कुलशेखर सूरी सुखरासा॥
करतसदा अनुभव हरिगुणगन। परमप्रीति कैंकर्य निरतमन॥
मंत्रिन यह वृत्तांत निहारा। करत भये मन माहिं बिचारा॥

दो० भये कोश रीते सकल बैष्णव सब धनवान।
उनहीं के आधीन नृप मानौ मोल बिकान॥
सो० रहे प्रथम सज्ञान राजनीति अतिशय निपुण।
भये सो भ्रांत समान इन भ्रांतन के संग मिलि॥

याते कह भ्रम की अधिकाई। कूदि परे जलनिधि नृपधाई॥
दैवयोग बूड़े तहँ नाहीं। अबहूं रहत तिनहिं संग माहीं॥
देश काल बैष्णाव नहिं जानैं। बिचरत सब थल शङ्क न मानैं॥
नृप सब काल करत अभिलाषा। उनहीं के दरशन सहबासा॥
बैष्णाव जाघरके मधि आवत। निधि सम ताहि देखि सुखपावत॥
रत्नसिंहासन तजत नृपाला। संभ्रम लखि बैष्णाव तत्काला॥
महाकार्य तृण सम तजि देहीं। श्रीबैष्णाव सेवन सुख लेहीं॥
पाडुदेश अरु ब्रह्मदेश मधि। बहुरि राजगुपाल के सन्निधि॥

श्रीबैष्णव तत्वार्थ कहत जो । होत नृपति आसक्त सुनत सो ॥
हम नृपके हित चाहनहारे । करिहैं उनकौ सजग सवारे ॥

दो० याविधि निश्चय करि सबन नृपसों अवसर पाय ।
करत भये तब प्रार्थना हाथ जोरि शिर नाय ॥

सो० महाभागवत बृंद सेवन तुमहिं न उचित प्रभु ।
केवल भजनानंद तिनकौं यह ब्रत चाहिये ॥

नृपहिं उचित प्रजपालन कर्मा । थापन बरणाश्रम को धर्मा ॥
सज्जन पुरुषन को नित संग्रह । असत जनन को चाहिये निग्रह ॥
राज अंग जे सात बताये । तीनि शक्ति युत वेदन गाये ॥
तिन संयुत ह्वै प्रथम नृपाला । नवधा भक्ति करै तिहि काला ॥
सूक्ष्म बुद्धि जे मंत्रसयाने । तिनकौं सदा रहै सन्माने ॥
याबिधि सौं थिति राखै जोई । सकल भूमि सुख भोगै सोई ॥
ऐसे राजधर्म बहु आहीं । प्रकट सकल सुख जाके माहीं ॥
भागवतोत्तम सो उपदेशा । नाथहि कबहुँ करत नहिं लेशा ॥
सचिव वचन सुनि नृप मुसकाने । बोले बचन सुधारस साने ॥
को हरिदासन तें अधिकाई । जगमैं भुक्ति मुक्ति सुखदाई ॥

दो० हित उपदेश न करत कोउ श्रीबैष्णवन समान ।
याबिधि मंत्रिन कौं दियो उत्तर भूप सुजान ॥

सो० राज काज मै लाय तिन सबहुन कौं राजऋषि ।
बैष्णव गोष्ठी जाय आप लगे तिहि कृत्य पुनि ॥

तत्व बिचार करत नृप ज्ञानी । मंत्रिन तब दुर्मति मन आनी ॥
नृप बैष्णावन मध्य कहु भांती । भेद होय शोचहिं दिनराती ॥
देखत छिद्र बैष्णवन माहीं । काहू बिधि पावत कछु नाहीं ॥
इक दिन भूप करत अस्नाना । कुंडलादि मणि भूषण नाना ॥
धरे सिंहासन सकल उतारी । नित्य कृत्य रत भये अघारी ॥
मंत्रिन लिये चुराय तब भूषण । श्रीबैष्णावन लगै जिहि दूषण ॥
सभा गवन अवसर नरनाहा । सेवक प्रेरि अभूषण चाहा ॥
परिचारकन जाय तब देखो । भूषण कछू तहां नहिं पेखो ॥

चिंता मग्न भये सेवक गण। नृप सौं करी प्रार्थना तत्क्षण॥
नृपति कुपित ह्वै सचिव बुलाये। तिनहिं डाटि इमि बचन सुनाये॥

दो० तुम सब काल रहौ यहां चोर चोरि लै जात।
ऐसी नहि देखी कहूँ अति अचरज की बात॥

सो० भूषण देउ मँगाय अबहीं जो चाहौ कुशल।
नातर प्राण नशाय सबको मम कर आजुही॥

मंत्रिन हाथ जोरि तब भाखो। प्रभु प्रताप हम चोर न राखो॥
तद्यपि श्वेतमृत्तिकाधारी। आवत नहिं कोउ सकै निवारी॥
उनहीं को हमकौ संदेहा। और न समरथ कारज एहा॥
यह सुनि भूपति मूदे काना। सुमिरण करन लगे भगबाना॥
बहुरि कोपि नृप बचन सुनायो। यह तुम दूजो पाप उपायो॥
दंडनीय सब अहौ बिशेखा। तुम्हरो मुख चाहिये न देखा॥
सकल पाप हरि सुमिरत जाहीं। हरि निंदा अघ सो करि नाहीं॥
कीन्हे बैष्णव नाम उचारा। दूरि होत सो पातक भारा॥
बैष्णव निंदा पाप अनंता। किमिहुं न मिटै कहत श्रुति संता॥
तद्यपि दंड तुमहिं सब काहू। दिये होय जग अपयश लाहू॥

दो० ताते तुम्हरे दंडते भये निवृत्त हम आज।
होत सदोष न काल तिहुँ श्रीबैष्णवन समाज॥

सो० बिगत काम अरु क्रोध लोभ झूठ अज्ञान पुनि।
तामैं परत बिरोध तुम लाई चोरी उन्है॥

सो यह झूठ निवारण काजा। करिहैं सपत हम जोरि समाजा॥
यह कहि घोर सर्प मगवायो। ताकौ घट भीतर रखवायो॥
गुरु पुरजन सचिवन के सन्मुख। बोले सत्य बचन तब श्रीमुख॥
सत्य कहत हम सब जग माहीं। भोगलोल श्रीबैष्णव नाहीं॥
चोर कदाचित होयं न सोई। जो यह बचन सत्य मम होई॥
तौ मोहिं सर्प ग्रसै नहिं एहा। कर नायो घट तजि संदेहा॥
पकरि सर्प मुख लियो उठाई। राजऋषी बैष्णव व्यवसाई॥
बिशद चरित लखि सज्जन हरषे। नभते फूल देवगण बरषे॥

अस्तुति करि दुंदुभी बजाई । आये पुनि तहँ त्रिभुवनराई ॥
कोटि सूर सम तन उजियारा । भूपहि कृपाकटाक्ष निहारा ॥

दो० किये निहाल विलोकि प्रभु भूपति हृदय लगाय ।
कहत कि तुम मम प्राणप्रिय कियो भलो व्यवसाय ॥
सो० मोते बढ़ि मन भक्त मानत हौं सब गुणन युत ।
ताते प्रेमासक्त भयो देखि तव वृत्य वर ॥

मांगौ बर जो तुमहिं सुहाई । हाथ जोरि तब कह नृपराई ॥
कौन बस्तु मांगौं करुणानिधि । पूर्ण कियो प्रथमहि प्रभु सबबिधि ॥
तदपि जो तुम प्रसन्न सुखदाता । देउ भक्ति दृढ़ पदजलजाता ॥
अरु प्रभु भक्तजनन के माहीं । कबहूँ प्रीति होइ घटि नाहीं ॥
एवमस्तु कहि करुणाकंदा । बोले बचन नृपति मन फंदा ॥
नीला अंश भूप तव कन्या । सो मोहिं अर्पण करौ अनन्या ॥
उपजै मोहिं तोहि तन सम्बन्धा । होय सुदृढ़ अति प्रीति प्रबन्धा ॥
सुनि प्रभु बचन नृपति अनुरागा । कहत धन्य मम कुल मम भागा ॥
आतुर करि सब ब्याह समाजा । वेदी रचि प्रमुदित मनराजा ॥
बसनाभूषण साजि अनूपा । कन्यादान कियो सुख रूपा ॥

दो० सकल भाँति करि वेद विधि अरु कुलरीति निबाहि ।
रंगभूमिपति बर बिमल दीनी सुता बिवाहि ॥
सो० लै गवने निजधाम बिबिधि बस्तु युत नृपसुता ।
देखि लहो बिश्राम सुर नर मुनि यह चरित वर ॥

भयो प्रकट रङ्गेश बिवाहू । लहो सबन लखि लोचन लाहू ॥
भूपति मन आनँद अधिकाना । ब्रह्मानंद न तासु समाना ॥
मंत्रिन भूप प्रभाव निहारा । अरु बैष्णवन महत्व अपारा ॥
नृप पग परि अपराध क्षमायो । दै भूषण निज दोष जनायो ॥
क्षमाधाम भूपाल महाना । दीन्हो सबहि अभय को दाना ॥
तापाछे कुलशेखर ज्ञानी । सब बिधि योग्य तनय निज जानी ॥
दीन्हो ताहि राज को भारा । आप तजो सब जग ब्यवहारा ॥
श्रीबैष्णव सेवा रस लीना । हरि गुण रस बोरयो मन मीना ॥

रघुपति जन्म नखत इक काला । किय उत्सव अवनीश बिशाला॥
आवत भये तहँ बिपुल महाना । पुर घर घर मंगल बिधि नाना॥

दो॰ ध्वज पताक तोरण कलश कदली तरु बहु सोह ।
होत गान बाजन बजत लखि सुख मुनि मन मोह ॥

सो॰ तहाँ त्रमंजन काल भूषण राजगोपाल के ।
सकल जटित मणि जाल धरे उतारि सो अर्चकन ॥

करन लगे हरि को अभिषेका । पुरुषसूक्ति श्रीसूक्ति बिबेका ॥
बिष्णुसूक्ति भूसूक्ति पुनीता । होत बिशद रव बाजन गीता ॥
प्रेम मग्न नृप अस्तुति गाना । करत नृत्य आनंद निधाना ॥
तैसेहि सब बैष्णव तिहि अवसर । मग्न प्रेम आनंद स्वधासर॥
मंत्रिन सो अंतर पुनि पाई । हार अमौलिक लियो चुराई ॥
श्रीबैष्णवन संग मत्सर करि । दियो छिपाय बहुरि कितहूँ धरि॥
जब अर्चकन कियो शृंगारा । तहां नहीं हरि हार निहारा ॥
तिनके उर दुर्यश भय भरेऊ । हार हरण प्रत्यक्ष तब करेऊ ॥
नृपति क्रोध करि सचिव बुलाये । तिनसौं याबिधि बचन सुनाये॥
अवहीं हार चुरावनहारा । ल्यावहु मम ढिग करि सुबिचारा ॥

दो॰ मंत्रिन बहुरौं प्रथम सम कहि बैष्णवन सदोष ।
चोरी आरोपण करी नृप कीन्हो पुनि रोष ॥

सो॰ करि सचैल अस्नान नृप पुनि प्रथम प्रकार सौं ।
कीनी सपत प्रमान सर्प पकरि बैष्णवन हित ॥

हरि समीप पुनि बिषधर भारी । कहि निःपातक बैष्णव झारी ॥
पकरि लियो फण सो नहिं कोपा । याबिधि बैष्णव दुर्यश लोपा॥
मंत्रिन पुनि डराय निज पापा । नृपहि कहो करि पश्चातापा ॥
हार दियो अपराध क्षमायो । बैष्णवनहुं के पद शिरनायो ॥
नृपति करी तब निज मन तर्का । हरिबिमुखन संग जीवन नर्का॥
सुतकौ कियो बिबिधि उपदेशा । राजधर्म परधर्म अशेशा ॥
तापाछे तजि निज रजधानी । आये रंगधाम नृप ज्ञानी ॥
देखि रंगपति अति सुखपायो । पुलकिप्रेम चरणन शिरनायो॥

जैसे रंकहि अति निधि पाई । अतुलित आनंद उर न समाई ॥
निशअंबुजा नाम नृप कन्या । रंगी चरण लुब्ध मन धन्या ॥

दो० देखि ताहि हरि चरण रत रहे तहाँ सानंद ।
सेवत परमानंद युत श्रीपति पद अरविंद ॥

सो० दैवसीत करि नाम किय प्रबंध भाषा द्रविड़ ।
बरणो तहँ अभिराम हरि हरिजन वैभव रुचिर ॥

पांच अधिक शत गाथ सुहाई । शप्त दिव्यदेशास्तुति गाई ॥
रंगक्षेत्र रङ्गेश कृपाला । श्रीनिवास वृषभाचल भाला ॥
अवधपुरी रघुनाथ उदारा । चित्रकूट गोविंद सुखसारा ॥
कृष्णापुरी बरने शौरिध्वज । बानाचल बराह सुंदरभुज ॥
रंग प्रबंध कियो शत गाथा । सप्तति गाथ बानगिरिनाथा ॥
पुनि सप्तति बरने कंसारी । गाये सप्तति गाथ खरारी ॥
सेवन करि कछु दिन श्रीरंगा । अरु श्रीवैष्णव भजन अभंगा ॥
बहुरौं सकल दिव्य थल जाई । तदियाराधन किय मन लाई ॥
गये ब्राह्मणोत्तमपुर माहीं । कुरिकानगर विदित जिहि ठाहीं ॥
राजगोपाल निकट तब आये । परम प्रीति तहं सीस नवाये ॥

दो० तिनको आशय जानि मन बसे तहाँ कछुकाल ।
रहे महीतल सप्त अरु षष्टि बर्ष जनपाल ॥

सो० गवने नित्यबिभूति श्रीकुलशेखर राजऋषि ।
मंगल मोद प्रसूति शुभ कीरति बिस्तारि जग ॥

दो० कुलशेखर के चरित बर श्रवण सुखद मुदग्राम ।
जे सप्रेम गावहिं सुनहि पावहि श्रीपतिधाम ॥

इतिश्रीप्र० कुलशेखरार्य्यचरित्रन्नाम सप्तासीत्तमोध्यायः ॥ ८७॥

गुरु पदबंदि बहुरि अस्मयाति । बिष्णुचित्त चरित्र पावन अति॥
पूछत भये सहित अहलादा । गुरुपुंगव तब किय संवादा ॥
पाण्डुदेश धन्वीपुर ग्रामा । बिष्णु प्रीति दायक अभिरामा ॥
केरल ते पूरब दिश बसई । चोलदेश ते दक्षिण लसई ॥
प्रकटे जहं बटपल्लवसाई । तहहिं सप्तसागर थल आही ॥

सप्त समुद्र तहां चलि आये । ब्रह्मादिक सब देव सुहाये ॥
गिरा आदि सुरनारि बरूथा । सेवहिं हरिहि देव ऋषि यूथा ॥
पूरित हरिजन पंडित ब्राता । सकल थलन बैभव बिख्याता ॥
सुरपुर ते सुठि देखिये सोई । हरि उत्सव तहं प्रतिदिन होई ॥
तहं वेदज्ञ कमलबन पूषण । मुकुंदार्य्य भये द्विजकुलभूषण ॥

दो० शालाबृत गोत्राब्धि शशि शाखा यजुर सुनाम ।
श्रीबोधायन सूत्र अरु अग्रसिखी सुख धाम ॥
सो० पद्मानाभ सुनारि पति पद सेवा निरत चित ।
सुत इच्छा उर धारि बटसाई पूजत भये ॥

तिनकी बिनती सुनि श्रीनायक । दीन्हो पुत्र लोक सुखदायक ॥
हरिकटाक्ष खगपति के अंशा । भये बिष्णुचित कुल अवतंशा ॥
क्रोधन सम्बत जेष्ठ सुमासा । सित द्वादशि रवि स्वांति प्रकासा ॥
भये हरिभक्ति के पारंगंता । औरौ चारि भ्रात भये संता ॥
जातकर्म आदिक बिधि युक्ता । किये मुकुंद सब प्रेम संयुक्ता ॥
आये सेनापति हरि प्रेरे । संसकार सर करि तिन केरे ॥
तिनकी पूजा पाय बहोरी । गये बिष्णुपुर बैष्णव धोरी ॥
हरिनिर्हेतु कटाक्ष प्रसादा । भये बिष्णुचित जिमि प्रह्लादा ॥
श्रीबैष्णावन समाज निहारी । लहि दास्यता प्रेम भयो भारी ॥
बहुरौ याबिधि रुचि उपजाई । सेवा बिनु शेषत्व न भाई ॥

दो० यह निश्चय करि बिष्णुचित देखे दशावतार ।
आदि अंत सबके चरित कीन्हे मनहि बिचार ॥
सो० भयो कृष्ण अवतार प्रेम पक्ष अतिशय तिन्है ।
माने अति सुखसार तिनके चरित पुनीत सब ॥

येई नारायण सुखरासी । साक्षात क्षीराब्धि निवासी ॥
आये त्यागि नागपरियंका । मथुरापुरी देवकी अंका ॥
द्वारावती पुनीतम परमा । जहं मधुमथन सनातन धरमा ॥
साधुत्राण हित मथुराआये । युग बिभूति नायक सुख छाये ॥
ध्यानहुं ब्रह्मादिकन प्रयासा । अतिशय सुलभ सो नंद अवासा ॥

गोप्याधीन बसत ब्रज अंतर। धारण करि निर्माल्य निरंतर॥
प्रेमाधीन हरत नवनीता। ताड़त तजत न प्रीति पुनीता॥
बांधे जब ऊखल दधि कारण। कीन्हो तबहुँ अनिष्ट निवारण॥
कंस काज मथुरा जब आये। मालाकार प्रेम सुख पाये॥
फूलमाल तिन अर्पण कीन्ही। अग्रज सहित जाय सो लीन्ही॥

दो० इमि महार्थ बहु आनि मन उपजो पावन प्रेम।
तुलसी पुष्पमाल नित अर्पत हरिहि सनेम॥
सो० करि धन्वीपुर बास सेवत वट पल्लव शयन।
पायो अतुल प्रकास अग्रगण्य हरिजनन के॥

इतिश्रीप्र० भट्टनाथावतारवर्णनन्नाम अष्टासीतमोध्यायः ८८॥

तहंते योजन पंच प्रमाना। मथुरापुरी सुमोद निधाना॥
तहँ बस पांडुदेश नरपाला। बल्लभदेव प्रताप बिशाला॥
निबलहि जिमि न बाध बलवाना। करत यत्न सोई भूप सुजाना॥
इक दिन धार्मिक बल्लभ राजा। निकसे निशि पुर शोधन काजा॥
देखत भये तहां पुरद्वारे। सोवत इक ब्राह्मण तन हारे॥
तिनसौं पूछत भये नरेशा। को तुम रहत जात किहि देशा॥
राजन हम द्विज तीरथ यात्री। आये न्हाय गंग यहं रात्री॥
सेतु नहान हेत यह देशा। आये सुनि पुनि कहत नरेशा॥
द्विज दरशन हम भये कृतारथ। अब कछु हमहिं कहौ परमारथ॥
तब द्विज बर इक कह अश्लोका। जग हित करण हरण सब शोका॥

दो० आठहि बर्षाहित यतन रैनि काज दिवसांत।
बृद्धाहित कीजै युवा परपुरहित जन्मांत॥
सो० मन हरषे अति भूप द्विज भाषित विशदार्थ सुनि।
मानत भये अनूप नृप द्विज बरहि सराहि के॥

दृष्टादृष्ट लोक दुहुँ केरो। है साधन कर्त्तव्य सबेरो॥
तद्यपि हमहिं लोक के माहीं। राजलाभ करिबे कछु नाहीं॥
परलोकार्थ यत्न तत्काला। चाहिये करण हरण भवजाला॥
देव अनेक सुनिये संसारा। कौन मुक्तिप्रद नहिं निर्धारा॥

यह बिचार व्याकुल नृप भयेऊ । बिप्र सहित निज धामहिं गयेऊ ॥
प्रात नहाय सभा मधि जाई । निज उपरोहित लिये बुलाई ॥
बोले नृपति सुनौ द्विज देवा । हमकौ शोधि बतावौ सेवा ॥
निगमागम निर्णीत जो होई । हमसौं कहौ देव तुम सोई ॥
सब फलको एकहि दातारा । कर्त्ता उत्पति थिति संहारा ॥
क्षण इक करि उर माहिं बिचारा । तब नृप सौं द्विज बचन उचारा ॥

दो० धर्मज्ञन को आचरण अरु श्रुति सुमृति प्रमाण ।
जो लखि परै सो करि सभा नृप मन कीजै ज्ञान ॥
सो० शोधन करौ परत्व शास्त्रज्ञन कौ जोरि के ।
जानि परै परतत्व वेदअंत सौ सो सही ॥

सम्पतिपूर्ण बचन सुनि काना । बोले नृप अगिनित बिद्वाना ॥
बांधी खंभ द्रव्य लै भूरी । जो मम शङ्क सकै करि दूरी ॥
लेय सो खोलि सभा सब जीती । करि निरणाय निगमागम नीती ॥
बिद्यासुल्क द्रव्य याभांती । परतत्वार्थ कलह की शांती ॥
बँधो पंडितन देखो खंभा । करत भये शास्त्रार्थ अरंभा ॥
श्रीपति लक्ष्य बिहाय कुपक्षा । ठानत करि न सकत पुनि रक्षा ॥
निज निज पक्ष करत सब मंडन । दूजो करत ताहि धरि खंडन ॥
बहु बिधि कियो परस्पर बादा । टारि सकत नहिं नृपति बिषादा ॥
जब नहिं तत्वअर्थ निरणायेऊ । भूपति मनहिं शोच अति भयेऊ ॥
धन्वीपुरनायक तब सपने । भट्टनाथ सौं कह मुख अपने ॥

दो० राजसभा मथुरानगर जीतौ पंडित सर्व ।
जाय हरौ नृप शंकटहि बिमुखन को दुर्गर्व ॥
सो० परम तत्व दरसाय जग रक्षण हित हेतु करि ।
खंभ बँधो धन ल्याय मम अनुशासन पालहू ॥

भट्टनाथ कह सुनौ कृपाला । विद्यामौल्य सो द्रव्य बिशाला ॥
हम अबिद्य काबिधि सो लेहीं । पंडितगण जीतैं बिधि केहीं ॥
शौरि बहुरि तब बचन उचारे । हम करिहैं सब व्याज तुम्हारे ॥
भट्टनाथ सोवत ते जागे । स्वप्न बिचित्र बिचारन लागे ॥

बहुरौं सत्य मानि मन माहीं । प्रभु प्रतीति तहं गये सहसाहीं ॥
देखि नृपति अरु राजपुरोधा । भये मुदित पूजे हरिबोधा ॥
सर्बोत्तम उरमैं अनुमानी । सिंहासन बैठारे आनी ॥
उच्चासन तिनकौं द्विजवृंदा । लखि न सके सहि कीन्ही निंदा ॥
अतिशय यह द्विज वेद बिहीना । संध्यादिक कर्महुं सौं हीना ॥
गायत्री ज्ञानहु सन्देहा । दास्य वृत्तिरत उपबन गेहा ॥

दो० माली जिमि नित शौरि कौ माला अर्पत जाय ।
पूजो बिप्र निरक्षरहि उच्चासन बैठाय ॥
सो० कीन्ही नृपति अनीति देखत हम वैदिकन के ।
पूजन कियो सप्रीति शूद्रवृत्ति यह बिप्र शठ ॥

दुसह बचन सुनि नृप दुख पागे । उपरोहितहि बाण सम लागे ॥
भट्टनाथ मुख लखि कर जोरी । बोले बचन बिनयरस बोरी ॥
वेदांतार्थहि करि निर्धारा । करौ नाथ परतत्व बिचारा ॥
भट्टनाथ सुनि किय हरि ध्याना । लह्यो तुरतही पूरण ज्ञाना ॥
प्राचेतस जिमि बिधि बरदाना । भये रघुपुंगव चरित सुजाना ॥
ध्रुव मुख गोविंद शङ्खस्पर्शा । तत्क्षण ज्ञान अनूपम दर्शा ॥
तिमि हरिकृपा पाय सब अर्था । भट्टनाथ मुनि भये समर्था ॥
तब ते बिद्वानन के आगे । निरणय तत्व करन तहं लागे ॥
गंग प्रवाह सदृश श्रुति कढ़हीं । सुमृति पुराण सरित मिलि बढ़हीं ॥
इतर पक्ष बहु तरुवर भारे । सब निज बेग समूल उखारे ॥

दो० वेदमूर्त्ति खगनाथ पुनि श्रीश कटाक्ष प्रभाव ।
उनकी महिमा कहन कौ को कबि समरथ पाव ॥
सो० भये चक्रत बिद्वान उनकी उक्ति अनूप सुनि ।
करत हृदय अनुमान कहँते यह विद्या लही ॥

श्रुतिस्मृतिहु इतिहास पुराना । एकबाक्य सब किये बिधाना ॥
बालबोध हित उपन्यास वर । हरि परत्व हित रचे मनोहर ॥
तिनमैं ते कछु आखर रूरे । बरणन करौं स्वधारस पूरे ॥
वेदन मध्य अर्थ सब आहीं । सकल वेद अष्टाक्षर माहीं ॥

प्रणव बिषे अष्टाक्षर राजै । प्रणव अकारमध्य पुनि भ्राजै ॥
वेद आदि जो स्वर करि आही । वेदांतहु सो प्रणव लखाही ॥
भयो निज प्रकृति लीन जब सो स्वर । पर अक्षर अकार सर्वेश्वर ॥
सब शब्दन को मूल अकारा । है स्वभावही ते निर्धारा ॥
सर्ब शब्द करि बाच्य ब्रह्म पुनि । याबिधि बाचक बाच्य परै गुनि॥
गीताचारजहू सोई गायो । निज स्वरूप अकार दरसायो ॥

दो० सबको अर्थ अकार है हरि बाचक सो अकार ।
श्रुति सम्मत यह अर्थ बर बिष्णु परत्व बिचार ॥
सो० उत्पति थिति संहार हरि परत्व शूचक बिशद ।
बिष्णु तासु करतार धातु अर्थ निश्चय किये ॥

नारायण अनुबाक प्रमाना । निगमांतहु सब करहिं बिधाना ॥
मोक्षार्थिनहरिही को उपासन । चहिये अबशि नतु आत्मबिनाशन॥
नारायण तें पर कोउ देवा । भयो न कबहुं न होनेहु केवा ॥
व्यासहु भुजा उठाय पुकारो । सत्य सत्य पुनि सत्य उचारो ॥
केशव तें परदेव न होई । तिमि वेदांत तें शास्त्र न कोई ॥
याबिधि कीने अमित प्रमाना । श्रीपति के परतत्व बिधाना ॥
बंधो खंभ जो द्रव्य बिशाला । आपहि गिरो भूमि तिहि काला॥
भट्टनाथ बिनु हर्ष बिषादा । लियो सो धन गुनि श्रीश प्रसादा॥
सभा सहित नृप अचरज पागे । करि प्रणाम मन अति अनुरागे॥
तिनके चित हरि को थल जानो । बिष्णुचित्त कहि नाम बखानो॥

दो० गजारूढ़ करि नृपति तब फेरे पुर चहुँ पास ।
चँवर छत्र आदिक बिभव करि बहु मान हुलास ॥
सो० संग सकल बिद्वान करत चले श्रुति पाठ शुभ ।
बजत मृदंग निशान चतुरंगिनि सेना चली ॥

चले आपु नृप मंत्रिन साथा । स्वर्णछत्र उपरोहित हाथा ॥
मंगल द्रव्य पुरी सब छाई । ध्वज पताक बहु बरण बनाई ॥
ता अवसर श्रीपति श्री संगा । आये जनकुल कमल पतंगा ॥
भट्टनाथ कौ भये प्रत्यक्षा । अपर महात्मनहूं निज इच्छा ॥

भये कृतार्थ देखि सब श्रीपति । बाढ़ी भट्टनाथ मन अति रति ॥
दिव्य तेज लखि श्रीमत लखि पायो । ज्ञान भक्ति वागीश अनुभायो ॥
हरि कटाक्ष प्रकाश उर छायो । गुण अनुभव करि सुख उपजायो ॥
पुनि वह रूप अनूप निहारो । पंचोपनिषद मय सुखकारो ॥
सौकुमार्य सौंदर्य सुहाई । बिनु परिणाम मनोहरताई ॥
नित्य सूरिगण देखें जाहीं । प्रेमवश निज भाग सराहीं ॥

दो० दर्शन संसार जे परे घोर तम कूप ।
रिक्षरणे तिनकौ प्रगट किय वाचा वहु रूप ॥

सो० तिन्हिं अलभ्य की शङ्का पुनि मनिहिं परिहार हित ।
जनु त्यहि पाल्लव रक्षि निज रूप सब प्रगट भये ॥

दिव्य गीतमुक्तेन हेतु बहोरी । किय मंगल वैष्णवकुल दोरी ॥
द्वादश गाथा युत संग्रंथा । किय जग हित मंगल अनुबंधा ॥
तब हरि गवन कियो परधामा । तिन सबहुन करि पूरणकामा ॥
उतरोरित समेत नृपराई । उनके हित भयो सुखदाई ॥
कंचन शिविकारूढ़ कराये । सादर धन्वीपुर पहुँचाये ॥
धन्वीपुराधीश सुनि पाई । भट्टनाथ वैभव विपुलाई ॥
चँवर छत्र बाजन युत साथा । गये लिवाय पदरज धरि माथा ॥
तहँ वटपत्रशयन मठ जाई । परदक्षिणा चहुँवीथि कराई ॥
नारायण समीप पुनि आये । परम प्रेम तहं सीस नवाये ॥
हर्षि श्रीश निज तीर्थ प्रसादा । आशादिक सब हरण विषादा ॥

दो० गौरेक हार दियावत भट्टनाथ को पाय ।
भये मुदित मन हर्षि तन रूप अमित छवि छाय ॥

सो० अर्पण कियो सुजान शौरि चरण पंकज सकल ।
करत नन्दसुत ध्यान तुलसी वर माला कों ॥

पुष्प सुगंधित तुलसी माला । रचत निरंतर प्रीति विशाला ॥
अर्पण करत हरिहिं नित आदर । मय कुन्द कुसुम परिमल सुन्दर ॥
नटवर वेष चरित मनहारी । माखनहर ब्रजतरणि विहारी ॥
सुखमा सदन मदन मद मर्दन । जन मानस आनंद बिवर्द्धन ॥

सौलभ्यादि गुणान के सागर । गोपीजन मन मोहन नागर ॥
तिनकी लीला अनुभव निशदिन । तन्मय रहत न बिसरत इकक्षिन ॥
जानत और न कृष्ण बिहाई । ध्यानानंद न हृदय समाई ॥
तिहि प्रवाह प्रबंध अभिरामा । भट्टनाथ गीता बर नामा ॥
जग उपकार हेतु सुखकारी । कियो द्रविड़ भाषा अघहारी ॥
एक अधिक शतचारि षष्टि युत । तासु मध्य गाथा अति अद्भुत ॥

दो० तेरह दिव्यस्थलन की अस्तुति किय मन लाय ।
धन्विनव्यपुर रंगथल दक्षिण मथुरा गाय ॥

सो० कुरिकापुरि तोताद्रि गोष्टी अपर कुरंगपुर ।
सुंदराद्रि शेषाद्रि पुरुषोत्तम श्रीकृष्णपुर ॥

नंदव्रज अरु मथुरा उत्तर । इमि बहु बिष्णुचित्त चरित्र बर ॥
सुनि वेदांति हर्ष अति माना । गुरुहि बंदि पुनि कहत सुजाना ॥
ज्ञान भक्ति आदिक गुण नाना । दसौ पूर्ण भये योग निधाना ॥
भट्टनाथ महिमा अधिकाई । गुरुपुंगव तुम मोहिं सुनाई ॥
तामें कारण कौन कृपाला । मोहिं समुझाय कहौ जनपाला ॥
भट्टनाथ तनया पुनि गोदा । कहिये तिनकी कथा समोदा ॥
गुरुपुंगव तब कियो वखाना । याको भेद सुनौ बिद्वाना ॥
बहुधा श्रीपति पद उद्देशा । किय प्रणाम नव योगि सुवेशा ॥
भट्टनाथ हरि प्रेम अधीना । हरि हित मंगल सासन कीना ॥
पुनि नवहुन महार्य यह नामा । बिष्णुचित्त को कियो बिधाना ॥

दो० मंगल मय प्रबंधवर बिष्णुचित्त कृत जोय ।
चारि सहस्र प्रबंध मधि पहिले सुनियत सोय ॥

सो० वेद आदि बिद्वान जैसे प्रणव उचारहीं ।
तैसेहि तासु बिधान भट्टनाथ गौरव तथा ॥

दो० बैष्णवता की सिद्धि हित पढ़िये सो प्रथम प्रबंध ।
शीघ्रहि लहिये स्वरूप सिधि व्यापै नहिं भवबंध ॥
औरौ युगल प्रबंध किय भट्टनाथ निर्मान ।
इक शत चारि त्रिसप्तति गाथा द्वितिय बखान ॥

उनके रचित प्रबंध सब पाठ करै जे लोग।
तिनके पाप नशात सब मिटत महा भवरोग॥

इतिश्रीप्र० श्रीविष्णुचित्तार्येण राजसभास्थाने तत्वनिर्णय कथनन्नाम नवासीत्तमोध्यायः॥ ८६॥

श्री वत्सांक सूनु गुरु ज्ञानी। गोदा कथा विशद उर आनी॥
देव आदि महिषी श्रीगोदा। ताहि उपासन करत समोदा॥
जासु प्रसाद पुष्पबर माला। पहिरत हरि करि प्रीति बिशाला॥
श्रीनीला तुंगस्तन गिरि तट। सोवत ते जगाय नागरनट॥
निज पारार्थि बिपुल श्रुतिद्वारा। करति प्रकाशित प्रेम अपारा॥
निज उच्छिष्टमालनिगलितहरि। भोगति कृष्णासुभोगहिबलकरि॥
तिन गोदहि करि विविधि प्रणामा। बोले बिशद बचन अभिरामा॥
गोदा चरित सुनौ वेदांती। जिमि सिय चरित करत अघ शांती॥
जनकहि मख हित खोदतधरणी। प्राप्त भई कन्या अघहरणी॥
सीता नाम धरो नृप तासू। आनी सुता मानि सो अवासू॥

दो० तैसेहि विष्णुचित्त कौ खोदत वृंदारण्य।
प्रकट भई लक्ष्म्यांश ते कन्या धन्यानन्य॥

सो० पूर्व पक्ष आषाढ़ चौथि भौम मध्यान दिन।
कृष्ण चरण रति गाढ़ गोदा प्रकटी भूमि ते॥

पूर्वाफालगुणी नक्षत्रा। तुला नाम शुभ लग्न पवित्रा॥
तेजपुंज कन्या लखि सूरी। प्रमुदित भये विष्णुचित सूरी॥
सुता मानि ल्याये ग्रह माईं। पालत भये जनक की नाईं॥
बहुरौं श्रीवैष्णावन बुलायो। मंगल अनुशासन करवायो॥
गोदा नाम धरो करि मोदा। परम हर्ष लखि बाल बिनोदा॥
जादिनते गोदा महि आई। देश नगर सुख सम्पति छाई॥
जननि जनक पालित लघु काला। लही वृद्धि तन कांति बिशाला॥
अतुलितभक्तिबिरतिअरुज्ञाना। विष्णुचित्तलखिअतिसुखमाना॥
कीन्हो संसकार पंचक बर। गुरु निष्ठा तब लही सुमन नर॥

परिजन पुरजन भक्ति अपारा । करत मानि लक्ष्मी अवतारा ॥

दो० विष्णुचित्त चित चकित अति देखि सुताअनुष्ठान ।
अब चरित्र तिनको सुनौ मंगल मोद निधान ॥

सो० ... तुलसिका हार पिय बिरचित हरि हित ।
... श्रृंगार धरति पिता चहुँदिशि ॥

इकदिन विष्णु... लखि पायो । ... सुहायो ॥
हरि ... । गोदा सों इमि बचन बखाने ॥
पुत्री ... । ... इमि करिये कुमारी ॥
याविधि कन्या को सिख ... । ... अपेक्षा कीन्ही ॥
भट्टनाथ सोये निशि जबहीं । ... स्वप्न ... तबहीं ॥
पुष्पमाल ... । ऐसो ... कह कजू ॥
लीन्हि पहिरि सुता ... । ताते अर्पण किय न कृपाला ॥
कह प्रभु पहिरि सुता ... । ... बहु मोहि लगति अति प्यारी ॥
अर्पण करौ बेगि ... आनी । याविधि कहत भयी हरि बानी ॥
भट्टनाथ सोवत ते जागे । स्वप्न बिचारत अचरज पागे ॥

दो० सीता सम ... गोदा महिजा धन्य ।
लिखि ... हरि पद प्रेम अनन्य ॥

सो० भई तुलसिका भांति गोदा देवी हरिप्रिया ।
... भई बहुरि सबते अधिक ॥

पुरुष पुरुष ... तिय रति जोई । महा यत्न करि बाढ़ै सोई ॥
तिय ... तिय प्रीती । बढ़ै सहज लौकिक श्रुति नीती ॥
ताते ये श्रीगोदा देवी । भई विशेष कृष्ण पद सेवी ॥
नंदादिकनहुँ ते आपिन को । भौ उत्कृष्ट प्रेम तिमि इनको ॥
सोई बिचारि श्रीवेदव्यासा । नारि धन्य यह कियो प्रकासा ॥
जिमि ब्रजभूषण बिरह दुखारी । रहीं निरंतर गोपकुमारी ॥
तैसेहि कृष्ण बिरह दुख दीना । रहति विष्णुचित सुता मलीना ॥
सुनि गोपिन कृत व्रत अति गाढ़ो । कृष्ण सँयोग प्रेम उर बाढ़ो ॥
श्रीभागवत अर्थ उर आनी । रचे प्रबंध सुमल सुखदानी ॥

परिजन पुरजन भक्ति अपारा। करत मानि लक्ष्मी अवतारा॥

दो० [illegible] चित्ते चकित अति देखि [illegible]।
[illegible] चरित तिनको सुनो मगल मोद निधान॥

सो० [illegible] हार [illegible] हरि [illegible] नित।
[illegible] छवि॥

[illegible] लहि [illegible]। [illegible] चरित सुहायो॥
हरि [illegible] इमि [illegible]॥
पुत्री [illegible]। [illegible] कोउ कुमारी॥
याविधि कन्या [illegible] कीन्ही॥
भट्टनाथ सोये निशि जबहीं। [illegible] स्वप्न [illegible] तबहीं॥
पुष्पमाल [illegible] कह अजहूं॥
दीन्हीं पहिरि [illegible]। ताते अर्पण किय न कृपाला॥
कहप्रभु [illegible]। [illegible] वह माल लगति अति प्यारी॥
अर्पण करो [illegible]। याविधि कहत भये हरि बानी॥
भट्टनाथ सोवत ते जागे। स्वप्न विचारत अचरज पागे॥

दो० सीता रूम [illegible] भये गोदा महिमा [illegible]।
[illegible] हरि [illegible] प्रेम अनन्य॥

सो० भई तुलसिका भांति गोदा देवी हरिप्रिया।
[illegible] भई बहुरि सबते अधिक॥

पुरुष पुरुष तिय तिय रति जोई। महा यत्न करि [illegible] सोई॥
तिय [illegible] तिय प्रीती। बढ़ै सहज लौकिक श्रुति [illegible]॥
ताते ये [illegible] देवी। भई विशेष कृष्ण पद सेवी॥
नंदादिकनहुँ [illegible] को। भो [illegible] प्रेम [illegible] इनको॥
सोई विचारि [illegible]। [illegible] कृष्ण पह किमि प्रकासा॥
जिमि व्रजभूषण विरह दुखारी। रहीं निरंतर [illegible]॥
तैसेहि कृष्ण विरह दुख लीना। रहति [illegible]॥
सुनत [illegible] अति [illegible] प्रेम [illegible]॥
[illegible] उर [illegible]। [illegible] कुमल [illegible]॥

लक्ष्मीनित्य नाम इक सुंदर । गोदा अस्तव नाम द्वितिय बर ॥

दो॰ कीन्हो शत अरु सतति तीनि गाथ संयुक्त ।
दूजो तेतालिस अरु शत गाथा सौं गुक्त ॥

सो॰ धनुर्मास उत्साह बिरचो तासु प्रबंध बर ।
तीस गाथ निर्वाह गोदा देवी हरिप्रिया ॥

तिन अस्तोत्रन में हर गाई । अष्ट दिव्य देशस्तुति गाई ॥
रंगस्थल शेषाद्रि सुहायो । बनगिरि अरु धन्वीपुर गायो ॥
कृष्णनगर क्षीराब्धि बखानो । श्रीमथुरा गोकुल मनमानो ॥
याबिधि दिव्य प्रबंध बनाई । जग रक्षण कीनो मन लाई ॥
इमि शुभ गुणन युक्त लखि बाला । बिष्णुचित्त चित हर्ष बिशाला ॥
पुनि यौवन को आगम देखो । बरण योग जग परत न पेखो ॥
चिंतामग्न भये उर माहीं । जनकराज जिमि लखि कछु नाहीं ॥
पितु व्याकुल लखि गोदा कहई । तात न कछु दुख अवसर अहई ॥
श्रीश बिहाय बरों नहिं आना । यह मम प्रण रक्षक भगवाना ॥
यह सुनि बिष्णुचित्त हरषाने । बोले बचन स्वधा जनु साने ॥

दो॰ महि दिव्यस्थल विष्णु के अष्टोत्तर शत आहिं ।
सब को वैभव श्रवण करि देखि लेउ तिन माहिं ॥

सो॰ निज अभिमत अनुमानि बरण करौ तिनकौ सुता ।
शठजितादि मत जानि हर्ष सहित लागे कहन ॥

पाण्डुदेश अष्टादश गाये । केरल देश अरु चारि सुनाये ॥
चोल देश बरने ब्यालीसा । पुनि तुंडीर देश तेइसा ॥
उत्तरदेश कहे एकादश । जहँ जहँ रहत भक्त करुणा बश ॥
सौंदर्यादि रूप गुण तिनके । गोदा सों बरने सबहुन के ॥
बिमलप्रभाव अतुलि अति अद्भुत । सबको बरणन किये प्रेमयुत ॥
मथुरानाथ कृष्ण की लीला । भई चकित सुनि आनंदशीला ॥
सुंदरराज चरित्र बहोरी । सुनि उपजी उर प्रीति न थोरी ॥
व्यंकटेश महिमा जब गाई । उर प्रसन्नता मुख तब छाई ॥
रंगनाथ माहात्म्य बिशाला । हरषी बहुत सुनो जिहि काला ॥

याबिधिसकलबिष्णु दिव्यस्थल । भट्टनाथ बरने बिधि निर्मल॥

दो० सुनिके अति आनँद लह्यो गोदा देवि प्रबीन ।
बिष्णुचित्त तब प्रेम युत सब की अस्तुति कीन ॥

सो० करत भये उत्साह रंगादिक अर्चा सकल ।
श्रीगोदा को ब्याह जानि स्वयंबर सब चले ॥

दो० यौवनादि गुण युत सकल धन्वनव्यपुर आय ।
श्रीगोदा तिन सबन कौ देखति भई मन लाय ॥
सर्बोपरि सुंदर लखे रंगनाथ सब अंग ।
बरण कियो अपनो मुदित सादर तिनके संग ॥
भट्टनाथ पूजे सकल अर्चा हरि हरषाय ।
जात भये निज निज थलन तब रंगस्थलराय ॥
लावण्यादिक निज बिभव गोदा चितहि चुराय ।
रंगक्षेत्र आवत भये सानद त्रिभुवनराय ॥
याबिधि तुलसीबिपिनजा निज अभिमत बरपाय ।
ध्यानावस्थित रहति नित उर आनंद बढ़ाय ॥

इतिश्रीप्र० गोदाबिवाहकथनन्नाम नवत्तमोध्यायः ॥ ६० ॥

अस्मयति सुनि कथा सुहाई । बोले गुरुचरणन शिर नाई ॥
गोदा मंगल बिशद कृपाला । सुनन काज मोहिं प्रीति बिशाला॥
कहौ कृपा करि सेवक आगे । प्रेमपात्र लखि गुरु अनुरागे ॥
बोले बचन कृपामृत साने । जब रङ्गेश मंद मुसुकाने ॥
निज सौंदर्य बिबश करि गोदा । रंगक्षेत्र तब गये समोदा ॥
उनको दरश बियोग निहारी । गोदा भई तप्ततन भारी ॥
बिकलदिवसनिशितनसुधिलोपी।कृष्णबिरहजिमिब्रजकीगोपी॥
निद्राहार तजो जिमि राधा । तन्मय भई बिरह की बाधा ॥
बिष्णुचित्त लखि ब्याकुल बाला । भये संतप्त चित्त तेहि काला॥
निज मनमें याभांति बिचारी । गोदा कियो मनोरथ भारी ॥

दो० सर्बेश्वर रंगेश हरि सर्बोपरि अभिराम ।
नेति नेति करि कहहिं नित वेद जासु गुणग्राम ॥

सो० तिनसौं होय बिवाह गोदा सँग काभांति सौं ।
यही सोच के दाह व्रत करि सोये तानिशा ॥

श्वशुरहि व्याकुल लखि रंगेशा । कहो स्वप्न महँ तजौ कलेशा ॥
लै निज सुता क्षेत्र मम आवहु । हमरो कौतुक लखि सुख पावहु ॥
सब लोगन के देखत माहीं । गोदा पाणिग्रहण कराहीं ॥
भट्टनाथ सोवत ते जागे । स्वप्न बिचारि परम सुख पागे ॥
गोदा प्रति पुनि कहो सुनाई । रंगनाथ नियोग हरषाई ॥
सुनि पितु बचन हर्ष उर भरेऊ । धनुर्मास व्रत बिधिवत करेऊ ॥
अगहन मास गोपिका जैसे । ब्राह्मिमुहूर्त्त उठति नित तैसे ॥
रंगरंग श्रीरंग उचारी । करि अस्नान श्वेत पट धारी ॥
ऊर्द्धपुण्ड्र धारण करि भाला । रंग मूर्ति करि प्रीति बिशाला ॥
करति अलंकृत पीरे पट सौं । पूजति उपचारन दशषट सौं ॥

दो० अर्घपाद्य अरु आचमन अर्पण करि मधुपर्क ।
गन्ध पुष्प पुनि धूप दै दीप प्रीति संपर्क ॥
सो० घृत शारकरा मिलाय मुद्गअन्न मेवा सहित ।
अर्पति मन हरषाय बीरी दै पुनि आरती ॥

उपचारांत दिव्य इक गाथा । पढ़ति नित्य रचि द्राबिड़ भाषा ॥
पुनि नीराजन सजि शुभ रीती । करति प्रदक्षिणा बिनय सप्रीती ॥
रंगअवनिपति करुणासागर । मम करग्रहण करौ द्रुत नागर ॥
नौमि न जानति तुम बिनु आना । जानत हौ यह तुमहुं सुजाना ॥
याबिधि करति प्रार्थना नित प्रति । बहुरि तदीयाराधन ताहित ॥
प्रतिदिन करि अहार इकजोरा । हविष्यान्न प्रसाद कछु थोरा ॥
भक्ति सुदृढ़ उर सोवति धरनी । ब्रह्मचर्य्य व्रत रत बरबरनी ॥
याबिधि राधा जिमि तिहि मासा । रंगी हेत कियो उपबासा ॥
तीस गाथ युत भयो प्रबंधा । आदि अंत सब प्रेम निबंधा ॥
अति प्रसन्न तब भये रंगपति । देखि देवि अनन्य गति मति रति ॥

दो० मास अंत दिन प्रकट ह्वै नाश्यो दुसह बियोग ।
परम प्रेम संयोग सौं दियो भलीबिधि भोग ॥
सो० रंगेश्वर संयोग भोग सकल गोदा लहो ।
परो नाम तेहि योग भोगी वादिन को बिग्रह ॥

छन्द हरिगीतिका ॥

यह भाँति गोदा पूजि करि व्रत रंगपति बर पायेऊ ।
धनुमास साहस हुलास पूरण प्रेम हरिहि मनायेऊ ॥
तेहि मास भरि प्रति दिवस हरि निज दिव्य बपु दरसायेऊ ।
सोई दिवस गोदा रंगनाथ मंगल सुआनन्द गायेऊ ॥
जे रचैं तेहि दिन रंगपति गोदा सुमंगल पावनो ।
ते लहैं जग मंगल सुमंगल निज कुल सदैव सुहावनो ॥
यह भाँति दिव्य चरित्र हरि प्रभाव समरथ पायके ।
ते परैं नरक न कबै जे उत्साह हर्ष बढ़ायके ॥

दो० गोदा चरित पुनीत अति कारण सकल सुख क्षेम ।
मंगल अरु भव दुःख हर गावत सुनत सप्रेम ॥

सो० याविधि दिय उपदेश गुरुपुंगव देवहि सौं ।
श्रीगोदा रंगेश मिलन नाम संक्षेप करि ॥

इतिश्री प्र० गोदारंगेश मिलनवर्णनो नाम एकाधिकनवत्तमोध्याय:९१

अस्मद्याति अचरज मन आनो । कहे रामानुज गुरुसौं मृदुबानी ॥
धन्वीनगर माहिं निज धामा । बसति देवि गोदा अभिरामा ॥
रंगनगर श्रीरंगनाथ हरि । राजत हैं अर्चा बिग्रह करि ॥
कहिये काविधि भयो बिवाहू । लोक मांझ अचरज सबकाहू ॥
शिष्य बचन शुभ सुनि गुरुज्ञानी । कहत भये तिनसौं मृदुबानी ॥
अकथ प्रेमयुत जब श्रीगोदा । पूजे रंगनाथ करि मोदा ॥
तब तिनके परमेश भगवाना । ह्वै प्रसन्न अति कृपानिधाना ॥
स्वप्न माहिं इमि वचन उचारो । सुंदरि मंगल होय तुम्हारो ॥
तुम अस्तोत्र कियो अति नीको । भयो तोषकारण मो जीको ॥
बहुरि बिशेष भई रुचि मेरी । धनुमास सेवा लहि तेरी ॥

दो० करिहौं पाणिग्रहण तव मन न करौ संदेह ।
शीघ्रहि सुनु बड़भागिनी तुम्हरे बिशद सनेह ॥

सो० याबिधि श्रीभगवान मर्मबिचन को दान करि ।
भये सो अन्तरधान जागि उठी गोदा तुरत ॥

अति सुख मानि भागबड़ अपनो । पितुसौं कियो निवेदन सपनो ॥
निश्चल सुख पायो तहं गोदा । तब श्रीरंगनाथ करि मोदा ॥
निज अधिकारिन सौं इमि बोले । अधर प्रवाल सदृश निज खोले ॥

सुंदर दशन प्रभा जिन माहीं । तड़ित रही उपमा जिहि नाहीं ॥
मंगल मय सब बाजन भेरे । छत्र चँवर युत बिभव घनेरे ॥
नवरत्न मय शिविका मेरी । धन्वीपुर लै जाव सबेरी ॥
सादर बिष्णुचित्त की कन्या । मम ढिग ल्यावहु गोदा धन्या ॥
अधिकारी सुनि नाथ नियोगा । चले तुरत रचि सोई संयोगा ॥
धन्वनव्यपुर पहुंचे जाई । कह्यो बिष्णुचित सों हरषाई ॥
जाबिधि श्रीरङ्गेश उदारा । कियो नियोग भक्त सुखसारा ॥

दो० करुणामृत सुनि बचन वर बिस्मित भये सुजान ।
बिष्णुचित्त पुनि सबन को पूजन कियो महान ॥
सो० पुनि अति हर्ष बढ़ाय वटपल्लवशाई निकट ।
भट्टनाथ मुनि जाय कियो निवेदन वृत्त वर ॥

तुरत निदेश तिनहुँ सौं पायो । बल्लभ नृप ढिग शिष्य पठायो ॥
सुनि नृप गुरु निदेश अतिपावन । परम बिचित्र प्रकर्ण सुहावन॥
अतिमानुष गोदा को बैभव । करि अचरज पूजे ते बैष्णव ॥
शिर धरि आयसु करि अभिलाषा । आये सैन सहित गुरु पासा॥
बल्लभदेव शिष्य लखि आयो । गुरु कीनो बहु मान सुहायो ॥
बहुरि बिचार कियो मन माहीं । अहो धन्य मम कन्या काहीं ॥
रंगनाथ बिनु और न जाकौं । सपनेहु प्रिय बरनौ किमि ताकौं॥
जिमि राघवहि अनन्या सीता । तिमि गोदा हरि प्रेम पुनीता ॥
भई अति प्रिया रंगपति केरी । अन्य दृष्टि चाहिये निवेरी ॥
यह गुनि शिविका पर पीतांबर । आच्छादित कीनो सुबोध बर ॥

दो० तिहि शिविका अति हर्ष युत गोदादेवि चढ़ाय ।
अति वैभव सौ चलत भये काहलि शंख बजाय ॥
सो० रंग बिभव समुदाय छत्र चँवर बिजनादि लै ।
नगर लोग सुख छाय चले नृपति पुनि सैन युत ॥

शिविकारूढ़ चली जब गोदा । भयो भेरि जय नाद बिनोदा ॥
तहँते रंगनगर परियंता । मार्ग अलंकृत भयो तुरंता ॥
मंडप बासस्थान सुहाये । लोगन रचि बहुभांति बनाये ॥

चोल पाण्डु आदिक नर धाये। सकल चकृत श्रीरंगहि आये॥
किमि गोदा कर ग्रहण कराहीं। रंगदेव अचरज मन माहीं॥
रंगधाम शोभित भौ कैसे। सूरि पूर्ण बिकुण्ठपुर जैसे॥
याबिधि गोदा श्रीपति प्यारी। पितु संग निचुलापुर पगु धारी॥
अधिकारिन तब रंगी पासा। गोदा आगम जाय प्रकासा॥
हर्षित रंगनाथ तिहि काला। सजन कहो निज नगर बिशाला॥
पुनि तिनसौं इमि बचन बखानो। गोदहि मम समीप द्रुत आनो॥

दो० बिष्णुचित्त तनया बिमल तिन युत अति सन्मान।
करि बैभव युत निकट मम ल्यावहु शीघ्र सुजान॥
सो० प्रभु आयसु अधिकारि लहि तत्क्षण तैसेहि कियो।
बहुबिधि नगर सुधारि किय बैकुंठहु ते शुभग॥

कदली पुंगि कदम्बन पांती। रोपे रचना करि बहु भांती॥
निचुला तें श्रीरंग प्रयंता। कीन्ही रचना शुभग अनंता॥
सब प्राकार रंगपुर केरें। किये अलंकृत यत्न घनेरे॥
अति शुभदाय लग्न दिन जाना। गोदा करि मंगल अस्नाना॥
सजि शृंगार बंदि रङ्गेशा। शुभग पालकी कियो प्रवेशा॥
पाणिग्रहण तुरा अति भारी। प्रेम दशा को सकै उचारी॥
बैष्णव करत मंगलाशासन। चलति भई लहि गुरु अनुशासन॥
अति बैभव युत किय प्रस्थाना। निचुला ते श्रीरंग पयाना॥
काहलि नाद भयो अति भारी। श्रीबैष्णव बहु चले अगारी॥
करत प्रबंध गान बहु भांती। श्रीपति पर सुनि उपजति शांती॥

दो० करी अलंकृत युगल करि भद्रजाति बिख्यात।
धंदन युत आगू चले शुभ निशान फहरात॥
सो० पाछे चले तुरंग युग सब भूषण सौं सजे।
कीने रति मद भंग बारमुखी पुनि चलति भई॥

नाचति गावति शिविका आगे। गवनी बारबधू अनुरागे॥
शिविका दक्षिण बाम बिभागा। बिष्णुचित्त अरु नृप युत रागा॥
तिन संग अगिनित सुजन समाजा। चले वेत्रकर रक्षण काजा॥

बहुतक बिप्र वेदविद आछे । चलत भये शिविका के पाछे ॥
वेदध्वनि सुंदर स्वर करहीं । श्रुति पुण्याह बचन उच्चरहीं ॥
गिरा अगोचर बिभव समेता । रंगनगर इमि कियो प्रवेशा ॥
राजति जहं बहु ध्वजा बिशाला । दीपजाल बहु तोरण माला॥
जन समूह पूरित तिहि काला । भयो सो नगर बिचित्र बिशाला॥
तिय गण गोदहि लखि सुख पावैं । महलन चढ़ीं फूल बरषावैं ॥
तहं हरि करि मंगल अस्नाना । सुंदर बर उत्सव भगवाना ॥

दो० अलंकार सब करि विशद सादर कृपानिधान ।
द्विज पुण्याह बाचन करत मंगल बिधि बिधान ॥
सो० सृजत बिश्व कल्यान तिनके मंगल काज तहँ ।
करत भये श्रुतिवान अंकुर आरोपण प्रभृति ॥

याबिधि हरि युत सुर द्विजराई । बैठे चंदन मंडप आई ॥
गोदा गमन परम उत्साहा । आतुर मग निरखत श्रीनाहा ॥
सप्तावरण प्रदक्षिण करिके । आई गोदा सन्निधि हरिके ॥
निरखे गोदा हरि हरि गोदा । को कह दम्पति प्रेम प्रमोदा ॥
गिरा अगोचर वेद न जानै । सो सुख प्राकृत किमि कहि गानै॥
सुंदर लग्न मुहूरत जानी । परमानन्द अतुल मन मानी ॥
बिधिवत तहां रंगपुर दीपा । सुर भूसुर अरु अनल समीपा ॥
पाणिग्रहण गोदादेवी को । कीनो निज पदरज सेवी को ॥
तिहि पाछे बिधिज्ञ द्विज देवा । उर धरि श्रीपति मंगल सेवा ॥
बिधि सौं हवन कियो सुखमानी । देशकाल आगम रुचि जानी॥

दो० दियो हरषि हरि कौं बहुरि आशिर्वाद बिशेष ।
सो लहि अति प्रमुदित भये कृपासिंधु रंगेश ॥
सो० श्रीपति करुणाकंद बर पाए बर बरणिनी ।
गोदा परमानंद लह्यो सो काबिधि जाय कहि ॥

इतिश्रीप्र० रङ्गेश गोदासमागमोनामद्विनवत्तमोध्यायः ॥ ९२ ॥

हरि को बरण कियो जब गोदा । लहो बिष्णुचित्त अतुल प्रमोदा॥
कियो प्रणाम कर्म मन बानी । बार बार निज भाग बखानी ॥

अतिबिनीतआदरकरिबहुबिधि।ल्यायेहरिहिकरनस्वभक्तिसिधि॥
निचुलापुर पावन निज धामा । कियो तहां बहु पूजन सामा ॥
तहँ ब्रह्मादि देव ऋषि सर्वा । आये सिद्ध चारण गंधर्वा ॥
बंदीजन अस्तुति बहु करहीं । चांवर छत्र चलत मन हरहीं ॥
बिप्रन बैदिक मंत्र उचारे । सिंहासन तब हरि बैठारे ॥
अर्घादिक बिधिवत सब करिके । अर्चित किये कमलपद हरिके॥
भार्या सहित अलंकृत कीन्हे । बसनाभरण बिविधि बिधि दीन्हे॥
गंध पुष्प ताम्बूल सुहाये । बर उपवीत भोग मन भाये ॥

दो० परम प्रेम अर्पण कियो शुभ उपचार अपार ।
पहिराये दम्पति हृदय पुष्पमाल मणिहार ॥
सो० लोकरीति के भाय गोदा हाथ गहाय पुनि ।
भट्टनाथ सुख पाय बिदा किये रंगेश तब ॥

गोदा युत रङ्गेश उदारा । अति बैभव निज पुर पगु धारा ॥
तहँ चंदन मंडप कछु काला । निवसे देवी सहित कृपाला ॥
शुभग मुहूरत पुनि भगवाना । रत्नसिंहासन किय प्रस्थाना ॥
गोदाहू अंतःपुर जाई । देखे नाथ सहसफणशाई ॥
तिनकौ हाथ जोरि तहँ गोदा । कियो प्रदक्षिण अमित प्रमोदा॥
अति अद्भुत लावण्य निहारी । निज पति को बैभव अति भारी॥
बार बार अनुभव करि ताही । चरण निकट गई भाग सराही ॥
शेष पलँग गोदा पगु धारो । पद सेवा हित हाथ पसारो ॥
इतनाही सब लोगन देखा । गोदा अचरज कियो बिशेखा ॥
देखतही देखत न दिखानी । निज प्रभु चरण सरोज समानी ॥

दो० यह अपूर्व कौतुक निरखि भये चकृत सब लोग ।
अकथनीय रंगेश अरु गोदा परम सँयोग ॥
सो० स्वयं रमा अवतार गोदादेवी मानि पुनि ।
हर्ष शोक सरिधार भये मग्न भट्टेश मन ॥

इमि हरिभक्त मुक्तिदातारा । गोदादेवी करि स्वीकारा ॥
बिष्णुचित्त बुलवाय सुबानी । याबिधि सबके सुनत बखानी ॥

सिंधुराज सम श्वशुर हमारे। तुम भये हम जामात तुम्हारे॥
अब निज पुर बटपल्लवशाई। तुलसी पुष्प माल सिवकाई॥
करौ जाय प्रतिदिन सुखदाता। हम तुम पर प्रसन्न अति ताता॥
इमि कहि कृपासरित अन्हवायो। तिनहिं तीर्थ शठकोप दिवायो॥
प्रभु आयसु लहि करि पणिपाता। हर्ष शोक अति तिनके गाता॥
बल्लभदेव नरेश समेता। गये बटपल्लव शयन निकेता॥
निवसे धन्वीपुर सानन्दा। सेवत जनकुल कैरव चन्दा॥
नृप लै निज परिजन समुदाई। निज पुर गये गुरु शासन पाई॥

दो० भूरिभाग जिनको अकथ इमि हरि चित्त महान।
श्वशुर नात जिनसौं कियो रंगनाथ भगवान॥
सो० क्षणप्रति जीवन जासु एक श्रीश के दास्यरस।
प्राकृत भोग बिलास सपनेहु जान्यो नहीं॥

तुलसी पुष्पमाल प्रति बासर। बिरचि बिरचि अति प्रेम निरंतर॥
बटपल्लवशाई के चरणा। करत समर्पण भवभय हरणा॥
जगत जनन को पाप अँधेरो। रबि ज्यों निशि तम सरिस निबेरो॥
बर्ष पचासी लौं सुखरासा। धन्वनव्यपुर कियो निवासा॥
श्रीरंगी अष्टम आवणा। गोदा मंदिर किय मन हरणा॥
गोपुर प्राकारन संयुक्ता। कीनो मंडप उत्सव युक्ता॥
तबते बहुधा हरिथल माहीं। गोदा बिनु हरि देखिये नाहीं॥
तद्यपि निज अवतार स्थल मधि। राजति सो युत बिभव परावधि॥
गोदादेवी सहित शठारी। अरु यतिपति हरि धाम मझारी॥
हैं आवश्यकतम ये तीनी। निरणाय सुदृढ़ महानन कीनी॥

दो० श्रीगोदा कलिकाल में जगत जनन सब काल।
रक्षण कौ उद्यत रहति लै शठजित परकाल॥
सो० तिनहिं आदि योगीश रंगनाथ मुनि यामुनहु।
श्रीमन्नाथ यतीश कूराधिप युत जानिये॥
गोदा चरित विचित्र जे सप्रेम गावत सुनत।
ते नर परम पवित्र होत सकल मंगल भवन॥

इतिश्रीप्र० गोदाबिवाहकथनन्नाम त्रिनवत्तमोध्यायः॥ ९३॥

प्रेम सहित वेदांति सुजाना । बोले करि गुरुचरण प्रणामा ॥
कासारादि योगि की गाथा । नाथ बरनि मोहिं कियो सनाथा ॥
अब भक्तांघ्रिरेणु योगी को । कहौ चरित्र भक्ति भोगी को ॥
सुनि तिनको यह बचन सुहायो । भट्टारक गुरु मन सुखपायो ॥
बोले बानि बिशद करुणावृत । श्रीभक्तांघ्रिरेणु चरितामृत ॥
अति बिचित्र जगजन अघनाशक । ज्ञान बिराग भक्तिपरकाशक ॥
जग बिख्यात चोल शुभ देशा । श्रीकावेरि हरणि अघ लेशा ॥
युगप्रवाह जहं बहतिसदाहीं । तिहि महि अमित बिष्णुथलआहीं ॥
ब्यालिस दिव्य देश तिहि देशा । शठजितादि बरयोगि अशेषा ॥
निज प्रबंध बरनो बिस्तारू । तिनमैं कुम्भकोण अति चारू ॥

दो० अति प्रसिद्ध परकाल अरु भक्तिसार शठध्वंसि ।
किये मंगलाशासन बहुबिधि ताहि प्रसंसि ॥
सो० पश्चिम दिश युग कोश मंडंगुड़ि इक नगर बर ।
पावन महिमाकोश कावेरी उत्तर बसत ॥

बहु श्लोक प्रभाव जिहि बरणा । दिव्य सूरि चरित्र अघ हरणा ॥
तेहि पुर बैदिक बिप्र महाना । बसत सप्तशत पूरण ज्ञाना ॥
कोउ ऋग्वेदि यजुर कोउ सामा । ऊर्ध्वशिखी आचरण ललामा ॥
भये तहं वेदबिशारद नामा । ब्राह्मण पूर्वशिखी गुणधामा ॥
बिष्णुचरण पंकज रुचिवाना । करत सुसुत हित श्रीपतिध्याना ॥
नारायणगिरि कौं पुनि आये । तहं कल्याण सुतीर्थ नहाये ॥
नारि सहित पण्डितगण साथा । रामप्रियहि कियो प्रणिपाता ॥
संतति हित यदुगिरिपति पूजी । आये घर बांछा सो पूजी ॥
उपजो सुत धनुमास मझारी । ज्येष्ठा नखत परम शुभकारी ॥
जन्मे नारायण करुणा ते । नाम बिप्र नारायण ताते ॥

दो० अष्टोत्तर शत बरष जब कलियुग भयो ब्यतीत ।
हरि बनमाल सुअंश सौं जन्मे परम पुनीत ॥
सो० तिनके जन्मश्लोक सुनियत है बहु लोक मैं ।
सुमिरत जिनहि बिशोक होत मनुज पावन परम ॥

अन्नपरासनादि करमन कौं । भये प्राप्त सब द्विज धरमन कौं ॥
पुनि सब वेद साङ्ग सबिधाना । ग्रहण किये गुरु ते मतिमाना ॥
याबिधि तहां बिप्र नारायन । बाढ़े जनक जननि मुदितायन ॥
श्रीमद्विष्वक्सेन प्रवीने । संसकार सर तिनके कीने ॥
बहुरि मंत्र को अर्थ सुनायो । तिनहि ज्ञान बिराग दृढ़ आयो ॥
ताते करत भये नहि ब्याहा । आये जहां रंग महिनाहा ॥
सादर भक्ति समेत सुजाना । सेवा करत भये सबिधाना ॥
अति लावण्य निरखि प्रभु केरी । लहत भये मन आनँद ढेरी ॥
तिनहि स्वभक्ति युक्त रङ्गेशा । कृपापात्र निज कियो बिशेषा ॥
जैसे पुण्डरीक हरिदासा । तैसेहि ते भये भक्ति निवासा ॥

दो० सकृत अर्पि यदुनाथ कौ निज ग्रह में इक माल ।
ह्वै कृतार्थ संज्ञा लही मालाकार बिशाल ॥
सो० ताते सर्वोत्कृष्ट पुष्पमाल कैंकर्य बर ।
मानि मनहि अति हृष्ट भट्टनाथ सम होत भये ॥

रंगनगर पश्चिम दिशि नीको । उपबन रच्यो फूल तुलसी को ॥
नंदनबन सम सो अमराई । सीचत निज कर तन मन लाई ॥
निशिदिन फूलतुलसिका माला । रचि अर्पत हरि प्रीति बिशाला ॥
धारत तन बैष्णव ग्रह भिक्षा । हरि सेवा तजि और न इच्छा ॥
तहां कदम्बनगर तिहि काला । देवाङ्गना अंश इक बाला ॥
बेश्याकुल जन्मी दुखदाई । रंगनगर इक बार सो आई ॥
लोक मोहनी सो मृगनयनी । नाम देवदेवी पिकबयनी ॥
तिहि बन जाय तजो तनको श्रम । गई बिप्र नारायण आश्रम ॥
भगिनी जेष्ठा ताके संगा । कहति ताहि बन शोभ प्रसंगा ॥
उपबन नायक कौ तब देखो । बिग्रहवंत तेज तप लेखो ॥

दो० श्वेत बस्त्र उपबीत शुभ ऊर्द्धपुण्ड्र बरभाल ।
दीर्घ केश शिर उर लसति तुलसी अम्बुजमाल ॥
सो० घट भरि जल लै जात सीचत तुलसीबन सरुचि ।
रंगी पदजलजात मधु रस पान अधीन तन ॥

याबिधिसौंलखिकेसुखधामा। सखिनसहिततिनकियोप्रणामा ॥
देखेहु बिनु देखे की नाईं । रहे सो निजकृत निरत तहांईं ॥
बिमुख देखि निज सुंदरता ते । बारबधू कह निजाग्रजा ते ॥
कै उनमत्त नपुंसक कीधौं । है यह पुरुष लखत नहिं हमकौं ॥
अलिबेणीहंसिताहिकहोइमि। तुमसमुझतिइनकौनहिंहैंतिमि॥
अतिमानुष बैभव इनकेरे । हैं बिरक्त जगते मुख फेरे ॥
रंगनाथ सेवा जल मीना । नहिं चोलेश जो तव आधीना ॥
सुनत कुपित तिन बचन बखाना। करि निजसुंदरता अभिमाना॥
नहिंअसाध्य हमकौ जग माहीं । कछु कारज तुम जानति नाहीं॥
पवन पत्र अरु अंबु अहारी । ऊर्द्धरेत योगी तपधारी ॥

दो० तेऊ लखि सौंदर्य मम काम बिवश है जात ।
येतौ सब अँग पुष्ट है अन्न पानहूँ खात ॥
सो० यौबन को आरंभ बसत अकेले बिपिन मैं ।
कहा चाहिये दंभ इनकौं निज बश करन हित ॥

साधू होत सुलभ जग माहीं । तिनहिं मोहिबो दुर्लभ नाहीं ॥
अलिबेणी नहिं कियो प्रमाना । तासु बचन को किय अपमाना॥
तब तिन प्रण कीनो अति भारी । अर्धबर्ष हमदासि तुम्हारी ॥
रहैं जो इनहिं न बश करि लेहीं । करैं तौ तुम कीजौ ऐसेहीं ॥
याबिधि ठानि प्रतिज्ञा दोऊ । तिनकी दुर्मति जान न कोऊ ॥
तहँते जाति भई अलिबेणी । रही देवदेवी अघ श्रेणी ॥
करि अस्नान मोट पट धारी । ऊर्द्धपुण्ड्र निज भाल सँवारी ॥
आभूषण सब धरे उतारी । सात्विक वेष रच्यो छलकारी ॥
योगीनिकटआय सोपापिनि।उरबिष मुख अति मधुर अलापिनि॥
दोउ कर जोरि दण्डवत कीनी । ठाढ़ी भई दीनता भीनी ॥

दो० कही बिप्र नारायण तासौं याविधि बात ।
को तू क्यों आई यहाँ तिहि पुनि किय प्रणिपात ॥
सो० प्रभु हम पापिनि आहिं पाप कर्मबश बिधि हमहिं ।
बारमुखी कुल माहिं रच्यो न ताहू दोष कछु ॥

अड़े पाप बेश्याकुल जन्मा । अघ तजि तासु न दूसर करमा ॥
काहू पुण्य लेश ते स्वामी । मेरे उर याविधि मति जामी ॥
हरि हरिजन सेवा शुभ रीती । करि तिन मग चलि तजौं अनीती ॥
मम जननी की मति अति घोरा । कहै चलन कुल पंथ कठोरा ॥
अस्त्री है सब जगत जनन की । तिनहि मोहि करु यतन कुधन की ॥
पीड़ा करति रही नित ताहित । मैं त्यहि तजो मुक्ति रुचि करि चित ॥
तुम मुमुक्षु हरिजन द्विज देवा । करिहौं नित पदपंकज सेवा ॥
वर्त्तमान है तव आधीना । रहिहै नाथ सदा यह दीना ॥
तुम दयालु मैं शरण तुम्हारी । करौ कृपा किंकरी बिचारी ॥
रक्षा कीजै जानि अनाथा । तुम बिनु मोक्ष देय को नाथा ॥

दो० रंगनाथ कैंकर्य हित अरु भिक्षा के हेत ।
ऐहौ जब तब करौगी बन रक्षण को नेत ॥

सो० जल फल सूखे पात शाक खाय तन राखिहौं ।
बचै अन्न जो खात दै कृतार्थ मोहि कीजियो ॥

भावी बिबश सुनौ वेदान्ती । जान्यो नहिं छल मुनि एकान्ती ॥
ताके कुटिल बचन गुनि सांचे । बोले बचन करुणा रसराचे ॥
रंगी बन की करु रखवारी । सुनि बेश्या अति भई सुखारी ॥
सुफल प्रतिज्ञा अपनी जानी । रहन लगी तहँ अति हरषानी ॥
नित प्रति करि त्रिकाल अस्नाना । ऊर्द्धपुंड्र करि सहित बिधाना ॥
तुलसीमाल पहिरि अभिरामा । तीनिकाल प्रति दिवस प्रणामा ॥
करति तिनहि अरु उनकी निश्चित । सेवामाझ रहति तत्पर नित ॥
अस्मद्यती सुनौ सो महात्मा । करि मधुकरि भिक्षा नियतात्मा ॥
अर्पि हरिहि भोजन करि नितप्रति । ताकौं उबरी देन साधु मति ॥
देवदेवि ओदन सो खाई । पावति भई शोभा अधिकाई ॥

दो० याबिधि सौं सो वारतिय मनमें पाप विचारि ।
बसति प्रथक योगीश ते साधुरीति बिस्तारि ॥

सो० बहु घट जल भरि ल्याय सींचति तुलसी बाटिका।
विबश करन के चाय तपनिधि कौं तप भंग हित॥

इतिश्रीप्र० भक्तांघ्रिरेणु अवतारकथनन्नाम चतुर्नवत्तमोध्यायः॥

पूर्ब उक्त प्रकार तिहि बाला। बितयो अर्ध बर्ष को काला॥
भई न सफल प्रतिज्ञा ताकी। बिबिधि भांति बिलास करि थाकी॥
ताके हृदय शोच अति बाढ़ो। कासौं कहै शोक उर गाढ़ो॥
तब सो शरण भई श्रीपति के। अशरण शरण दीनजन गति के॥
वृथा प्रतिज्ञा किय मैं मूढ़ा। क्षुभित होत नहिं योग अरूढ़ा॥
कामादिक इन जीति लिये हैं। हरिमाया सरि पार भये हैं॥
बीतो काल मास षट केरो। इन नहिं एक कटाक्षहु हेरो॥
कहत नहीं हमसौं कछु बाता। भल अनभल सुख दुख निशिप्राता॥
बन बिटपन सौं है हित जेतो। मोसौं कबहुं करत नहिं तेतो॥
हे रङ्गेश प्रतिज्ञा मेरी। करौ कृपा करि सत्य सबेरी॥

दो० ताकी बिनती मानि हरि सब फल के दातार।
तिहि संकल्प सिद्धि हित किय संकल्प उदार॥

सो० जो चाहैं सो होइ शरणागत बत्सल सदा।
कियो उपकरण सोइ देवदेवि जिमि सुख लहै॥

त्यहि निशि बर्षा भई अति भारी। तासौं व्यथित भई अति नारी॥
योगी पर्णकुटीमधि अस्थित। पीड़ित लखि ताकौं कोमलचित॥
भीजति शीत बिबश तन कंपित। सहि न सके तिहि व्यथा दयावृत॥
रंगनाथ इच्छा बलवाना। करुणा उपजी तिनहि महाना॥
धर्मात्मा बोले इमि ताही। वृष्टि पवन अति दारुण आही॥
काहू कोण माहि यहि शाला। आय बैठु तजि कष्ट कराला॥
धन्याहं कहि भीतर गवनी। योगि चरण समीप बहु रवनी॥
बैठी जाय मनोहर रूपा। बोलति कोकिल कंठ अनूपा॥
करि प्रसन्न तिनकौ मृदुबानी। पद सेवा हित प्रीति बखानी॥
धीरे दाबन लागी चरणा। करि बिलास कीनो मन हरणा॥

दो० करी चरण सेवा रुचिर भई योगि उर प्रीति ।
भूले ज्ञान बिराग तब योग शास्त्र की नीति ॥
सो० नारि अँगार समान पुरुष कह्यो घृत कलश सम ।
चहै जो निज कल्यान दूरिहि ते त्यागै तरुणि ॥

अग्नि समीप द्रवै घृत जैसे । तिय लहि बहै पुरुष मन तैसे ॥
अति अजेय तिय बपु हरिमाया । ब्रह्मादिकन पार नहिं पाया ॥
भये बिप्र नारायण योगी । देवदेवि संग प्राकृत भोगी ॥
करि बिभ्रम बिलास बिधिनाना । किये रमायमान मतिमाला ॥
भये तासु परबश मुनि ऐसे । प्राकृतनर जग देखिये जैसे ॥
तासुमिलन बिनु अति बिकलाई । इकक्षण कल्पसमान बिहाई ॥
लैसंग निजगृह गई कुनारी । प्रमुदित मन निज बलहि बिचारी ॥
अलिबेणी कौं निज प्रभुताई । बहुबिधि कहि सब प्रकट दिखाई ॥
देखौ ये वेई हैं योगी । ज्ञान बिराग योग के भोगी ॥
तुम मम बलनिदस्यो तिहिकाला । अबजिनिबादेहुमोसंगबाला ॥

दो० बरणाश्रम को धर्म तजि योगिराज तिहि काल ।
धारण किय बिट वेष तहँ हरि माया बिकराल ॥
सो० संध्या बंदन आदि रंगनाथ कैंकर्य्य तजि ।
छांड़े देव अनादि बेश्या गृह बसि तिहि भजत ॥

इतिश्रीप्र० भक्तांघ्रिरेणु देवदेवीसमागमोनाम
पंचनवत्तमोध्यायः ॥ ६५ ॥

करि प्रणाम गुरुसौं अस्मद्यति । पूछत भये तिनसौं निर्मलमति ॥
कितने काल रहे पारायण । देवदेवि संग द्विज नारायण ॥
तासुप्रीति बियोगकिमिभयेऊ । काबिधि बहुरि मोक्ष तिन लहेऊ ॥
कह गुरु थोरेहि काल मुनीसा । रहे बार तिय के संग खीसा ॥
काहू यत्न धनहु तिन जोस्यो । तबलौं बेश्या मुख नहिं मोस्यो ॥
सेवा करति रही सब भांती । अन्य पुरुष संगहू नहिं राती ॥
जब धन रह्यो नहीं तिन पासा । यत्नहु करि नहिं भयो सुपासा ॥
तब अति तिरस्कार करि घरते । दियो काढ़ि कुटुंब मिलि बरते ॥

ब्याकुल मन अतिही दुखदीना । बंधे मोह रजु गति मति हीना ॥
ताके द्वारदेश किय थाना । लज्जित अधोमुख आकुल प्राना ॥

दो० रंगनायकी स्वामि सँग तहाँ कियो संचार ।
तिनकी दुर्गति देखि अति पीड़ित दुख के भार ॥
सो० पूछि नाथ सों बात कही उचित नहि भांति इमि ।
अंतरंग बिख्यात · तुव सेवा जीवी रहें ॥

ऐसे ये तिनकौ या भांती । देखत प्रभुहि रहति किमि शांती ॥
तुम सम रथ दुर्गति यह दासहि । अति अनुचित लह आत मनाशहि ॥
ताते शीघ्र दूरि करि हानी । कृपा बिषय कीजै सुखखानी ॥
भामिनि बचन मानि करुणानिधि । करि दीनो हरि तिनहित था बिधि ॥
तुरत बिप्रनारायण तादन । भये विषय ते परम बिगतमन ॥
चौंकिपरे जनु सोवत जागे । प्रायश्चित्त बिचारन लागे ॥
शोचि समुझि याभांति बिचारा । कियो महानन इमि निरधारा ॥
हरिभक्तन को चरण शौच जल । करिहै हमैं पापते निर्मल ॥
नाहिं यासम कोउ तीरथ आना । तीर्थनहू सों करत शुचिदाना ॥
यह निश्चय मनमैं दृढ़ आनी । श्रीबैष्णवन चरण को पानी ॥

दो० ताकौ लै शिर धरि बहुरि पान कियो हरषाय ।
निश्चित मान्यो आपु कौ बिगत पाप समुदाय ॥
सो० रहत जासु के माथ भगवज्जन श्रीपादजल ।
गंगादिक शुभ गाथ बसत तासु शिर तीर्थ सब ॥

मुनि निर्पेक्ष शांत समदरशी । पाछे तासु चलत हम हरशी ॥
तासु चरणरज मो तन परई । सो रज मोहिं पुनीत अति करई ॥
याबिधि आप कहो श्रीनायक । सोगुनि हरिजन मोक्षबिधायक ॥
जानि मनोरथ उर यह जामा । जग भक्तांघ्रिरेणु यह नामा ॥
कहैं हमहिं सब लोग यथारथ । श्रीश कृपा हम होयँ कृतारथ ॥
तब अर्चक मुख रंगबिहारी । बोलि तिनहिं यों गिरा उचारी ॥
तुमहिं न्यूनता है कछु नाहीं । रहौ पूर्ब जिमि मुदित सदाहीं ॥
दोहिं सब अभीष्ट तुम्हरे हम । मांगौ तुम प्रसन्नता गुनि मम ॥

हर्षि बिप्रनारायण तात्छन। करत भये प्रभु सों बिज्ञापन ॥
सिधि सब काज दरस तव स्वामी। तद्यपि यह याचत अनुगामी॥

दो० मोहिं भक्तांघ्रिरेणु कहि कीजै प्रभु बड़भाग्य।
कहि तथास्तु हरि देत भये ज्ञान भक्ति बैराग्य ॥

सो० सब अर्थन कौ पाय श्रीभक्तांघ्रिरेणु तहँ।
पूर्व भांति हरषाय होत भये कैकर्य रत ॥

निवसे रंगनगर के माहीं। जिहि सम दूजो हरिथल नाहीं ॥
योगी पूर्वाचार्य उपासन। सब मिलि करत मंगलाशासन ॥
और दिव्य हरिथल के काजा। सबहुनमिलि नहि मंगलसाजा॥
जानि परत यह बात बिचारी। रंगस्थल महिमा अति भारी ॥
श्रीभक्तांघ्रिरेणु बर योगी। श्रीपति चरणकमल रस भोगी ॥
श्रीमाला प्रबंध अति नीको। रचि अर्प्यो अति प्रिय रंगी को ॥
मंत्र तिहूँ को अर्थ सुहायो। तामें बालबोध हित गायो ॥
करि प्रबोधकी अस्तव दूजो। बचन सुमन श्रीपति पद पूजो ॥
दशगाथा तिहि माहिं सुहाईं। पैंतालिस श्रीमाला माहीं ॥
लोकोज्जीवन करि याभांती। सब जग पावन किय एकांती ॥

दो० सुख सौं हरि सेवा करत कियो रंगपुर बास।
पंचोपरि शत बर्ष लौं पुनि बैकुंठ निवास ॥

सो० इनके बिशद चरित्र अरु प्रबंध पूर्वोक्त दोउ।
गावत सुनत पवित्र हरि पदभागी होत नर ॥

इतिश्रीप्र० भक्तांघ्रिरेणुचरित्रबरणनन्नाम षटनवत्तमोध्यायः ९६

श्रीभक्तांघ्रिरेणु चरित्र सुनि। अस्मद्यति गुरुबंदि कहो पुनि ॥
अब श्रीपाणचरित्र कृपाकरि। कहौमोहिं आश्रत अनिष्ट अरि॥
सो सुनि भट्टारक गुरुज्ञानी। बोल मधुर मृदुल बरबानी ॥
महामुनीश लोक सारंगा। तासु कंध चढ़ि गये श्रीरंगा ॥
तबहुं कलंक रहित हरिभक्ता। हरिगुण गीत परम अनुरक्ता ॥
गायक सार्वभौम श्रीपाना। काय बचन मन करौं प्रणामा ॥
कावेरी के दच्छिण कूला। निचुला नाम नगर सुख मूला ॥

निरितदिशा श्रीरंगपुरी ते । तहां धर्मबरमा नृप नीके ॥
जिनकी सुता रंगपति प्यारी । गोदा जिमि भई जगते न्यारी ॥
पाणिग्रहण कीनो हरिजाको । बिधिवतजिमि हरिचित्तसुताको॥

दो० इकशत बाइस बर्ष जब बिगत भयो कलिकाल ।
कार्त्तिक पूनी रोहिणी चन्द्रबार शुभमाल ॥

सो० काहू द्विज के खेत धानगुच्छ श्रीपाणमुनि ।
प्रकटे ज्ञान निकेत हरि के श्रीबत्सांश ते ॥

श्लो० कार्त्तिकेरोहिणीजातं श्रीपार्णनिचुलापुरे ॥
श्रीबत्सांशंगायकेन्द्रं मुनिबाहनमाश्रये ॥ १ ॥

भये अयोनिज इमि मुनि बाहन । आश्रतजन कल्मष बन दाहन॥
पाछे पंचम बरण मनुज घर । बढ़त भये भागवत अग्रसर ॥
बारेहिते श्रीपति पद माहीं । भयो प्रेम कहि जात सो नाहीं ॥
ज्ञान बिराग अपूरब भयेऊ । जन्महि ते बैष्णव पद लहेऊ ॥
तद्यपि किये हरि सेनानायक । बैष्णव संसकार सुखदायक ॥
तत्वज्ञान सब पाय यथाबिधि । लै बीना कर श्रीश प्रेमनिधि ॥
गावत गुण रङ्गेश समीपा । बसत भये बैष्णवकुलदीपा ॥
कैशिक गीत गान अति नागर । गांधर्व गुण परम उजागर ॥
श्रीपति ध्यान मग्न सब काला । देहादिक सौं बिरति बिशाला ॥
सामगान रत जिमि नित सूरी । तिमि ते भये प्रकाशित भूरी ॥

दो० देवगान करि तिन तहां लहो प्रकाश अपार ।
यथा प्रकाशित सूरिगण बसत बिकुण्ठागार ॥

सो० प्रकटत सकल चरित्र निज बरणाश्रम के उचित ।
सब आचरण पवित्र निश्चल मन श्रीरंगपद ॥

आनँद अश्रु सदा दृग बहहीं । पुलकावलि पूरित अंग रहहीं ॥
श्रीश ज्ञान आस्वादन माहीं । मगन अन्य रुचि स्वप्नहु नाहीं ॥
पुनि मनमें यह कियो बिचारा । यहां अयोग्य निवास हमारा॥
परम पवित्र रंगथल आही । पग सौं छुवो न चाहिये ताही ॥
जाय बसे हरि प्रीति निकेता । पावन कावेरी के रेता ॥

रङ्गेशहि तहँ युत सब वैभव । लागे करन ज्ञान बल अनुभव ॥
याबिधि थित हरि सौं चितलाये । मुनि सारंग नाम तहँ आये ॥
रंगनाथ सेवक के साजा । स्वर्णकलश लीने जल काजा ॥
कावेरी तट लखि श्रीपाना । पंचमवर्ण तिनहिं मन जाना ॥
जाव जाव तिनसौं अनखाई । कहत भये पुनि पुनि मुनिराई ॥

दो० मग्न ध्यान चित श्रीशमय शून्य बाह्य व्यापार ।
अचल रहे तिनको कछुक सुन्यो नहीं निर्वार ॥

सो० रंगबासि द्विज कोइ पुनि तिनकौ लखि तिहि दशा ।
मत्त नीच नर होइ किये निवारण घाट ते ॥

हरिगुण अनुभव सेवा प्रीती । बाहिर की इंद्री सब जीती ॥
टरे न तब द्विज कांकर मारे । अति ताड़तहू चखन उघारे ॥
श्रीश प्रेम परबश मुनिज्ञानी । तनकी दशा सके नहिं जानी ॥
अचरज करि तब द्विज भय पायो । पुनि देखो यह चरित सुहायो ॥
स्वाभाविक जब तन सुधि आई । तबहुन क्रोध कियो मुनिराई ॥
भक्तान्तरबासी रङ्गेशा । तिनके तन अति भयो कलेशा ॥
बहो रुधिर मस्तकते तत्त्वण । सो लखि अति डरपे अर्चकगण ॥
अचरज भयो सबहि अति भारी । नगर नृपति पंडितन हँकारी ॥
रुधिर प्रत्यक्ष बहो अर्चातन । निर्णय तासु करौं बिद्वज्जन ॥
हेतु तासु जान्यो नहिं काहू । तब आपहि श्रीकमलानाहू ॥

दो० सारँग योगी सौं कहो स्वप्न माझ अस्पष्ट ।
तुम हमरे श्रीपाण कौ जान्यो बृथा निकृष्ट ॥

सो० भये लोग दुखदाय वे मोहिं प्रिय निज प्राण सम ।
ल्यावौ कंध चढ़ाय आतुर जाय समीप मम ॥

जागे मुनि सपनो सति मानो । अपनो भाग्य धन्य जियजानो ॥
तन शुध्यादिक नित्यक्रिया करि । चले जहां श्रीपाण हर्षभरि ॥
बहुत दूरि श्रीरंगपुरी ते । गये तहँ ह्वै मन मद ते रीते ॥
जहं कवेर तनया तट माहीं । मुनि श्रीपाण लीन हरि आहीं ॥
हरि गुणगान करत सानंदा । ताते पावत परमानंदा ॥

अश्रुपात जल भीजि रहो तन । जानत नहीं बाह्य व्यापारन ॥
इमि चित ब्रत्ति श्रीश माधि धारे । मुनि श्रीपाणहि जाय निहारे॥
कियो हरषि साष्टांग प्रणामा । पुनि सप्रेम कह बचन ललामा॥
रंगनाथ करि कृपा बुलायो । चलिये प्रभु मोहि लेन पठायो ॥
हाथ जोरि श्रीपाण कहो इमि । हम रङ्गेश निकट गवनैं किमि॥

दो० नीच जाति मातंग हम रंगभूमि मम पाद ।
परसत अनुचित होय अति उपजत हृदय बिषाद ॥
सो० होत नहीं उत्साह चलिबे को ताते हमहिं ।
कह सारँगमुनिनाह परम नम्रता अग्र करि ॥

रंगनाथ आज्ञा अनुसारा । दासकंध होइये असवारा ॥
दिव्य नियोग रंगपति जी को । हमहिं तुमहिं लांघव नहिं नीको॥
याबिधि हरि आयसु रजु बांधे । तब मुनि चढ़े योगिबर कांधे ॥
सारँगमुनि अति भक्ति दृढ़ाई । चलत भये मुनिं कंध चढ़ाई ॥
जैसे गरुड़ रंगपति काहीं । आगे पाछे द्विज बहु जाहीं ॥
वेद पाठ कोउ दिव्य प्रबंधा । करत रंग आयसु अनुबंधा ॥
अतिबाहकजिमिमुक्तहिसादर । तिमितिनकौसारँगकरिआदर॥
अति बैभव युत गये लिवाई । तिरु मंडप हरि आयसु पाई ॥
करवायो प्रदक्षिणा तिनकौ । पुनि ल्याये रंगी ढिग मुनिकौ ॥
रंगशायि करि परम अनुग्रह । दिखरायो निज मंगल बिग्रह ॥

दो० शिर किरीट कुण्डल श्रवण कर कंचन केयूर ।
मणि मुक्तन के हार उर लाजत लखि शशिसूर ॥
सो० छाती परम बिशाल जहँ लक्ष्मी को बास थल ।
कौस्तुभ मणि छबिजाल कंठ लसति अतिशय शुभग ।

तप्त हेम सम पीत पिछौरी । शुभ मेखला लेत चित चोरी ॥
यज्ञसूत्र मृणाल सम राजै । भुज उपधान परम छबि साजै ॥
करि कर सम भुज द्वितिय पसारे । चरण समेटे कछु उपसारे ॥
बदन इंदु शोभा अति भारी । राजत शेष पलंग सुखकारी ॥
सो छबि लखि नखशिख योगीशा । अनिमिष रहे श्रीपाण मुनीशा॥

अंग अंग निरखे सुखकंदा । धाय गहे दृढ़ पद अरबिंदा ॥
जिमि लघु शिशु सब अंग बिहाई । मातु पयोधर पीवत धाई ॥
नखसिख अनुभव अति सुख पायो । सो आनंद उरपुर न समायो ॥
दश गाथा ह्वै बाह्रिर गयेऊ । जग रक्षण कारण सो भयेऊ ॥
अमलनाथ प्रबंध को नामा । भाषा द्रबिड़ लोक बिश्रामा ॥

दो० तामे श्रीरंगेश की बहुधा अस्तुति गाय ।
कह्यो रमासख को कछुक बैभव प्रेम दृढ़ाय ॥
सो० शारँगयोगि प्रभृत्य आश्रत ह्वै तिनके चरण ।
बहु जन भे कृतकृत्य पुनि तिनको प्रबंध पढ़ि ॥

याबिधि तिहि प्रबंध के द्वारा । अस्तुति करि श्रीपाण उदारा ॥
कर जोरे ठाढ़े प्रभु आगे । अकथ प्रेमरस सौं चित पागे ॥
सबके देखत श्रीपति ताक्षन । किय स्वीकार तिनहिं समेततन ॥
अबलौं तहां सुनौ वेदांती । देखिये मुनिबाहन एकांती ॥
याबिधि सौं हरि भक्ताधीना । भये मुनि युत आनद रसलीना ॥
लक्ष्मी सम अपाय बिनु कीने । सो लखि भे नर अचरज भीने ॥
रंगनाथ महिमा अति भारी । बहुबिधि तहँ सराहि नर नारी ॥
कियो सबन प्रणाम सानंदा । निज निज ग्रह गवने सुखकंदा ॥
यह श्रीपाण चरित्र पुरानो । अति शुचि हम संक्षेप बखानो ॥
निचुलापुर माहात्मि मझारा । लखौ जो चहौ सहित बिस्तारा ॥

दो० यह श्रीपाण चरित्र वर सुनैं जो गावै लोग ।
तजि अघ ओघ सो पाय है श्रीपति पद संयोग ॥
सो० महितल बर्ष पचास रंगनाथ अनुभव निरत ।
मुनि बाहन किय बास बंदौं तिनके पदकमल ॥

इतिश्रीप्र० श्रीपाणचरित्रन्नाम सप्तनवत्तमोध्यायः ॥ ९७ ॥

सुनि श्रीपाण चरित्र सुहायो । अस्मद्यति गुरुपद शिर नायो ॥
मुनिबाहन की कथा सुनाई । मोहिं कृतकाज कियो गुरुराई ॥
अब करि कृपा सुनावौ नाथा । श्रीपरकाल बिशद गुणगाथा ॥
बोले श्रीरङ्गेशपुरोहित । पुलकित तन प्रेमाब्धि मग्न चित ॥

जै श्रीपति पद गुहा निवासी। हरि बिरोधि करि दमन बिलासी॥
जग रक्षणामय जिनके कामा। कलिजित सिंहहि करौं प्रणामा॥
हरि आयसु तें युग युग माहीं। मुनि कलिजित अवतरण कराहीं॥
गूढ़ बिमल बर बैष्णाव धर्मा। थापत करि सुठि सुंदर कर्मा॥
युगप्रति चारौ बरण मझारा। लीन्हो कलि प्रमथन अवतारा॥
कृतयुग में कर्दम मुनिराई। जिनकी कथा पुराणन गाई॥

दो० भये उपरिचर बसु बहुरि क्षत्री त्रेता माहि।
द्वापर शंखपाल पुनि बैश्य बंश मणि आहिं॥
सो० सोइ उपजे कलिकाल कलि प्रमथन परकाल मुनि।
देखौ चरित रसाल बर महात्मि अश्लिष्टपुर॥

अब तिनको अवतार चरितबर। सुनौ तात चितदै कल्मषहर॥
पावन चोलदेश श्रुति गायो। आबिनाड़ि तिहि खंड सुहायो॥
तिहिमधि नागपुरी रमणीया। ग्यारह हरिथल तहँ कमनीया॥
तहां शंखमुख नाम पुण्यथल। पश्चिम तासु दिव्यथल निर्मल॥
बिल्वारण्य नाम बर जाको। अन्तर युगल क्रोश है ताको॥
पांच मूर्त्ति नरहरि भगवाना। तिहि परि रंभपुरी शुभनामा॥
बहु अश्लोक भूमितल माहीं। तासु बिभवपर सुनियत आहीं॥
तासु निकट कमलापुरि अहई। श्रीकटाक्ष सिंचित नित रहई॥
उभय बीच अन्यूननगरबर। कछु न्यूनता कबहुँ तहँ के नर॥
लहत नहीं ताते यह नामा। भयो लोक प्रसिद्ध शुभधामा॥

दो० आविनाड़दयार करि तिहि पुर भो नृप कोय।
चौथे बरण स्वबैरिजित युक्त महायश सोय॥
सो० पारबतीपतिदास देव द्विज पूजक परम।
तिन ग्रह कार्त्तिक मास प्रकटे श्रीपरकाल मुनि॥

श्रीपति शार्ङ्गधनुष के अंशा। जन्मत भये भक्त अवतंशा॥
कृतिका नखत सुपूरणमासी। नल नामक सम्बत सुखरासी॥
द्वयशत सप्त बर्ष कलिबीतो। भयो समय अशुभन ते रीतो॥
चतुस्कवीन्द्र तेज गुणधामा। प्रकटत भये चरित अभिरामा॥

प्रमुदित परम भये मन राजा । जोरत भये द्विज बन्धु समाजा॥
नाम अविनाड़नभो तिनको । रबि सम तेज देखिये जिनको ॥
तात मात मन आनददाई । बाल सूर्य सम वृद्धिहि पाई ॥
शास्त्र कुशल भये यौबन पाई । पितु सेवन प्रबीण अधिकाई ॥
सबबिधि देखि पुत्र सब योगा । लखि आचरण सुखी सब लोगा॥
सौंप्यो राजभार नृपराई । देश कोश परिजन ठकुराई ॥

दो० प्रजापाल लागे करन धर्मनीति युत सोइ ।
सुख सौं बीतत दिवश निशि लोक भोग मन मोइ ।
सो० नृत्य गान रत नित्य जानत आत्म बिचार नहिं ।
परम स्वतंत्र प्रवृत्य जीति शत्रु तहँ नीलनृप ॥

इतिश्रीप्र० परकालावतारकथनन्नाम अष्टनवत्तमोध्यायः ९८ ॥

नागपुरी के बायब कोना । कोशमात्र हृद श्वेत सलोना ॥
कमल बिपुल फूले बहु रंगा । राजत हरि तहँ नित श्रीसंगा ॥
बिस्त्रितपुनि गंभीर स्वच्छ सर । जलबिहार करती नित अप्सर ॥
इक दिन तहँ अप्सर कोइ आई । फूल लेन हित गई अतुराई ॥
गईं चलीं सब संग सखीगन । तब तिन धरो सुभग नरतिय तन॥
बिहरन लगि अकेलि सरतीरा । तहँ आये कोउ बैष्णव बीरा ॥
देखि ताहि बात्सल्य आनि उर । पूछत भये बृत्तान्त तासु फुर ॥
तिन कह मैं पितु मातु बिहीना । संग सखिन बिछुरन ते दीना ॥
तात हमैं लैचलौ जो गेहा । तौ हम तुम सँग चलैं सनेहा ॥
पुत्रिभाव ताकौं ते मानी । लै आये निज ग्रह सन्मानी ॥

दो० ल्याय नागपुर सदन निज बैद्य सो निज तिय हाथ ।
सौंपत भे कन्या रुचिर बरनि तासु गुण गाथ ॥
सो० पुत्र रहो कोउ नाहिं ताते वह कन्या अमिल ।
पाय मोद सर माहि दम्पति भये निमग्न मन ॥

कुमुद हाथ पाई सर तीरा । कुमुदबल्लि किय नाम सधीरा ॥
दिनप्रति बढ़ति भई सो बाला । यौबन प्राप्त भई लघु काला ॥
देखि ताहि रंभा सम जानी । यह चिंता निज उर तव आनी ॥

यह अज्ञात गोत्र कुल कन्या । गुणनिधि काहि समर्पहिं धन्या ॥
बैद्यराज यह करत विचारा । तब लगि नील नृपति के चारा ॥
अनुपम कन्या को गुण रूपा । बरनो जहां नील नर भूपा ॥
सो सुनिके परकाल बिकल चित । शीघ्रहि आये नागपुरीजित ॥
बैद्यराज ग्रह गये समोदा । सन्माने तिन सहित बिनोदा ॥
कीनो बार्त्तालाप चतुरकबि । भये बिस्मित अति लखि कन्या छबि ॥
तुम अग्रज यह सुता अनूपा । पाई कहं सुरांगना रूपा ॥

दो० किमो निवेदन सकल तिन सुता प्राप्ति वृत्तांत ।
बरौ काहि यह बाल मै है चित चिन्ताक्रांत ॥

सो० अति प्रमुदित परकाल भये सुनत यह बचन बर ।
बसनाभरण रसाल देत भये तिनकौ बिपुल ॥

पूजन करि तिनको परकाला । याचत भये कन्या त्यहिकाला ॥
बैद्यराज सुनि आनद मानी । सुता दान इच्छा मन आनी ॥
जननि जनक उद्योग निहारी । कुमुदबल्लि तहं गिरा उचारी ॥
सुनौ पिता जननी प्रण मेरो । तापादिक जो चिह्न हरि केरो ॥
संसकार पंचक युत होहीं । तब परकाल सकैं बरि मोहीं ॥
सुनि परकाल परम शुभ माना । करि प्रणाम कीन्हो प्रस्थाना ॥
श्रीनिवासपुर जाय तुरंता । किय हरिथलहि प्रणाम अनंता ॥
श्रीबैष्णव हरिपूर्ण महाना । हरि दीक्षा तिन हाथ सुजाना ॥
सादर सबिधि कराय सहर्षा । ऊर्द्धपुण्ड्र किय करि उत्कर्षा ॥
कुमुदबल्लि ढिग गये बहोरी । बरन हेत करि प्रीति अथोरी ॥

दो० दिव्य चिह्न युत देखि तब श्रीबैष्णव परकाल ।
बोली साध्वी तिन निकट बाणी परम रसाल ॥

सो० दिन दिन प्रति इक बर्ष आठ अधिक इक सहस नित ।
श्रीबैष्णवन सहर्ष षटरस भोजन दीजिये ॥

ताम्बूल दक्षिणा समेता । पूजन करौ सुबुद्धि निकेता ॥
पादतीर्थ तिनको नित लेहू । मुक्त शेष प्रसाद करि नेहू ॥
होयं भार्या तब हम तुम्हरी । दुर्लभ प्राप्ति आन बिधि हमरी ॥

सुनि यह बचन नीलसोउ माना । ऐसेहि करिहैं प्रण दृढ़ ठाना॥
बैद्यराज तब जल लै हाथा । सङ्कल्पी कन्या शुभ गाथा ॥
कियबिवाहपरकालवेदबिधि।भयेअतिमुदितपायतियगुणनिधि॥
सबते बिशद बिष्णु आराधन । ताते परम तदीयाराधन ॥
यह शुभ अर्थ आनि मन माहीं । अरु निज प्रण परिपालन काहीं॥
एकसहस्र आठबर बैष्णव । पूजन लगे प्रीति करि नित नव ॥
षटरस भोजन बसनाभूषण । दै पूजत बांछित बैष्णवगण ॥

दो० याबिधि सौं कछुकाल मैं चोलराज धन झारि ।
करि दीनो ब्यय सकल तिन रहे जासु अधिकारि ॥
सो० यह कलिरिपु बृत्तांत चारन बरनो नृप निकट ।
सुनि नृप कोपाक्रांत ह्वै पठये तहँ दूत निज ॥

मागो सब निज धन करि लेखा । दूतन पूजो नील बिशेखा ॥
कोमल बचन कहे तिन पाहीं । सांझ भोर मध्याह्न सदाहीं ॥
बितवत काल धूर्तता ठानी । करत न तदियाराधन हानी ॥
याबिधि जब बीतो बहु काला । तब दूतन किय कोप कराला ॥
कलिजित कौ घेरो करि क्रोधा । नील तिनहि ललकारि बिरोधा ॥
तिरस्कार करि दिये भगाई । तिन सब कह चोलेशहि जाई ॥
कुपित नृपति तब दिय अनुशासन । पठई सेन सहसषट त्रासन ॥
नीलहि पकरितुरंतहि ल्यावहु । जाबिधि सौं उनकौ जहँ पावहु॥
कमलानगर नील तिहि काला । तदियाराधन करत बिशाला ॥
आय सेन तहँ चहुंदिशि घेरे । धरौ धरौ मारौ कहि टेरे ॥

दो० महाभागवत श्रीचरण तीर्थ प्रसाद प्रभाव ।
ज्ञान भक्ति आदिक बढ़े उनके सहज स्वभाव ॥
सो० तेज प्रताप अपार बाढ़ी अतुलित शूरता ।
कियो युद्ध बिकरार अतिमानुष करनी करी ॥

दई भजाय मारि सब सेना । शार्ङ्ग अंश कलिजित बल ऐना ॥
सात बार सेना इमि राजा । पठई नील गहन के काजा ॥
एकहु बार नील नहिं हारे । कछु मारे कछु जाय पुकारे ॥

सेनापति पठयो तब राजा । संग चतुरङ्गिनि सेन समाजा ॥
श्रीधर सेनापति सुनि आये । तुरंगारूढ़ कलिघ्न सुहाये ॥
चले गरजि सन्मुख तिनकेरे । जिमि सायक रघुनायक प्रेरे ॥
चक्र सुदर्शन अरु हनुमाना । ताही भांति चले बलवाना ॥
कीनो तुमुलयुद्ध रण जाई । मारि खड्ग सेना बिचलाई ॥
पहुंचे सेनापति ढिग जाई । तेज पुंज अंतक की नाई ॥
सह न तेज सेनेश डरानो । गज तजि तुरंगारूढ़ परानो ॥

दो० प्राणमात्र लै भाजि गै श्रीधर सेनानाथ ।
जीति शत्रु राजत भये नील यथा सुरनाथ ॥
सो० वर्षे फूल अकाश दीनी देवन दुन्दुभी ।
जय रव भयो प्रकाश महिदेवन श्रुति गान किय ॥

आये जीति सदन परकाला । लागे सब तन घाय बिशाला ॥
परसत कुमुदबल्लि करकंजा । भये निवृत्त सकल व्रण पुंजा ॥
सुख सौं करत तदीयाराधन । कुमुदबल्लि प्रसाद के साधन ॥
चोलराज तब आपु ससेना । आये जहां नील बल ऐना ॥
मंत्रिन द्वार संधि करि तिनसौं । धर्मपास गह सरल बचन सौं ॥
तुम्हरे उचित न तजौ अधर्मा । देउ हमारो धन गुनि धर्मा ॥
कलिजित मानि लई नृप बानी । देन कहो धन तब बिज्ञानी ॥
मन यह गुनत बहुत धन इनको । हरो तोष कीजै किमि तिनको॥
यद्यपि कियो तदीयाराधन । चाहिये दियो देई किहि साधन ॥
इमि चिंता मन करि निशि सोये । खेदखिन्न अति शोच समोये॥

दो० बरदराज हरि स्वप्न में दिये दरश तब आय ।
अभय हस्त मस्तक धरो बोले मृदु मुसुकाय ॥
सो० कांची आवौ तात हम तुम कौ धन देयँ गे ।
त्याग करौ दुख भ्रात यह कहि अन्तरधान भये ॥

जागि परे अचरज मन आयो । स्वप्न बिचारत अति सुख पायो॥
नृप मंत्रिन सौं कहत भये तब । कांची चलौ हमारे संग सब ॥
वहां धरो हमरो धन आही । दीहैं खोदि तुमहिं हम ताही ॥

आयसु मांगि मंत्रिगण नृपसौं । कांचीपुरी गये लै तिनकौं ॥
बेगवती मधि स्वप्न प्रकारा । ढूढ़ो धन परकाल उदारा ॥
लहो नहीं तब पुनि भौ शोचा । बरदराज पुनि सोवत मोचा ॥
दिय बताय अस्पष्ट ठिकाना । उठि परकाल हर्ष अति माना ॥
सहसहि जाय बेगवति तीरा । खोदत धन पायो मतिधीरा ॥
नृप को द्रव्य सबहि दैदीन्हो । बचो बहुत सो निज संग लीन्हो॥
ल्याये निज ग्रह कौ सानन्दा । तासौं पूजे बैष्णवबृन्दा ॥

दो० चोलराज बिस्मित भये पुनि डरपे मन माहि ।
धन हित हम बहु दुख दियो अप्राकृत इन काहि ॥
सो० चरणन परि चोलेश क्षमा करायो दोष निज ।
प्रायश्चित्त बिशेष ताहित पूजे देव द्विज ॥

इतिश्रीप्र० परकालराजयुद्धन्नाम एकोनशततमोध्यायः ॥ ९९ ॥

तापाछे परकाल महायश । अव्याहत संकल्प दिसादश ॥
चोलेश्वर पूजित भलिभांती । बैष्णाव अर्चन रत दिन राती ॥
सुखसौं निवसत भये कमलापुर । रहो न धन तब शोच कियो उर॥
तब मनमें बिचार दृढ़ ठानो । चोरी करन यत्न उर आनो ॥
पांच शिष्य अरु इक तिय भाई । छः अनुचर संग लै बन जाई ॥
रोकि पंथ लूटत नित राही । बैष्णाव सेवा सरि अवगाही ॥
जाके ऊर्द्धपुण्ड्र बरभाला । शंख चक्र भुज अंक रसाला ॥
लूटत भूलि ताहि ते नाहीं । इतरन को धन हरि लैजाहीं ॥
तासौं करत तदीयाराधन । शिष्यहु प्रथक करत सोई साधन ॥
चोरि छोरि सबको धन लेहीं । तदियार्चन हित नीलहि देहीं ॥

दो० ग्राम देश बन नगर सब थल कलिजित हरिभक्त ।
चौरबृत्य धन हरत हरिजन सेवा अनुरक्त ॥
सो० जोरि जोरि या भांति कमलापुर पठवत धनहि ।
कुमुदबल्लि चित शांति बैष्णव सेवा करि करत ॥

ताहि काज हित कलिआराती । काहू ग्राम बसे इक राती ॥
बहो पवन बर्षा भई भारी । दश दिश छाय गई अंधियारी ॥

कोइ न तहां करत संचारा। नील लखो इक सुबरण थारा॥
तिय इक निज मंदिर के द्वारे। शोधति भुक्तपात्र अंधियारे॥
सो परकाल छीड़ि लै भागे। तदियाराधन के रसपागे॥
तिय बैष्णवि बैष्णव व्यवहारा। अस्मद्गुरुभ्योनमः उचारा॥
कलिजित तुरत तजी सो थारी। लई उठाय बहुरि सो नारी॥
निज पति सौं वृत्तांत सुनायो। सो परकालहि गुनि पछितायो॥
मूढ़ तैं कृत कियो अनर्था। यह पदार्थ करि दियो निरर्था॥
वे तौ हे परकाल महाना। नित बैष्णव सेवा व्रतवाना॥

दो० जो तू चुपरहती तनक सफल होत धन एह।
करि स्वतंत्रता करि दियो निरफल निस्संदेह॥
सो० याबिधि सौं परकाल जग लोगन धन हरि सदा।
तदियार्चन प्रतिपाल करत रहत दुर्बल्य सौं॥

तब इकबार बिल्व बन माहीं। ठाढ़े मारग लूटन काहीं॥
दिन के तीनि पहर गये बीती। मारग रही मनुज ते रीती॥
तब कलिजित व्याकुल चितभारी। ह्वै बोले इक शिष्य हंकारी॥
वृक्षाग्रारोहन जिहि नामा। बैष्णव क्षुधित होयंगे धामा॥
आयो नहिं कोइ पंथ बटोही। लहते धन जो लूटिके ओही॥
तुम चढ़ि तरु शाखा सब घाईं। देखौ कोउ आवत की नाहीं॥
शिष्य सो ताहीबिधिचढ़ि शाखा। चितयो चहुं दिश करि अभिलाषा॥
तब श्रीमद्रङ्गेश कृपाला। भक्तानुग्रह करि प्रतिपाला॥
याबिधि निज मन कियो बिचारा। इनहि बैष्णवार्चन आधारा॥
करत निरंतर करि बिश्वासा। मानि परम फल तजि सब आसा॥

दो० ताते ये हम सौं अवशि रक्षणीय भरिपूरि।
यह बिचारि आतुर तहाँ आये लै धन भूरि॥
सो० ऐसो बेष बनाय जाबिधि पावैं सहज ते।
नर तन शुभ निर्माय सादर कलिजित के निकट॥

शिष्य सो तरु चढ़ि चहुंदिसहेरी। बोले निज गुरुसौं हंसिटेरी॥
अहो सत्यसंकल्प तुम्हारा। होउ तयार करौ मति बारा॥

भट युत लीजै आयुध हाथा । आवत द्विज बिबाहि तिय साथा ॥
बहु सम्पति संग सिविका घोड़ा । पश्चिमते आवत तुम ओरा ॥
भये प्रसन्न सजग सुनि नीला । तबलौं रंगनाथ करि लीला ॥
आये ढिग धाये परकाला । भटन समेत घेरि तत्काला ॥
लीने छीड़ि बसन भूषण सब । तिय पग एक छला रहिगो जब ॥
बहुत यत्न किय काढ़ि न पायो । तबहिं तासु हित दांत लगायो ॥
बोले बिप्ररूप रङ्गेशा । मम धन तुम हरि लियो अशेषा ॥
अंगुलीय इक पग तजि दीने । कहु वाड़े हानि तासु बिनु लीने ॥

दो० कह परकाल वृथा तजैं क्यों याकौ द्विजनाह ।
बैष्णव भोजन पत्र हित एक दिवस निर्वाह ॥
सो० ह्वैहै यासौं आज बैष्णव सेवा हानि करि ।
इतने सौ कह काज विप्र तुम्हारो होयगो ॥

यह कहि यत्न कियो अति भारी । ताकौं तद्यपि न सके उतारी ॥
तब रङ्गेश कहो मुसकाई । तद्दियाराधन अति प्रिय आही ॥
तुमहिं बत्स ताते तव नामा । कलिजित करि प्रकटिहै तिहुँधामा ॥
पुनि वह धन परबत आकारा । ताहि उठावन कौ बरियारा ॥
भये न समर्थ नील के अनुचर । तब कलिजित करि क्रोध भयङ्कर ॥
अरुण नयन कृपाण कर लीन्हो । कह द्विज मंत्र बाद तुम कीन्हो ॥
उचित नहीं तुमकौ सो आहो । उपसंहार करौ द्रुत ताही ॥
तब रङ्गेश कहौ तिन पाहीं । मंत्र सो ह्वै बिनीत हम पाहीं ॥
सुनौ सुनत यह नील महाना । हाथ जोरि सन्मुख किय काना ॥
मूलमन्त्र तब श्रीरङ्गेशा । परकालहि कीन्हो उपदेशा ॥

दो० जिहि महात्म्य अतुलित महा अन्तरगत जामाहिं ।
वेद चहूँ औरौ जो कछु बस्तु गिरामय आहिं ॥
सो० निगम अंत को सार तारक संसृत सिंधु को ।
गति मुमुक्षु निरधार उभय लोक ऐश्वर्यप्रद ॥

केवल पद हरि प्रापति ताईं । सबको साधन संशय नाहीं ॥
परम मंत्र मंत्रन के माहीं । गुह्य परम पुनि गुह्यन काहीं ॥

उत्तम पुण्य पवित्रन के महँ। उपदेशो प्रभाव युत हरि तहँ ॥
अरु तासौं प्रतिपादित जोई। दिव्य स्वरूप आपनो सोई ॥
श्रीयुत दिखरायो तिनकाहीं। फाबत गरुड़ पीठि के माहीं ॥
दामिनियुत कंचनगिरि जैसे। सजलजलद प्रकटे हरि तैसे ॥
तादृश लखि प्रभु मंगलरूपा। परम दिव्य गुण बिभव स्वरूपा॥
कमला पुरस्कार सौं जानी। आनँदाम्बुनिधि मग्न सुज्ञानी ॥
ब्रह्मानंद लहो मतिधीरा। उमगो प्रेम प्रवाह शरीरा ॥
सो प्रवाह तनमैं न समाना। गिरा श्रोत्र मारग प्रकटाना ॥

दो० अर्थरूप जल सो बिशद जग जन कृषि समुदाय।
सीच्यो शठजित पूर्व जिमि चारि प्रबंध बनाय ॥
सो० इनहूँ ताहि प्रकार षट प्रबंध निर्माण करि।
काव्य मधुर बिस्तार शीघ्र बिचित्र करत भये ॥

ताते भयो चतुस्कबि नामा। वेद षड़ङ्ग रीति अभिरामा ॥
बरने षट प्रबंधबर तासू। तेरह सहस गाथ शुचि जासू ॥
इकसठि अधिक तहां सब करिके। तोषे रंगनाथ मुद भरिके ॥
कृपापूर्ण रङ्गेश कहो तब। मैं प्रसन्न सब भांति भयो अब ॥
यह अस्तोत्र अनूपम किय तुम। अरु कैङ्कर्यहु भांतिभली मम ॥
मांगि लेउ हमसौं बरदाना। दीहैं सब तव इष्ट सुजाना ॥
अंजलिकरिकहकलिजितयाबिधि।प्रभुदरसनहिकृतार्थकृपानिधि
अब कछु नहिं अभीष्ट उर शेषा। देउ तद्यपि बर एक रमेशा ॥
यह परिरंभ पुरी के माहीं। भक्तन सन्मुख रहौ सदाहीं ॥
अंगिकार करि सो रङ्गेशा। देखि परत अबलौं सर्वेशा ॥

दो० जादिन ते परकाल इमि हरि धन हरो सुजान।
दिव्यथलन हरि के सदा उत्सव होत महान ॥
सो० होत अश्व असवार जादिन अर्चारूप हरि।
सर्वसुदान उदार कलि प्रमथन कौं देत करि ॥

यह उत्सव बिचित्र जग माहीं। जे नर सेवन ताहि कराहीं ॥
तिनपर रंगनाथ भगवाना। रीझत शीघ्रहि कृपानिधाना ॥

तापाछे रङ्गेश उदारा । नीलहि कहो बचन सुखसारा ॥
जीर्णोद्धारण सेवा मेरी । आय करौ श्रीरंग सबेरी ॥
गोपुर अरु प्राकार बिशाला । धान्यस्थान रसोई शाला ॥
दिव्याज्ञा रङ्गेश्वरजी की । राखी शिर भई भावतिजी की ॥
भये अदृश्य तब कृपानिधाना । शिष्यन युत परकाल महाना ॥
आये कमलानगर सुखारी । कियो बैष्णावार्चन अति भारी ॥
कुमुदबल्लि पुनि निकट बुलाई । कह बिचित्र वृत्तान्त सुनाई ॥
तिहि अनुमति लहि भक्ति निकेता । श्रीरंगहि गये सुजन समेता ॥

दो० आदि पुरुष रघुबंश प्रभु शेष शयन हरि देखि ।
प्रेम मग्न भये बन्दि पद परमानँद उर लेखि ॥
सो० भक्तोत्तम कलिजेत लिय प्रसाद तीरथ तहाँ ।
श्रद्धा प्रीति समेत चितन किय कैंकर्य बिधि ॥

इतिश्रीप्र० परकालस्य रङ्गेशप्रत्यक्षन्नाम
शततमोध्यायः ॥ १०० ॥

चतुस्कवीन्द्र रंगपति देखी । भये अति मुदित भक्ति उर लेखी ॥
सब बिधि सेवा बिबिधि प्रकारा । काबिधि करैं सो करत बिचारा॥
सब शिष्यन कौं लियो बुलाई । कहत भये तिनसौं हरषाई ॥
मंत्री सुनियै बात हमारी । रंगनाथ सेवा अति भारी ॥
हम कीनो चाहत तिहि काजा । चाहिये बहुबिधि द्रव्य समाजा॥
सावधान ह्वै तासु उपाई । कीजिये सम्पादन धन भाई ॥
बोलि उठे तब सब हरषाई । हमसौं सुनौ यत्न सुखदाई ॥
सुबरण प्रतिमा बौद्धन केरी । अहै नागपत्तन धन ढेरी ॥
जो मिलिजाय तुमहिं प्रभु सोई । हरि सेवा हित हानि न कोई ॥
नाथ जो तुम चलिहौ वाठाईं । मिलिहै प्रतिमा संशय नाहीं ॥

दो० मंत्रिन बचन श्रवण करि चतुस्कवींद्र सुजान ।
प्रतिमा हरिबे कौं तुरत करत भये प्रस्थान ॥
सो० बन्दन कीने जाय सुन्दरराज रमेश तहँ ।
तिनकी आयसु पाय बुद्धन के मंदिर गये ॥

चिक्कन ऊँचे सुदृढ़ कराला । चहुं दिस गोपुर बने बिशाला ॥
द्वार कहूं नहिं परत लखाई । मूर्त्ति हरन की कहा चलाई ॥
प्रतिमा हरन तुरा अति भारी । नहिं उपाय कछु परत बिचारी ॥
तहंके लोगन पूछत जाना । तिहि निर्माण शिल्पि अस्थाना ॥
गये बेपाणदीप अनुगन युत । कपट बणिकबर वेष धारि द्रुत ॥
बसि कछु दिन तहं करि मतिभोरी । शिल्पी संग मित्रता जोरी ॥
कीन्ही प्रीति दिनहु दिन गाढ़ी । तहं के जननहुं सौं रति बाढ़ी ॥
करत शिल्पि संग बार्त्तालापा । देशकाल अनुरूप अलापा ॥
बातन बातन मैं इकबारा । बौद्धालय प्रसग अनुसारा ॥
सुनी नागपत्तन महं भाई । वामठ की हम बहुत बड़ाई ॥

दो० ऊंचो पढ़ो बिचित्र अति मनो मनुज कृत नाहि ।
किये अमानुषं कर्म प्रति शिल्पी कोउ तिहि ठाहिं ॥
सो० को बरनै चतुराय तनु सदृश नहि दूसरा ।
तद्यपि चोर कोउ जाय कंचन प्रतिमा हरि लई ॥

यह कहि आप लग पछिताना । शिल्पी चौंकि चक्रत अकुलाना ॥
कहत कहा यह सखा कहौ पुनि । बड़ अचरज प्रतिमा चोरी गुनि ॥
मानि सो शिल्पि दुखित भो भारी । ऊर्द्धस्वास लै गिरा उचारी ॥
है मर्मज्ञ चोर कोउ भाई । जिन यह अचरज कियो महाई ॥
कदलीवृक्ष बहुत जिहि ठौरा । शिखर उखारि घुसो तहं चोरा ॥
कलिजित त्यहि अपने वश आनी । पूछन लगे मधुर मृदुबानी ॥
प्रतिमा हरन सत्य गुनि सोई । मठ निर्माण युक्ति रहि जोई ॥
कही कि तहां शिखर के माहीं । दक्षिण बाम चक्रयुग आहीं ॥
कदली खंभन सौं तिहि ठौरा । रोक्यो चक्रभ्रमण बरजोरा ॥
बहुत यत्न सौं शिखर कराला । है उठाइबे योग्य बिशाला ॥

दो० जानि लियो परकाल इमि सकल द्वार बृत्तांत ।
सब चिंता तजि के भय परम मुदित मन शांत ॥
सो० मानत भे तिहि काल प्रतिमा अपने हाथ में ।
बोले बचन रसाल शिल्पी सौं चातुर्य कार ॥

तात तुमहिं कह दूषण यामैं । बौद्ध कुभाग्य हरन प्रतिमामैं ॥
जगमैं तुम सम कौन बिचक्षण । रची हुती तुम युक्ति बिलक्षण ॥
ऐसे बहुबिधि ताहि प्रशंसी । त्यहि दिन तहां वसे कलिध्वंसी ॥
पुनि त्यहि पूछि धाम निज आये । अनुगन सहित हृदय सुखछाये ॥
पुनि बेपाणदीप मग जाई । चले नागपत्तन हरषाई ॥
तहां बणिक कोउ क्रमुक लदाई । चलो नागपुर नाव भराई ॥
तिनसौं जोरि सनेह पकरिकर । चढ़े जहाज माझ बैष्णवबर ॥
सुंदर बचनन करि चतुराई । कीने स्वबश बणिक समुदाई ॥
पुनि मनमैं बिचार यह कीनो । भयो बणिक मम सखा नवीनो ॥
है धनाढ्य हरि सेवा लायक । हमहिं सखा रत्नखा शुभदायक ॥

दो० रंगनाथ कैंकर्य जो याके धन सौ होय ।
बेगि कृतारथ होय यह नहि तहँ संशय कोय ॥
सो० यह बिचार मन लाय क्रमुक एक द्वय भाग करि ।
बणिकहि सो दिखराय दीनी डारि जहाज मैं ॥

साहूकारहि कहो बुझाई । हम जो अर्ध सुपारी भाई ॥
दई मिलाय नाव के माहीं । तट पहुंचत लीहैं तुम पाहीं ॥
सो तुम हमहिं पत्र लिखिदहू । सत्य बात गुनि तजि संदेहू ॥
बणिक कहो हँसि पहुंचत तीरा । जो चाहो लीजौ मतिधीरा ॥
कलिजित मधुरबचन बहुभाषे । पत्र लिखावन हित अभिलाषे ॥
मंद बिचार बणिक तब भयेऊ । ताबिधि पत्र तिनहि लिखिदयेऊ ॥
पंचसाक्षि पूर्वक सो पाती । सबके लखत लई कलिघाती ॥
पत्तन ढिग नौका जब आई । तबहिं घेरि बैष्णव सुखदाई ॥
जीति बणिक व्यवहार मझारी । लीना आधी नाव सुपारी ॥
बेचि सो धन रंगी सेवाहित । निजढिग करि सुख सौं भये अस्थित ॥

दो० ताही दिन अधरात कौ अंत रंग नर युक्त ।
चोरी साधन ले भये प्रतिमा हरन उद्युक्त ॥
सो० बौद्धालय ढिग जाय चढ़े तासु ऊपर तुरत ।
लीनो शिखर उठाय शिल्पी भाषित युक्ति सौं ॥

लीनो जब मठ शिखर उखारी । कंचनप्रतिमा तहां निहारी ॥
निकट अखंडदीप तिहि बरई । प्रतिमा तहं याबिधि लखि परई ॥
मानौ द्वितिय मंत्र की मूरति । कलिजित हृदय मोद भई पूरति॥
पढ़ी एक गाथा कलिहारी । मन निज प्रतिमा हरन बिचारी ॥
हाधिक् बौद्ध कुमति दुखदाई । सुबरण की प्रतिमा बनवाई ॥
याके काज शिला मृतिकादिक । रही बहुत लकड़ी लोहादिक ॥
जब यह गाथ पढ़ी परकाला । कांपि उठी प्रतिमा त्यहिकाला ॥
भीत देखि प्रतिमा कलिनाशी । नारि भ्रात सौं गिरा प्रकाशी ॥
तिनहूं को परकालहि नामा । तात शीघ्र प्रविशौ यह धामा ॥
प्रतिमा हरण करौ तत्काला । तुरतहि घुसे तहां परकाला ॥

दो० गये निकट जब मूर्त्ति के पकरि सके नहिं ताय ।
सर्वशक्ति निर्मित रही ताते कछु न बसाय ॥
सो० भजि चहुँ कोनिन जाति जहाँ ग्रहण हित जातते ।
युक्ति न कछू बसाति दुखी भये परकाल तब ॥

भगिनी पति सौं कहो जनाई । प्रतिमा हमहिं न देति गहाई ॥
भागति फिरति वेग युत दुष्टा । कोनिन कोनिन शक्तिन जुष्टा ॥
कह अब करैं बतावौ स्वामी । कलिजित तब सिखयो अनुगामी॥
प्रतिमा ऊपर मूत्र करीजै । ताकी शक्ति भंग करि दीजै ॥
तैसेहि कियो तुरत परकाला । प्रतिमा गहि लीनी त्यहिकाला ॥
कलिजित कौं सो दई गहाई । भयो प्रमोद जो कहि न सिराई ॥
ताते गई मुटाय अति देहा । फसिगये बौद्ध देव के गेहा ॥
बहुत यत्न शिरमात्र निकारा । कढ़ो न अपर संकुचित द्वारा ॥
कहो नील सौं तब पुनि याबिधि । पूछ्यो प्रभु मनोर्थ करुणानिधि॥
यहां न बिलम करौ अवलेशा । रजनी रही प्रहर अवशेषा ॥

दो० होय न जाबिधि व्यघ्न प्रभु रंगनाथ कैंकर्य ।
सोई करिबो है उचित सर्वकाल बुधवर्य ॥
सो० काटि लेव मम सीस सौं लै अरु प्रतिमा तुरत ।
जाउ यहां ते ईस तुमकौ गुरुपद की सपत ॥

याबिधि सुनि श्याला की बानी । उनको कढ़ब असंभव जानी ॥
काहूबिधि उबार नहिं चीन्हो । तब उन कह्यो तथा बिधि कीन्हो ॥
लै प्रतिमा परकाल सीस युत । बौद्धालय ते गवन कियो द्रुत ॥
रात्रिहि कृष्णापुटीपुर आई । तहं इक क्षेत्र पंक मधि जाई ॥
प्रतिमा जानुमात्र गहिंराई । गाड़िदई अति लाघवताई ॥
तिंत्रिणिवृक्ष एक तहँ रहेऊ । तासौं टेरि बचन इमि कहेऊ ॥
निद्रा तजि यह मूरति केरी । रक्षाकरौ बिटप कछु देरी ॥
यह कहिके त्यहि क्षेत्र समीपा । निवसे हरि सेवा मठ दीपा ॥
परिकर सहित त्यागि श्रम सोये । जगि तमारि प्राचीदिसि जोये ॥
कृषीकार तिहि क्षेत्र मझारी । जहां रही प्रतिमा सुखकारी ॥

दो० अंकुर त्रण के लेन हित आयो तब परकाल ।
ताहि रोकि बल सौं तुरत कीनो कलह कराल ॥
सो० कह्यो कि हमरो खेत तेरो यामैं है कहा ।
यहाँ घास क्यों लेत गये झगरत दोउ ग्राम कौ ॥

झगरत इमि दोउ गये पुर अंतर । जहां रहे व्यवहार निपुण नर ॥
तिनसौं जाय कह्यो निज झगरो । उन मानो अचरज सुनि सगरो ॥
कही कि तीनि लोक के माहीं । तीनि यत्न व्यवहारिक आहीं ॥
एक भुक्ति साक्षी पुनि लेखा । तामें त्रय तुमरे नहिं लेशा ॥
होय लेख दिखरावौ ताही । बोले हरि रतिसर अवगाही ॥
दामोदर हरि कृपानिकेता । भोग करत अबहूँ यह खेता ॥
सो हैं जनक हमारे जातें । है यह क्षेत्र हमारो तातें ॥
याप्रमानवहक्षेत्र स्वबशकरि । भयेमुदितमनमहं कलियुगअरि ॥
हरि कैङ्कर्य व्यग्र के काजा । पुरबासिन दिये दुःख समाजा ॥
ताते इनकी जीति कदाचित । होय नहीं याबिधि किय शापित ॥

दो० दामोदर कैंकर्य हित बहुरौं कियो बिचार ।
तबते यह पुरबासि नर जय न लहत व्यवहार ॥
सो० श्रवण तीर्थ पुनि जाय करि अस्नान तिलक कियो ।
बकुल बिटप तर आय सुमन तोरि बोलत भये ॥

तुम फूलन नित धारण करऊ । फल काहू ऋतु मैं नहिं फरऊ॥
वह तरुवर तबते अवताईं । उपजावत है फूल सदाईं ॥
मनौ चतुस्कबि कीरति माला । सूचन करत रहत सबकाला ॥
फूल तोरि परकाल महाना । पूजे दामोदर भगवाना ॥
भये कृतकृत्य सेय थलनायक । मठते कढ़ि हरिभक्ति बिधायक॥
लगी प्यास लोगन सौं पानी । मांगो तिन न दियो डर मानी ॥
ये सब सौं बिनु काज बिवादा । करत न त्यों कछु करैं बिषादा ॥
तब तिन सौं ह्वै कुपित दुखितचित।याबिधि शापदेत भये कलिजित॥
होयँ कूप निर्जल यह ग्रामा । तैसेहिं तुरत भयो तिहि ठामा ॥
भये कूप सब नीर बिहीना । अबलौं काढ़ेहु कढ़त न चीना ॥

दो० संध्या भई तब मूर्त्ति लै चले जहां श्रीरंग ।
दामोदर हरिहू चले पाछे तिनके संग ॥
सो० तिन्है देखि परकाल याबिधि बोले बचन बर ।
को तुम क्यो यह काल कहँते आवत सो कहौ ॥

कह हरि हम यापुर के नाथा । तुव रक्षण हित आवत साथा ॥
कह परकाल तुमारो भाऊ । इतनोहि बहुत लौटि अब जाऊ ॥
बोले जनकुलकमलपतङ्गा । सीमा लौं चलिहैं तव सङ्गा ॥
नील कहो मम दृष्टि अगोचर । होउ सो सुनि कछु कह्यो न श्रीधर॥
पाछे आवत तिन्हैं निहारी । चिंता करी चतुस्कबि भारी ॥
मनमें कहत कि हमहीं सौं सब । कहत चोर ये हमहूं ते अब ॥
चोर प्रबल जो सहज अकेले । हमहिं सपरिकर आवतपेले ॥
जैसे बड़ी मीन जल पाई । खायलेत छोटिन कौ धाई ॥
हमैं मारि प्रतिमा हरि लीहैं । नाजानियै ये कितक बली हैं ॥
इमि गुनि खड्ग निकारि घुमावत । उनके मारन कौ भये धावत ॥

दो० ऐसे लखि तिनकौ तहाँ दामोदर हरषाय ।
शंख चक्र लै दरस दिय तब परकाल लजाय ॥
सो० दीनी फेकि कृपान हाथ जोरि अस्तुति करी ।
दश गाथा निर्मान करि पुनि याबिधि कहत भये ।

दो॰ तुमरिहि सेवा करैंगे याही थल करि बास ।
कह बिशेष जो तुमहिं तजि जायँ रंगपति पास ॥
कह हरि तुम सेवन करौ रंगनाथ भगवान ।
जामें वे आनद लहैं पुनि भये अन्तरधान ॥
तहँते सब निशि चलि गये रामनगर परकाल ।
लहो पूपरंगेश को पूप प्रसाद रसाल ॥
बहुरौ सहसहिं जाय के प्राप्त भये श्रीरंग ।
राखि कनिष्ठ इक अंगुली बौद्धमूर्त्ति किय भंग ॥
सो॰ किये सैकरन भाग तिहि धन सौं रंगेश की ।
सेवा करी अदाग आनद सौं परकाल मुनि ॥

इतिश्रीप्र॰परकालेन बौद्धप्रतिमाहरणान्नाम एकशततमोध्यायः ॥

अस्मद्यति सुनि गुरुकी बानी । बन्दन कियो हर्ष उर आनी ॥
सादर पूछत भये बहोरी । मूर्त्ति हरी जब बैष्णवधोरी ॥
क्रोधित बौद्धन तब कह कीनो । सुनि गुरु बिहसि उतर इमि दीनो ॥
प्रतिमाहरण रैनि के प्राता । गये देवालय अर्चक ब्राता ॥
नरकबन्ध देखो तामाहीं । लखी देवमूरति निज नाहीं ॥
अति अचरज करि दुखित भये सब । और जनन सौं टेरि कहो तब ॥
सकल बिकल भये चक्रत भारी । प्रतिमा रहित कबंध निहारी ॥
चोरन कौ ढूढ़न सब धाये । चरण चिह्न पश्चिम दिशि पाये ॥
ढूंढ़त ढूंढ़त सब दिन बीते । कृष्णपुटी अधरात बितीते ॥
पहुंचे तहँ कृसान के द्वारा । जानि नील बृत्तान्त उदारा ॥

दो॰ नीके सुनि निश्चय कियो वेई मूरति चोर ।
बहुरि लगावत खोज सब गये रंगपति ओर ॥
सो॰ पकरि लिये परकाल अति विषाद तिनसौं कियो ।
करत बिवाद बिशाल गये रंगपालक निकट ॥

बौद्ध रंगपालक के आगे । कलिजित दोष कहन सब लागे ॥
प्रतिमा हरण हेतु युत भाखी । निश्चित करिदीन्हो दै साखी ॥
तिन आद्यंतकलह दुहुँकोसुनि । जानिलियो कलिजित दुर्गुनगुनि ॥
तब परकालहु मानि सो लीन्हो । तिन समीप प्रमाण इमि कीन्हो ॥
दीहैं फेरि बर्ष दिन पाछे । अन्यूनांगुलि मूरति आछे ॥

याबिधि तहां बचन दृढ़ कीन्हो । बौद्धन कौ लिखि पत्र सो दीन्हो ॥
सो लै सौगत गये नागपुर । तब परकाल हर्ष भरि निज उर ॥
सौगत देव मूर्त्ति कटवाई । करी रंग कैङ्कर्य सुहाई ॥
बीते बर्ष बौद्ध तहँ आये । प्रतिमा फेरि लेन के चाये ॥
तब कलिजित अंगुली कनिष्ठा । देत भये बहु बस्त्राविष्टा ॥

दो० सौगतमूरति जानि निज खोलन लगे सहर्ष ।
तामें अंगुलि देखि इक कीनो बहुत अमर्ष ॥
सो० कह्यो बहुत करि क्रोध प्रतिमा हरी समग्र तुम ।
करत हमारो बोध ताकी दै इक आँगुरी ॥

मूरति देउ समग्र हमारी । नहिं चलिहै धूर्त्तता तुमारी ॥
कह परकाललिखित अनुसारा । नहिं चाहिये कछु अधिक तुमारा ॥
बौद्धन पत्र काढ़ि सो बांचो । उनको कह्यो न मानो सांचो ॥
बहुरौं लागे करन लड़ाई । गये श्रीरंग अधिप ढिग धाई ॥
तिनसौं गयो न न्याव निबेरो । तब सौगत करि यत्न घनेरो ॥
परकालहि जहं चोल नरेशा । कह लै जाय बिवाद अशेशा ॥
चोलराज सुनि बांचि सो पाती । कह्यो बोलि इकांत कलिघाती ॥
हे कलिजित तुम धर्मधुरीना । धर्म बिमुख मति होउ प्रबीना ॥
प्रतिमा अवशि हरी तुम उनकी । नहिं अन्यथा झगर सब हुनकी ॥
उन करि कुमति लिखाई पाती । तुम चतुरई करी कलिघाती ॥

दो० वे तुमकौ व्यवहार में जीति सकत है नाहि ।
ताते तुम करि निज कृपा देउ मूर्त्ति उन काहिं ॥
सो० यह सुनिके परकाल देत भये उत्तर नृपहि ।
तुमहौ मेदिनिपाल बौद्ध ध्वंस तुमकौ उचित ॥

वेद द्वेषि ये अहैं अभागी । धर्म बिमुख अरु सत्पथ त्यागी ॥
दंड योग्य ताते शठ येहा । जानौ सत्य न कछु सन्देहा ॥
बहुरि जो प्रतिमा हम हरि लीनी । सो रंगी सेवा करि दीनी ॥
औरौ बहु धन संग्रह कीनो । रंगी कार्य लगाय सो दीनो ॥
ताते इन्है देउ तुम टारी । नृप सुनि मन यह उचित बिचारी ॥

सौगत बोलि कहो तिन पाहीं । हम कह धर्म कहैं यामाहीं ॥
बिद्यमान तुमरे ढिग लेखा । तामैं हम बिचार करि देखा ॥
है कनिष्ठिकामात्र तुमारी । पायसकत नहिं मूरति सारी ॥
यह सुनिके सौगत खिसियाई । लै कनिष्ठिका गये पराई ॥
कलिजित हर्षि रंगपुर आये । रंगनाथ सेवा चित चाये ॥

दो० करन लगे प्राकार की सेवा अति अभिराम ।
तहँ चौथे प्राकार मैं भक्तचरणरज धाम ॥
सो० ताकौ दियो बचाय बनवायो प्राकार इमि ।
ब्रह्मस्थापन भाय गुनि माहात्म्य अपार तिहि ॥

अबलौं तहं मंडप दरसाई । नाम तासु परकाल सुनाई ॥
तैसेहि चन्द्र पुस्करणि तीरा । महाभागवत मंदिर भीरा ॥
है ईशान कोन की ओरा । त्यागो तिनको व्यग्र कठोरा ॥
याबिधि रंगनाथ परिचर्या । करत भये कलिजित बुधबर्या ॥
शिल्पकार तब निज बेतन हित । लगे करन परकालहि पीड़ित ॥
तवपरकालबिचारकियो मन।इन अतिकियप्रभुटहल अमिततन॥
ताते भये परम पद योगा । हमहिं उचित सहकार संयोगा ॥
तब तिनसौं इमि बचन उचारो । श्वेताचल धन धरो हमारो ॥
पूर्वकाल गाड़ो हम भारी । देयं चलौ तहं सब मिलि भारी ॥
शिल्पिन मानि बचनतिनको तब । श्वेताचल कौ उद्यत भये सब॥

दो० तब परकाल इकान्त मे नाविक लिये बुलाय ।
तिनसौं कहो कि शिल्पिगण लेउ नाव बैठाय ॥
सो० कावेरी के माहिं बोरि देउ इक संग सब ।
तुमहिं दोष कछु नाहिं ह्वैहै हरि कैंकर्य करि ॥

कहो आप श्रीमुख भगवाना । सूक्ष्म धर्म सत्शास्त्र प्रमाना ॥
मम निमित्त पातक जो करई । पुण्य समान सो फल अनुसरई ॥
हमहिं निरादर करि शुभकारी । होत पाप फल को अधिकारी ॥
अरु तुमकौ दीहैं धन भूरी । जब याबिधि कह कलिजित सूरी ॥
अंगीकार सबन करि लीनो । ऐसेहि करिहैं उत्तर दीनो ॥

तब परकाल बिलम्ब न लाये । शिल्पकार सब नाव चढ़ाये ॥
मध्यधार कावेरी माहीं । दिय परपद सहसहिं सब काहीं ॥
नाव बोरि शिल्पिन युत केवट । नीलहि कहूबिधि ल्याये तट ॥
याबिधि शिल्पिन कलिजितसूरी । दै हरि टहल अनूपम जूरी ॥
पुनि सबहुन के बंधुन काहीं । बूड़ि नाव कवेरजा माहीं ॥

दो० ताम्रे बूड़े शिल्पि सब दीनी खबरि कराय ।
तिन कावेरी मधि तुरत जाल डरायें धाय ॥

सो० तिनसौं मृतक शरीर निज बंधुन के काढ़ि सब ।
कावेरी के तीर धरे अग्नि संसकार हित ॥

तासु काज परकाल रंगधन । दीनो भूमि मौल्य प्रमुदितमन ॥
तब तिन मन निश्चय करि लीनों । यह अनर्थ परकालहि कीनो॥
सब कलिजितहि देन दुखलागे । अतिशय शोक दुःखरसपागे ॥
मधुर बचन सौं तब कलिहारी । कह्यो कालकृत लेउ बिचारी ॥
कालहि छांड़ि और कछु नाहीं । बिधिहु न रोकिसकत तिहिकाहीं॥
उपजत मरत प्राणि सब ताबश । वृथा देत हमकौं तुम दुर्यश ॥
तुमहिं बिचारि लेउ मनमाहीं । हम यह कृतके कारण नाहीं ॥
यह सुनि बोले शिल्पि बन्धु तब । बेतन दैदीजै हमको अब ॥
चकित नील बोले बिधि येही । हम मजूरि दीन्हीं पहिलेही ॥
श्वेतद्वीप क्षेत्र के माहीं । साक्षी कियो कमलदृग काहीं ॥

दो० करौ जो तुम सन्देह कछु तौ मृतकन मुख बात ।
देउँ अबहि कहवाय हम तजौ व्यर्थ उत्पात ॥

सो० वे बोले हम पाहि देउ कहाय जो मरिन सौं ।
तौ हम मागैं नाहिं तुमसौं बेतन रंच कोउ ॥

यह कहि मृतकन को करि नेहा । सब मिलि लगे जरावन देहा ॥
कलिजित कियो तुरत अस्नाना । लागे करन रंगपति ध्याना ॥
ऊर्द्धबाहु अकाश की घाईं । चितै मृतक टेरे बाठाईं ॥
मुक्तशिल्पि जब नील बुलाये । बैठि बिवानन सब चलि आये ॥
ठाढ़े सबन लखे आकाशा । याबिधि सौं तिन बचन प्रकाशा ॥

हे कलिहन हम कृपा तुम्हारी। भये कृतार्थ यथाबिधि भारी॥
मायामय भव सिंधु अपारा। ताको हम पायो अब पारा॥
भये मोक्षपद के अधिकारी। पुनि बंधुन प्रति गिरा उचारी॥
तुम क्यों करत कलह इन साथा। इन हमकौ करि दियो सनाथा॥
दई अनंत गुनि हमहिं मजूरी। ये उत्तम हरि किंकर सूरी॥

दो० श्रीपति भक्तिधुरन्धर वैष्णव श्रेष्ठ सुजान।
इनको सेवन करौ सब जो चाहौ कल्यान॥

सो० यह कहि शिलिप बरूथ गये परमपद कौ सकल।
रंगबासि जन यूथ यह अद्भुत लखि चकित भये॥

करी चतुस्कबि की अति पूजा। जानि शुद्ध हरिभक्त अदूजा॥
जबते याबिधि शिल्पि समाजा। मुक्त किये कलिजित महराजा॥
उत्तरभाग रंगथल माहीं। कावेरी बर क्षेत्र जहाहीं॥
तबते वा थल को अस्नाना। मानत माघ सदृश बिद्वाना॥
पुनि परकाल रंगपुर जाई। बहुबिधि किय कैङ्कर्य सुहाई॥
रची पाठशाला रमनीया। वेदन युत शोभित कमनीया॥
सुन्दर मंडप सुदृढ़ बनाये। दिव्यस्तंभ अनूप लगाये॥
बिरची चहुंदिश गोपुर माला। जनु सुमेरुगिरि शिखर बिशाला॥
अति बिचित्र तहँ चित्र लिखाये। बिबिधि रंग मनहरन सुहाये॥
बिरचित द्वय घृत कूप गँभीरा। इमि बहु सेवा किय मतिधीरा॥

दो० कावेरी के बीच जो भूमि सो रंग भुवाल।
बेचि दई कलि बैरि कर तासो मुनि परकाल॥

सो० करैं पितृ के कार्य दई रंगपुर बासिनहि।
छांड़ि भट्ट अरु आर्य दीनो आज्ञा पत्र लिखि॥

हस्ताक्षर तिहि पत्र मझारी। लिखे रंगपुर बासिन भारी॥
रंगनाथ बाइबि दिश पावन। मंडप बर रचि कलिबिनशावन॥
तहां बास कीनो सुखमानी। भये कृतकाज बिशद गुणखानी॥
तब रङ्गेश्वर सन्निधि जाई। बिज्ञापन किय तिनहि सुनाई॥
भगवन् प्रभु आयसु अनुसारा। कियो सकल कैङ्कर्य तुम्हारा॥

करो परंतु शिलामय स्वामी । अनुचित दुर्मति वश अनुगामी ॥
कंचनमय प्रभु कृपा प्रसादा । होंतो जो करतो अहलादा ॥
कियो न कुमति कुभाग्य हमारी । इमि परकाल क्षुभित भये भारी ॥
रंगनाथ तब गिरा उचारी । सुबरणमय कैङ्कर्य तुमारी ॥
वृथा खेद आनत मन माहीं । देखि लेउ जो मानौ नाहीं ॥

दो० यौं कहि रंगनाथ प्रभु करुणा करि तत्काल ।
दिय दिखाय सब हेममय मुदित भये परकाल ॥

सो० मंडप अरु प्राकार सोपानादि सुवर्णमय ।
रंगी कृपानुसार हाटकमय फाटक लखे ॥

दो० मुदित भये परकाल तब सावधान मनमाहिं ।
बसे रंगनायक निकट क्लेश लेश जहँ नाहिं ॥
करत उचित कैंकर्य नित आदर युत अति प्रेम ।
बढ़त श्रीशपद भक्ति शुचि ज्ञान विरति नित नेम ॥

इतिश्रीप्र० शिल्पिकारमोक्षकथनन्नाम द्विशततमोध्यायः १०२ ॥

माधवदास बहुरि कर जोरी । पूछत भये गुरुवरहि निहोरी ॥
अष्टोत्तरशत विष्णु दिव्यथल । शास्त्र बखाने सकल महीतल ॥
कलिजित अस्तुति कियवरबानी । कहँ कहँ केतिक गाथ बखानी ॥
और शमंधर शैवहि कलिजित । किहि बिवाद कहँ कियो पराजित ॥
कहौ कृपा करि दासहि सो सब । सुनि भट्टार्य वचन बोले तब ॥
पूर्व चतुस्कवि दिग्जय कीन्हो । जीति पंडितन वश करि लीन्हो ॥
गये त्रिविक्रमपुर पुनि सोई । मण्डल चोल मध्य है जोई ॥
ताके पूर्व ब्रह्मपुर ग्रामा । शैवन को तहँ परमस्थाना ॥
भयो शमन्धर तहँ बिद्वाना । जीते तिन जग पंडित नाना ॥
गये तहं नील प्रताप अभंगा । होत बिजय ध्वनि काहलि संगा ॥

दो० सुनो शमंधर शिष्यगण शब्द सो अति दुर्धर्ष ।
ते निज गुरु अभिमान वश सहि न सके उत्कर्ष ॥

सो० कहत भये सब आय साभिमान परकाल सौं ।
सुनौ चतुस्कविराय तब लौं वृथा प्रभाव तव ॥

वृथा रचत आडम्बर भारे । विद्यमान गुरुदेव हमारे ॥

जिन जीते बिद्वान समाजा । जीतौ उन्है शास्त्र के साजा ॥
तब जानौ निज सफल प्रभाऊ । यह सुनि गये तिन ढिग कबिराऊ॥
करन लगे दोउ मिलि सम्बादा । काव्य शास्त्र में सुंदर बादा ॥
हरि द्रोही सो शैव शमंधर । पाषंडिन मैं बीर धुरंधर ॥
तिहि पुर मैं हरि बिग्रह नाहीं । जिमि तुलसिका आक बन माहीं॥
ताते सकल अर्थबित नीलहि । प्रकट न भई बुद्धि गुण शीलहि ॥
ढूंढ़ो जब बहुबिधि परकाला । देखी इक तिय वृद्ध बिशाला ॥
सो बैष्णवि पूजति हरि मूरति । मागि लई सो ठानि बिनय अति॥
हरि दरसन प्रभाव तत्काला । काव्यस्फूर्त्ति लही परकाला ॥

दो० गये शमन्धर निकट तब शास्त्र अर्थ के काज ।
विशदकाव्य करि बादि उर संतोष्यो समाज ॥
सो० हारि आपनी मानि कहो शमन्धर बचन तब ।
तुम सम बिद्याखानि हम कबहूँ कहुँ नहिं लखो ॥

नाम चतुस्कबि तुम्हरो सांचो । करत सुकाव्य चारि गुणराचो ॥
शीघ्र बिचित्र मधुर बिस्तारा । यों प्रशंसि किय बहु सतकारा ॥
बहुरौं बिदा किये करि आदर । गये त्रिबिक्रमपुर तब सादर ॥
तहां त्रिबिक्रम बपु भगवाना । थापित कीन्हे पूर्व समाना ॥
जिमि तिन बिभव अभंगुर होई । कियो मङ्गलाशासन सोई ॥
ह्वै कृतकाज मुदित भये भारी । बहु हरिथलन बहुरि अघहारी ॥
चलि चलि कियो मङ्गलाशासन । तिहि बिस्तार सुनौ सुखबासन॥
परिधिनाथ हरि जो हेमाचल । राजत हैं तहं परिधि नाम थल ॥
दशगाथा सौं अस्तुति कीन्ही । बहुरि बदरिकाश्रम मति दीन्ही ॥
बीस गाथ सौं बदरीनाथा । शालिग्राम क्षेत्र दश गाथा ॥

दो० बंदे नैमिष बिपिन हरि दश गाथन युत प्रीति ।
अवधपुरी रघुकुलतिलक यथाशक्ति शुभरीति॥
सो० मधुपुर बाल गुपाल बहुरि जाय बृन्दाबनहि ।
यथाशक्ति नँदलाल परितोषे परकाल मुनि ॥

पुनि दशगाथ नृसिंह अहोबल । बन्दन किये जाय गरुड़ाचल ॥

व्यैंकट गिरहि शेष बपु जानी । चढ़े न तापर कलिजित ज्ञानी ॥
कापिल तीर्थहिं करि अस्नाना । बन्दे श्रीनिवास भगवाना ॥
चालिस गाथा तिनहिं सुनाईं । बहुरौं गये बीत्तबन माहीं ॥
किंगृह नगर बीर राघव हरि । बन्दन कीन्हे दश गाथन करि ॥
कछु दिन बसि कांचीपुर आये । तहं दश गाथ अष्टभुज गाये ॥
पुनि परमेशनगर कौ जाई । परमेशहि दश गाथ सुनाई ॥
नरहरि हस्ताचलतलबासी । तिनकी अस्तुति किय कलिनाशी ॥
कमलनयन पद कमल बहोरी । बन्दन किये भागवत धोरी ॥
कामासिकी नृसिंह मनाये । पुनि यथोक्तकारी हरि गाये ॥

दो० बहुरि त्रिबिक्रम ऊँच तन तिनकौ कियो प्रणाम ।
पांडवदूत प्रसन्न किय अस्तुति करि अभिराम ॥
सो० एकाम्बरा सुधाम ज्योत्स्नाशशिखंडेश की ।
अस्तुति करी ललाम कामाक्षी मंदिर बहुरि ॥

चौर कृष्ण कौ प्रणमि अनन्दे । उरगालय नायक पुनि बन्दे ॥
अस्तुति किय पुनि हरि मेघालय । तोयगृहाधिप बहुरि जलालय ॥
ग्रामगृहाधिप हरि पुनि गाये । तिमि तहं सब हरि बंदि रिझाये ॥
बहुरौं गये गृद्ध सर तीरा । बन्दन किये बिजयरघुबीरा ॥
घटिकाचलहि बहुरि चलि आये । नृहरि अमृतफल पद शिरनाये ॥
कैरविनीतट चलि वृन्दाबन । पार्थ सारथि बन्दे तहं कलिहन ॥
पुनि नरसिंह रंगनायक हरि । बहुरि गजेंद्रबरद रावणअरि ॥
इन पांचौ की दश दश गाथा । अस्तुति करि पुनि कबिकुलनाथा ॥
तोताचलहि गये अघहरणा । तुंगशेष रङ्गेश्वर चरणा ॥
बंदन किये गाथ दश गाई । पुनि कल्याणनगर कौ जाई ॥

दो० मज्जन करि कल्याणसर श्रीबराह दशगाथ ।
गाय रिझाय महाबलपुर गवने कबिनाथ ॥
सो० पुण्डरीक सर न्हाय महाबली महि शयन कौ ।
गाथा बीस सुनाय गवने बहुरि अहीन्द्रगिरि ॥

तहं दश गाथ देवनायक हरि । तोषे प्रीतिसहित अस्तुति करि ॥

पुनि दश गाथ त्रिबिक्रमदेवा । जाय गोपपुर कीन्ही सेवा ॥
चित्रकूट पुनि गये कलिनाशी । बीस गाथ तहँ बिशद प्रकाशी ॥
गोबिंदराज बंदि गुणधामा । गवने चोलदेश अभिरामा ॥
तहां त्रिबिक्रम पुर कौं आये । शुचि दश गाथ त्रिबिक्रम गाये ॥
पुनि परिरंभनगर कौं जाई । तीसपद्य सुन्दर बर गाई ॥
गवने नागपुरहि अघहारी । जहँ एकादश हरिथल भारी ॥
तिनसबहुन की दशदश गाथा । अ तुति करि करि भये सनाथा ॥
बहुरि शुक्रपुर जाय राम हित । गाई दश गाथा सप्रेम चित ॥
भूतस्थान गये पुनि क[illegible]अरि । दश गाथन गाये दृढ़ धनु हरि ॥

दो० पूजे संगमग्राम दश गाथन राम असंग ।
श्वेताचल तिमि कमलदृग गाये प्रेम अभंग ॥
सो० गये बहुरि श्रीरंग गाई गाथ पचास तहं ।
चरणकमल मन भृंग रहत लुब्ध जहँ दिवस निशि ॥

जाय नंदिपुर नंदिनाथ हरि । पूजन कीन्हे दश गाथा करि ॥
बहुरि अकाश नगर कौ जाई । तीस गाथ तहँ हरिहि सुनाई ॥
लवणाभावतात जिन नाम्मा । पुनि गये रथ[illegible]तस्थल ग्रामा ॥
देवराज कौं गाथ पचासा । गाय रिझायो आनंद बासा ॥
जाय व्याघ्रपुर गाथा दश तहं । गाई महाबाहु श्रीपति जहं ॥
पुनि श्रीकृष्णा मंगलहि आये । तहां भक्तवत्सल तिमि गाये ॥
बहुरि तुंडमंडल अंतरगत । श्रीनि[illegible]पुर गये प्रेमरत ॥
अस्मन्मातृपती तहं के हरि । सेवन किये सो दश गाथा करि ॥
जोजन अर्ध कृष्णापुर पावन । शौरिराज तहं हरि सुख छावन ॥
तहं दश गाथन अस्तुति गाई । बहुरौं कृष्ण कुटीपुर जाई ॥

दो० दामोदर हरि की तहाँ अस्तुति करि दश गाथ ।
बहुरौ सुंदर राजपद जाय नवायो माथ ॥
सो० नागनगर जिहि नाम तहाँ बसत सो जगतपति ।
सुंदरबन अभिराम अस्तुति किय दश गाथ सौं ॥

शिरःशङ्खपुर इन्दु नगर बर । आदाते नगर कपिस्थल सुन्दर ॥

नरहरि तंजानगर सुहायो । खंडनग्राम बहुरि मन भायो ॥
निचुलानगरी इन सबही की । अस्तुति करी प्रीति युत नीकी ॥
एक गाथ कहुं कहुं द्वय गाई । गाथ तीनि कहुं मधुर सुनाई ॥
पुल्लग्राम पांड्यमंडल महं । हैं प्राचीन दर्भशाई जहं ॥
जगन्नाथ युत दरशन पाई । बन्दे दश दश गाथ सुनाई ॥
बहुरि कुरंगनगर चलि आये । तहां तुंग तन पूर्ण रिझाये ॥
गाथा बीस निवेदन कीनी । पावन परम प्रेमरस भीनी ॥
दच्छिणपुर पुनि केरल देशा । जहं हरि राजत सुंदर वेशा ॥
करि दश गाथ पांडुमंडल चलि । देखे सुन्दरबाहु दमनकलि ॥

दो० पुनि वानाचलनायकहि जाय नवायो माथ ।
भये सनाथ अस्तुति बरनि पावन बिंशति गाथ ॥
सो० गोष्ठीनगर वहोरि बन्दे युग नरहरिचरण ।
दश गाथन करजोरि सहित सौम्य नारायणहि ॥

मोहर शीतोद्यान बहोरी । सत्यमहीधर हरिहि निहोरी ॥
गाथा सात तिहूं थल बन्दे । इमि प्रबन्धबर बिरचि अनन्दे ॥
बन्दन किये तिरासी हरिथल । तिनको बिशद सुनौ बुधिनिर्मल ॥
केरल तीने पांड्य षट जानौ । चोलदेश उन्तालिस मानौ ॥
दश तुंडीर मंडलहि लीजै । मध्य सुदेश पचीस गनीजै ॥
याविधि श्रीश थलन के माहीं । जाय प्रेम युत अस्तुति गाईं ॥
दिव्य प्रबंध सात सब गाये । द्राविड़ भाषा परम सुहाये ॥
तेरह सौ चौसठि सब गाथा । बरनी निर्मल कलिकुलनाथा ॥
तत्व अर्थ सर्बाधिकार करि । तिहि कैङ्कर्य प्रसन्न किये हरि ॥
करि हरि कौं मंगलानुशासन । जग हित बैष्णव धर्म स्थापन ॥

दो० जन रक्षण सबविधि कियो पांच अधिक सौ बर्ष ।
करि निवास भूतल बहुरि रंगायसु उत्कर्ष ॥
सो० नगर कुरंगाहि जाय लही बिष्णुसायोज्य तहँ ।
सुयश बिलक्षण छाय अद्वितीय हरि भक्ति करि ॥

उन महान कलिध्वंसक जी के । भये अर्चावतार बहु नीके ॥

दिव्य देश अरु बैष्णव धामा । सेय लहत जग जन बिश्रामा ॥
तहुं परिरंभ पुरहि सबकाला । देखि परत अति बिभव बिशाला॥
अरु श्रीरंग नगर अबताईं । महदोत्सव उनके दिखराहीं ॥
जाघर मूर्त्तिमान परकाला । राजत लिये खड्ग और ढाला ॥
तहं के सब कलिदोष पराहीं । सिंह देखि जिमि मृगगण जाहीं॥
भय को काज तहां पुनि काहा । बहुरि जो नित पूजै कबिनाहा॥
कार्त्तिक कृतिका नखत मझारी । षटरस ब्यंजन अर्पि अघारी ॥
द्रबिड़ निगम ज्ञाता द्विज बैष्णव । तिन्है जिमावै करि पूजन सब॥
सो नर तजि भवनिधि दुखदाई । पूजित होत बिष्णुपुर पाई ॥

दो० सोई समाप्ति नक्षत्र पुनि दिव्य प्रबंधन केर ।
तदियार्चन करि लहत नर शतगुण फल को ढेर ॥
सो० अध्येनोत्सव काल जबलौं प्रापति होय नहिं ।
ते प्रबंध शुभमाल तबलौं नहीं उचारिये ॥

पुनि वह उत्सव ते प्रारम्भा । पूर्व गुरुनकृत नेम अरम्भा ॥
ऐसेहि रङ्गेशहु उपदेशा । सूरि गणन प्रति कियो निदेशा ॥
वेदपाठ मर्यादा जाबिधि । मानत ताहि सकल बिद्यानिधि ॥
उपाकर्म करि ताहि अरंभत । पौष पौर्णिमा करत समापत ॥
बहुरौं मकर हस्त जब आवत । तब आरंभ वेद पुनि पावत ॥
त्यों प्रबंध पारायण नेमा । कियो गुरुनदायक सब क्षेमा ॥
शुक्लपक्ष प्रतिपद धनुमासा । अध्येनोत्सव होत प्रकासा ॥
कृष्णपक्ष पंचमि जब होई । ताहि समाप्त करत सब कोई ॥
धनुर्मास गोदा कृत गाथा । प्रतिदिन इक इक नहिं सब साथा॥
अरुणोदय सुमिरै करि नेमा । हरिहि निवेदन करै सप्रेमा ॥

दो० अध्ययनोत्सव ते करै दिव्य प्रबंध उचार ।
अनध्याय दिन जो करै ताहि नर्क अधिकार ॥
सो० पूर्व गुरुन सिद्धान्त स्थित ह्वै पारायण करं ।
होइँ न भव आक्रान्त अवशि बिष्णुपद कौं लहैं ॥

इतिश्रीप्र० शमन्धरजयोनाम त्रिशततमोऽध्यायः ॥ १०३ ॥

माधवदास गुरुहि शिर नाई । हाथ जोरि पुनि बिनय सुनाई ॥
कासारादि योगि चरित्र वर । नाथ कृपा मैं सुन्यो कलुषहर ॥
अब बरनौ दयालु गुरुराया । शठध्वंसक चरित्र करि दाया ॥
शिष्यवचन गुरुबरहि सुहानो । शठजित चरित कथन मन आनो ॥
बकुलाभरण चरणयुग बंदन । लगे करन कूरेश्वरनन्दन ॥
जिन वेदन को उत्तर भागा । द्राविड़ भाषा कियो सरागा ॥
मम कुलधन जिनके पदपङ्कज । भोग्यभूत जिन चरणन की रज ॥
बकुल सुमन भूषित जे चरणा । होउ सो मम शिर के आभरणा ॥
सुनौ आदि गुरुकथा सुहाई । माधवदास बुद्धि मन लाई ॥
सर योग्यादिक अवयव जानो । शठजित गुरुहि अवयवी मानो ॥

दो० तिनको चरित विचित्र है पाप बिमोचनहार ।
श्रोता वक्ता दुहुन कौ करत भक्ति बिस्तार ॥

सो० पावन पांड्य सुदेश सब जगमैं प्रख्यात अति ।
कृषि सम्पत्ति अशेश जहँ परिपूरण रहति नित ॥

ताम्र पर्णी जहँ सरित सुहाई । सरित बरन में उत्तम गाई ॥
तहँ अष्टादश हरिथल पावन । दिव्य प्रबन्ध करत प्रतिपादन ॥
पूर्ब सिंधु के पश्चिम तीरा । कुरिकानगर हरण भव भीरा ॥
द्वापर कुरुबंशी नरपालन । कीनो थानगरी को पालन ॥
ताते भो प्रसिद्ध यह नामा । ताम्रपर्णी तट प्रद बिश्रामा ॥
शरणागत दुख जानन हारे । श्रुति शिरवेद्य रमा के प्यारे ॥
आदिनाथ अर्चा जहँ राजत । निज बैभव जग मंगल साजत ॥
तहँ चतुर्थ कुल कोउ वैष्णवबर । भये बिभूति नाथेन्द्रगुणाकर ॥
तिनके पुत्र धर्म धन भयेऊ । धर्मउधारि नाम यह लहेऊ ॥
तिनके चक्रपाणि सुत सुंदर । सज्जन सेवा परम धुरंधर ॥

दो० उनके अच्युत सुत भयो जासु अपर युग नाम ।
लोक मांझ विख्यात भये रत्नधाम उद्दाम ॥

सो० सुमति पुत्र पुनि तासु सुयश बिशद जग तिन लह्यो ।
पांडुरलोचन जासु फूतकारि तिनके भये ॥

कारि नाम तिनके सुत पावन । प्रकटे स्वगुण सुयश जगछावन ॥
यद्यपि ये सातौ बड़भागी । भये गुणधाम श्रीश अनुरागी ॥
तद्यपि कारि सर्बोत्तम जानौ । तेजनिधान ज्ञान बपु मानौ ॥
श्रीपति भक्तिपरायण नीके । आनँदप्रद अति पितु जननी के ॥
युवा प्राप्त लखि पितु गुणखानी । कियो बिवाह यत्न सुखमानी ॥
केरलदेश बिष्णुथल भारी । शुभ परिसार नाम अघहारी ॥
तहँ कोउ शूद्रबर्य हरिदासू । कन्या नाथनायकी तासू ॥
ताको बरण कियो शुभ जानो । कुलसम्पति निजसम अनुमानी ॥
सुता जनक अति बैभव साथा । किय संकल्प मुदित बर हाथा ॥
बधू समेत पुत्र लै संगा । फूतकारि लहि मोद अभंगा ॥

दो० आये निज कुरिकानगर तहँ के अधिपति सोइ ।
करत भये रचना नगर पुरबासी सब कोइ ॥
सो० आगू लीनो आय आनद युत अति बिभव सौ ।
सम्पति बिबिधि लुटाय गृह प्रवेश कीनो हरषि ॥

आनँद युत बीतो कछु काला । भोगत दम्पति भोग बिशाला ॥
प्रजाभिलाष आनि मन माहीं । गये कारि कुरंगपुर काहीं ॥
दम्पति परम भक्ति करि आगे । पूजत श्रीपति अति अनुरागे ॥
भये प्रसन्न कुरंगपूर्णहरि । द्यायो तीर्थप्रसाद कृपा करि ॥
ह्वै प्रसन्न दीनो बरदाना । ह्वैहौ बेगिहि पूरण कामा ॥
ह्वैहै पुत्र तुमारे ऐसो । काहू जग पायो नहिं जैसो ॥
सेनापति बिकुण्ठ मम जोई । तुमरे पुत्र होयँगे सोई ॥
अति प्रमुदित श्रीकारि सबामा । लहि हरि सौं बर आये धामा॥
आदिनाथ पद बन्दन करिके । निवसे गृह आनँद उर भरिके ॥
अल्पकाल बीते तिहि स्यामा । धारण कियो गर्भ अभिरामा ॥

दो० पूर्व दिसा जिमि रबि हरिहि श्रीदेवकि जिहि भांति ।
त्योंहीं नाथसुनायकी गर्भ धारि लहि क्रांति ॥
सो० अब शठजित अवतार लहो पुनीतम काल जिहि ।
सुनौ तासु निर्धार अघ समूह जाते नशत ॥

एक मास तेरह दिन कलिगत । माधवमास प्रमादी सम्बत ॥
शुक्ल चतुर्दशि शुक्र सुबारा । कर्कट लग्न बिशाखा तारा ॥
नाथ नायकी उदर उदारा । योगिराज लीनो अवतारा ॥
हरि सेना नायक के अंशा । रबि सम उये योगिअवतंशा ॥
उनके शुभ अवतार बिधायक । अमित छंद महान जनगायक ॥
बर्षा बात निवारण काजा । हरि आयसु पहिलाहि अहिराजा ॥
तिंतृणि तरु निजांश प्रकटयो ! कुरिकानगर पुनीत सुहायो ॥
अब वदान्ति मधुर कबिजी को । सुनु अवतार चरित अति नीको ॥
जे शठजित सेवक अति पावन । साधक शिष्य सुयश प्रकटावन ॥
कुरिका पूर्व क्रोश इक सुंदर । श्रीकोलूर नाम सुग्राम बर ॥

दो० शेषतल्प सोवत जहाँ श्रीसख अर्चारूप ।
तहाँ द्विजोत्तम पूर्वशिखि भये हरिदास अनूप ॥
सो० सब सद्‌गुण के धाम शाखाध्यायी साम के ।
कोबिदमणि अभिराम जन्मकाल तिनको सुनौ ॥

आठ लाख अरु साठि सहसगत । औरौ कछु द्वापर युग सम्बत ॥
बिक्रम बर्ष चैत्रशित पक्षा । चित्रा नखत भये प्रत्यक्षा ॥
बकुलाभरण प्रभाकरजी के । प्रकटे अरुणोदय सम नीके ॥
जातकर्म पितु कियो यथोचित । औरौ संसकार आनँद युत ॥
लहि जनेउ गुरुमुख सुज्ञान वश । सहजहिं बिद्या पढ़ीं चतुर्दश ॥
तीव्र बिराग बहुरि प्रकटानो । गृह तजि तीर्थाटन मन आनो ॥
सप्तपुरी आदिक शुभ देशा । बिचरे उर धरि भक्ति सुदेशा ॥
पुनि अष्टांग योग बर साधी । बसे बदरिकाश्रम निरुपाधी ॥
शठजित गुरु प्रह्लाद की नाईं । लहो ज्ञान गर्भहि के माहीं ॥
जन्मपाय ह्वै श्रीश परायन । मूदे नयन जीति जग चायन ॥

दो० जननि जनक चेष्टा रहित देखि मूत्र मल हीन ।
दिव्य तेज दृढ़ अंग शुभ भये चकृत दुखदीन ॥
सो० उन अर्प्यो सब भार श्रीपति चरणसरोज मधि ।
तिहि अनुभव रससार आस्वादन करि मग्न सुख ॥

भयो निवृत्तप्रसव सूतकजब । जननि जनक सुत गोद राखितब॥
कुरिकानायक श्रीपति आगे । गये लै सुतहि शोच रसपागे ॥
कियो प्रेम युत तिनहि प्रणामा । हेमपालने बाल ललामा ॥
राखि सभक्ति धरो तिन सन्निधि । सुत मंगल कीजै श्रीपति सिधि॥
नामकरण कीन्हो तिनकेरो । मारनाम प्रकटो हरि प्रेरो ॥
ज्ञान समूह पूर्ण शठकोपा । करि इन्द्री चेष्टा सब लोपा ॥
याबिधि सोरह बर्ष बिताईं । बधिर अन्ध गूंगे की नाईं ॥
तब चिंचातरुवर के मूला । तजि सुत अभिमत छाड़ि सशूला ॥
आशा तजि बैठे निज धामा । पुत्र जन्म निस्फलकरि माना ॥
उनकी महिमा जानत नाहीं । ताते भये दुखित मन माहीं ॥

दो० शठजित गुरु हरिचरण मधि रखि सब आतम भार ।
आदिनाथ सन्मुख अचल शून्य बाह्य ब्यापार ॥

सो० ध्यानामृत के स्वाद परमपरायण रहत नित ।
श्रीश प्रेम अहलाद जानत नहिं जगदेह युत ॥

इतिश्रीप्र० शठकोपावतारकथनन्नाम चतुःशततमोऽध्यायः१०४॥

बदरीथल तें मधुरकवीशा । गवने जहां अयोध्याधीशा ॥
सरयू सरि नहाय सानन्दा । बन्दन किये कोशलानन्दा ॥
प्रेम समेत बसे कछु काला । इक दिन कौतुक लखो बिशाला ॥
रजनी समय गये लघु बाधा । देखो दक्षिण तेज अगाधा ॥
चकृत भये अप्राकृत मानो । पुनिभ्रम करि बिचार यह आनो ॥
लागी अग्नि जरत कोउ ग्रामा । कीधौं बरत नगर अभिरामा ॥
दावानल बन मैं धों लागी । इमि शोचत सोये बड़भागी ॥
तैसेहि लखो दिवस द्वय तीनी । भई बुद्धि अचरज रसभीनी ॥
तब सो तेज अप्राकृत मानो । करि बिचार दृढ़ करि अनुमानो॥
तासु बिशेष जानिबे काजा । तहँते चलत भये द्विजराजा ॥

दो० निशि देखत दक्षिण दिशा तेज बिचित्र बिशाल ।
चलत बसत दिन रैनि गये जहँ श्रीरंगभुवाल ॥

सो० तहँहूँ देखो जाय दक्षिण दिश वह तेजबर ।
कहँ यह तेज लखाय ढूँढ़त कुरकापुर गये ॥

तेज अवधि तहंहीं लौं पाई । फेरि कहूं नहिं परो लखाई ॥
प्रादुर्भाव तासु तहं जानी । अस्थित भये हृदय सुख मानी ॥
ढूंढ़त ढूंढ़त चिंचामूला । देखे शठजित तेज अनूला ॥
मूदे नयन मौन दृढ़ कीन्हे । श्रीपति चरणकमल चित दीन्हे ॥
तब बिस्मित् निश्चय यह कीनो । तेजरूप दरसन जिन दीनो ॥
सोई हैं ये अतुल प्रकासा । गये निकट तिनके सहुलासा ॥
अंध बधिर शङ्का पुनि आनी । तेहि निवृत्य हित यह मति ठानी॥
लै कर इक पाषाण पवारो । तिनके निकट शब्द भयो भारो ॥
ताते शठरिपु नयन उघारे । कछुक सहज तिहि ओर निहारे ॥
सो शङ्का उर ते भई दूरी । शोचे बहुरि मधुरकबि सूरी ॥

दो० बोलत है धौ ये नहीं ताहित बोले बयन ।
हे गुरु जीव बसत जबहि मातु उदर करि अयन ॥

सो० कहाँ रहत कह खात सो सुनि शठजित उतर दिय ।
उदर अन्न जो जात तिहि रस भखि तहँहीं रहत ॥

यह सुनि भये संतुष्ट मधुरकबि । माने ज्ञानि कमलकुल के रबि॥
भक्ति सहित साष्टांग प्रणामा । करि तिन शरण भये सुखधामा॥
कृतकारज आपहि तब जाना । उनके चरणकमल को ध्याना ॥
करत जपत गुरुनाम निरंतर । सेवत भक्ति ठानि उर अंतर ॥
निवसत भये समीप उनकेरे । सब उर शोच सकोच निवेरे ॥
ताही समय शठारि मुनीशा । पावन भये दरस जगदीशा ॥
आदि पुरुष बिकुण्ठपुर स्वामी । श्रीश चतुर्भुज खगपति गामी ॥
परम व्योम बासी भगवाना । श्री भू नीला सहित सुजाना ॥
रूप स्वरूप बिभव गुण पावन । कृपासिंधु जन ताप नशावन ॥
भये प्रकट करि कृपा अपारा । अतुल बिभव युत एकहि बारा ॥

दो० बार बार अनुभव कियो प्रभु गुण रूप अनूप ।
ब्रह्मानंद पयोधि तब मग्न भये मुनि भूप ॥

सो० सो अनुभव आनंद नहीं समानो मुनि हृदय ।
बचन रूप सुखकंद प्रकटो चारि प्रबन्ध है ॥

चतुरानन मुख जिमि चहुं वेदा । तिमि सो प्रबन्ध हरण भव खेदा ॥
सार अर्थ सब वेदन केरो । करि उद्धार यथेष्ट निबेरो ॥
ऋग्वेदार्थ कहो मुनिनाथा । श्रीवृत नाम ग्रंथ शत गाथा ॥
सप्तगाथ अशिर्य प्रबन्ध किय । तामें यजुर्वेद आशय लिय ॥
महांतादि नामक बर ग्रन्था । रच्यो अथर्वणवेद सुपंथा ॥
तामें बरनी गाथ सतासी । बहुरौं सहसगीति सुखरासी ॥
सामवेद को आशय गायो । सकल लोक हित हेतु सुहायो ॥
कहो अर्थपंचक सब तामें । रत्तण होत लोक को जामें ॥
बारहसौ गाथा तामाहीं । कारिसूनु अति अद्भुत गाईं ॥
द्वय सम मंत्र न वेद बखाना । कहो तासु को अर्थ महाना ॥

दो० सहस गीथि बिरची जबै कारिसूनु सुखधाम ।
तासु पात्रता प्राप्ति हित अरु गौरव अभिराम ॥

सो० रंगादिक थल माहि बसत अधिप जे देवबर ।
अरु तिन बैभव काहिं सुनि बैकुंठहु सूरि सब ॥

श्वेतद्वीपादिक के बासी । आये भये देखि सुखरासी ॥
शठजितहू तिन सबन निहारी । सानँद बैष्णव वृद्धि बिचारी ॥
कियो मंगलाशासन सबही । गये मुदित निज थल सब तबही ॥
अष्टोत्तरशत दिव्य थलेशा । तिनमें श्रीरंगादि रमेशा ॥
बत्तिस तहीं बसे सुखसाजा । करन बिशेष अनुग्रह काजा ॥
प्रथक प्रथक प्रकटे सब तिनहीं । प्रथम कहत सुंदरभुज जिनहीं ॥
बन गिरि नाथ तिन्हें शठकोपा । रिझयो तीस गाथ अति चोपा ॥
परमस्वामि व्येंकटपति जोई । पूजे बीस गाथ करि सोई ॥
अमृतफल घटिकाचलनाथा । दरसन लहि गाईं दश गाथा ॥
तिमि कुरंगनगरी पूरणहरि । पुनि बानाचलपति दश दश करि ॥

दो० गाय अपरियाप्तामृतहि कुम्भकोण के नाथ ।
केरल दक्षिणपुर हरिहु बंदे दश दश गाथ ॥

सो० भृगुरस्थल के ईश जिनको नाम बलाढ्य जग।
अस्तुति करी मुनीश तिनहूँ की दश गाथ सौं॥

पुनि आकाशनगर के नायक। लवणाभावतात सुखदायक॥
धन्विक्षेत्रपति पद्मबिलोचन। श्रीमंगलपुरेश दुखमोचन॥
पायो नाम देवनायक जिन। बन्दे दश दश गाथन सबहिन॥
बहुरि तेजपुर हरि सुखदाई। बन्दन किये सहसफणशाई॥
रंगनाथ बन्दन पुनि कीने। शठजित परमभक्ति रसभीने॥
रामनगर अपूपरङ्गेश्वर। पुनि गाये सप्रेम कुरकेश्वर॥
तिरुवारन्विल केरलदेशा। राजत श्रीपति सुन्दर वेशा॥
वृहत्तटाक पांड्य के माहीं। चौरनाट्य श्रीकृष्ण तहांहीं॥
बन्दन कीन्हे सोउ गुरुज्ञानी। प्रीति सहित तन मानस बानी॥
प्रकटे सब निज सुन्दररूपा। लहि शठजित को प्रेम अनूपा॥

दो० केरल में परिसार पुर हरिमायाबी नाम।
बचन सुमन पूजन किये सोउ गुरुवर सुखधाम॥
सो० क्षुद्रनदी के माहिं अच्युत नाम रमेश जो।
अस्तुति करि तिन काहि कियो प्रसन्न शठारि मुनि॥

सौरभपुर पुनि राजगुपाला। तिनहूँ दरस दियो तेहि काला॥
लहत भये अस्तुतिमय चन्दन। पुनि गुरु आदिनाथ किये बन्दन॥
व्याघ्रपुराधिप सुनु वेदान्ती। चिंचाकुटि पुनि गुरु एकान्ती॥
शेषशयन श्रीनाथ रिझाये। दश दश गाथन सौं सब गाये॥
पुनि बैकुण्ठ नाम इक हरिथल। तहँ बैकुण्ठनाथ करुणाचल॥
श्रीमद्वरगुण मंदिर दूजे। एक एक गाथा रचि पूजे॥
कार्करथल हरि मूलिकला पुनि। तिरुनावाय नाम हरि कौ मुनि॥
दश दश गाथन बंदन कीन्हो। शौरिराज पद पुनि मन दीन्हो॥
श्रीमत्कृष्णनगर जिन बासा। बन्दे तिमि सोउ ज्ञाननिवासा॥
मोहरथल में कालमेघहरि। किये प्रसन्न दश गाथ गान करि॥

दो० पद्मनाभ अनंत दोउ हरि निज सन्मुख देखि।
दश दश गाथ रिझाये भाग्य सुफल निज लेखि॥

सो० केशवाख्य भगवान केरल देश निवासि पुनि ।
शठजित प्रेम निधान पूजन किय दश गाथ रचि ॥

याबिधि सौं सब बिष्णुथलन की । किय शठारि कैंकर्य बचन की ॥
ते सब थलपति अस्तुति रूरी । सुनि संतोष लहत भये भूरी ॥
नंदनँदन अवतार मझारी । अति अपार सौंदर्य निहारी ॥
बहुरौं दधि माखन की चोरी । करि बिचार मोहे मुनि धोरी ॥
सब अवतारन ते अधिकाई । भये अति प्रेम बिवश गुरुराई ॥
तीनिबार करि मास अठारा । शठजित् मूर्छा लही अपारा ॥
चारि ग्रंथ पूर्बोक्त प्रकारा । बिरचि लोक रक्षण उर धारा ॥
ताहित जे सज्जन जन जाने । मधुरकबीश आदि शुभ माने ॥
तिनकौ कृपा बिबश उपदेशा । करि कृतकृत्य भये गुरुवेशा ॥
सुख समेत बत्सर पैंतीसा । सपरज्ञान परभक्ति मुनीसा ॥

दो० परमाभक्ति समेत पुनि अस्थित भये दिन रैन ।
प्रेमपूर्ण राजत सदा पद्मासन सुखअयन ॥
सो० क्षुधा पिपासा हीन रहित मूत्र मल सौं सदा ।
हरिपद रस मन मीन करि धारत पोषत तनहि ॥

दरसन सौं परभक्ति बखानत । संगम पर[illegible]नहि बुध मानत ॥
परमाभक्ति कहत हैं ताही । संगम में बिछुरन डर जाही ॥
इमि बैष्णव भूषण शठ नासी । चिंचातरुवर मूल निवासी ॥
पितु मातहु निज बैभव भारी । हरि बिषाद किये परम सुखारी ॥
शिष्य प्रशिष्य बंश निज पावन । रबि शशि थितिलौं थप्यो सुहावन ॥
कियो सुरन पूजन बहुबारा । तब बैकुंठनगर पगु धारा ॥
नित्य सूरिगण पंक्ति मझारी । पायो बास परम सुखकारी ॥
कुरका अबहुँ परत हैं हेरे । मूल पुरुष प्रपन्न कुल केरे ॥
उनको बिशद सुयश जे लोगा । गावत सुनत प्रीति संयोगा ॥
तिनकौ कछु दुर्लभ जग नाहीं । उभय लोक सुख सुलभ सदाहीं ॥

दो० जे श्रीमत् शठकोप गुरु सेवत भक्ति समेत ।
ते जन तिहुँ पुर के फलन करामलक करि लेत ॥

सो० इन सम दूजो नाहिं भगवद्धर्म प्रकाशकर ।
भक्ति न जग के माहिं ताते इनकी भक्ति सम ॥

इतिश्रीप्र० श्रीशठकोपस्य श्रीरङ्गेशादि प्रत्यक्षोनाम
पंचशततमोऽध्यायः ॥ १०५ ॥

अस्मदादि गुरु सौं पुनि बोले । चरणबंदि वर बचन अमोले ॥
गुरु कैंकर्य मधुरकवि जगबिधि । करी सो कहौ बिशद करुणानिधि॥
कहत भये तब गुरु करि दाया । शठजित प्रथम शिष्य कबिराया ॥
दिव्य प्रबन्ध प्रभाव अपारा । कियो तासु भलिभांति प्रसारा ॥
जाकौं गाय मुमुक्षु अशेषा । निष्ठ पंचमोपाय बिशेषा ॥
भये कृतारज सुलभ प्रकारा । अवशि चरमप्रबन्ध के द्वारा ॥
गुरु अर्चा लघु रच्यो सनिष्ठा । यथा शास्त्र करि प्राणप्रतिष्ठा ॥
कुरकापुर तिंचातरु मूला । जहं गुरु बसे हरण जन शूला ॥
बिचित्र मंडप रचि पधराये । बहुरि महोत्सवहू करवाये ॥
इमि बहुबिधि गुरुबर्य प्रकासा । करि थित भये तहँ सहित हुलासा॥

दो० सहसगीति के देवता कारिपुत्र कुरकेश ।
शठाराति परबादि गज अंकुश सम गुरवेश ॥
सो० द्रविड़ागम के नाथ पुनि कर्त्ता कबिकंठिरव ।
इमि गुरुयश की गाय काहलिनाद सुनात नित ॥

देशन देशन में यह भांती । प्रकटाई गुरु कीरति क्रांती ॥
द्राविड़देश माझ तेहि काला । कम्ब नाम कबि भयो बिशाला ॥
जीते बहु कबि जन जग केरे । जिनहि ज्ञान अभिमान घनेरे ॥
रहत त्रिशत कबि शिष्यन संगा । मधुरामें करि गर्व अभंगा ॥
आये कुरकापुर के माहीं । तासु शिष्य काहलि रव काहीं ॥
रोकत भये सो बल करि भारी । शठजित बिभव न सके सहारी ॥
चकित मधुरकबि तिनहि बुलाई । पूछत भये तिनसौं अतुराई ॥
काहे कौ तुम सब यहँ आये । तजि स्वदेश किन तुमहिं पठाये॥
शठजित हरिरससिंधु अगाधा । क्यों कीनो तिनको अपराधा ॥

तब बोले ते करि अभिमाना। कम्ब नाम कबिराज महाना॥

दो० बिद्या बारिधि तेजनिधि तिनके हम सब लोग।
त्रिशत शिष्य बिद्वान कबि तिन आयसु संयोग॥

सो० आये यापुर माहिं सिंहासनपति मुकुटधर।
सुनि काहलि रव काहि क्रोध भयो हमकौ अधिक॥

हमरे गुरु बिद्वान धुरन्धर। बिद्यमान जीते जिन बुधबर॥
शठजित द्रविड़ वेदपति ऐसे। सुनिके श्रवण सहैं हम कैसे॥
कम्बकबीशहि जीतै जोई। शङ्खपीठ पग धारै सोई॥
तब उनके यश कौं सो पावै। पुनि सो ऐसो बिरद बुलावै॥
याबिधि सौं सुनि तिनकी बानी। लीनी मानि मधुरकबि ज्ञानी॥
उत्तर देत भये तिन काहीं। जात हमारे गुरु कहुँ नाहीं॥
तातें उनकी दिव्य सूक्तिबर। लिखि पत्रिका देत तुमरे कर॥
कम्ब समीप ताहि लै जावो। उनको सब वृत्तान्त सुनावो॥
जो वह शङ्खपीठ यह पाती। धारण करै तौ शठआराती॥
द्रविड़ाम्नाय देव जग माहीं। हैं सांचे कछु अनुचित नाहीं॥

दो० ऐसे निर्णय करिदई पत्री लिखि तिन काँहि।
लै सो अपने गुरु निकट पहुँचे मथुरा माँहि॥

सो० सब वृत्तांत सुनाय दई पत्रिका कम्बकर।
अस्मद्यति मनलाय शंखपीठ महिमा सुनौ॥

दक्षिण मथुरानगरी गायो। बिद्वानन को पीठ सुहायो॥
पंडित परम धीर जो होई। धारत तिहि निज ऊपर सोई॥
औरन कौ सहिसकत सो नाहीं। फेकि देत पृथ्वीतल माहीं॥
बैठे तापर त्रिशत कवीश्वर। कम्ब सहित बिद्वान धुरंधर॥
तामधि कम्ब धरी वह पाती। लिखित सूक्ति श्रीशठआराती॥
दिये फेकि सब कबितेहि काला। शठजित पत्र राखि निजभाला॥
कम्ब कवीश्वर तब करि निष्ठा। धरो माथ वह पत्र गरिष्ठा॥
कुरकानगर शीघ्र चलि आयो। शठजित चरणकमल शिर नायो॥
बिरचि गाथ कछु तिन यश गायो। अरु अपनो अपराध क्षमायो॥

तैसेहि त्रिशत कबिनहूँ गाईं । प्रथक प्रथक निज गाथ सुहाईं ॥

दो० क्षमा करायो बंदिपद अपनो कृत अपचार ।
याबिधि सौ श्रीमधुरकबि जग मे बिबिधिप्रकार ॥

सो० गुरु यश कियो प्रकास बिष्णुधर्म की बृद्धि हित ।
कुरकानगर निवास करि सब जग रक्षण करत ॥

तत्वदर्शि सब सद्गुण खानी । शुद्ध सत्वमय गुरु बिज्ञानी ॥
तिनके दिव्य प्रबन्ध मोक्षकर । शास्त्रसारतम नारायणपर ॥
तिन्है मधुरकबि प्रेरित पढ़िके । गये परधाम भवाम्बुधि कढ़िके ॥
भये अमित जन परम तत्ववित । हरि पारायण अरु मायाजित ॥
याही ते वेदान्त द्रविड़ को । कहियत साधन ज्ञान सुदृढ़ को ॥
ज्ञान बिना पुनि मोक्ष न होई । यह श्रुति सिद्ध जान सब कोई ॥
याबिधि सौं सो मोक्षप्रदायक । अति मुमुक्षु जन सेवन लायक ॥
शब्द शास्त्र आदिक जो परिश्रम । नहीं मोक्षप्रद जानौ तजि भ्रम ॥
याबिधि दिव्य प्रबंधन द्वारा । बैष्णावमत लहि वृद्धि अपारा ॥
पुनि अप्रकाश सदृश बैष्णावमग । काहु हेतु कछु काल रहो जग ॥

दो० तब शठजित के शिष्यबर नाथ मुनीश सुजान ।
तिन बैष्णव सिद्धांत को गौरव कियो महान ॥

सो० रक्षण कियो बहोरि कमलनयन तिन शिष्यबर ।
बहुरौं बैष्णावधोरि राममिश्र पालन कियो ॥

राममिश्र के शिष्य उजागर । यामुनमुनि भये बिद्यासागर ॥
तिनहूं भलीभांति सौं रक्षण । कीनो बसि श्रीरंग बिचक्षण ॥
तिनके शिष्य महापूर्णादी । तिन बैष्णाव सिद्धान्त अनादी ॥
दियो यतीश्वरकौ तिन बिधिवत । कियो प्रकाश बिपुल यह सन्मत ॥
चहुँ समुद्र परयंत प्रचारा । श्रीभाष्यादि बिरचि सुखसारा ॥
तिनपै पुनि गोबिंद गुरु पायो । उन करि कृपा मोहि सिखरायो ॥
मोपै ते पायो तुम जैसे । होनहार गुरु पैहैं तैसे ॥
तिनके द्वार यतीश कृपा ते । पुनि उनके प्रभाव अरु नाते ॥
रहि है भूतल माझ प्रकाशित । कल्प प्रयंत अखंड सुवासित ॥

दिव्य सूरिबर चरित अगाधा । जो तुम मोहि पूछो करि साधा ॥

दो० सो मैं यथाशक्ति कछु माधवदास सुजान ।
देशिक कृपाकटाक्ष ते तुम सौं कियो बखान ॥
सो० अब तुमरे मन माहिं सुनिबे की इच्छा जो कछु ।
होय सो अब हम पाहिं पूँछौ बरनै और सो ॥

इतिश्रीप्र० शठजित दिव्यसूक्तिपत्रिका कम्ब शङ्खपीठा-
रोहणान्नाम षटशततमोऽध्यायः ॥ १०६ ॥

अस्मद्यति गुरु पद शिर नाई । पूछत पुण्य कथा हरषाई ॥
हे गुरु नाथमुनीश कथा अब । मोहि समुझाय कहौ कृपाल सब॥
काके सुत केहि बंश कहांके । कैसे लुप्त प्रबन्ध प्रकाशे ॥
शठजित जब प्रबन्ध निर्मयेऊ । तीनि सहस सम्बत गत भयेऊ॥
नाथमुनी तब लिय अवतारा । इमि सुनियत गुरुदेव उदारा ॥
तिनकौ शठजित पद सम्बन्धा । काबिधि भयो सो कहिये निबंधा॥
सुनि बोले भट्टार्य कृपाला । सुनौ तात गुरु चरित रसाला ॥
बसत चोलतुण्डीर मध्य जो । मध्यदेश जगमैं प्रसिद्ध सो ॥
नगर बीरनारायण निरुपम । तहं ईश्वर भट नाम द्विजोत्तम ॥
तिनके गृह कलिगत शत बत्तिस । अरु बीते जब सम्बत चौबिस॥

दो० शुभकृत् सम्बत्सर बिमल राका जेष्ठ सुमास ।
बुध दिन अनुराधा नखत नाथमुनीश प्रकास ॥
सो० हरि मंत्री सेनेश तिनके मंत्री गजबदन ।
तिनके अंश बिशेश कियो अवतरण नाथमुनि ॥

भये तेजनिधि यश गुणखानी । सकलशास्त्रवित हरिजन ज्ञानी॥
राजगोपाल चरण अति प्रीती । सेवत निशिदिन किंकर रीती ॥
जन्म्यो ईश्वर नाम पुत्रबर । तद्यपि बिमोहरहित श्रीपति पर ॥
दिव्यदेश दरसन अभिलाषा । भई तब गये गोपाल अवासा ॥
तिनकी आज्ञा लहि कुटुंब युत । उत्तरदिस प्रस्थान कियो द्रुत ॥
गये श्रीमुष्णा प्रथम चितचाये । भूबराह के दरशन पाये ॥
करि सेवा तहं गये गोपपुर । बंदि त्रिबिक्रम देव भक्तिधुर ॥

तहंते पुनि गवने घटिकाचल । पूजे तहां नृसिंह अमृतफल ॥
किय तुण्डीरमंडलहि जाई । क्रम सौं सब हरिथल सिवकाई ॥
बहुरि रमासख बंदन कीने । गये अहोबल प्रेम प्रवीने ॥

दो० गरुड़ाचल पुनि जायके पूजे नरहरिदेव ।
पांडुरंग किय जाय मुनि बिट्ठल हरि की सेव ॥
सो० कूर्मस्थल के माहि कूर्मनाथ सेवा करी ।
गवने मथुरा काहि बालकृष्ण बंदे तहाँ ॥

मायापुरि मधुसूदन बन्दे । पुनि गोबर्द्धन जाय अनन्दे ॥
गोप वेष तहं हरि सुखदाई । गये भवघ्न बहुरि मुनिराई ॥
पद्मनयन तहं नयन निहारे । प्रमुदित भये नाथ मुनिभारे ॥
गिरिगोमंत शौरि भगवाना । बहुरि गये हरि द्वार सुजाना ॥
तहां जगतपति हरिहि मनायो । गंगासागर पुनि मन लायो ॥
पूजे बिष्णु नाम श्रीपति तहं । बहुरौं चित्रकूट रघुपति जहं ॥
नंद सूनु वृन्दाबन माहीं । कालीहृद गोबिंद हरि काहीं ॥
बदरीबन नारायण स्वामी । बन्दे हरि नैमिषबन धामी ॥
हरिक्षेत्र में शालिग्रामा । रघुबर अवधपुरी सुखधामा ॥
याबिधि सौं मुनि उत्तरदेशा । हरिथल बन्दन किये अशेशा ॥

दो० पुनि यमुनातट मुदित मन गये गोबर्द्धन ग्राम ।
अद्भुत कृष्ण निहारि तहँ लह्यो मोद अभिराम ॥
सो० कियो प्रणाम सप्रेम पुनि तिनको सौंदर्य लखि ।
कछुक काल करि नेम बसे तहाँ श्रीनाथ मुनि ॥

स्वप्न माझ तब राजगोपाला । मुनिबर सौं कह बचन कृपाला ॥
हमरे निकट तात अब आवहु । बहुत कहूं जिनि बिलम लगावहु ॥
स्वप्न त्यागि तब मुनि बिज्ञानी । बिस्मित प्रभु करुणा मनमानी ॥
पितु सुत सौं सम्मति तब कीनी । तहं के हरि सौं आयसु लीनी ॥
चले बीरनारायण सेवा । करन संग हरि कृपा कलेवा ॥
काशी जाय गये पुरुषोत्तम । जगन्नाथ पद बंदि द्विजोत्तम ॥
तहंतें चलि सिंहाचल जाई । नृहरि चरण पूजे मन लाई ॥

अक्षरजमय बल बीर्य उदारा । ज्ञान शक्ति अरु शौर्य अपारा ॥
जहं ऐसे नरहरि परदेवा । जाय अहोबल कीन्ही सेवा ॥
पुनि जहं मायाबी सुखकन्दा । छांड़ि परमपद परमानन्दा ॥

दो॰ श्रीव्येंकटगिरिवर्य पर स्वामिपुस्करणि तीर ।
रमा सहित आनंद युत बिहरत श्रीसख धीर ॥
सो॰ तहाँ जाय मुनिनाथ सेवा करि तन मन वचन ।
निज कुटुम्ब जन साथ बहुरौं घटिकाचल गये ॥

तहां अमृतफल बंदि नृकेहरि । गये पुनि जहां बिजयराघवहरि ॥
मज्जन कीनो गृद्ध सरोवर । पुनि कांची गये योगि अग्रसर ॥
वरद आदि तहं दिव्यदेशपति । करत भये सबकौं सप्रेमनति ॥
वीक्षारण्य बीरराघव पुनि । पूजे जाय बहुरि सप्रीति मुनि ॥
श्रीनिवासपुर कौ चलि आये । दरस भक्तवत्सल के पाये ॥
रमा सहित तिनकौ प्रणाम करि । महीसारपुर गये मोद भरि ॥
जगन्नाथ पद पूजा कीन्ही । भक्तिसार पदरज शिर लीन्ही ॥
बहुरि गजस्थल मुनि परमार्थी । कैरविनी तट पारथसार्थी ॥
रंगनाथ राघव गजार्त्तिहर । अरु लक्ष्मीनृसिंह करुणा कर ॥
इन सबहिन कौ बन्दन करिके । गये मयूरनगर मुद भरिके ॥

दो॰ जहँ महदाख्य योगिबर प्रकटे ज्ञाननिधान ।
जिनकी कथा अपूर्व मै पूर्व कही बिद्वान ॥
सो॰ लतिकाहृद कौ देखि अचयो जल पुनि केशवहि ।
परम भाग्य निज लेखि मंगल अनुशासन कियो ॥

तोयाचल कौ जाय बहोरी । बन्दे रंगशयन मुनि धोरी ॥
तहंते गये नगर कल्याना । करि कल्याण तीर्थ अस्नाना ॥
कोमल बल्लि समेत बराहा । बन्दन कीने सहित उछाहा ॥
गये महाबल्लिपुर पुनि मुनिवर । मज्जन करि तहं पुंडरीक सर ॥
बन्दि महाबलि भूतलशाई । भूदेवी समेत मुनिराई ॥
हर्षि अहीन्द्रपुरहि चलि आये । तहां देवदेवेश रिझाये ॥
चित्रकूट गोबिंद भगवाना । सेवा करि परमानँद माना ॥

चोलदेश के दिव्यदेश सब। जाय जाय बन्दन कीन्हे तब॥
रंगनाथ पदपंकज बन्दे। मुनिवर कुटुम समेत अनन्दे॥
कुम्भकोण बहुरौं चलि आये। शार्ङ्गपाणि देवेश मनाये॥

दो॰ बास कियो तहँ तीनि दिन करि तीरथ अस्नान।
महिमा जासु मोक्षप्रद कीनी शास्त्र बखान॥

सो॰ आये द्विजकुलदीप तहँते प्रेमातुर तुरत।
राजगोपाल समीप निज पुर हरषि कुटुंबयुत॥

हाथ जोरि ठाढ़े भये आगे। तन मन प्रेम स्वधारस पागे॥
बन्दि चरण युग पूजि सप्रेमा। बहुरि मनायो मंगल क्षेमा॥
यद्यपि पूर्ण ज्ञान मुनिनायक। हरि मंगल के मंगलदायक॥
जानत तद्यपि प्रीति के परबस। आशिष दिय पूर्बहु सुजनन जस॥
श्रीपतिहू तिनपर अनुरागी। अमित भांति कीन्हे बड़भागी॥
प्रेरि अर्चकन तीर्थप्रसादा। तिन्हैं दिवायो करि अहलादा॥
अङ्गमाल निज बहुरि दिवाई। आनँद मग्न भये मुनिराई॥
बहुरि राजगोपाल कृपाला। पुरबासिन बुलाय तत्काला॥
कहो कि इन्है धान्य धन दैके। पूजौ मानि हरण निज भयके॥
पुरबासिन ताही बिधि तात्तन। पूजन कियो भेट करि बहुधन॥

दो॰ पूर्वप्रकार मुनीश तहँ बसत भये सानन्द।
सेवत पूरण प्रेम मन श्रीपति करुणाकन्द॥

सो॰ वेद शास्त्र उपदेश शिष्यगणन कौ करि कृपा।
बैष्णवधर्म अशेश करत सदा आनंद युत॥

इतिश्रीप्र॰ नाथमुनि तीर्थयात्रानाम सप्तशततमोऽध्यायः१०७॥

तापाछे बैष्णवबर कोई। पश्चिम ते आये तहं सोई॥
राजगुपालहि कियो प्रणामा। पढ़ीं गाथ दश अति अभिरामा॥
जे श्रीशार्ङ्गपाणि उद्देशा। रचीं पूर्व शठजित गुरुवेशा॥
सो सुनि नाथमुनीश सुजाना। अति प्रमुदित ह्वै बचन बखाना॥
पण्डित यह प्रबन्ध अति प्यारो। लागत मोहि तेहि सकल उचारो॥
करौ कृपा करि सब पारायण। तुमपर कृपा करैं नारायण॥

बोले बैष्णव मुनि सौं याबिधि । जानत हम इतनहि करुणानिधि ॥
याहि समग्र न जानत कोई । पुस्तकहू कहुं सुनी न जोई ॥
यह सुनि मुनि मनमैं अकुलाई । तिनकौ तीर्थप्रसाद दिवाई ॥
ते दश गाथ ग्रहण करि लीन्ही । ग्रंथ प्राप्ति हित चिंता कीन्ही ॥

दो० कुम्भकोण कौ जाय तब करि अष्टांग सुयोग ।
शार्ङ्गपाणि हरि प्रकट किये हरण प्रणत भव रोग ॥
सो० ह्वै प्रसन्न कमलेश मुनिवर सौं बोले वचन ।
कुरकापुर कुरकेश ताम्रपर्णि सरिता निकट ॥

शठजित सहसगीति निर्माई । उनके निकट पढ़ौ तहं जाई ॥
सुनि हरि बचन चरण शिर नाई । कुरुकानगर गये अतुराई ॥
आदिनाथ बन्दे तहं जाई । अरु शठजित अर्चा सुखदाई ॥
चिंचातरुतर सहित मधुरकबि । लखि प्रणाम कीनो अतिशयनबि ॥
तहां परांकुशदास नाम कोउ । बैष्णावबर गुरुभक्ति निरत सोउ ॥
तिनसौं पूछो नाथमुनीसा । बिनय समेत नाय पद सीसा ॥
शठजित दिव्यसूक्ति को ज्ञाता । है कोउ यहां कहौ सुखदाता ॥
बोले सुनि बैष्णाव तब सोई । रहे पूर्व अब नहिं अस कोई ॥
ना अब कहुं पुस्तक जग माहीं । ताको हेतु सुनौ हम पाहीं ॥
जब शठजित वेदन को सारा । बिरचि प्रबन्ध कियो उद्धारा ॥

दो० द्राविड़ि भाषा मे किये चारि प्रबन्ध बिनीत ।
सहसगीति पुनि सबन मे बिरची परम पुनीत ॥
सो० सो वह ग्रंथ अनूप मधुरकबिहि उपदेश करि ।
वे योगिन के भूप गये बिष्णु के परमपद ॥

तब जिन जिन वह ग्रंथ उदारा । पढ़ि समाप्त कीनो इकबारा ॥
कीन्हे त्याग सकल अघ ओघा । तुरत गये हरिधाम अमोघा ॥
जग जीवन जीवन अति प्यारो । ताते ताको पाठ बिसारो ॥
मारक मानि ग्रंथ वह पावन । मूढ़न कीन्हो मंत्र अपावन ॥
जो जगमें यह ग्रंथ रहैगो । बिनु जाने कोउ पाठ करैगो ॥
मरि जैहै निश्चय सो प्रानी । याते ग्रंथ नाश शुभदानी ॥

यह गुनि ताम्रपर्णी के माहीं । दीन्हो बोरि ग्रंथ सहसाहीं ॥
तबतें द्रविड़वेद वह रूरो । भयो बिलुप्त मोक्षप्रद पूरो ॥
हरि सङ्कल्प पत्र इक ताको । बहत जात तट लोगन ताको ॥
पढ़ो काढ़ि दश गाथ सुहाईं । शार्ङ्गपाणि अस्तुतिमय पाईं ॥

दो० जानि विलक्षण अर्थबर काव्य मधुर अति देखि ।
ग्रहण कियो वह पत्र वर अति अचरज मन लेखि ॥

सो० दश गाथा सोई शेष जानिये अब विद्वान जग ।
तुमहि जो तुरा बिशेष प्रापति द्रबिड़ाम्नाय की ॥

तौ हम यत्न कहैं तुम पाहीं । किये व्यर्थ ह्वैहै वह नाहीं ॥
ग्यारह गाथ युक्त प्रबन्धइक । कियो मधुरकबि शठजित बिषयक ॥
सो हमको आवत है नाथा । द्वादश सहस करिय तिहि पाठा ॥
तौ शठकोप मुनीश कृपाला । करिहैं तुमपर कृपा बिशाला ॥
तब वह सकल प्रबन्ध अलौकिक । दीहैं अवशि तुमहिं करुणाधिक ॥
तिनको बचन परम हित मानी । तैसेहि कियो नाथमुनि ज्ञानी ॥
ग्रहण कियो प्रबन्ध वह तिनसौं । शठजित निष्ठ बचन तन मनसौं ॥
उनके अर्चा बिग्रह सन्मुख । बैठि मधुरकबि अस्तव तजि दुख ॥
द्वादश सहस जपो सहसाहीं । धारि अखण्ड भक्ति मन माहीं ॥
कृपासिंधु शठजित तेहि काला । भये प्रसन्न लखि प्रेम बिशाला ॥

दो० सहसगीति कौ आदि लै निज प्रबंध सुखरास ।
तिनसौ कहत भये सकल जिमि बानी आकास ॥

सो० जैसे नन्दकुमार अर्जुन कौं उपदेश किय ।
गीताशास्त्र उदार नाथमुनिहि शठकोप तिमि ॥

उपदेशो रहस्यत्रय बिधिवत । अरु तत्वत्रय कहो दयावृत ॥
दिव्य तंत्र आदेश कियो पुनि । योग आठ अँग अधिकारी गुनि ॥
हरि सिद्धांत समस्त बतायो । सब प्रकार कृतकृत्य बनायो ॥
होनहार गुरुवर बिग्रह पुनि । दियो तिन्है अति कृपापात्र गुनि ॥
सहसगीति जे पढ़ैं सुजाना । पावैं मोक्ष देह अवसाना ॥
इमि शठजित निरणाय करि दीनो । जाते भाव होय नहिं हीनो ॥

याबिधि सकल अर्थ अति रूरे । पाये गुरुनायक सौं पूरे ॥
तब अति भक्ति सहित मुनिनाथा । कियो प्रणाम धरणि धरि माथा ॥
आदिनाथ श्रीपति पुनि बन्दे । पाय लाभ अति परम अनन्दे ॥
सेवत गुरुवर पद बहुकाला । बसत भये कुरुका शुभमाला ॥

दो० वेदान्ती सुनि मुदित ह्वै पूछो गुरु सौ बयन ।
उपदेशे मुनि नभगिरा शठजित करुणा अयन ॥

सो० दियो कौन बिधि नाथ, गुप्त दशा अर्चा बपुष ।
कहौ स्वच्छ सो गाथ को भविष्य गुरुरूप कस ॥

भट्टारक देशिक बिज्ञानी । ह्वै प्रसन बोले तब बानी ॥
सुनौ तात मैं तुमहिं सुनाऊं । दिव्य गुप्त अति चरित बताऊं ॥
जब सर्वार्थ नाथमुनि योगी । पाये गुरु सौं हरिरस भोगी ॥
शठजित कौ तब बिबिधि निहोरी । बिज्ञापन कीन्हो कर जोरी ॥
प्रभु तुम सहसगीति के माहीं । कह अवतरन महामुनि काहीं ॥
तासु अर्थ मोहिं कहौ कृपाला । तब शठजित करि कृपा बिशाला ॥
आपहि ह्वै भविष्य गुरुरूपा । इक शिल्पिहि दै दरस अनूपा ॥
सपने ताहि कहो हरषाई । ऐसो बिग्रह देउ बनाई ॥
मम सन्निधी नाथ योगी कौ । देउ हमार भक्ति भोगी कौ ॥
सोवत ते जगि शिल्पि सुजाना । तैसोई बिग्रह करि निर्माना ॥

दो० दियो नाथ योगीश कौ तिन पूजो अति प्रीति ।
पुनि दीनो पद्माक्ष कौ जे निज शिष्य पुनीत ॥

सो० सो दीनो पद्माक्ष राममिश्र कौ तिन बहुरि ।
करिके कृपाकटाक्ष यामुन मुनिवर कौ दियो ॥

यामुन गोष्ठीपूर्णहि दीन्हो । निज दुहिता पर तिन हित कीन्हो ॥
श्रीदेवकी नाम जग जाही । दीनो वह बिग्रह तिन ताही ॥
गोष्ठीपूर्ण यतीशहि जबहीं । मंत्रप्रदान करत भये तबहीं ॥
बिग्रह देखि परो सो नाहीं । अन्तरभाव भयो यति माहीं ॥
यह रहस्य जिमि हम सुनि पायो । तुम्हरी रुचि लखि तुमहि सुनायो ॥
ताते श्रीरामानुज स्वामी । बिनु सन्देह परमपद धामी ॥

उनको पद सम्बन्ध भरोसो । मोक्ष माहिं हम सबन खरोसो ॥
पोलिहादि गाथार्थ रूप जो । होत भये यतीश तिन सम को ॥
ताते सबके मोक्ष प्रदायक । निश्चय करि जानौ यतिनायक ॥
जहँ भविष्य गुरु बपुष समाना । तिन समान गुरुवर को आना ॥

दो० नाथमुनीशहि आदि गुरु शठजितादि योगीश ।
सोउ उनके सम्बन्ध ते मोक्ष प्रदानाधीश ॥
सो० पूर्व कह्यो भगवान ऋषिहारीतहि इमि बचन ।
सुनियै भाग्यनिधान धर्मनिष्ठ कलिकाल मधि ॥

तुमरे गोत्र भक्त मम कोई । ह्वैहै सकल धर्मवित सोई ॥
शारीरक सूत्रन के ऊपर । महाभाष्य बिरचि है सो भू पर ॥
इन्द्रीजित गुणनिधि समुदाई । तासु शिष्य सम्बन्धहि पाई ॥
सुर दुर्लभ परगति नर पैहैं । बिनु प्रयास मम धाम सिधैहैं ॥
वेदान्ती सोई यतिकुल भूपा । सुनियै अपर परत्व अनूपा ॥
कोउ यतीश प्रिय शिष्य सुजाना । गुरुपद गहि इमि बचन बखाना॥
सुनौ नाथ बिज्ञापन मेरो । यादवगिरि महात्म्य मैं हेरो ॥
प्रथम रूप अनन्त अभिरामा । लक्ष्मण द्वितिय तृतिय बलरामा॥
तासु चतुर्थ रूप अप्राकृत । ह्वैहै कलियुग माहिं दयावृत ॥
सो वह रूप कौन सो स्वामी । बिनवत भये औरहु अनुगामी ॥

दो० जव अति हठ शिष्यन कियो बोले गुरुवर वयन ।
हमहीं है सो सुनि सकल होत भये मुद अयन ॥
सो० ताते भूतल माहि गुरुपुंगव रामानुजहि ।
यामें संशय नाहिं मुक्तिदानि संसार के ॥

अस्मद्यति सुनि गुरुवर बानी । गत सन्देह तोष उर आनी ॥
बोले पुनि गुरु चरण निहोरी । पाय समस्त अर्थ मुनि धोरी ॥
फिरि कह कियो नाथ योगीशा । सो सब चरित कहौ मोहिं ईशा॥
गुरु बोले सुनु माधवदासा । नाथ योगि लहि परम सुपासा ॥
बिसरि राजगोपाल दास्यवर । शठजित गुरु सेवा अति तत्पर॥
सर्वोत्तम प्रवन्ध उनकेरे । पढ़त मानि आनन्द घनेरे ॥

वसत भये कुरुकानगरी महँ। चिंचातरु ढिग गुरु मूरति जहँ॥
ह्वै प्रमुदित तब राजगोपाला। स्वप्न माझ दिय दरस कृपाला॥
आवहु शीघ्र हमारे पुर अत्र। दिव्य प्रवन्ध मिलै तुमकों मत्र॥
ते समादि गुण युक्त वैष्णवन। ह्वै जग रक्षण करौ तपोधन॥

दो० जागि स्वप्न वृत्तांत सब हरि गुरुवरहिं सुनाय।
तिनकी आज्ञा पाय कै चले चरण शिरनाय॥
सो० कुम्भकोण कौं जाय वन्दे शारँगपाणि हरि।
तिन अति हर्ष बढ़ाय दिव्यसूरि मुनि सौं कह्यो॥

दिव्य प्रबन्ध विलुप्त उधारे। ताते हरि प्रसन्न भये भारे॥
दिव्यसूरि कहि तिनहि सुनायो। आपहु नाम बुधन सों पायो॥
अपरियाप्तअमृतआचारज। तब मुनि धरि शिर तिन चरणनरज॥
गये बीरनारायणपुर कौं। बन्दे राजगुपाल भक्ति सौं॥
अरु उनके समीप प्रबन्ध ते। पढ़त भये पाये गुरु सौं जे॥
पुनि वह द्राविड़शास्त्र पुनीता। राजगुपालायसु द्विजदीपा॥
श्रीवैष्णवन जानि अधिकारा। उपदेशे गुनि जग उपकारा॥
पुनि विचार कीनो मन माहीं। शठजित करि करुणा हम काहीं॥
शीघ्र गूंथ सब दिये कृपाला। जो हम करैं प्रवचन बिशाला॥
जिहि बिस्तार होय जग माहीं। है अतिशय अवश्य हम काहीं॥

दो० तौ ह्वैहै कछु निस्क्रिया उनकी कृपा अमोलि।
तब द्वै निज भगिनी तनय लिये तुरतही बोलि॥
सो० तिन्हैं सिखाय सुजान देवगान शिक्षा बिमल।
संयुत वेद विधान स्वर उदात्त अनुदात्त युत॥

वेदव्यास जिमि वेद मझारी। स्वरन कल्पना रची विचारी॥
तिमि गोपालराज के आगे। गान करावत अति अनुरागे॥
उत्सवादि में ते महान नित। देवगान निज मातुल सिक्षित॥
करत भये जिमि लवकुशबीरा। रामायण गाई मतिधीरा॥
अरु तबहीं ते सुनु वेदान्ती। रंगादिक सन्निधि एकान्ती॥
नाथयोगि आज्ञा अनुसारा। करत प्रबन्ध गान सुखसारा॥

अबलौं सब थल तासु प्रचारा । देखि परत बैष्णवगण द्वारा ॥
सादर वेदपाठ की नाईं । होत सदैव गान सब ठाईं ॥
याबिधि सौं श्रीनाथमुनीसा । श्रीनायक आज्ञा धरि सीसा ॥
किये बिलुप्त गूंथ उद्धारा । सम्प्रदाय थापी सुखसारा ॥

दो० उपदेशे बहु शिष्यगण जानि वेद को सार ।
तिनमैं भये कमलदृग उत्तम शिष्य उदार ॥
सो० बैष्णवधर्म प्रकाश करत भये योगीश अति ।
जगत जनन दुख नाश प्रचरित करि द्रविड़ागमहिं ॥

## इतिश्रीप्र० नाथमुनेर्भविष्यदाचार्य्य बिगूहप्राप्तिर्न्नाम अष्टशततमोऽध्यायः ॥ १०८ ॥

बारांगना युगल तिहि काला । गान कला दोउ निपुण बिशाला ॥
इक नरगान कुशल पुनि दूजी । देवगान बिद्वान अदूजी ॥
निजनिजगुण अभिमत मनमानी । चोल नृपति ढिग गईं हठठानी ॥
जोरे तहँ नृप पंडित भारे । गानशास्त्र के जानन हारे ॥
कीन्हो तब दोउ बेश्यन गाना । देवगान तहँ कोउ नहिं जाना ॥
ताते देवगानवति केरो । भयो तहां अपमान घनेरो ॥
मर्त्य गान सब कोउ पहिचाना । ताते भयो तासु सन्माना ॥
इमि तिहि राजसभा सुर गायनि । पाय अजय भई लाज परायनि ॥
कियो बिचार बारतिय तब इमि । आदर करैं ज्ञान बिनु नर किमि ॥
देवगान कौ जानत देवा । करिहौं अब तिनहीं की सेवा ॥

दो० राजसभा तब तजि तुरत हरि धामन मे जाय ।
करति भई सुरगानबर कमलाकांत रिझाय ॥
सो० चलति चलति वह बाम बीरनरायणपुर गई ।
राजगुपाल सुधाम करति भई सुरगान वर ॥

नाथयोगि सुरगान प्रवीने । सो सुनि भये तोषरस भीने ॥
तीर्थप्रसादादिक तिहि द्यायो । बारमुखी मन अति सुख पायो ॥
योगिराज पदबंदि सो बाला । गई चोलनृप ढिग तिहि काला ॥
तिनसौं करी प्रार्थना याबिधि । महिमण्डल योगीश ज्ञाननिधि ॥

नगर बीरनारायण माहीं। देवगान के पण्डित आहीं॥
बैष्णव श्रेष्ठ नाथमुनि नामा। चोलराज तब करि सन्माना॥
नाथयोगि बोले निज धामा। करत भये बहु आदर सामा॥
पूजन करि तिनको अति राजा। बहुरौं जोरो गान समाजा॥
बारमुखी दोउ पुनि बुलवाईं। तिन निज गान कियो तिहिठाईं॥
मनुजगान सबहुन सुख माना। देवगान योगीश सुजाना॥

दो० नृप पूंछो सुरगान को भेद योगिपति काहि।
सो बरनो समुझाय तब नृप हरषे मन माहिं॥
सो० पूजे करि अति प्रीति बहु धन अरपो पदकमल।
मुनि निज बैदिकरीति ग्रहण कियो नहि शुनि अशुचि॥

कहो राज धन काज न हमरे। हम प्रसन्न भावहिं सों तुमरे॥
योगिराज की कृपा प्रभावा। राजप्रसाद बारतिय पावा॥
बहुरौं सहित तोष अह्लादा। चोल नृपहि दै आशिर्बादा॥
योगिराज निज धाम सिधाये। गोपालहिं सेवत चितचाये॥
लखि तिनको प्रभाव अति भारी। एकादश महान अधिकारी॥
पुण्डरीकदृग कुरुकानाथा। भगिनी सुत दोउ गायक गाथा॥
प्राक् पश्चातनगर के बासी। देवगान रत आनँद रासी॥
लक्ष्मिनाथ श्रीकृष्णादिकसब। भये शिष्य मुनि के सभक्ति तब॥
सबही कौ सिद्धान्त अर्थ बर। उपदेशे मुनिवर करुणाकर॥
मंत्ररत्न माहात्मि सुनायो। अति विचित्र बल बीर्य सुहायो॥

दो० सब बेदन को सारतम शुभकारक अति सोइ।
परम सनातन मोक्षप्रद मंत्ररत्न भ्रम खोइ॥
सो० पुनि सहस्रगीत्यादि द्रविड़बेद सुखदायि सब।
निगमागमहुँ अनादि उपदेशो अंगन सहित॥

पुनि अष्टांगयोग कछु काला। करत भये मुनिवर्य कृपाला॥
उठि समाधि ते पुनि मुनिराया। न्यायतत्व शुभ ग्रंथ बनाया॥
बहुरि पुरुष निरणय निरमायो। योगरहस्य तृतियपुनि गायो॥
बेगि पढ़ाय शिष्यगण काहीं। रमे बहोरि योग के माहीं॥

सुनि प्रभाव अतुलित मुनि केरो । चोलनृपहि भयो प्रेम घनेरो ॥
आय तहां सप्रेम पद बन्दे । करि सेवा गृह गये अनन्दे ॥
मुनिनायकहि चोलभूपाला । भासे कृष्णारूप तिहि काला ॥
गोपांगना सहित मन मानी । छांड़ि समाधि भक्ति अति ठानी ॥
पाछे गङ्गानगर प्रयन्ता । धावत गये नाथमुनि सन्ता ॥
पश्चात्त्वादि शिष्य तिनकेरे । बिस्मित संग जाय गुरु घेरे ॥

दो० परिरंभन करि भुजन सौं पूँछो कारण तासु ।
कौन हेतु प्रभु धावहू दासन कहिये आसु ॥
सो० गोप तियन सँग कृष्ण बैठे मो ढिग अयके ।
कहा करत हौ प्रश्न सावधान ह्वै गुरु कहो ॥

मधुर बचन कहि यह मग माहीं । गये यह समुझि परत हम काहीं ॥
तिनके देखन कौ हम ताता । जात रहे यह सुनि गुरु बाता ॥
भये शिष्य सब बिस्मित भारी । भक्ति बिबश गुरुबरहि निहारी ॥
बहुरौं योग माहिं कछु काला । करि व्यतीत योगीश कृपाला ॥
कुरुकानाथ शिष्य निज काहीं । सब बिधि योग्य जानि मन माहीं ॥
देत भये अष्टांगयोगबर । पुनि पश्चात्त बोलि करुणाकर ॥
कही लेउ तुमहूँ यह योगा । तिन आपन कौ जानि अयोगा ॥
कही धरो शव जिहि गृह माहीं । तिहि अष्टांगयोग शुभ नाहीं ॥
तन अवसान लेउँगो नाथा । तब तिनसौं बोले मुनिनाथा ॥
शठजित गुरुकृत ग्रंथ अनूपम । लेउ सहसगीत्यादि हरण तम ॥

दो० यह कहि अतिशय कृपा करि ते सब दिये पढ़ाय ।
निज बिशुद्ध सिद्धांत के सुखद अर्थ समुदाय ॥
सो० बिधिवत करि उपदेश पुनि ईश्वरमुनि पुत्र निज ।
कीनो बोलि निदेश पावन सुत तुम पायहौ ॥

ज्ञानाधिक अरु तेजअपारो । ह्वैहै उभय लोक यशवारो ॥
यामुनार्य ताको तुम नामा । राखि हूजियौ पूरण कामा ॥
पुनि दोउ शिष्यन सौं इमि बोले । सुंदर पावन बचन अमोले ॥
तुमकौ जे सिद्धान्त अर्थ हम । योगरहिस्यादिक परमोत्तम ॥

दिये बिशेष अर्थ ते सबही । पौत्र समर्थ होय मम जबही ॥
ताकौ तुम पढ़ाय सब दीजौ । निज मत को अस्थापक कीजौ ॥
सब बिधि सौं भगवत्परधीरा । इमि कहि भये कृतार्थ मुनिबीरा ॥
भये बहुरि कछु दिन योगस्थित । लीन निरंतर श्रीपति पदचित ॥
चोल भुआल तबहिं तिहि देशा । आये मृगया काज सुवेशा ॥
बिपिन जाय बहुबिधि मृग मारे । बहुरौं निज पुरकौ पगधारे ॥

दो० ह्वै निवृत्त जब योग ते आये मुनि निज धाम ।
पुत्रा तब तिनसौ कहो याबिधि बचन ललाम ॥
सो० पिता अबहि मम ग्रेह द्वै नृप सुत आये रहे ।
तेज पुंजमय देह भागशालि यशवान दोउ ॥

पङ्कजदृग सुकुमार सुवेशा । कुंचित चिक्कन मेचक केशा ॥
कटि कृपाण धनु शर कर माहीं । रूपराशि बरणात न सिराहीं ॥
अतुलितबल दोउ सँग इक बाला । सुन्दरताकी सोम बिशाला ॥
संग और इक बानर भारी । पूछा सादर बचन उचारी ॥
पुत्रि तुम्हारे पितु कहँ आहीं । अबहिं गये यह मारग माहीं ॥
सुता बचन सुनि मुनि मतिधीरा । जाने उर रघुकुलमणिबीरा ॥
अनुज सहित रघुनाथ पधारे । सिय समेत मम गृह पगुधारे ॥
कपिवर संग सो पवनकमारा । निश्चय याबिधि कियो बिचारा ॥
प्रेम मग्न दरसन चितचाये । परबश ह्वै तिहि मारग धाये ॥
मग लोगन सौं पूछत जाहीं । कहत सकल देखे हम नाहीं ॥

दो० ढूढ़े बहुतक ग्राम बन पै कहु पाये नाहिं ।
तब ब्याकुल ह्वैके कियो यह बिचार मन माहिं ॥
सो० महिमण्डल क माहि वे हमकौ लखि परत नहिं ।
तौ बिकुण्ठपुर काहिं गये अवशि दिखराय है ॥

यह बांछा मन आने योगेबर । भये महाप्रस्थानहि आतुर ॥
सर्वोत्कृष्ट रमापति धामा । नित्यानन्द जासु को नामा ॥
सरितोत्तम बिरजा जहं बहई । पुनरावृत्य रहित श्रुति कहई ॥
तेजोमय श्रुतिमय अप्राकृत । एकान्ती अरु ब्रह्मध्यानरत ॥

तिनको वह अस्थान सुहायो । सूरिहृदय नित वेदन गायो ॥
नाथयोगि तिहि पद सहसाहीं । गये राखि गुरुपद उर माहीं ॥
पद्माक्षादि शिष्यगण धाये । ज्यों त्यों करि ढूंढ़त गुरु पाये ॥
प्राण रहित बिग्रहबर देखा । सबहुन मन दुख लहो बिशेखा ॥
ईश्वर मुनि ह्वै दुखित पिता को । कीन्हो संसकार श्रुति भाखो ॥
पुनि पुण्डरीकाक्ष के संगा । आय सदन करि प्रेम अभंगा ॥

दो० बिधिवत चरमकर्म सब कियो वैष्णवन साथ ।
श्रीचूरणपरिपालन अध्येनान्त सुगाथ ॥
सो० सुजन पद्मनयनादि बसनाभूषण सौ तिनहि ।
पूजत भये अहलादि तोपे वहु मृदुवचन कहि ॥

## इतिश्रीप्र० नाथमुनिचरमदशावर्णनन्नाम नवशततमोऽध्यायः ॥ १०६ ॥

नाथयोगि के शिष्य सुहाये । एकादश प्रसिद्ध जग गाये ॥
तिनमें पांच भये परमोत्तम । तिनमें कमलनयन सर्बोत्तम ॥
श्रीबैष्णव सिद्धान्त बिशाला । भये बढ़ावत महि तिहि काला ॥
गुरुथल बसत भये शुभरीती । करि सज्जनन संग अति प्रीती ॥
योग निरत चित कुरुकानाथा । गुरुपुर बसि मन भये सनाथा ॥
युगल भगिनि सुत नाथमुनी के । गुरु आयसु श्रृङ्गेश्वरजी के ॥
निकट जाय सुरगान सुनाई । किये प्रसन्न निज भक्ति सुहाई ॥
बसे तहां शिर धरि गुरुपदरज । पुनि श्रीकृष्णलक्ष्मिनाथारज ॥
कृष्णमङ्गलक्षेत्रहि जाई । निज ब्यापार सकल बिसराई ॥
स्वानबृत्ति धारण करि सोई । गये हरिधाम सकल अघ खोई ॥

दो० यह आख्यान पुनीत सुनि बिस्मित माधवदास ।
गुरुपद बंदन करि हरषि कीनो बचन प्रकास ॥
सो० अचरज मोहि अपार स्वानबृत्ति तिन क्यों गही ।
कहियै सहित बिस्तार किमि सदेह हरिपुर गये ॥

उनकी सकल कथा सुखदाई । मोहिं सर्वज्ञ कहौ समुझाई ॥
कह गुरु सुनौ कथा यह पावनि । ज्ञानभक्तिप्रद कलुष नशावनि ॥

जिमि शठकोपादिक दश सूरी । प्रकटि लोक दुख कीन्हे दूरी ॥
तिमिश्रीकृष्णालक्ष्मिनाथहुगुनि।जिनिअचरजमानौचरित्रसुनि॥
दशसूरिन शरणागति धर्मा । कहो प्रबन्धन पावन पर्मा ॥
ताको अनुष्ठान इन करिके । प्रकट कियो जग हित उर धरिके ॥
बिशद कृष्ण मङ्गलक्षेत्र जहं । प्रकट भये द्विजबर गृहमें तहं ॥
ज्येष्ठ सुमास पक्ष अँधियारे । श्रवण नषत पावन यश वारे ॥
जब पितु सौं पायो उपवीता । ब्रह्मचर्यवृत धारि पुनीता ॥
थोरेहि काल पढ़े सब वेदा । साक्षिमात्र गुरु करि विनु खेदा ॥

दो० पुनि निज सम कुल वेद बिधि करि बिवाह युत नारि ।
पंचयज्ञ पारायणहु भये श्रुतिनीति बिचारि ॥
सो० अंगन युत सब वेद औरहु सब सत्शास्त्र मधि ।
परम निपुण विनु खेद सदाचार रत ज्ञाननिधि ॥

सज्जन सेवी परम धुरीना । नाथयोगि गुरुपद जल मीना ॥
तिनके शिष्यन में बिख्याता । भक्तिसार सम श्रुति शिरज्ञाता ॥
वेद अर्थ निरणाय जिमि सुरगुर । श्रीश भक्ति प्रह्लाद सरिस धुर ॥
कृष्णनाम सङ्कीर्त्तन माहीं । श्रीनारदमुनि सम दिखराहीं ॥
द्रविड़वेद रत यथा नाथमुनि । गुरुकी भक्ति मधुरकबि सम पुनि॥
युग वेदान्तसार के ज्ञानी । रहित अहं मम हरि पद ध्यानी ॥
निज देशिकबरकी आयसु लहि । जाय कृष्णमङ्गलबर क्षेत्रहि॥
तुलसीमाल कृष्ण की सेवा । सादर करन लगे महिदेवा ॥
भट्टनाथ भक्तांघ्रिरेणु सम । प्रीति सहित अति भागवतोत्तम ॥
अन्तर तजि हरि सेवा के रस । भक्तियुक्त कीन्हे प्रभु निजबस ॥

दो० तुलसिमाल कैंकर्य लहि हरि उनकी निर्व्याज ।
ह्वै संतुष्ट विचार यह अपने मन उपराज ॥
सो० चरमश्लोक महार्थ अनुष्ठान ताको बिशद ।
ताहि लोक रक्षार्थ इनके द्वार दिखायहौं ॥

तापाछे इक दिवस शूद्र ह्वै । भक्तबत्सल गुण सुनि मोहित ह्वै ॥
आये संग लिये दोउ स्वाना । पग पनही कटि कसे कृपाना ॥

भक्तवत्सल दरसन रुचिधारी। स्वानन ढिग पदत्राण उतारी॥
रक्षा काज सौंपि निज निज कहँ। आप गये दोउ हरि सन्निधि जहँ॥
दरसन सेवन करि युत प्रीती। लक्ष्मि समेत परिक्रम रीती॥
बाहिर मंदिर के जब आये। लरत सरोष स्वान द्वौ पाये॥
सहज स्वजातिबैरि गत शांती। स्वामिभक्त अति कूकुर जाती॥
बरजतहू माने सो नाहीं। ताड़ित भयो एक तिन माहीं॥
रुधिर बमन मुख ते करि अंता। प्राणहीन सो भयो तुरंता॥
तासु स्वामि तब ह्वै अति पीड़ित। अरु स्वभक्त रक्षण बिनु व्रीड़ित॥

दो० मृतक स्वानगुण सुमिरि उर क्रोधानल अति बाढ़ि।
काटो घातक स्वान को सीस खड्ग निज काढ़ि॥

सो० मार्‍यो लखि निज स्वान भयो तासु को प्रभु कुपित।
लीनी काढ़ि कृपान आपुस म लगे लरन॥

भयो रोमहर्षण संग्रामा। भये अंत दोउ कटि बिनु प्राणा॥
यह कौतुक मग जात तहां तब। लखो कृष्ण लक्ष्मीनाथहु सब॥
मनमें लागे करन बिचारा। प्राकृतनर बात्सल्य अपारा॥
ये दोउ क्षुद्र आचरणवारे। परिचरिया करि जीवनहारे॥
निज सेवक स्वानन के नेहा। क्षण में त्याग करत भये देहा॥
ऐसी नीचन की बत्सलता। को कह अप्राकृत निर्मलता॥
धर्माधर्म ज्ञान बिनु जे नर। निज नयनन देखो गुण तिनकर॥
जो सर्वज्ञ व्याज बिनु बन्धू। जगपालक करुणा को सिन्धू॥
सर्वव्यापि लोक पितु माता। धर्माधर्महुँ को बर ज्ञाता॥
ताको बत्सलता के माहीं। कहिबो कह जनरक्षण काहीं॥

दो० जो रक्षण चिंता करौं तौ अब अतिहि अनर्थ।
मम रक्षा कमलारमण करिहैं अवशि समर्थ॥

सो० इमि निश्चय उर आनि कियो त्याग सब भार को।
स्वानबृत्य तहँ ठानि तजे तुरत ब्यापार सब॥

मनुजकर्म सबही तिन त्यागे। चारिपायँ सौं बिचरन लागे॥
प्रात ग्राम बाहिर चलि जाहीं। देह शुद्धि करि ताल अन्हाहीं॥

पशु की भांति दिगम्बर डोलत । काहू सौं कछु बचन न बोलत ॥
बेगि भक्तवत्सल दरवाजे । आवत स्वानरूप कौ साजे ॥
जानु पाणि चलि बकुल समीपा । बैठि रहत चुप मुनिकुलदीपा ॥
जनबत्सल करि कृपा अन्न जो । देत पठाय खाय तोषत सो ॥
वेदान्ती उनकौ लखि प्रानी । कहत परस्पर करुणा आनी ॥
ये श्रीबैष्णाव वेद प्रवीना । भये भ्रांतचित कर्म अधीना ॥
उनको अभिप्राय नहिं जानत । निज बिचार सम बचन बखानत ॥
निर्भर अनुष्ठान अति भारी । इनलिय को गुनि लेय बिचारी ॥

दो० कोउ कह इनको अघ प्रबल उदित भयो यह काल ।
ईश्वरहू सौं साध्य नहि दुर्जय कर्म कराल ॥
सो० कर्म बड़ो बलवान जग मैं ईश्वर कह करै ।
ऐसे ज्ञाननिधान जाके बश बिक्षिप्त भये ॥

उपजत बढ़त मरत जग जीवा । दुख सुख लहत कर्म की सीवा ॥
दैव कुलाल साक्षि सर्वेशा । दीपक सम जग जगत दिनेशा ॥
कोउ नर उनकी वृत्य निहारी । प्रकटत निज बुधि बचन उचारी ॥
ये महान भगवत् पारायण । दृढ़ रक्षक मन गुनि नारायण ॥
करि सब भर हरिचरण समर्पित । भये निर्भय निर्भर ह्वै अस्थित ॥
इनकी कछू न्यनता नाहीं । हरि रक्षण करिहैं इनकाहीं ॥
कोउ पंडित संभाषण चहहीं । व परन्तु मौनाहे निर्बहहीं ॥
निर्भर अनघ परम उत्साही । श्रीश प्रेम सरिता अवगाही ॥
बोलत नहिं तब सब अति बिस्मित । होत अपर कोउ भजत डरपि चित ॥
कोउ सभक्ति पदबन्दन करहीं । लै पदरज निज मस्तक धरहीं ॥

दो० आवै सुनि बहु देश जन देखै चरित पुनीत ।
चकित होइँ याभाँति सौं भो कछु काल ब्यतीत ॥
सो० भक्तबत्सल भगवान तब निज मन सङ्कल्प किय ।
इनको मोक्ष प्रदान सबके देखत करौं अब ॥

मोक्षप्रदान पूर्व दिन राती । पुरबासिन सपने यह भांती ॥
कहो कृष्ण लक्ष्मीशदास कौ । सबहि लखत बैकुंठबास कौ ॥

पठवैंगे हम काल्हि बिशेखा । याबिधि स्वप्न सबहिं तहं देखा ॥
कहत एक ऐसे हम देखो । सोउ तैसेहि अचरज सब लेखो ॥
जाय भक्तवत्सल के मंदिर । जुरे नारि नर सब मन करि थिर ॥
काल प्रतीक्षा करन लगे सब । हरि प्रेरित श्रीकृष्णादास तब ॥
नित्य समान नित्यकृत करिके । आये हर्षि शीघ्र ढिग हरिके ॥
प्रथमावरण परिक्रम रीती । जात भये सादर अति प्रीती ॥
श्रीमण्डप धसि द्वारपालकन । बन्दि गये जहं प्रभुपद निजधन ॥
तैसेहि कौतुक देखनहारे । तिनके पाछेही पगधारे ॥

दो० प्रभुपदकमल समीप लौं देखे सबन महान ।
विद्युत सम पुनि तेज तहँ सबही कौ दरसान ॥
सो० लखि न परो पुनि काहु गये कहां वे कब गये ।
प्रकटो भक्ति उमाहु लखि अचरज हरि पद सबहि ॥

जब याबिधि वे वैष्णवराया । गये हरिधाम सहित निजकाया ॥
श्रीपति कृपा अलौकिक देखी । सबहुन कौतुक भयो बिशेखी ॥
भक्तबत्सलता प्रकट निहारी । मोक्षदान लखि अचरज भारी ॥
तजि संसृतमय माया सबही । भये बैष्णवोत्तम ते तबही ॥
बकुलबिटप छाया के माहीं । मंडपदिव्य लखिय अबताईं ॥
कृष्णलक्ष्मिनाथार्य महोत्सव । होत लखात अबहुं नित्योत्सव ॥
मानौ उनकी कीर्त्ति बिशाला । अरु हरिबत्सलता की माला ॥
देखिपरत लोगन नूतन सम । जिनके सुकृत बिपाक अनुत्तम ॥
जे जन इनकी कथा सुहाई । गावत सुनत प्रीति मन लाई ॥
तिनके सकल पाप मिटिजाहीं । लहत अंत श्रीपति पद काहीं ॥

दो० कृष्णलक्ष्मिनाथार्य को पावन चरित अनूप ।
कहो तुमहि वेदांति हम हरि बत्सलतारूप ॥
सो० अब तुम्हरे मन चाह जो सुनिबे की होय कछु ।
कहिहैं करि उत्साह पूछौ माधवदास अब ॥

इतिश्रीप्र० श्रीकृष्णलक्ष्मीनाथार्यमोक्षप्रदानन्नाम
दशशततमोऽध्यायः ॥ ११० ॥

गुरुहि बंदि तब कह वेदान्ती । कितने काल नाथ एकान्ती ॥
बसे योगिनायक महि माहीं । पुनि पश्चात्त विष्णुमत काहीं ॥
वृद्धि करत निवसे केहि देशा । केतिक काल सो कहिये अशेशा ॥
तब गुरुवर बोले हरषाई । भूतल नाथयोगि मुनिराई ॥
तीस अधिक शत तीनि बर्ष भरि । रहे श्रीश सेवत जग हित पर॥
धातु नाम सम्वत के माहीं । माघ शुक्ल एकादशि काहीं ॥
गये हरिपद तब पद्मविलोचन । श्रीवैष्णाव मारग भव मोचन ॥
गुरु आयसु रंगस्थल बसिके । भये बढ़ावत तप तन कसिके ॥
अरु उनकी अवतार कहानी । माधव तुम सौं कहैं बखानी ॥
रंगनगर वायव दिश माहीं । महिलक्षेत्र श्वेतगिरि माहीं ॥

दो० पुण्डरीकदृग को जहाँ दिव्यदेश बर जाहि ।
भट्टनाथ परकाल मुनि करत प्रणाम सराहि ॥
सो० हरि सेनापतिअंश चैत्रमास चित्रानषत ।
बैष्णवकुलअवतंश प्रकटे श्रीश नियोग लहि ॥

बीरनरायणपुर पुनि जाई । देशिक किये नाथमुनिराई ॥
कछुदिन गुरु सेये बसि तेहि थल । गुरु नियोग पुनि श्रीरङ्गस्थल ॥
बास कियो वैष्णावमत पालत । परबादिन सङ्कीर्तन घालत ॥
कुरुकानाथ योगि अवतारा । पाण्ड्यदेश में भयो उदारा ॥
पूषमास मधि नखत बिशाखा । गये गुरु निकट मोक्ष अभिलाषा॥
पुण्डरीकदृग कृपा प्रभावा । नाथयोगि पद आश्रय पावा ॥
पुनि अष्टाङ्ग योगहू पायो । गुर पुरबसि सेवा मन लायो ॥
जायल गुरुवर तजो शरीरा । योगयुक्त ध्यावत गुरुधीरा ॥
सत्तरि अधिक वर्ष शतताई । महि रहि गये बिष्णुपुर काहीं ॥
राममिश्र अवतार कथा अब । माधवदास सप्रेम सुनौ सब ॥

दो० है सुगन्धकुल्या नगर रंगस्थल के तीर ।
द्विजकुल वर्ष विरोधि मधि माघशुक्ल मतिधीर ॥
सो० चौदशि तिथि शशिवार हरिपार्षद कुमुदाक्ष जे ।
तिनके अंश उदार प्रकटत भये महान यश ॥

श्रीश परायण राममिश्र पुनि । पुण्डरीकदृग गुरुवर यश सुनि ॥
भये समाश्रत तिनके चरणा । भक्ति समेत जानि भव हरणा ॥
पद्मनथन गुरु शिष्य पांच भे । लवणाभावतात आदिक जे ॥
पै तिनमें गुरुभक्ति परायन । निशिदिन सेवारत चितचायन ॥
राममिश्र मुनि द्वादश बर्षा । गुरु सेवा अति करी सहर्षा ॥
ताही काल माहिं गुरु धामिनि । गई बिष्णुपद गोदा नामिनि ॥
गुरु गृह की पर्चर्या तबहीं । राममिश्र किय सादर सबही ॥
लघुलघु बयस आर्य तनया द्वै । पालत भये गुरुभक्ति निरत ह्वै ॥
यथा सहोदरि लालन करिके । रहत भये गुरु गृह मुद भरिके ॥
इक दिन दोउ अस्नानहि लागी । गईं तटाक सँग गुरु अनुरागी ॥

दो० पङ्कपूर्ण मग मे तहाँ कुल्या एक कठोर ।
कढ़ि न सकीं कन्या तबहि राममिश्र बरजोर ॥
सो० कन्धन युगल चढ़ाय धसि नाली की कीच मे ।
सर अस्नान कराय तिनकौ गृह आनत भये ॥

राममिश्र की लखि गुरुभक्ती । गुरु उर भई अति करुणासक्ती ॥
चरणयुगल निज तिन शिर राखे । अर्थ गोप्य सब उनसौं भाखे ॥
ज्ञान जो हृदय तिमिर को नाशक । वेद अर्थ जो तत्व प्रकाशक ॥
भूत भविष्य काल को ज्ञाना । सकल शास्त्र सिद्धान्त प्रमाना ॥
सो अरु द्वय मंत्रार्थहु दीन्हो । तासु बैभवहु बरणन कीन्हो ॥
जापक पाप त्रिबिधि सुमिरणते । नाश होत द्वय मंत्र मननते ॥
पंचाधिक शतबर्ष महीतल । राह पुनि गवन चहो हरिके थल ॥
राममिश्र तब बोलि कहाइमि । श्रीबैष्णव सिद्धांतहि हम जिमि ॥
प्रकटोतिमि जगतुमहु बढ़ावहु । बैष्णवगण सँग बसि सुखपावहु ॥
अरु हमरे गुरुदेव प्रवीना । हमकौ याबिधि आयसु कीना ॥

दो० ईश्वरमुनि मम पुत्र के होय पुत्र जेहि काल ।
तिनहिं महार्थ पढ़ाय सब कीजौ दरशनपाल ॥
सो० हमरे जीवत सोय भयो न गुरुसुत के तनय ।
मम पाछे जब होय यामुनमुनि यह नाम रखि ॥

तिनकौ सब सिद्धांत महारथ। कीजो तुम उपदेश यथारथ॥
गुरु आज्ञा सेवा तब भारी। होय पूर्ण मम बहुरि तुमारी॥
कीजौ तिनकौ स्वमत स्थापक। श्रीबैष्णव सिद्धांत के व्यापक॥
अन्तसमय जिमि नाथमुनीशा। करी हमहिं आयसु योगीशा॥
तिमि हमहूं तुमसौं यह काला। कह योगीश निदेश रसाला॥
द्वैहै सुत ईश्वरमुनि केरे। होयं कि मोघ बचन गुरु प्रेरे॥
तुमको निज गुरु परम गुरुन के। बचन पालिबो उचित दुहुन के॥
सकल सिष्टजन मानत आये। तुमहूं कबहुं बाम नहिं लाये॥
इमि आज्ञा करि हरिपदपंकज। ध्यावत अरु निज गुरुपदकी रज॥
ह्वै कृतार्थ बैकुण्ठ सिधारे। राममिश्र व्याकुल भये भारे॥

दो० गुरु बियोग दुःसह परम पै कछु नाहि बसाति।
ब्रह्ममेधि सौं किय तबहि चरमकृत्य करि शांति॥

सो० बहुरि बैदिकाचार निरत बैष्णवन संग बसि।
बैष्णावधर्म प्रचार करत भये गुरुथल निवसि॥

इतिश्रीप्र० पुण्डरीकाक्षावतारादिकथनन्नाम
एकादशशततमोऽध्यायः॥ १११॥

बंगिपुराधिप बैष्णव कोई। लक्ष्मी नाम भक्ति करि सोई॥
राममिश्र के आश्रत भयेऊ। पांच द्विजन पुनि पद चित दयेऊ॥
तिनकौ राममिश्र करुणाकर। बैष्णावमत के अर्थ बिशदबर॥
करि उपदेश जानि अधिकारी। निवसत भये श्रीरंग मझारी॥
बीतीं कछुक बर्ष यह भांती। यामुन प्रभव लखत दिनराती॥
तब शुभ पुण्य काल के आगम। धात्वबर्ष कर्कट मासोत्तम॥
पूर्णमासि भृगुदिन अनुराधा। हरि सिंहासन अंश अगाधा॥
रंगनायकी नामिनि धन्या। ईश्वरमुनि पत्नीवर धन्या॥
तामधि उपजे पुत्र महाना। राममिश्र सुनि अति सुखमाना॥
मये बीरनारायणपुर जित। देखि सो सुत आनँदलह अन्लिन॥

दो० लक्षित दिव्य सुलक्षणन देखि बढ़ी अति प्रीति ।
ईश्वरमुनि सौं मिलि कियो जातकर्म श्रुति नीति ॥
सो० कियो बारहेबार शंख चक्र धारण सहित ।
नामकरण सुखसार मार्जन करि हरिसूक्ति सौं ॥

जपे मंत्र दक्षिण श्रुति माहीं । जस कुलरीति वेदविधि आहीं ॥
हरिसम्बन्धि नाम पुनि राखो । यामुन यथा नाथमुनि भाखो ॥
अन्नपरासनादि सब कर्मा । करवाये बिधिवत शुचि परमा ॥
लहो जनेउ जबहिं यामुनमुनि । वेद सकल इकबार श्रवण सुनि ॥
साक्षिमात्र आचार्य बनाई । पढ़ि लीन्हे [illegible]ुकाल बिताई ॥
लखि उनको अतिमानुप ज्ञाना । गुरु युत सबहिन अचरज माना ॥
इक दिन [illegible]पाध्याय बुलवाये । कह क्यों आज पढ़न नहिं आये ॥
कह यामुन जो काल्हि पढ़ायो । सोइ पढ़िहैं हम यह सुनि पायो ॥
पीसे को पीसिबो वृथाहीं । यही जानि आये हम नाहीं ॥
गुरु कह सब निज पूर्व अधीता । पढ़ौ तात तिन परम अभीता ॥

दो० पूर्व पठित निज वेद सब गुरुहि निर्[illegible]न कीन ।
जटावलि पदक्रम प्रभृति सहित उचारि प्रवीन ॥
सो० तब गुरु अति आश्चर्य करि निज उरहि लगाय लिय ।
गुनत भये बुधवर्य तिन्है कुशाग्र सुबुद्धिवर ॥

पुनि वेदाङ्ग पढ़े सहसाहीं । लखि पितु अति हरषे मन माहीं ॥
शास्त्र सकल तब तिन्है पढ़ाये । तेऊ पुनि सहजहि सब आये ॥
तापाछे चोलेश पुरोहित । अक्कियाल्व नामक बड़पंडित ॥
पूर्वकाल तिन शास्त्रअर्थबल । जीते सकल देश पंडित दल ॥
तबतें ते बिद्वान अपारा । देत पुरोहित कौ उपहारा ॥
बर्ष बर्ष दश बंध प्रमाना । दै दै करत तासु सन्माना ॥
सो वह भेंट लही नहिं ताते । उपरोहित मन है अति ताते ॥
महाभाष्यभट ढिग नृप किङ्कर । पठये तिन दुख दियो भयङ्कर ॥
द्रव्य रहित व्याकुल गुरु देखी । यामुन पूछो मर्म बिशेखी ॥
सो सब बिपति स्वच्छ मृदुबानी । तिनसौं गुरुवर कही बखानी ॥

दो० तब यामुनमुनि कोप करि लिखि श्लोक बनाय ।
दूतन कौ ललकारि के दीनो तहँ लौटाय ॥
सो० कबि केवल हम नाहिं केवल तांत्रिकहू नहीं ।
ध्वंसक समरथ आहिं प्रतिबादिन आटोप के ॥

बांधि ताहि तहं राजपुरोधा । बाल जानि कीन्हों अति क्रोधा ॥
ब्याकुल निज भूपति ढिग जाई । तिनसौं याबिधि कह्यो सुनाई ॥
महाभाष्यभट शिष्य अजाना । द्वादशाब्द जिहि आयु प्रमाना ॥
तुम्हरी आज्ञा भंग करत सो । हमहिं गर्ब निज लिखि निदरत सो ॥
ताते वाकौ बेगि बुलाई । उचित दंड दीजै नृपराई ॥
नृप सुजान सुनि तिनकी बानी । सब वृत्तांत हृदय अनुमानी ॥
यामुनमुनि गुनि पंडितराजा । पठयो मंत्री बोलन काजा ॥
पंडित सेबिनृपति सो यद्यपि । आदर अल्प हृदय गुनि तद्यपि ॥
गये न यामुनमुनि बिद्वाना । तब जानो चोलेश सुजाना ॥
नहिं साधारण वह बिद्वाना । है कोई पंडित ज्ञान निधाना ॥

दो० वहुत बिभव युत पालकी तब पठई तिन पास ।
तापर चढ़ि आवत भये यामुन बुद्धि निवास ॥
सो० द्वारदेश तब आय पूजे नृप बिद्यासदन ।
सादर दिये टिकाय सुंदर मंदिर प्रीति युत ॥

बहुरि सभा बिद्वानन केरी । जुरी तहां नरनायक प्रेरी ॥
आये यामुन ज्ञाननिधाना । उपरोहितहु सहित अभिमाना ॥
आये बहु पंडित तिन साथा । तबहिं चतुर यामुनमुनिनाथा ॥
इक श्लोक कल्पना कीन्हो । सो पत्रिका माहिं लिखि दीन्हो ॥
ताको भाव अर्थ यह जानौ । सरल काज संक्षेप बखानौ ॥
हिमिगिरिवर ते सेतु प्रयंता । अरु उदयाद्रि अस्तगिरि अंता ॥
दोउ मीमांसा शास्त्र परिश्रम । करि मलहीन भयो मन तजिभ्रम ॥
ऐसो मैं जग तासु समाना । ढूंढौ सब मिलि पंडित आना ॥
लै सो पत्र सभा मधि राखो । बादी ताहि पढ़न अभिलाखो ॥
पढ़िमन मुदित भयो उपरोहित । जानो केवल गर्व बाल चित ॥

दो० शास्त्रवाद इच्छा करी जीतन की अभिलाष।
जाने बिनु उनको बिभव मन दीन्हो अति त्राप॥
सो० तब यामुन नृपपाहि बोले याविधि बचन बर।
जिनहि जयाजय माहि होय ज्ञान विज्ञान ते॥

करि मध्यस्थ सो पंडित ज्ञानी। लेउ बुलाय नृपति सुज्ञानी॥
सुनि नरनायक तैसेहि कीना। बैठारे मध्यस्थ प्रवीना॥
और जे उपरोहित सँग हारे। ते पंडित सब सभा हँकारे॥
वाही काल नृपति सौं रानी। याविधि सौं तहं कहो बखानी॥
जीतैगो अवश्य यह बालक। उपरोहितहि कहो महिपालक॥
दोहुन मैं तहँ भयो विवादा। तब रानी इमि किय संवादा॥
जो जीतैं उपरोहित देवा। करौं मास षट तुम्हरी सेवा॥
कह नृप जीतै बाल जो आजू। देउँ बांटि आधो तोहि राजू॥
याविधि सौं प्रण करि तबदम्पति। पूजे सब पंडित निर्मलमति॥
तब बोले यों नृपति पुरोधा। हौ अतिबालक यद्यपि सुबोधा॥

दो० ताते अबही उचित नहिं शास्त्र अर्थ तुम काहि।
लौकिक बैदिक बचनत्रय हम बरनै तुम पाहि॥
सो० करौ अर्थ तुम तासु अथवा तुम हमसौ कहौ।
दीहै उत्तर आसु हम तुमरी तिहुँ बात को॥

हारे पै तुमरो अपमाना। ह्वैहै सभामध्य अवसाना॥
बोले यामुनमुनि तिहि काला। सभामांझ जहँ पंडित माला॥
सुनौ पुरोहित बचन हमारे। शांतिमान नयजानन हारे॥
तुमरे कहे बचन अनुसारा। लोक बचन हम करत उचारा॥
तिनको उत्तर भाखौ हम सौं। शास्त्रअर्थ करिहैं पुनि तुम सौं॥
यह सुनि सकल सभा युत राजा। आज्ञा देत भये तेहि काजा॥
यामुनमुनि तब कह इमि बाता। कहा अबंध्या है तव माता॥
चक्रवर्त्ती यह भूप कि आही। रानी पतिव्रत अहै कि ताही॥
यामुन बचन सुनत उपरोहित। उत्तर नहिं आयो भये लज्जित॥
तिनहि अधोमुख लखि यामुनमुनि। बैदिक प्रश्न किये कछु ते सुनि॥

दो० उतर न आयो ताहु को तब अति भयो उदास ।
करी प्रतीक्षा सात दिन यामुन ज्ञाननिवास ॥

सो० तबहुँ पुरोहितराज उत्तर कछू न दै सके ।
दीन भये करि लाज यामुनमुनि बोले तबै ॥

यद्यपि तुम निरणय करि दीनो । हारे सभा जो बुद्धि बिहीनो ॥
कियो जाय ताको अपमाना । तासु योग्य तुम भये सुजाना ॥
तद्यपि न करत सो दशा तुमारी । राजपूज्य और वृद्ध बिचारी ॥
अब परन्तु तुम धरौ उतारी । पंडित चिह्न रहे जो धारी ॥
शास्त्रसभा हम सौं तुम हारे । बिजय चिह्न नहिं योग्य तुम्हारे ॥
सुनि यह बचन सकल बिद्वाना । करत भये मन मुदित प्रमाना ॥
अरु उनकौ मानो अवतारा । हरि के अंश मङ्गलागारा ॥
नृप आयसु लहि पूजन कीन्हो । ब्रह्मयानबर आसन दीन्हो ॥
याविधि जब तहँ राजपुरोधा । जीते यामुन अतुलित बोधा ॥
रानी लखि अतिशय हरषानी । पूजन किय बहु बिनय बखानी ॥

दो० अये मम रक्षार्थ प्रभु कही होंय यह बात ।
रक्षागतगुरु नाम यह भयो तबहि बिख्यात ॥

सो० पुनि नृप सौं कह रानि अर्ध राज्य जो मोहि तुम ।
देन कहो गुणखानि सो यामुन कौ दीजिये ॥

सत्यसंध नृप दिय सहसाहीं । अर्ध राज्य यामुन गुरु काहीं ॥
सो लहि मातु पिता के साथा । निजपुर बसत भये मुनिनाथा ॥
देखि पुत्र बैभव बिस्तारा । ईश्वरमुनि लह मोद अपारा ॥
लोकबिदित अति बिभव बिधाना । किय बिवाह सुतको मतिमाना ॥
तापाछे यामुन श्रुतिपाला । पितु सेवा कीन्ही बहु काला ॥
ईश्वरमुनि पुनि गये हरिधामा । चरमकृत्य किय वेद बिधाना ॥
अध्येनान्त कर्म पितु के हित । किय वैष्णावन संग आगमबित ॥
तापाछे यामुनमुनिजी के । भये पुत्र युग गुणनिधि नीके ॥
ज्येष्ठ नाम वररंग सुहायो । सोमपूर्ण लघु को जग गायो ॥
अति बैभव युत संसकार सब । तिनके करत भये यामुन तब ॥

दो० दारा सुतन समेत अरु बन्धुन युत बहुकाल ।
अतुलित सम्पति सहित तहँ भूपति भोग बिशाल ॥
सो० प्रीति सहित गुरुवर्य भोगत भये सानन्द तहँ ।
जिमि महेन्द्र ऐश्वर्य प्रजापाल करि धर्म युत ॥

इतिश्रीप्र० यामुनार्यविजयोनाम द्वादशशततमोऽध्यायः ११२॥

सुनि इमि यामुनमुनि प्रभुताई । राममिश्र गुरु मोद बढ़ाई ॥
देखन कौ समीप चलि आये । राजसमाज देखि हरषाये ॥
सात कच्छ युत भवन भँडारा । गज तुरंग रथ भीर अपारा ॥
शूरबीर रक्षक बहु ठाढ़े । दरस काज नर सम्पति बाढ़े ॥
यामुनार्य दरसन अभिलाषा । आये चहुँदिस ते तजि माषा ॥
इन्द्रभवन सम यामुनधामा । लखि उपजो अचरज अभिरामा ॥
उनको दरसन दुर्घट जानी । गये पाकगृह सद्बुधि खानी ॥
पूछत तहं निश्चय उर धारो । शाक अलर्क यामुनहि प्यारो ॥
तब दिन दिनप्रति शाक सो पावन । लागे पाकभवन पहुंचावन॥
उनके बशीकार के काजा । याबिधि किय छमास गुरुराजा ॥

दो० जब षट मास व्यतीत भे उन नहिं पूछी बात ।
राममिश्र गुरु शोचबश भये अति व्याकुल गात ॥
सो० कह गुरुदेव उदार श्रीबैष्णव सिद्धान्त बर ।
यामुनमुनि के द्वार जगमे प्रचरित कीजियौ ॥

होय तासु परिपालन कैसे । यामुन सम्पति मोहित ऐसे ॥
दरसनहू दुर्लभ हम काहीं । गये मास षट पूछो नाहीं ॥
कोहौ शाक अर्थ किहि ल्यावत । इमि शोचत रङ्गेश मनावत ॥
करुणा करि यामुनमुनि केरो । कीजै ज्ञान प्रकाश सबेरो ॥
चारि दिवस न शाक पहुंचायो । बहुरि पांचवों दिन जब आयो॥
तब लै शाक रसोई शाला । जात भये गुरुदेव कृपाला ॥
लखि बोले पाचक तिन पाहीं । चारि दिवस ल्याये क्यों नाहीं ॥
यामुनार्य नित हमपर क्रोधा । करत शाकहित अतुलित बोधा ॥
यह सुनि राममिश्र इमि कहेऊ । हमकौ नृप निदेश नहिं रहेऊ॥

अरु उनके चाकरहू नाहीं । स्वेच्छा सौं नित ल्यावत आहीं ॥

दो० गुरु आयसु अनुवर्त्ति हम हैं यह कहि वह शाक ।
जात भये दै पाचकहि भयो सिद्ध जब पाक ॥
सो० आये भोजन काज यामुनार्य कह पाचकहि ।
बहुरि शाक प्रिय आज को ल्यायो वह दिवस तें ॥

कह पाचक षट मास व्यतीते । वृद्ध बिप्रबर ल्याय सप्रीते ॥
देत नित्य तुमरो प्रिय जानी । सादर चाह रहित मुनिज्ञानी ॥
चारि दिवस ल्याये ते नाहीं । आजु बहुरि दीन्हों हम काहीं ॥
ल्याये शाक न कारण तासू । मैं पुछो तब कह सहुलासू ॥
स्वेच्छा देत शाक यह उत्तम । गुरुसेवी नहिं राजभृत्य हम ॥
बैष्णव वृद्ध बुद्धि गुणवाना । चहत नाथ दरसन नहिं आना ॥
अचरज करि तब यामुनराया । पाचक प्रति इमि बचन सुनाया ॥
बेगिहि ब्राह्मण वृद्ध अयाचक । हमकौ बोलि मिलावौ पाचक ॥
भोर भये जब शाक समेता । आये गुरुवर ज्ञाननिकेता ॥
कहो नृपहि पाचक द्विज आये । तिन सुनि सादर निकट बुलाये ॥

दो० अर्घपाद्य आदिकन सौं पूजे सहित बिधान ।
प्रीति सहित कर जोरिके बोले ज्ञाननिधान ॥
सो० प्रभुहि क्षेत्र धन ग्राम अथवा और जो चाहिये ।
मांगि लेउ गुणधाम हमसौं तजि सन्देह सब ॥

राममिश्र सुनि बोले बानी । मंदस्मिति युत आनँद मानी ॥
बत्स तुम्हारो धन अरु धामा । कछु कदापि हमरे नहिं कामा ॥
पै तुमरे पूर्वज श्रीनाथा । बिश्व बिदित जिनके गुण गाथा ॥
तुमरे हित बहु धन हम पासा । थाति राखिगये गुणि निजदासा ॥
ताके देन काज तुम काहीं । तुमरे ढिग आये हम आहीं ॥
जबलौं सौंपि देयँ सो तुमकौ । निज समीप तबलौं तुम हमकौ ॥
आवन जान की आयसु देहू । सो सुनि यामुन सहित सनेहू ॥
दरवानन कौ लियो बुलाई । तिनसौं कहत भये समुझाई ॥
राममिश्र ये सन्त कृपाला । हमहि मिलन आवैं जेहि काला ॥

रोकौ मति इनकौ कोउ द्वारे । आवन दीजौ निकट हमारे ॥

दो० कह तथेति दरवानिगण राममिश्र निज धाम ।
गवने परमानन्द लहि कियो रैनि बिश्राम ॥
सो० बीते रैनि सुजान नित्यकर्म निर्बाह करि ।
आवत भये महान यामुनमुनिवर के निकट ॥

देखि तिन्है यामुन सहसाई । पूजन कियो पूर्व की नाई ॥
गीता पुस्तक तिनके हाथा । देखि कहो यामुनमुनिनाथा ॥
यह पुस्तक तुमरे कर माहीं । अहै कहा कहिये हम पाहीं ॥
राममिश्र तिनसौं याबिधि कह । सब तत्वार्थ मंजरी है यह ॥
बिद्वन् पूर्व कृष्ण भगवाना । अर्जुन कौ उपदेश्यो ज्ञाना ॥
भगवद्गीता नाम जासु को । कोउ बैभव कहि सक न तासु को ॥
वेदन मैं जिमि पुरुषसूक्तिबर । बिष्णुपुराण पुराण अग्रसर ॥
अहै मनुस्मृति धर्मशास्त्रतम । तिमि गीता भारत मधि उत्तम ॥
यह सुनि भई यामुनमुनि काहीं । रुचि गीतार्थ सुनन के माहीं ॥
तब बोले गुरुवर सौं याबिधि । मोहिं उपदेश करौ करुणानिधि ॥

दो० बिनय प्रीति युत छल रहित देखि तिन्है एकान्त ।
बोलि कहो सादर सुनौ चित्तबृत्ति करि शान्त ॥
सो० यह कहि हे वेदान्ति उपदेश्यो गीतार्थबर ।
दिन दिन प्रति एकान्ति एक एक अध्याय कहि ॥

बरणो अष्टादश दिन माहीं । राममिश्र यामुनमुनि पाहीं ॥
ज्ञान भक्ति तिनकौ सुनि गाढ़ो । शुक्लपक्ष हिमकर सम बाढ़ो ॥
करि प्रणाम तब गुरुवर चरणा । बोले हे पंडित भव हरणा ॥
प्रभु गीता मोहिं कहि बिधि रूरी । कीन्हो मोह जनिततम दूरी ॥
सो सुनि उपजो जगत बिरागा । किय कृतार्थ करि अति अनुरागा ॥
अब सर्वज्ञ शिष्य मोहि जानी । कहौ यत्न करि कृपा बखानी ॥
हरि साक्षात् होयं प्रभु जाबिधि । यह सुनि राममिश्र करुणानिधि ॥
निज गुरु परगुरु आयसु जानी । यामुन अधिकारी बड़मानी ॥
चरमश्लोक अर्थ उपदेशा । सो लहि यामुनमुनिहि अशेशा ॥

जगत राग उर ते बिनशानो । राममिश्र बुधि बल अनुमानो ॥

दो० तिनसौं कह्यो कि चलौ अब रंगस्थल मम संग ।
तुमकौ पूर्वजदत्त धन देयँ दिखाय अभंग ॥
सो० गये तबहिं श्रीरंग हरि सिंहासन अंश भव ।
यामुनमुनि गुरु संग प्रविशि रंगपुर मे तहाँ ॥

कह गुरु यहां ज्ञान को ह्रासा । होत न कबहुं न यमकी त्रासा ॥
ऐसो परम पुण्य थल आही । बुद्धिवन्त को सेव न ताही ॥
पुनि कावेरि न्हाय गुणधामा । रंगनाथ कौ कियो प्रणामा ॥
यामुनमुनि सौं गिरा प्रकाशी । येई रंगनाथ अविनाशी ॥
तुमरे पूर्वज के निधि आहीं । यह सुनि यामुनमुनि सहसाहीं ॥
अति आनंद युत नख शिख देखा । हरि बिग्रह करि प्रेम बिशेखा ॥
अनुभव करि निमग्न आनंदरस । निवसे तहां प्रेम के परबस ॥
तीव्र बिरति सुत दार क्षेत्र गृह । अपर धनादिक सकल परिग्रह ॥
श्रीशदास्य बाधक अनुमानी । त्यागे सकल कर्म मन बानी ॥
गुरु भागवत जनन सहबासा । करत भये भलिबिधि सहुलासा ॥

दो० ज्ञान बिरागहु भक्ति के महासिंधु सम सोइ ।
रंगनाथ कैंकर्य में भये निरत मुद मोइ ॥
सो० लखि अति तेज निधान रंगवासि अति प्रेम युत ।
नारायणमुनि आन मानि तिनहि आश्रत भये ॥

इतिश्रीप्र० यामुनार्य्यायगीतोपदेशन्नाम
त्रयोदशशततमोऽध्यायः ॥ ११३ ॥

तापाछे श्रीमाधवदासा । गुरुवर सौं इमि बचन प्रकासा ॥
महापूर्ण केहि थल केहि बंशा । उपजे बैष्णवकुल अवतंशा ॥
राज तजो यामुन गुरु जोई । काकौ प्राप्त भयो पुनि सोई ॥
अरु उनकी बैराग्य कहानी । कीन्हो कहा श्रवण करि रानी ॥
याबिधि सुनि भट्टारक ज्ञानी । बोले मधुर विशद बरबानी ॥
गोदानायक रंगबिहारी । होउ जगत हित मंगलकारी ॥
पावन रंगनगर शुभदाता । बृहत्चरण बर कुल बिख्याता ॥

भारद्वाज सुगोत्र मझारी । यजुरवेद शाखा अधिकारी ॥
तामें महापूर्ण यशवाना । कुमुद अंश प्रकटे गुणवाना ॥
अङ्गन सहित वेद को ज्ञाना । लहत भये सब शास्त्र पुराना ॥

दो० पुण्डरीकदृग नाम करि पुत्र भये तिन धाम ।
अतुला नाम सुपुत्रिका लहत भये अभिराम ॥
सो० बैभव जग बिख्यात सुनि यामुन गुरुवर्य को ।
तिनके पदजलजात भये शरण अति भक्ति युत ॥

तिनको तबहिं परांकुशदासा । याबिधि गुरुवर नाम प्रकासा ॥
मायावी हरि परमानन्दा । तजि बैकुण्ठनगर सुखकन्दा ॥
स्वामिपुस्करणितट के माहीं । रमा सहित नित बिहरत आहीं ॥
नहिं कोउ थल वृषभाद्रि समाना । व्येंकटेश सम नहिं सुर आना ॥
कासारादि सकल योगीजन । गोदा युत नति करत तपोधन ॥
तागिरिवर के पश्चिम घाईं । स्वाति नक्षत्र चैत्र के माहीं ॥
प्रकटे व्येंकटपति बरदाना । सुमुख अंश गुण ज्ञाननिधाना ॥
लह श्रीशैलपूर्ण यह नामा । स्वर्णमुखरितट तिनको धामा ॥
जिनसौं व्येंकटेश कहि ताता । मांगो जल तब भो बिख्याता ॥
ताताचार्य नाम शुभदाई । यामुन शिष्य भये सोउ आई ॥

दो० पांड्य सुमण्डल मध्य पुनि गोष्ठीपुर के माहि ।
जहँ सौम्य नारायण श्रीश बिराजत आहि ॥
सो० भट्टनाथ परकाल जिन हरि की अस्तुति करी ।
गोष्ठीपूर्ण कृपाल तेहि थल में प्रकटत भये ॥

रोहिणि माधव मास सुहाये । पुण्डरीकबरांश सुख छाये ॥
सोउ यामुन गुरुनायक चरणा । भये समाश्रत गुणि दुख हरणा ॥
मधुरापुरि प्रकटे मालाधर । जहं सुन्दरभुज हरि सुन्दरबर ॥
बावनांश तिनको अवतारा । कुंभ सुमास मघा शुभ तारा ॥
साङ्गवेद संयुत बैष्णवबर । सुंदरभुज सेवन नित तत्पर ॥
सुनि यामुनमुनि बिभव बिशाला । ज्ञान बिरागादिक गुणमाला ॥
भये आय तिनके शरणागत । बासहु करत भये गुरुपद रत ॥

मण्डल पाण्ड्यमारणो ग्रामा । भये तहँ कोउ बैष्णव गुणधामा ॥
नाम मारणोनम्बि सुहायो । चौथे बरण जन्म तिन पायो ॥
करकट मास नषत अश्लेषा । ज्ञान भक्तिनिधि पावन वेषा ॥

दो० सोउ यामुन महिमा महा सुनि श्रीरंगहि आय ।
भये शरण तिन पदकमल अतिशय भक्ति दृढ़ाय ॥
सो० कियो रंगपुर बास गुरुपदरज सेवत सदा ।
देशिक कृपानिवास तिनपर अति करुणा करी ॥

पूर्व सिन्धुतट योजन पाहीं । महीसार प्रसिद्ध जग माहीं ॥
जन्मे भक्तिसार योगी जहँ । पश्चिम दिस इक क्रोशांतर तहँ ॥
पुष्पमल्लिकापुरी सुहाई । फूलि रही मल्ली छबिछाई ॥
फूनमल्लि जगजन जिहि कहहीं । शष्यधान्य पूरित तहँ रहहीं ॥
माघ मास मृगशिर नक्षत्र तहँ । शवरि अंशते शूद्र बंश महँ ॥
प्रकटे कांचीपूर्ण महाना । बैष्णवबर हरि भक्ति निधाना ॥
बरदराज कैंकर्य सप्रेमा । उद्यत होत भये करि नेमा ॥
रची पुष्पबाटिका सुहाई । फूलमाल प्रतिदिवस बनाई ॥
जाय हस्तिगिरि करत निवेदन । घरतें जाय करत नित सेवन ॥
केशवार्य आसूरि संग करि । प्रीति बिशद अति श्रम सेवत हरि ॥

दो० पुष्पमल्लिपुर ते सदा फूल बीनि लै जाय ।
माल बिरचि दै बरद कौं पुनि तहँ सीचत आय ॥
सो० याबिधि सौं बहु बर्ष बरदराज सेवा करी ।
तब हरि करि अति हर्ष बोले कांचीपूर्ण सौं ॥

तव सेवा प्रसन्न मैं ताता । अब मम निकट रहौ सुखदाता ॥
रचि उसीर को व्यजन मनोहर । तासौं पवन करौ मो ऊपर ॥
अनलात्मा को बचन सुहायो । सुनि तैसेहि सेवा मनलायो ॥
बहुरि श्रवण करि श्रीयामुनकी । महिमा भक्ति बिबेक सुगुणकी ॥
बरदराज सौं आयसु पाई । अति रुचि रंगस्थल कौं जाई ॥
भये समाश्रत तिनके चरणा । पायो सार्थ मंत्र मुद भरणा ॥
आय कांचि पुनि पूर्व प्रकारा । करत भये कैंकर्य उदारा ॥

याबिधि यामुनार्य गुरुराई । निज गुरुकी आयसु सुखदाई ॥
कृपा सहित शिष्यन करुणानिधि । करत पंचसंस्कार शास्त्रबिधि॥
श्रीबैष्णव सिद्धान्त बढ़ावत । बसे रंगपुर मैं सुख छावत ॥

दो० दूतन मुख बृत्तांत सब तिनको सुनि चोलेश ।
चकित रानि युत तबहिं ते आये जहँ रंगेश ॥

सो० परम भक्ति के भाय यामुन गुरुपद बंदि पुनि ।
अर्पण किय शिरनाय शिष्य होन अभिलाष निज ॥

बार बार जब नृप अरु रानी । शरणागति हित बिनय बखानी ॥
संसकारपंचक तब गुरुवर । किये पुरोहित सहित दुहुनकर ॥
नाम पुरोहित को मुनिनाथा । दास अंत करि कियो सनाथा ॥
श्रीयुत रंगचोलपति नामा । भूपति को कीन्हो सुखधामा ॥
रंगनायकी याबिधि रानी । नाम बखान कियो गुरुज्ञानी ॥
पुनि दोहुँकी बिनतीवह राजू । जाहि तजो गुरु जानि अकाजू॥
दम्पतिप्रीति रंगपति सेवा । दियो लगाय मुदित गुरुदेवा ॥
पितुवृत्तांतश्रवणकरिसुत दोउ । तिन पद आश्रत भये आय सोउ॥
सुख युत रंगनगर के माहीं । कियो सप्रेम बास सहसाहीं ॥
सिखयो गुरुवर ज्ञान बिरागा । श्रीपति चरणकमल अनुरागा ॥

दो० याबिधि यामुनार्य मुनि करत रंगपुर बास ।
श्रीबैष्णव सिद्धान्त को पालन करि सहुलास ॥

सो० गुरु आज्ञा प्रतिपाल शास्त्र अर्थ के बल बिपुल ।
प्रतिबादिन की माल जीति श्रीश सन्मुख करत ॥

इकइस शिष्य प्रधान भये पुनि । औरौ बहुत प्रताप अतुल सुनि॥
राममिश्र लखि अमित प्रभावा । अति संतोष मनहि निज पावा॥
किये अशेष अर्थ उपदेशा । बहुरौं बोले बचन सुदेशा ॥
कुरकानाथ नाम गुरु कोई । हैं अष्टाङ्गयोग रत सोई ॥
नाथयोगि के शिष्य महाना । तिनहि नाथमुनि कृपानिधाना ॥
तुमरे हित अष्टाङ्गयोग सिधि । दै गवने परधाम ज्ञाननिधि ॥
तिन ढिग तात गवन अब कीजै । योगरहस्य ग्रहण करि लीजै ॥

सुनि कर जोरि कहो यामुन यों । देशिकप्रिय तुम लियन योग क्यों ॥
राममिश्र कह मम आचारी । अपने मन याभांति बिचारी ॥
तन अवसान काल यह योगा । हम लीहैं गुरु कृपा संयोगा ॥

दो० भयो धोख मम देशिकहि गुरुवर नाथमुनीश ।
आकस्मिक गवनत भये परमधाम योगीश ॥
सो० ढूंढ़त सियरघुबीर सहित लखन अरु पवनसुत ।
तिनके बिरह शरीर तजो धाय बन जाय मुनि ॥

तुमहि सो बृत्त बिदित गुरु केरो । ताते हम संक्षेप निबेरो ॥
मम गुरु कौ इमि भइ न योगसिधि । हमकौ किमि देते गुरु सो निधि ॥
अब तुम कुरकानाथ समीपा । बेगिहि जाय नाथकुलदीपा ॥
ग्रहण करौ वह योग महासिधि । इमि कहि राममिश्र करुणानिधि ॥
आपहि गुनि कृतकाज सहर्षा । अरु लखि पांच अधिक शतबर्षा ॥
आयुपूर्ण तब यामुन गुरु कौ । दै आशिष सिख बैष्णवधुर कौ ॥
बहुत काल रंगस्थल माहीं । सानँद रहि हरिमत कृषि काहीं ॥
सींचौ शिक्षा सलिल भलीबिधि । याबिधि करि उपदेश ज्ञाननिधि ॥
पुण्डरीकदृग पदजलजाता । सुमिरत परमधाम सुखदाता ॥
गये तब यामुनादि किय शोचा । बहुरि ज्ञान बल ताहि बिमोचा ॥

दो० यथा शास्त्र द्विजमेध बिधि कीनो अंतिमकर्म ।
श्रीचूरणपरिपालन अध्येनान्त सुधर्म ॥
सो० यामुन गुरु सब काल नाथयोगि पद ध्यान करि ।
गुरु आयसु धरि भाल बास करत श्रीरंगपुर ॥

इतिश्रीप्र० यामुनार्यमहापूर्णादिगुरुबैभवोनाम
चतुर्दशशततमोऽध्यायः ॥ ११४ ॥

पुनि यामुनगुरु करि अभिलाषा । योगाभ्यास लाभ की आशा ॥
जात भये जहं कुरकानाथा । पूर्णादिक शिष्यन लै साथा ॥
योग व्यग्र की भय मन आनी । जब कछु दूरि रहे मुनिध्यानी ॥
दीन्हे छांड़ि तहां सब साथी । गवने योगि निकट एकाकी ॥
योगारूढ़ देखि तिन काहीं । गये न तिनके सम्मुख माहीं ॥

दो० रामानुज सम्बन्ध गुणि करिहैं कृपा बिशेषि।
करुणा बश अपनाय हैं दीन अकिंचन लेषि॥

सो० याबिधि बिनय सुनाय गोष्ठी श्रीवैष्णवन में।
निज अपराध क्षमाय अपर एक बिनती करौं॥

यह रामानुज चरित पुनीता। जेहि महिमा मन बचन अतीता॥
भाषा मानि न लघुता कीजै। शुचि सौं पढ़ि बहु आदर दीजै॥
हरि हरिजन यश कवनहुं भाषा। परमपूज्य श्रुति सुमृतिन भाषा॥
जे अनन्य श्रीबैष्णव नाहीं। पढ़िये न तिनके सन्मुख याही॥
जिनके उर गुरुभक्ति न लेशा। कबहुं न तिनहि करिय उपदेशा॥
बहुत कहौं कह बात बखानी। उपदेशिये अधिकारी जानी॥
थोरेहि मैं जानैंगे सज्जन। सहित बिवेक करैंगे मज्जन॥
बीते एकसहस अरु नवशत। पैंतालिस बिक्रमनृप सम्बत॥
माघशुक्ल ग्यारसि शशिबारा। भो समाप्त उल्था सुखसारा॥
यामैं याबिधि कियो प्रबन्धा। सज्जन सुनौ सो बिशद निबन्धा॥

दो० दश दश चौपाइन उपर इक दोहा सुखरूप।
तापाछे इक सोरठा बिच बिच छन्द अनूप॥

सो० पुनि बन्दौं सद्भाव निज देशिक पद कमल युग।
जिनकी कृपा प्रभाव बदरी यतिपति यश कहो॥

दो० श्रीनिवास गुरुवर्य क बन्दौं पदजलजात।
जिनकी कृपाकटाक्ष ते सुलभ सकल सिधिब्रात॥

सो० रामानुज सिद्धान्त दृढ़ कीनो जिन जगत में।
जग जीवन श्रीकान्त उपदेशो परवस्तु कहि॥

कवित्त॥

श्रीमद्दिव्यसूरिन को चरित पवित्र त्योंहीं भाष्यकार अति नर उपकार जो दिखायो है।
तिनते भये पूरब अरु पर[illegible] गुरु[illegible] को ज्ञानानुष्ठान अति बि[illegible] सुहायो है॥
ताकौं श्रीआंध्रिपूर्ण वन्हाअवतंशरूप देशिक अनन्त [illegible]र [illegible] प्रकटायो है।
सोई नर बाणी सुखसा[illegible] सरल छन्दन में बदरीदास सज्जन [illegible] आस गायो है॥

इति उल्थाकार प्रार्थनम्॥

रहत भये गुरु आयसु मानी । तिनहि देव अरि भाषत प्रानी ॥
ते गुरुभक्त प्रेम पूरणमन । गुरु बिश्लेश भयो बिवरणतन ॥
अपरवैष्णवनलखितिनकीगति।गुरुबियोगअतिशयव्याकुलमति
पठयो तिन्है तुरत गुरु पाहीं । चले हरषि अनन्तपुर काहीं ॥
तीनि कोस जब रहे अनन्ता । लखे तहां निज गुरु भगवन्ता ॥

दो० लौटे आवत रंगपुर तहँ ते सहित समाज ।
कियो प्रणाम सप्रेम तब तिन्है देखि गुरुराज ॥

सो० करत भये कछु क्रोध तिनसौं इमि बोले बचन ।
भरतालवार सुबोध रहे अवध रघुबर कहे ॥

राम स्वतंत्र शूर धौं ताते । तुमरी जानि न सेवक नाते ॥
मोहि अस्वतंत्र अशूर बिचारी । चलि आये मम आयसु टारी ॥
सुनि गुरुवचन भये अति भीता । प्रथमहु ते मुखभौ अति पीता ॥
कहत हाय स्वरूप मम नासा । तिनहि बिकल लखि बिगत हुलासा॥
कही सो दशा बैष्णवन गुरु सौं । गुरु ह्वै मुदित लगाये उर सौं ॥
बोले मधुर वचन करुणा करि । यहँ ते निकट अनंत शयन हरि ॥
करि आवौ तिनकी सेवा तुम । कह देवारि अनंत शयन हम ॥
जात रहे प्रभु हित सो यहांहीं । मिलि गये अब क्यों जायँ वृथाहीं॥
याबिधि सुनि गुरु तिनकी बानी । निश्छल गुरु निष्ठा रससानी ॥
जानि तिन्है विशेष अधिकारी । भये अतिशय प्रसन्न आचारी ॥

दो० कहो शास्त्र गुरु विभव जिमि इन उर धारो सोय ।
गुरुवर जहाँ विराजहीं सोइ बिकुण्ठपुर होय ॥

सो० श्रीपति ते गुरुदेव मानै अधिक सो शिष्यबर ।
तिनमैं लखी सो टेव यामुनगुरु तोपे अमित ॥

तदनन्तर यामुनमुनि काहीं । भई योगाभिलाष मन माहीं ॥
सादर योगिपत्र तब काढ़ो । तासु लिखित पढ़ि काल विचारो ॥
जे नखतादि लिखे योगीशा । ते सब किये बिचार यतीशा ॥
जानि परे आजहि सब आहीं । अति संताप भयो मन माहीं ॥
भई बिनाश योग की आशा । शिष्यन सौं इमि बचन प्रकाशा ॥

भयो तात प्रमाद अति भारी । कुरुकानाथ योग आचारी ॥
निजतनत्याग लिखो जो काला । योग देन मोहि कहो कृपाला ॥
सो तौ आजहि हैं सब योगा । अब केहि भांति बनै संयोगा ॥
दूरि बीरनारायणपुर अति । काबिधि सौं अब होय तहां गति ॥
रामचन्द्र पुष्पक जो आजू । होतो तौ बनतो यह काजू ॥

दो० बहुत क्लेश मनमैं लहो बनो न कछू उपाय ।
समुझायो तब शिष्यगण हरि सङ्कल्प बताय ॥

सो० तब सब परिकर संग तहँते आये बासथल ।
बंदन करि श्रीरंग निज मठ मैं निवसत भये ॥

इतिश्रीप्र० यामुनस्य अनन्तशयनदिव्यदेशसंचारकथनन्नाम
पंचदशशततमोऽध्यायः ॥ ११५ ॥

शिष्यन युत यामुन गुरुपुंगव । जगत बिदित अपार जिन बैभव॥
जीति शत्रुदल शास्त्र अर्थ बल । प्रकटो हरि सिद्धान्त महीतल ॥
महापूर्ण आदिक पंडित बर । ब्राह्मणेन्द्र बहु शिष्य धुरन्धर ॥
ते सब गुरु आयसु में रहहीं । गुरु अति बत्सलता निर्बहहीं ॥
सहसगीति सिखवत पावन मति । करि शठारि बैभवहि मानअति॥
कालक्षेप तासु वेदान्ती । करि इक दिन यामुन एकान्ती ॥
पोलिहादि गाथा के अर्था । इक मुहूर्त किय ध्यान समर्था ॥
करत बिचार अचेष्ट ज्ञानिबर । सब यथार्थभाषित शठारि कर ॥
महावतार भविष्य लिखो जो । ह्वै गो है धौं होनहार सो ॥
यह सुनि चतुर शिष्य उठि बोले । दीर्घ दृष्टि आशय निज खोले॥

दो० कछु चिंतन कीजै न प्रभु यह गाथार्थ विचार ।
हम सबहुन की बुद्धि सौं है याबिधि निर्धार ॥

सो० याको अर्थ महान है तुमरेहि अवतार पर ।
नाथ सदृश जग आन भयो न गुरु नहिं होयगो ॥

सो सुनि गुरु बोले सहसाहीं । तात गाथ यह मत्पर नाहीं ॥
दिव्य पुरुष की सूचनकारी । हमतौ क्षुद्र न तस अधिकारी ॥
पूर्व देशिकहु पर यह नाहीं । है अवश्य भविष्य जग माहीं ॥

ह्वैहै सब जग को गुरु एका । बिस्तारि है हरिपथ स्वबिवेका ॥
ह्वैहै सो धौं हमरेहि काला । धौं हमरे पाछे जगपाला ॥
बिद्वन् नहि यामैं सन्देहा । औरौ बुध जन भाषत एहा ॥
यह कहि निशिदिन ताकी कांछा । करन लगे गुरुनायक बांछा ॥
होय अवश्य महामुनि कोई । हारीतस्मृतिहू कह सोई ॥
यादवाद्रि माहात्मि मझारी । लिखित जानि निश्चय दृढ़ धारी ॥
हमरेहि कुल कोउ दिव्यपुरुषबर । ह्वैहै जग अज्ञान तिमिरहर ॥

दो० यह निश्चय जान्यो सुदृढ़ नहीं ज्ञात यह होय ।
कै हमरेही काल धौं हमरे पीछे सोय ॥
सो० चितत सो अवतार रंगस्थल यामुन वसत ।
तिनके शिष्य उदार ज्ञाता युग वेदान्त के ॥

भूरि और श्रीशैलपूर्ण ये । सेवनरत भये व्येंकटपति के ॥
तहँ श्रीशैलपूर्ण के धामा । द्वै सुत द्वै कन्या अभिरामा ॥
अरु द्वय भगिनी श्रीभूअंसा । भईं सुजन्मन जिन भाग प्रशंसा ॥
कांतिमती श्रीअंशिनि ज्येष्ठा । केशवयज्वापत्नि सो श्रेष्ठा ॥
जिनको श्रीश अंश अवतारा । गीताशास्त्र कथित अनुसारा ॥
भूमि अंशिनी द्युतिमति जोई । पद्मनयन भामिनि भई सोई ॥
तिनहूं को हरि अंश कला ते । संभव हरि इच्छा बिमलाते ॥
कांतिमती ते लक्ष्मण देशिक । भये लोक सन्मत उपदेशिक ॥
रहे तबहिं अर्तिस अरु नवशत । नृपति शालिबाहन के संवत ॥
प्रथम अनंतरूप जिनकेरो । दूजे लक्ष्मण नाम निवेरो ॥

दो० पुनि द्वापर युग में भये रोहिणि सुत बलराम ।
कलिहारीत बंश सोइ गुरु रामानुज नाम ॥
सो० अरु द्युतिमति के माहिं गरुड़ अंश गोविंदगुरु ।
नखत बिशाषा काहिं प्रकटे माधवमास बर ॥

पुनि अनंत भट्टार्य अवासा । महादेवि मधि मकर सुमासा ॥
हस्त नखत रामांश महाना । हमरे पितु कूरेश सुजाना ॥
दाशरथी तिनके लघु भ्राता । भरतअंश गुरुप्रिय बिख्याता ॥

उपजे माघ पुनर्वसु माहीं । लक्ष्मी मधि दशमी तिथि काहीं ॥
जिन कंडारनाथ अस नामा । पायो जगत बिदित गुणधामा ॥
लोक बिलक्षण रिपुहन अंशा । माघ पुनर्वसु बुध अवतंशा ॥
दास अंत रामानुज नामा । होत भये कोउ जग अभिरामा ॥
याबिधि नाना देशन माहीं । उपजि प्रकाश्यो भूतल काहीं ॥
कियो सहाय जगत गुरुकेरो । सद्विद्यादिक गुणन घनेरो ॥
जाबिधि श्रीरघुवर अवतारा । भये सहाय देवादि अपारा ॥

दो० धारण करि कपि भालु तन सेय भये कृतकाज ।
दलो सदल रावण जबहिं कौशलेन्द्र महराज ॥

सो० त्यो कलि हरण उपाय जब कीन्हो यतिराजगुरु ।
शिष्य भये सब आय सेवन कियो सहाय करि ॥

इतिश्रीप्र० रामानुजार्य्याद्यावतारकथनन्नाम
षोडशशततमोऽध्यायः ॥ ११६ ॥

रंगस्थल यामुन गुरु ज्ञानी । अनुभव करत सो अर्थ बिनानी ॥
जो निज सूक्ति शठारि बतायो । महापुरुष अवतरण जनायो ॥
तिनके तन प्रकटो तेहि काला । कठिन राज तृण लहो कसाला ॥
रहे दुखी कछु बर्णन ताईं । हरिगुण अनुभव मग्न तहांहीं ॥
एकसमय जग तिमिर बिहीना । देखो धर्म प्रकाश नवीना ॥
सो कलिकाल बिलक्षण जानी । अति संतोष लहो बिज्ञानी ॥
जानो भयो महा अवतारा । जो शठारि निज सूक्ति उचारा ॥
तिनके ढूंढ़न कौ निज दूता । पठवत भये निज शिष्य बरूथा ॥
तिन मुख सुनि हारीत सुबंशा । रामानुज गुरु बिभव प्रसंशा ॥
द्विजराक्षस शमनादिक करमा । बिन्ध्याचल हरि दरसन परमा ॥

दो० जल याचन क्षण मध्य पुनि आनव कांची माहिं ।
कांचिपूर्ण सौ मित्रता अतिमानुषता काहिं ॥

सो० सुनि निज दूतन द्वार लक्ष्मण गुरु माहात्मिबर ।
तिनके दरस बिचार यामुनगुरु कांची गये ॥

कीनो बरदराज पद बंदन । कांचिपूर्ण सौं लहि अभिबंदन ॥
तिनके मुख पुनि सुनि बहुभांती । रामानुज महिमा लहि शांती ॥
संभाषण हित कियो बिचारा । पै श्रीपति सङ्कल्प उदारा ॥
याबिधि भो जाते यामुन पुनि । उचित न जानो देशकाल गुनि ॥
तब बरदायक सौं मुनिराई । अस्तुति करि प्रार्थना सुनाई ॥
जाते तिनको पूरण ज्ञाना । करैं सिद्ध प्रभु कृपा निधाना ॥
हरिमत अधिपति होयँ बहोरी । गये रंगपुर फिरि यतिधोरी ॥
बसे तहां हरि कृपानिहारत । सुनि रामानुज चरित विचारत ॥
बिरचे पांच ग्रंथ अति रूरे । सकल लोक हित सौं अति पूरे ॥
रत्नस्तव बहुरौं लक्ष्म्यस्तव । चतुश्लोक बरनो अति बैभव ॥

दो० बहुरि वेद प्रामाण्य रचि सिद्धित्रय पुनि कीन ।
संग्रह गीता अर्थ को बिरचो बिशद प्रवीन ॥

सो० लखि सपाद शत बर्ष तब प्रमाण निज आयु को ।
श्रीश मिलन उत्कर्ष उपजी रुचि जग त्याग की ॥

शिष्यन सौं बोले तब याबिधि । रामानुज गुण ज्ञान कृपानिधि ॥
ह्वैहैं अवशि श्रीश के प्रेरे । निर्बाहक बैष्णवमत केरे ॥
तिनकौ सब मिलि सादर भाई । हरि सिद्धान्त अर्थ समुदाई ॥
करि उपदेश धीर अति जानी । स्वमत प्रवर्तक कीजौ ज्ञानी ॥
यह कहि सकल अर्थ निज रूरे । शिष्यन उर सादर मुनि पूरे ॥
तब मारणेनम्बि बुधिवाना । बोलि कहो इनि कृपानिधाना ॥
पूर्व बहुत तुम हमहिं निहोरा । भोगन मम प्रारब्ध कठोरा ॥
सो अब कछु दिन मम ब्रण लीजै । आदर सौं तेहि भोग करीजै ॥
यह कहि तिनहि भक्त शुचि जानी । देत भये निज ब्रण गुरुज्ञानी ॥
अरु उनकी रक्षा के काजा । शिष्य नियुक्त किये मुनिराजा ॥

दो० रामानुज बृत्तान्त सुनि दूतन मुख परिशुद्ध ।
बरदराज कैंकर्य रत सिष्ट बृत्ति अविरुद्ध ॥

सो० महापूर्ण तब बोलि अस्तव मणि दीनो तिनहि ।
निज उर आशय खोलि कहो जाउ कांचीपुरी ॥

रामानुज समीप बुधिवाना । करौ जाय यह अस्तव गाना ॥
ह्वैहैं बिबश सुनत ताकौं ते । तब तुम उनहि यत्न बहु करिके ॥
ल्यावौ अपने संग लिवाई । मम समीप करि आतुरताई ॥
महापूर्ण गुरु आयसु शिरधरि । तैसेहि कीनो तुरत प्रीति करि ॥
बरद निकट रामानुज आगे । अस्तव पाठ कियो अनुरागे ॥
सो सुनि के रामानुज स्वामी । भये तुरत यामुन अनुगामी ॥
परम प्रीति दरसन की आसा । चले पूर्ण सँग सहित हुलासा ॥
दोहुँ के मिलन रंग भगवाना । लीला लोक नशत निज जाना ॥
तब अर्चक मुख यामुन पाहीं । कही जाउ मम परपुर काहीं ॥
यामुन गुरु तब बचन प्रकासा । रामानुज दरसन की आसा ॥

दो० प्रभु मैं बीते आठ दिन जैहौ नित्य अवास ।
रामामुज आगवन की चितवत मग अति आस ॥
सो० बिनु पूजे मन काम निज गुरुपद प्रापति लही ।
रामानुज गुणधाम पूर्ण संग आये तवहि ॥

लह्यो न यामुन सँग संभाषण । रामानुज शोचे अति ताच्छण ॥
लखि समिटी तिनके कर माहीं । आंगुरि तीनि कहो सहसाहीं ॥
तुमरे मन जो तीनि सकोचा । हम पूरिहैं त्यागौ मुनि शोचा ॥
महाभाष्य शारीक सूत्रन । करिहौं रचना कहत किये प्रन ॥
व्यास पराशर ऋण निर्मोचन । द्राविड़वेद दिव्य को प्रवचन ॥
करिहौं अवशि सो सुनत तपोधन । खोलि दई अँगुरीं तिहुँ तच्छन ॥
लौटि गये कांची तिहि काला । लहे तहां षट अर्थ बिशाला ॥
बरदराज सौं कांचिपूर्णमुख । उनको आश्रय कियो मानि सुख ॥
पांच गुरुन सौं पुनि सब अर्था । पाय बिष्णुमत भये समर्था ॥
भाष्य रचन इच्छा करिके पुनि । शारद पीठ गये लक्ष्मणमुनि ॥

दो० बोधायन कृत बृत्ति लखि हमरे पितु के संग ।
आनँद युत आवत भये यतिनायक श्रीरंग ॥
सो० इतरन के सिद्धान्त खंडन युत मत थापि निज ।
रच्यो दीप वेदान्त बहुरि सार वेदान्त को ॥

वेद अर्थ संग्रह पुनि कहेऊ । तब श्रीभाष्य ग्रंथ निर्मयेऊ ॥
लोक बिदित अरु बुधजन सम्मत । गीताभाष्य पार्थ गुरु अभिमत॥
पुनि गद्यत्रय किय निर्माना । सकल देश पुनि करि प्रस्थाना ॥
करि दिग्विजय बिष्णुमत काहीं । अपने नाम थपो जग माहीं ॥
तेहि रक्षण पंडित बहु थापी । पुनि वेदान्त युगल के व्यापी ॥
चौहत्तरि निज शिष्य सुहाये । गुरुपद दै जग जन सुखछाये ॥
कियो तीनि थल निज अर्चातन । भूतपुरी बिशेष स्वजनन धन ॥
तिन सेवन जग रक्षणकारी । कहो आपु यतितिलक पुकारी ॥
शत अरु बिंशति सम्मत रहि जग । शोधन करि हरिलोक राजमग॥
माघ शुक्ल दशमी शनिबारा । रंगनगर गुरुवर्य उदारा ॥

दो० निज भोगीश्वर भाव कौ प्राप्त भये सुखपाय ।
जनक भाव कुरुकेश तब चरमकरम मनलाय ॥
सो० यथा उचित सब कीन अरु कूरेश्वर पुत्र हम ।
तेहि रंगेश प्रवीन पुत्रभाव स्वीकृत कियो ॥

पुनि कुरकेशहि यतिपति ज्ञानी । सहसगीति के अर्थ बखानी ॥
दिये सकल पुनि तेहि व्याख्याहित । आज्ञा करत भये दयालुचित॥
तिन गुरु की आज्ञा परमाना । बिरचो षट सहस्र व्याख्याना ॥
पुनि हमकौ सो अर्थ शुभमाला । उपदेशे कुरकेश कृपाला ॥
हम तुमकौ पंडितबर जानी । उपदेशे सो अर्थ सुख खानी ॥
तुम अब तासु करौ व्याख्याना । गुरु सेवा नवसहस प्रमाना ॥
हम गुरुवर आज्ञा धरि भाला । यथाशक्ति बैष्णवमत पाला ॥
मम पाछे तुम सहित उछाहा । कीजो गुरुमारग निर्बाहा ॥
पूर्वाचार्य चरित्र पुनीता । जिमि हमसौं बरनें यतिदीपा ॥
कूरनाथ पुनि गोबिंद गुरुवर । तिनहूं सौं जिमि सुने कलुषहर ॥

दो० सो सब हम तुमसौं कहे अघनाशक अति हृद्य ।
पढ़त सुनत पावन करत ज्ञान भक्ति की बृध्य ॥
सो० देत आयु आरोग्य षट रिपु के नाशक परम ।
सुजननके अति भोग्य हरिपदरतिप्रद जगबिरति ॥

छन्द हरिगीतिका ॥

है अमृत हरि शरणागतन को तासु ते यह ग्रन्थ को ।
श्रीमत्प्रपन्नामृत परो बर नाम प्रद हरि पन्थ को ॥
यह परम पावन दिव्यसूरि चरित्र सुनैं जे गावहीं ।
तन मन बचनकृत कलुष तजि हरि दिव्यधाम सिधावहीं ॥
सम्बन्ध ज्ञान बिहीन जो किमि कहिय बैष्णव मनुज सो ।
या ग्रंथ के बिनु श्रवण पठन सो लाभ क्यो तेहि ज्ञानको ॥
सम्बन्ध ज्ञान समेत जिन जग माहि बैष्णवता लही ।
तजि प्रकृति को सम्बन्ध ते हरि दिव्यपद पावत सही ॥

दो० ताते सुनु अस्मद्यती यह पूर्वार्य्य चरित्र ।
अवशि भोग्य सब जनन कौ चहैं जे होन पवित्र ॥
सुनि गुरु मुख व्याख्यान यह सिद्ध करन सर्बार्थ ।
भये तुष्ट अस्मद्यती आपहि मानि कृतार्थ ॥
परिक्रमण पूर्वक तबहि गुरुपद बंदि सप्रीति ।
बहु द्विजवर पुनि वेदविद हरिजन परम पुनीत ॥
तिनकौ षटरस अन्न दै पूजो बिबिधि प्रकार ।
गुरु युत लै श्रीपादजल आनँद लहो अपार ॥
गुरहु पराशर भट्ट तब पायो अति आनन्द ।
दै प्रपन्नमणि माधवहि संतस्वधा सुखकन्द ॥
आर्य चरित्र बिचित्र बर पढ़त जो सादर याहि ।
तजि कल्मष सुरदुर्लभ मिलत श्रीशपद ताहि ॥
आश्रत गोबिंद गुरुचरण लालित भाष्याचार्य ।
कूरनाथ कुल के तिलक नमो नमो भट्टार्य ॥

इति श्रीप्रपन्नामृते रामानुजचरित्रे भट्टार्य्य वेदान्तिसंवादे श्रीरामानुजार्य्यदिव्यचरितकथनन्नाम सप्तदश शततमोऽध्यायः ॥ ११७ ॥

समाप्तोयंग्रन्थः श्रीरस्तु ॥

श्रीभाष्यकारपदार्पणामस्तु ॥

# अथ ग्रन्थ के उल्थाकार की प्रार्थना ॥

भाष्यकार चरित्र यह पावन । दिव्य अनूप सुमंगल छावन ॥
तिनतें पूर्वाचार्यनहूँ के । चरित पुनीत परार्यनहूँ के ॥
दिव्य योगि अति श्रीपति प्यारे । तिनहूँ के कछु चरित उचारे ॥
रंगादिक अर्चा सुखकारी । तिमि तिनके गुण गण अघहारी ॥
गुरु यश कहत प्रकरण परो जहं । सादर बिस्तरकरि वरने तहं ॥
जिन हरिजनन दिव्यथल जाई । सेवन किय हरि गुरु मनलाई ॥
तिनहिं ग्रंथ यह अति सुखदाई । सुमिरत उर चख देत दिखाई ॥
अरु जे जन पहुंचे तहं नाहीं । पैहैं अनुभव दरसन काहीं ॥
ताते यह बर ग्रंथ उदारा । बैष्णवसत्ता को आधारा ॥
है प्रपन्न अमृताख्य यथारथ । पूरित आदि अंत परमारथ ॥

दो० याके अनुभव विनु कबहुँ श्रीवैष्णवता लेश ।
सिद्ध होत नहिं आन बिधि कितनोहि करै कलेश ॥

सो० ताते मन बच कर्म श्रवण पठन सुमिरण सदा ।
याको बैष्णवधर्म परमावश्यक जानियै ॥

गुरु भागवत कृपा बल पाई । लघुमति सरिस कहो कछु गाई ॥
ग्रंथकार जो पूर्व लखायो । तेहि उल्था भाषा करि गायो ॥
व्यास समास कछुक कहुँ कीनो । आशय सब ताही को लीनो ॥
नातौ हरि हरिजन गुण गाना । अति अपार श्रुति शास्त्र बखाना ॥
तापर मैं जडमति अबिवेकी । अति अल्पज्ञ कुमति को टेकी ॥
दिव्य अमानव यश अभिरामा । जानौ कइ कहि कलिमलधामा ॥
है सब उक्ति अयुक्त सदोषा । सज्जन तदपि न करिहैं रोषा ॥
यतिनायक को सुयश पुनीता । गुनि मन आदर करिहैं बिनीता ॥
यह भरोस मेरे उर भारी । संत हंस मधुकर ब्रतधारी ॥
जानि अनन्य आपनो चेरो । छमि हैं सब अघ अवगुण मेरो ॥

दो० रामानुज सम्बन्ध गुणि करिहैं कृपा बिशेषि ।
करुणा बश अपनाय हैं दीन अकिञ्चन लेषि ॥
सो० याबिधि बिनय सुनाय गोष्ठी श्रीबैष्णवन में ।
निज अपराध क्षमाय अपर एक बिनती करौ ॥

यह रामानुज चरित पुनीता । जेहि महिमा मन बचन अतीता ॥
भाषा मानि न लघुता कीजै । शुचि सौं पढ़ि बहु आदर दीजै ॥
हरि हरिजन यश कवनहुं भाषा । परमपूज्य श्रुति सुमृतिन भाषा ॥
जे अनन्य श्रीबैष्णव नाहीं । पढ़िये न तिनके सन्मुख याहीं ॥
जिनके उर गुरुभक्ति न लेशा । कबहुं न तिनहि करिय उपदेशा ॥
बहुत कहौं कह बात बखानी । उपदेशियै अधिकारी जानी ॥
थोरेहि मैं जानैंगे सज्जन । सहित बिवेक करैंगे मज्जन ॥
बीते एकसहस अरु नवशत । पैंतालिस बिक्रमनृप सम्बत ॥
माघशुक्ल ग्यारसि शशिबारा । भो समाप्त उल्था सुखसारा ॥
यामैं याबिधि कियो प्रबन्धा । सज्जन सुनौ सो बिशद निबन्धा ॥

दो० दश दश चौपाइन उपर इक दोहा सुखरूप ।
तापाछे इक सोरठा बिच बिच छन्द अनूप ॥
सो० पुनि बन्दौ सद्भाव निज देशिक पद कमल युग ।
जिनकी कृपा प्रभाव बदरी यतिपति यश कहो ॥
दो० श्रीनिवास गुरुवर्य क बन्दौं पदजलजात ।
जिनकी कृपाकटाक्षते सुलभ सकल सिधिव्रात ॥
सो० रामानुज सिद्धान्त दृढ़ कीनो जिन जगत मे ।
जग जीवन श्रीकान्त उपदेशे परबस्तु कहि ॥

कवित्त ॥

श्रीमद्दिव्यसूरिन को चरित पवित्र त्योंहीं भाष्यकार अति नर उपकार जो दिखायो है ।
तिनते भये पूरब अरु प[illegible] गुरु[illegible] को ज्ञानानुष्ठान अति बि[illegible] सुहायो है ॥
ताकौं श्रीआंध्रिपूर्ण बन्हाअवतंगरूप देशिक अनन्त [illegible] प्रकटायो है ।
सोई नर बाणी सुखसा[illegible] सरल छन्दन मे बदरीदास सज्जन [illegible] आस गायो है ॥

## इति उल्थाकार प्रार्थनम् ॥

—— :o: ——

# भाषा प्रपन्नामृत का शुद्धाशुद्धपत्र ॥

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २२ | कृत्यकृत्य | कृतकृत्य | १५३ | २२ | चारियादि | चार्यादि |
| ९ | १५ | कटकटाप | कटकटाय | १५४ | १६ | श्रेयपद | श्रेयप्रद |
| ९ | २६ | चित्र | बिचित्र | १७४ | ११ | अन्तर | अन्त |
| १० | २२ | तब | तव | १८६ | २६ | कीडा | क्रीडा |
| ११ | ८ | नृपीत | नृपति | १६६ | २६ | अतुलितु | अतुलित |
| १२ | १२ | निके | नीके | १६७ | ११ | कथन्नाम | कथनन्नाम |
| १२ | १५ | तनहि | तिनहि | १६८ | २१ | बिरहन | बिहरन |
| १४ | १० | मृदू | मृदु | १६६ | ७ | निवारे | निर्वारे |
| २३ | ३ | जाऊ | जाउ | १६६ | २० | सुख | मुख |
| २३ | ६ | कर शैल | करिशैल | २०४ | १२ | लहौ | लहो |
| २७ | २२ | तेहि | केहि | २०७ | ६ | पकाश | प्रकाश |
| ३३ | २२ | कृत्तांत | वृत्तांत | २०७ | २४ | मानौ | मानो |
| ३५ | २४ | बचाय | बजाय | २१२ | ६ | बलुब | वल्लभ |
| ३७ | २६ | नयाक | नायक | २२५ | ६ | तब | तव |
| ३७ | २७ | हित | ममहित | २२७ | ७ | शप्त | सप्त |
| ४४ | २८ | समाम | समान | २४० | १३ | रंरेश | रंगेश |
| ४६ | १८ | सुलरत | सुमिरत | २४१ | २१ | पीतांतर | पीतांबर |
| ४७ | ११ | प्रय | प्रिय | २४५ | ५ | पणिपाता | प्रणिपाता |
| ५६ | १५ | आचरज | आचारज | २५३ | २७ | मौम | भौम |
| ६० | २१ | कथिंचित | कथंचित | २६५ | २० | कहौ | कहो |
| ६२ | २५ | मक्त | भक्त | २७६ | ३ | कह्रू | काहू |
| ६३ | ५ | दाशरहि | दाशरथिहि | २७६ | ११ | समाज | ससमाज |
| ६६ | १२ | लेने | लीने | २८३ | १२ | उनको | उनकौ |
| ७१ | ४ | पूँछौ | पूँछो | २६५ | ६ | मुगीश | मुनीश |
| ७४ | ११ | जु | जो | ३१८ | ६ | भध्यस्थ | मध्यस्थ |
| ८४ | ८ | शोध | शोधि | ३२१ | ६ | पुछो | पूछो |
| १२६ | ४ | परिपुर्ण | परिपूर्ण | ३३१ | २३ | वंश | सुवंश |
| १४४ | ३ | उच्छा | इच्छा | ३३४ | १८ | शारीक | शारीरक |

—:०:—

# बिज्ञापन ॥

हे महात्मा श्रीबैष्णावो ! आप की सेवा में निर्दम्भ और सबिनय सप्रणाम आपका परमहित निवेदन करताहूं कि यदि आप को अपनी सम्प्रदाय का बैभव और परमोत्कृष्ट सिद्धान्त जानना और बैदिकानुष्ठान पूर्बक परमात्मप्राप्ति का महा बिश्वास तथा भगवद्भागवताचार्य निष्ठा संपादन पूर्बक भक्तिप्रपत्ति रसास्वादन अभीष्ट है अथवा जो आप को इन सब पदार्थोंकी पूर्त्ति होकर केवल कालक्षेप परायणात्वरूप सिद्धावस्था प्राप्तहै तौ भी इस ग्रन्थ को अवश्य मेव ग्रहण कीजिये इसको परमोदार श्रीमद्भाष्यकार स्वामी ने संस्कृत बाणी की क्लिष्टता छुड़ाय प्राकृत भाषा में सौलभ्यता के निमित्त सुरचित कराय उत्तम टैपान्तर सुन्दर कागज़ स्याही अति शुद्धता से मुद्रित कराय मूल्य भी सरल और सुसह निश्चय कराया है—श्रीमन्तों से जो कुछ स्वेछानुसार नियत मूल्य से अधिक अपने ऐश्वर्यानुरूप देवैं—सामान्य ग्राहकों से डाकव्ययादि सहित १॥) थोक ग्राहकों से डाकव्ययादि सहित १।) मनीआर्डर अथवा पत्र आने पर और स्वच्छस्पष्ट ठिकाना लिखने पर घरबैठे ग्रन्थ पहुँचैगा ॥

आपका चरणानुरागी बदरीदास.

# पुस्तक मिलने का ठिकाना ॥

जिला फर्रुखाबाद महल्ला साहिबगंज लाला बदरीदयाल से
तथा क़सबा पटियाली जिला एटा बदरीदयाल से
मुन्शी हेतराम डिपुटीकलेकटर पेंश्नर के मकानपर ॥